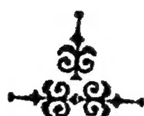
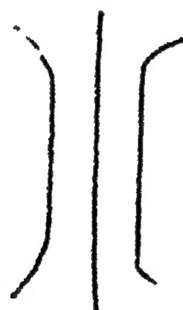
इङ्गलैण्ड इतिहास दिग्दर्शन

(१४८५ से आज तक)



लेखक

प्रो० पी० डी० शर्मा, एम० ए०



किताब-घर

हाई कोर्ट रोड, लश्कर, ग्वालियर

प्रकाशक
किताब-घर
हाई कोर्ट रोड
लश्कर, ग्वालियर

मूल्य ३·५०

मुद्रक
प्रियम्वदा प्रिंटिंग प्रेस
नं.बस्ता, आगरा

विषय-सूची

१—आधुनिक युग

प्रश्न १—हैनरी सप्तम का शासन, मध्यकालीन और आधुनिक मार्गों के प्रथक्कीकरण पर क्यों माना है ?

अथवा

प्रश्न २—समझाओ कि हैनरी सप्तम का शासन, इंगलैन्ड के इतिहास में एक नए युग की विशेषता वाला क्यों माना जाता है ?

अथवा

प्रश्न ३—यह कहना कहाँ तक सत्य है कि हैनरी सप्तम का शासन आधुनिक युग के शासन की विशेषताएँ स्पष्ट करता है ?

अथवा

प्रश्न ४—ट्यूडर के युग की क्या विशेषताएँ हैं ?

उत्तर—भूमिकाः—हैनरी सप्तम ने एक नए राजवंश और एक नए शासन के सूत्रपात का आरम्भ किया। उस समय में जब कि ट्यूडर इङ्गलैन्ड पर शासन करता था विश्व मे महान परिवर्तन होना था। हम क्रमशः उस इतिहास में प्रवेश करते हैं जो कि 'आधुनिक' इतिहास कहलाता हैं।

मध्यकाल एवं आधुनिक काल के बीच मोड़ बिन्दुः—

वार्नर (Warner), मार्टन (Martan) और म्योर (Muir) लिखते हैं:—"हैनरी सप्तम का शासन, मध्यकालीन और आधुनिक इंगलैण्ड के प्रथक्ककीरण पर है—इसकी विशेपता अनिश्चित है। किंग का बहुत सा विधान (कानून) मध्यकालीन था; उसकी नीति का अधिकांश विशेषतः उसकी वैवाहिक नीति, आधुनिक था। फिर भी यदि हम थोड़ा पीछे जायँ अथवा आगे सोचे तो परिस्थितियो की विशेषता के सम्बन्ध में हमे कोई सन्देह नही रहता। वारविक (Warwick), मध्यकालीन था परन्तु वॉल्से (Wolsay) कुल्हाड़ी और खंजर, हत्या और आकस्मिक मृत्यु के वातावरण के साथ

ऐतिहासिक प्राचीन युगों की विचित्रताओं में रिचार्ड तृतीय नहीं था; हैनरी सप्तम यद्यपि शायद ही कम रक्त-पिपासित हो फिर भी निश्चित ही आधुनिक है।

ट्यूडर युग की विशेषताएँ:—

उन नई विशेषताओ को मालूम करना कठिन नही जो कि ट्यूडर युग को स्पष्ट करती है। वे निम्नलिखित हैं:—

(१) राजवंशी विवाह—पहली विशेपता राजवंशी विवाह हैं। इन विवाहो के द्वारा राजा लोग विश्व साम्राज्य की रचना करने का प्रयत्न करते है। राजवंशी वैवाहिक नीति का एक विकास इङ्गलैण्ड को स्पेन के साथ श्रंखलित करना था। दूसरा स्काटलैण्ड और फ्रास को श्रंखलाबद्ध करना था। तीसरा और सर्वोच्च, इङ्गलेंड तथा स्काटलेन्ड को मिलाना था। यह एकता का बन्धन हिला नहीं।

(२) नई शिक्षा—सन् १४५३ मे कुस्तुनतुनियाँ तुर्कों के हाथ जा पड़ी। वहा बहुत से ग्रीक और रोमन विद्वान रह रहे थे। उन्होंने कुस्तुनतुनियाँ को छोड़ दिया। वे पूरे यूरोप मे इधर उधर बिखर गए। अपने साथ वे ग्रीक और रोमन संस्कृति और सभ्यता लेते गए। प्लेटो और अरस्तू की पुस्तकें समूचे यूरोप मे पढ़ी जाने लगी।

(३) मुद्रण (छपाई) का आविष्कार—मुद्रण कला का अन्वेषण सन् १४४० मे होरलेम (Hoarlem) के लारैन्स कॉस्टर (Lord Koster) द्वारा किया गया था। इसके साथ ही सन् १४७६ मे लन्दन मे विलियम कैक्सटन (William Caxton) द्वारा पहला प्रिंटिग प्रेस स्थापित किया गया। पुस्तके छपने लगी। इसने नए ज्ञान की प्राप्ति जन-साधारण के लिए सुलभ कर दी।

(४) बन्दूक की बारूद (Gun Powder) का आविष्कार—बन्दूकी की बारूद के आविष्कार ने युद्ध करने के ढंग बदल दिए। इसने बादशाह की स्थिति को सुदृढ कर दिया। इसने सामन्तो और सरदारो की शक्ति का ह्रास कर दिया। इस प्रकार बादशाह सर्वोच्च सत्तावान हो गया। सामन्त सरदार अब महत्वपूर्ण न रह गए।

(५) मैरिनर्स कम्पास का आविष्कार—नाविक कुतुबनुमा (Mariner's compass) के आविष्कार ने जहाजरानी मे बहुत योग दिया। इसने नए देशों की खोज के लिये समुद्री यात्रा को उन्नत किया।

(६) भौगोलिक अन्वेषण—अनेक नए अन्वेषण (खोजे) किए गए। कोलम्बस (Columbus) ने सन् १४९२ मे अमेरिका की खोज की। जोहन कैबट (John Cabot) ने लब्रॅडर (Labrador) मे न्यूफाउन्डलैन्ड का पता लगाया। ये सारी खोजे बहुत महत्वपूर्ण थी। उन्होने नए देशों के लिए मार्ग खोल दिए। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आरम्भ हुआ। स्पेन, पुर्तगाल और इङ्गलैंड प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र हो गए।

(७) मध्यम वर्ग का उत्थान—जैसे-जैसे व्यापार बढा, नए नगरो की उत्पत्ति हुई। वे व्यापार और उद्योग के केन्द्र हो गए। उनमे बहुत से लोग कार्य करने लगे। इस प्रकार एक नए वर्ग का जन्म हुआ। यह वर्ग मध्यम वर्ग कहलाने लगा।

(८) धार्मिक-क्रान्ति—लोगो ने कैथोलिक चर्च के विरुद्ध विद्रोह कर दिया क्योंकि वह दूषित था। इससे पोप की शक्ति और अधिकार कम हो गए। क्राइस्टैन्डम (Christendom) की धार्मिक एकता टूट गई। अनेक देशो में प्रौटैस्टैन्ट चर्चो की स्थापना हुई। इङ्गलैन्ड ने पोप की शक्तियो एवं अधिकारो को स्वीकार करने से मना कर दिया।

(९) राष्ट्रीय भावना का विकास—मध्यकालीन युगों मे लोग सम्राट एवं पोप के अधिकारो एवं शक्तियों को स्वीकार करते थे। नए युग मे उन्होने ऐसा करने से मना कर दिया। उनमे राष्ट्रीय भावना जागृत थी। इससे नए राष्ट्रो का जन्म हुआ। फ्रांस, स्पेन और इङ्गलैन्ड प्रथम राष्ट्र थे।

(१०) इंगलैन्ड एक समुद्री शक्ति के रूप में—नए युग मे इंगलैन्ड एक महान समुद्री-शक्ति हो गया, वह समुद्रो की स्वामी हो गया। इससे उसकी विदेश-नीति मे एक परिवर्तन आ गया। उसने अन्य देशों मे उपनिवेश प्राप्त करना आरम्भ कर दिया।

उपसंहार—

इन सारे परिवर्तनो ने यूरोपीय इतिहास बदल दिया। मनुष्यो

का मस्तिष्क द्रुत और विकसित हो गया। उन्होंने नए विचार अपनाए। उन्होने नए देशो का ज्ञान प्राप्त किया। उनमें ज्ञान प्राप्त करने और आलोचना करने की नई भावना जागृत हुई। अनेक सामाजिक शक्तियाँ कार्य करने लगी। इस प्रकार मध्यकालीन यूरोप ने आधुनिक युग मे पदार्पण किया।

२—हैनरी सप्तम

प्रश्न ५—विवेचन करो कि हैनरी सप्तम का शासन प्रतीकार का युग और बीजारोपण काल का युग था।

उत्तर—भूमिका:—

वार्नर मार्टन और म्योर लिखते हैं:—"हैनरी सप्तम का शासन काल प्रतीकार का युग और बीजारोपण काल का युग था। प्रतीकार, अतीत के दोषो के थे। बीजारोपण से भविष्य मे महान फल का अनुमान था। कुछ समय के लिए परिणाम अदृश्य था।"

प्रतीकार का युग—

हैनरी का शासन प्रतीकार का युग था। ऐसा इसलिए था कि उसने उन दोषो और अनियमितताओ का प्रतीकार (उपचार) किया जिनसे कि इङ्गलेंड रोजेज (Roses) से युद्धों के समय मे दूषित हो गया था। ये दोष और बुराइयाँ इसलिए घर कर गईं थी क्योकि वहाँ कोई शक्तिशाली शासक न था। अतः हैनरी ने एक शक्तिशाली शासन की स्थापना की। इससे देश को शान्ति एव व्यवस्था प्राप्त हुई।

हैनरी ने पुरानी बुराइयो और दोषो को दूर किया और कमी पूरी की। ऐसा उसने निम्न प्रकार से किया।

(१) **बैरन्स (Barons) का नियंत्रण**—उसने बैरन्स को आज्ञा दी कि वे सशस्त्र अनुगामी (सेवको) अथवा वर्दीधारी व्यक्तियों को न रखे। इस प्रकार उसने उनकी शक्ति को रोका एव उनकी उच्छृंखलता का दमन किया।

(२) **स्टार चैम्बर का कोर्ट**—हैनरी ने 'स्टार चैम्बर के कोर्ट' की

स्थापना की। इसमें उन वैरन्स पर मुकद्दमे चलते थे जो उसके आदेशों की अवहेलना करते थे।

(३) शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार—हैनरी ने शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की स्थापना की। यह सरकार सरदारो और प्रतिष्ठित व्यक्तियो के नए वर्ग द्वारा संचालित थी। वे मध्यम वर्ग से उठाए हुए थे।

(४) मध्यम वर्ग का समर्थन—हैनरी को मध्यम वर्ग का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। कारण यह था कि वह उनका पक्ष लेता था। उसने उनमें से बहुतों को सरदारों के स्तर तक उठा दिया था। उन्होंने केन्द्रीय सरकार को सशक्त किया।

(५) बारूद (Gun-powder) का एकाधिकार—हैनरी ने बारूद को राजवंशी एकाधिकार कर दिया। इससे सरदारों और सामन्तो की शक्ति बहुत दुर्बल हो गई। इसके विपरीत, सरकार शक्तिशाली हो गई।

(६) व्यवस्था और न्याय—हैनरी ने समूचे देश में व्यवस्था पुनः स्थापित की। प्रत्येक के प्रति न्याय किया जाता था।

(७) योर्किस्टस और लौन्कॅस्ट्रियन्स के संघर्ष का अन्त—हैनरी ने योर्किस्टस (Yorkists) और लॅन्कॅस्ट्रियन्स (Lancastrians) के बीच के संघर्ष का अन्त कर दिया। ऐसा उसने वारविक (Warwick) को फाँसी देकर, लॅम्बर्ट सिमुअल (Lambert Simual) और पॅकिन (Perkin) को परास्त करके और एलिजाबेथ की शादी करके किया।

(८) निर्धनता का अन्त—हैनरी के शासन काल में इङ्गलेन्ड की निर्धनता का अन्त हो गया। यह, व्यापार एवं उद्योग एवं व्यवसाय को प्रोत्साहित करके किया गया।

ये थे पिछले दोषो के प्रतीकार अथवा उपचार।

बीजारोपण काल का युग—

हैनरी का शासन बीजारोपण काल का युग भी था। उसने बहुत सी वस्तुओं के बीज बोए जिन्होंने भविष्य मे महत्वपूर्ण फल प्राप्त कराए। वे निम्नलिखित थे:—

(१) ट्यूडर की निरंकुशता—हैनरी ने ट्यूडर निरंकुशता के बीज बोए। यह एक अनियन्त्रित एवं लोकप्रिय पद्धति थी। इसके साथ ही यह कुशल एवं उत्तम भी थी। इसने सरदारो की शक्ति को कुचल दिया। इससे हैनरी की आर्थिक स्थिति सुदृढ होगई। वह पार्लियामेन्ट मे स्वतन्त्र हो गया। उसने समूचे देश मे शान्ति और व्यवस्था पुनः स्थापित कर दी। इससे देश भविष्य में अनेक महान परिवर्तनो का सामना करने मे समर्थ हो गया।

(२) अन्वेषण की समुद्र-यात्राएँ—कोलम्बस और वास्को-डिगामा की खोजें (अन्वेषण) हैनरी के शासनकाल में ही हुई। अंग्रेजो ने उनके उदाहरण का अनुकरण किया। सन् १४९७ में ब्रिस्टल (Bristol) के कुछ व्यापारियो ने एक जहाज लादा। वे सबसे पहली वार अमेरिका की मुख्य भूमि पर पहुँचे। इस प्रकार बीज बो दिया गया। इससे भविष्य में फल प्राप्त हुए। फल इंगलैन्ड का औपनिवेगिक एवं व्यापारिक प्रभुत्व थे।

(३) सुधार का बीज—सुधार (Reformation) का बीज हैनरी के समय मे ही बोया गया। इटली में कला-कौशल तथा विद्या की जागृति का काल प्रारम्भ हुआ। धीमे-धीमे क्रमशः यह सारे यूरोप मे फैल गया। इससे इङ्गलेन्ड भी प्रभावित हुआ। इंगलेन्ड के लोग आलोचक हो गए। उनकी आलोचनात्मक भावना ने रिफोर्मेशन के मार्ग का रास्ता खोल दिया।

(४) राजवंशी विवाह—राजवंशी विवाहो की अपनी नीति से हैनरी ने दो महत्वपूर्ण घटनाओ के बीज बोए। उसने अपनी पुत्री मार्गरेट (Maragret) का विवाह स्काटलैन्ड के किंग जेम्स चतुर्थ के साथ कर दिया। इस विवाह का फल सन् १६०३ में दृष्टिगोचर हुआ। उस वर्ष इङ्गलैन्ड और स्कॉटलैन्ड एक राजा के शासन में संग्रहीत हुए। वह जेम्स प्रथम था। हैनरी ने अपने आर्थर (Arthur) का विवाह आरागन (Aragon) की कैथेरिन से किया। इस प्रकार उसने इंगलिश चर्च को रोमन चर्च से अलग करने का बीज बोया। भविष्य मे दोनो चर्च अलग अलग हो गए।

(५) सशक्त नेवा—हैनरी ने इङ्गलैन्ड जहाजरानी (Navy) को सशक्त

बनाने की नीति का अनुसरण किया। इससे भविष्य में फल प्राप्त हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलिश नेवी इतनी सशक्त थी कि इंगलैन्ड समुद्रों की मिस्ट्रेस कहलाता था।

(६) आयरलैन्ड पर नियंत्रण—हैनरी ने आयरलैन्ड पर अंग्रेजी नियंत्रण को सुदृढ करना आरम्भ कर दिया। इससे आयरलैन्ड पर अंग्रेजी प्रभुत्व के बीज का आरोपण हुआ। एलिजाबेथ के शासन काल मे आयरलैन्ड पर अँग्रेजी प्रभुत्व स्थापित हो गया।

(७) स्थानीय प्रशासन का बीज—हैनरी ने स्थानीय प्रशासन का बीज बोया। उसने स्थानीय भूभागो एवं जिलो को 'जस्टिस ऑफ पीस' के द्वारा शासित करने की नीति का आरम्भ किया। बाद मे यह अँग्रेजी स्थानीय प्रशासन मे विकसित हो गया।

इस प्रकार हैनरी का शासन काल बीजारोपण काल का युग था।

३—हैनरी अष्टम

प्रश्न ६—हैनरी अष्टम की विदेश-नीति की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

उत्तर—भूमिका :—हैनरी की प्रारम्भिक नीति फ्रांस पर आक्रमण करने की थी। यूरोप में जो घटनाएँ घटित हो रही थीं उन्होने उसे ऐसा करने का अवसर प्रदान किया चार्ल्स अष्टम के आक्रमण के पश्चात् इटली व्यग्रता और गड़बड़ी की स्थिति में था, फ्रांस, स्पेन और पापेसी, वेनिस पर आक्रमण करने के लिए संगठित हो चुके थे। उन्होने लीग ऑफ कैम्बरेय (League of Cambrai) की रचना कर ली थी। परन्तु अब वे लड़ पड़े थे।

जूलियस द्वितीय रोम का पोप था। वह फ्रान्सीसियो को इटली के बाहर खदेड़ देना चाहता था। ऐसा करने के लिए उसने एक 'होली लीग' (Holy League) की रचना की। उसने स्पेन के किंग और जर्मन सम्राट के साथ इस लीग की रचना की।

हैनरी, होली लीग में शामिल हो गया—

हैनरी ने फ्रांस पर आक्रमण करने का निश्चय किया। परन्तु ऐसा करने से पूर्व वह स्पेन को अपनी ओर कर लेना चाहता था। ऐसा करने के लिए

उसने अपने बड़े भाई की विधवा अरागौन (Aragaon) की कैथरिन की शादी कर दी। इस प्रकार वह स्पेन की मित्रता से निश्चित हो गया। स्पेन का किंग फर्डीनैन्ड (King Ferdinand) उसका श्वसुर था। उसने हैनरी को होली लीग में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया। यह एक अच्छा अवसर था। हैनरी ने खुशी खुशी उसे स्वीकार कर लिया।

फ्रांस का आक्रमण—

फ्रांस पर आक्रमण करने के लिए लीग की रचना हो गई। फर्डीनैन्ड ने अपने दामाद से फ्रान्स पर पीछे से हमला करने को कहा। हैनरी ख्याति के लिए उत्सुक था। अतः वह सहमत हो गया। उसने फ्रान्स पर आक्रमण किया। उसकी फौजे सन् १५११ मे जिनी (Guienne) पहुँच गई। परन्तु वह सफल नही हुआ। सन् १५१३ मे उसने फ्रान्स पर पुनः आक्रमण किया। इस बार उसने फ्रैन्च को गिनीगेट (Guineagate) पर परास्त कर दिया। यह लड़ाई स्पर्स की लड़ाई (Battle of the spurs) भी कहलाती है।

फ्रैन्च और स्कॉट्स अच्छे मित्र थे। अतः जब हैनरी फ्रान्स में था तब स्कॉटलेन्ड के जेम्स चतुर्थ ने इंगलैन्ड पर आक्रमण किया। स्कॉट्स, फ्लौडैन फील्ड के युद्ध (Battle of Flodden field) मे पराजित हुए। जेम्स चतुर्थ युद्ध में मारा गया। फ्रान्स को पराजित करने से यूरोप मे इंगलैंड की स्थिति सुदृढ़ हो गई। फ्रान्स, स्पेन और एम्पायर की भाँति महत्वपूर्ण हो गया। कुछ समय के लिए इंगलैन्ड, यूरोप मे सबसे अधिक शक्तिशाली दीखने लगा। परन्तु हैनरी ने देखा कि वह लड़ने के लिए अकेला छोड़ दिया गया है, जबकि स्पेन और एम्पायर पुरुष्कारो का लाभ ले रहे थे। अतः उसने स्वयं को होली (Holy League) से अलग कर लिया। उसने फ्रान्स से सन्धि कर ली। इस सन्धि की पुष्टि उसकी बहिन मैरी की, फ्रान्स के किंग लुइस बारहवे के साथ शादी होकर हो गई।

नीति-परिवर्तन—

नीति का यह परिवर्तन, थौमस वौल्से (Thomas Wolsey) के कारण था। वह अपने समय का सबसे महान महापुरुष था। वह उन कार्यों

को पसन्द न करता था जो कि पुराने तरीको से किए जाते थे। उसने हैनरी को फ्रान्स से मित्रता करने के लिए एक नई नीति का अनुसरण करने की सलाह दी। यह वौल्से ही था जिसने मेरी और लुईस में शादी का प्रवन्ध किया। इस प्रकार उसने फ्रान्स को एक मित्र मे वदल दिया। वार्नर, मार्टन और म्योर लिखते हैं :—

"इसने न केवल यही दिखाया कि इंगलैन्ड में किसी भी स्पेनियर्ड अथवा इटैलियन की ही भाँति कुशल शान्त और द्रुतं, नीति-दक्ष था वल्कि इगलैन्ड और फ्रान्स की मित्रता कराके इस नीति मे एक पूर्ण परिवर्तन ला दिया जो उत्तरोत्तर परम्परा की तरह स्थापित हुई थी।

शक्ति का समतोलन—

फ्रेन्च मित्रता के लिए, होली लीग से वौल्से के अलग होने का पहला परिणाम यह दिखाना था कि यूरोपीय राजनीति में इङ्गलैन्ड कितना महत्वपूर्ण हो सकता था। सभी नीति-दक्षो का लक्ष्य इङ्गलेंड की मित्रता प्राप्त कर लेना था। वरावर की दो शक्तियो मे जिस ओर भी इङ्गलेंड होगा उसका भार निर्णायक होगा। वौल्से ने देखा कि सवसे उत्तम और वास्तविक एक मात्र तरीका अधिकार की इस स्थिति को सुरक्षित रखने का यही था कि मस्तिष्क स्पष्ट रखा जाय। किसी एक ओर रहने का दृढ निश्चय, निर्णय की शक्ति को खो देना था। वौल्से की नीति समय समय पर फ्रान्स और स्पेन पर घूमती रहती। परन्तु साराश में प्रत्येक महत्वपूर्ण आपदा मे वह फ्रान्स की ओर अच्छा मित्र वनता। यह निम्न वर्णन से स्पष्ट हो जायगा :—

विश्व-शान्ति—

सन् १५१५ में लुइस वारहवें की मृत्यु हो गई। फ्रान्सिस प्रथम, फ्रान्स का वादशाह हो गया। अगले वर्ष, स्पेन के राजा की मृत्यु हो गई। उसके वाद उसका पौत्र, चार्ल्स पंचम गद्दी पर वैठा। उसने अपने शासन मे वरगंडी, नीदरलैन्ड, स्पेन और सिसली के भयप्रद भूखण्डों को संगठित किया। इससे हैनरी चिन्तित हो उठा। परन्तु वौल्से ने फ्रेन्च मित्रता के साथ इस खतरे का सामना किया। उसने इसकी पुष्टि हैनरी की अवोध पुत्री मैरी के डॉफिन

Dauphin) के वचन से की। उसने बड़ी कुशलता मे विश्व-शान्ति उत्पन्न की। इसमें पोप, सम्राट, स्पेन और स्कॉटलैन्ड सम्मिलित हुए। इस प्रकार उसने इङ्गलैन्ड को ऐसा बना दिया कि वह यूरोपीय राजनीति मे अग्रणी हो गया।

फ्रान्स और स्पेन में प्रतिद्वन्द्वता—

सन् १५१६ में, रोमन सम्राट मैक्सीमिलन (Maximilian) की मृत्यु हो गई। फ्रांसिस (Francis) और चार्ल्स दोनो उसके उत्तराधिकारी सम्राट बनने के उम्मीदवार थे। इससे फ्रांस और स्पेन एक दूसरे के कट्टर प्रतिद्वन्द्वी हो गए। दोनो ही इङ्गलैंड को अपना मित्र बनाने के उत्सुक थे। सन् १५२० में फ्रैन्सिस ने हैनरी को आमंत्रित किया। उसने उसका स्वागत एक बहुत ही सुन्दर और भव्य सजे हुए स्थान पर किया। अतः वह स्थान 'सुनहले कपड़े का मैदान' (Field of the cloth of Gold) नाम से प्रसिद्ध हुआ। हैनरी ने उसका मित्र रहने का वचन दिया परन्तु कोई सन्धि नही की। चार्ल्स पंचम, हैनरी की मित्रता प्राप्त करने के लिए इंगलैंड गया। इन दोनों प्रतिद्वन्दियों मे हैनरी ने चार्ल्स को चुना। इसके कारण थे। प्रथमतः हैनरी की पत्नी कैथेरिन, चार्ल्स की चाची थी। उसने हैनरी पर स्पेन का मित्र हो जाने के लिए दवाव डाला। दूसरे, चार्ल्स नेदरलैंड (Netherland) पर शासन करता था। यह देश इंगलैंड की व्यापारिक मित्रता में था।

फ्रान्स का आक्रमण—

फ्रान्स और स्पेन शान्ति न रख सके। उनमें युद्ध हुआ। हैनरी, चार्ल्स के पक्ष में था। अतः सन् १५२१ मे उसने फ्रान्स पर दो बार आक्रमण किया। परन्तु उससे उसे कुछ भी लाभ न हुआ। उसके पास धन की कमी थी। परन्तु इन आक्रमणो ने महाद्वीप मे इंगलैन्ड का महत्व बढा दिया। वौल्से ने हैनरी की नीति का समर्थन कभी नही किया था।

सन् १५२५ मे, चार्ल्स ने फ्रैन्सिस को पौविया (Pavia) में पराजित किया और उसे वन्दी बना लिया। इससे चार्ल्स बहुत शक्तिशाली बन गया। यह देख कर वौल्से ने हैनरी को सलाह दी कि वह स्पेन की मित्रता से अपने को अलग कर ले। केवल ऐसा करके ही शक्ति का सन्तुलन (Balance of

power) हो सकता था । एक वार पुनः इंगलैन्ड, फ्रान्स की ओर खिचा ।

उपसंहार—

इस प्रकार हम देखते हैं कि हैनरी की विदेश नीति, शक्ति के सन्तुलन के सिद्धान्त पर आधारित थी । कई वर्षों तक उसने पक्ष बदले । कभी वह स्पेन का मित्र हो जाता तो कभी फ्रान्स का मित्र हो जाता । इस प्रकार पक्ष बदलने मे उसका एक मात्र उद्देश्य दो पक्षों में निर्वल पक्ष की सहायता करना था । इस प्रकार उसने कभी भी किसी को यूरोप मे सर्वोच्च नही होने दिया । उसकी विदेश नीति ने इंगलैन्ड को यूरोपीय राजनीति मे एक महत्वपूर्ण देश वना दिया ।

प्रश्न ७—रोमन चर्च से इंगलैण्ड के झगड़े के क्या कारण थे ?

अथवा

प्रश्न ८—किन वातों में इंगलैन्ड का चर्च, रोम के चर्च से विलग है ? इस अलग होने के क्या परिणाम थे ?

अथवा

प्रश्न ९—वे कौन सी विभिन्न स्थितियां थीं जिनके द्वारा इंगलैन्ड का चर्च, रोम के चर्च से अलग हुआ ?

उत्तर—भूमिकाः—

इंगलैन्ड का चर्च, रोम के चर्च से निम्नलिखित वन्धनो मे सम्वन्धित थाः— प्रथमतः, पोप उस कैथोलिक चर्च का सिद्धान्त रूप मे नेता था जिसका समस्त इंगलैन्ड अनुयायी था । दूसरे, अँग्रेजी धार्मिक न्यायालयो की अपीलें (प्रार्थनाएँ) सदैव से रोम जाती थी । तीसरे, वडे-वड़े टैक्स जो कि दसवें और पहले फल कहलाते थे, पुजारियों द्वारा चुकाए जाते थे । चौथे, पोप ने वास्तविक रूप में इङ्गलिश विशपों और वहुत से अंग्रेज पादरियो को नियुक्त किया था । ये सभी श्रंखलाएं, हैनरी अष्टम के शासन काल मे धुल गयी । इङ्गलैन्ड का चर्च, रोम से अलग हो गया ।

अलग होने के कारण—

हैनरी तथा उसकी पत्नी—हैनरी और उसकी पत्नी कैथरिन उसको एक साथ वनाये रखने में वहुत कम अर्थ रखते थे । पत्नी, स्पेनियर्ड थी । उसे फ्रान्स

की मित्रता पसन्द न थी जो कि हैनरी ने की थी। अतः उसने बुद्धि की अपेक्षा अधिक उत्सुकता से किंग को पीड़ा दी। फलतः हैनरी अपनी पत्नी से निराश था। उस पत्नी से कोई सन्तान भी न हुई थी जो उसका उत्तराधिकारी बनती। प्रत्येक एक दूसरे से उदासीन और विरोधी था।

एनी बॉलीन (Anne Boleyn)—हैनरी के विचार यकायक नए विवाह की दिशा मे बदल गए। वह एनी बॉलीन नाम की एक दरबार की महिला के प्रेम में पड़ गया। एनी से विवाह करने के लिए यह आवश्यक था कि कैथैरिन को तलाक दिया जाय। शीघ्र ही उसे एक टैकनीकल आधार मिल गया। कैथेरिन उसके भाई आर्थर की विधवा रह चुकी थी। उसके भाई की उससे शादी, पोप द्वारा किए गए वितरण द्वारा हुई थी। हैनरी सोचता था कि वितरण अनुचित था। पोप द्वारा उसका विवाह रद्द घोषित किया जा सकता था।

पोप से प्रार्थना—स्वाभाविक मार्ग, पोप से प्रार्थना करना था। ऐसा हैनरी ने सामान्य परिस्थितियो मे किया, संभवतः पोप ने इसमे कोई कठिनाई भी न उत्पन्न की होती। परन्तु परिस्थितियाँ सामान्य न थी। पोप को स्पेन के राजा चार्ल्स द्वारा रोम में बन्दी बना लिया गया था। इटली मे सम्राट चार्ल्स सर्व-शक्तिमान था। अतः पोप को डर था कि यदि चार्ल्स की चाची कैथैरिन को तलाक देने पर वह नाराज हो जायगा। साथ ही वह हैनरी और फ्रान्स के फ्रैन्किस को भी रुष्ट न करना चाहता था। अतः उसने दोनो को प्रसन्न रखने का और कुछ भी न करके समय गुजारने का प्रयत्न किया। अतः उसने कार्डिनल कैम्पैगियो (Cardinal Campeggio) को इङ्गलैन्ड में वौल्से के साथ मामला तय करने के लिए भेजा। रानी कैथैरिन ने प्रार्थना की कि मुकद्दमा रोम में चले। पोप ने सन् १५२९ मे मुकद्दमा मँगा लिया। इससे हैनरी बहुत अधिक रुष्ट हो गया। उसने इङ्गलैन्ड मे पोप के अधिकार को समाप्त कर देने का निश्चय किया। उसने रोम के चर्च से सारे सम्बन्ध विच्छेद कर लेने का संकल्प कर लिया।

सुधारक संसद (Reformation Parliament)—

पोप से संघर्ष मे, हैनरी ने इङ्गलैन्ड को अपनी पीठ पर बनाए रखने की

आवश्यकता अनुभव की। अतः उसने सन् १५२६ मे एक संसद सभा बुलाई। उसने इसका उपयोग कैथैरिन का तलाक क्रियान्वित करने के साधन के रूप में किया। यह पार्लियामेन्ट (संसद) सुधारक ससद (रिफोर्मेशन) पार्लियामेन्ट कहलाती है। यह सात वर्ष चलती रही और इसने इङ्गलिश इतिहास की सबसे बड़ी क्रान्तियो में से एक क्रान्ति को जन्म दिया रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट ने बहुत से कानून बनाए। इनके द्वारा इङ्गलैन्ड मे पोप का अधिकार नष्ट हो गया। इंगलिश चर्च, रोमन चर्च से पूर्णतः अलग हो गया। हैनरी ने तब ऐनी बोलेन से शादी कर ली। पार्लियामेन्ट ने इस विवाह की पुष्टि प्रथम राजवंशी उत्तराधिकारी कानून (First Royal Succession Act) पास करके कर दी। इस कानून के द्वारा हैनरी की कैथैरिन से शादी रद्द घोषित कर दी गई। इस प्रकार रोम के चर्च का विरोध पूर्ण हो गया।

रोम के चर्च से विलगीकरण की ओर ले जाने वाली सीढ़ियाँ—

निम्नलिखित सीढियाँ अथवा स्थितियाँ इंगलैंड के चर्च को रोम के चर्च से अलग ले गईं :—

पहली स्थिति—सर्व प्रथम हैनरी समस्त धार्मिक सन्तो को अपने नियन्त्रण मे ले आया। वह उनको यह समझाना चाहता था कि उनका नेता एवं स्वामी पोप नही बल्कि वह है। उसने उन पर बड़ा-बडा जुरमाना किया। कारण देते हुए उसने कहा कि उन्होने प्रेम्युनिर के स्टेचुट (Statute of Praemunire) को तोड़ा था क्योकि उन्होने वौल्से को पापल लीगेट (Paple Legate) की मान्यता दी थी। उसने तब दीक्षांत समारोह (Convocation) मे एकत्रित पादरियो के प्रतिनिधियो को विवश किया कि वे उसे चर्च और पादरियो का सर्वोच्च नेता कह कर सम्बोधित करें। उन्होने ऐसा किया भी परन्तु बड़े साहस-पूर्वक जोड़ दिया "जहाँ तक कि क्राइस्ट का कानून अनुमति देगा।" हैनरी ने तब उन्हे एक उस दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया जो कि 'पादरियों का आत्मसमर्पण' (Submission of the clergy) कहलाता है। इस पर हस्ताक्षर करके वे इस बात पर सहमत हो गए कि बिना राजा की आज्ञा

के वे कोई नियम न बनावेंगे। इस प्रकार चर्च की कानून बनाने की शक्तियाँ, राज्य के नियन्त्रण में कर दी गई। इस सब कानूनो के बनाने का अभिप्राय पादरियों को भयभीत करना था और इस प्रकार पोप पर अप्रत्यक्ष दबाव डालना था।

दूसरी स्थिति—(Second Stage)—(क) किंग के एजेन्ट्स रोम के हैनरी की कैथोरिन से हुई शादी को रद्द कराने में व्यस्त थे। परन्तु उन्होंने कोई प्रगति नही की। अतः सन् १५३२ में रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट ने ऐनेट्स का कानून (Act of Annates) पास कर दिया। इस कानून द्वारा वे भुगतान, जैसे कि ऐनेट्स और पीटर पैन्स, जो कि पोप को किए गए थे वे उसे वास्तव मे न दिए जा सके। वे राजा को किए जाने थे। ऐनेट्स अथवा प्रथम फल, नए लाभो की पहली वर्ष की आय थी। उनका भुगतान पोप को पादरियों द्वारा किया गया। पीटर पैन्स का भुगतान जन सामान्य द्वारा किया गया।

(ख) सन् १५३३ में रिफॉर्मेशन पार्लियामेन्ट ने प्रार्थनाओ का कानून (Act of Appeals) पास कर दिया। इस कानून के द्वारा रोम मे की जाने वाली सारी अपीलो, वसीयत, विवाह अथवा तलाक चाहे भविष्य के लिए हो अथवा पहले ही क्रियान्वित हुआ हो, की मना हो गई। इसके बाद मे अपीलो की सुनवाई अपर हाउस ऑफ कन्वेन्शन (Upper House of Convention) मे जाने लगी। हैनरी उन पर नियन्त्रण रख सकता था।

(ग) तब सन् १५३५ मे पार्लियामेन्ट ने सर्वोच्चता का कानून (Act of Supremacy) पास किया। इस कानून के द्वारा राजा, इंगलेंड के चर्च का सर्वोच्च नेता घोषित हुआ। लोगो से एक कसम ली गई कि वे किसी भी अन्य अधिकारी की आज्ञा मानने को मना करे। सर्वोच्चता के कानून द्वारा हैनरी ने इंगलैन्ड के चर्च की पृथ्वी पर सर्वोच्च नेता का पद (Supreme Head on earth of the church of England) प्राप्त किया।

अन्तिम दो कानूनो ने इंगलैन्ड मे पोप के अधिकारो का अन्त कर दिया। उन्होने इंगलेन्ड के चर्च का रोम के चर्च से पृथक्कीकरण भी पूर्ण कर दिया।

पृथक्कीकरण के परिणाम

पृथक्कीकरण के बहुत से परिणाम हुए। प्रथमतः, पोप के अधिकारो को

फेंक कर, हैनरी ने इगलैन्ड का चर्च स्वतन्त्र वना दिया। दूसरे, इंगलैन्ड का चर्च राष्ट्रीय हो गया। यह अपनी ही लाइनो पर विना किसी विदेशी हस्तक्षेप के विकसित होने लगा। तीसरे, इसने अपने पहले महत्व को खो दिया। यह राज्य में राज्य नहीं रहा। यह क्राउन के अन्तर्गत हो गया। चौथे, पृथक्कीकरण ने क्राउन को बहुत बड़ी शक्तियाँ दे दी। ऐसी शक्तियाँ उसे कभी न मिली थीं।

४—थौमस वॉल्से

प्रश्न १०—इङ्गलिश इतिहास में वॉल्से का क्या महत्व है ?

अथवा

प्रश्न ११—क्या आप वॉल्से को एक महान राजकार्य-कुशल व्यक्ति मानते हैं ? उसके द्वारा की गई इङ्गलैन्ड की सेवाओं का मूल्यांकन करिए।

उत्तर—वॉल्से का प्रारम्भिक कार्य—

हैनरी अष्टम के शासन काल के प्रथम वीस वर्षो मे इङ्गलैंड का सवसे प्रमुख व्यक्ति थांमस वॉल्से था। यह कुशल राजकुशल व्यक्ति सन् १४७१ मे इप्सविच (Ipswich) मे जन्मा था। उसका पिता कोई पद वाला व्यक्ति न था। परन्तु उसने अपने पुत्र को अपनी शक्ति के अनुसार सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दी। उसने उसे मॅगडेलन कालिज (Magdalen College) ऑक्सफोर्ड भेजा। चौदह वर्ष की अवस्था में वह आर्ट का स्नातक (Bachelor of Arts) हो गया। वाद मे वह मॅगडेलन कॉलिज मे ही फैलो और ट्यूटर वना दिया गया। उसका ट्यूटर का स्थान होने के कारण उसकी मित्रता डॉरसैट के मारक्वेस (Marquess of Dorset) से हो गई, जिसके कि वच्चे कॉलिज मे पढ़ते थे। उसके द्वारा वॉल्से हैनरी अष्टम के परिचय मे आया। राजा ने उसके प्रति आकर्षण अनुभव किया। अतः उसने उसे अपनी सेवा मे ले लिया।

धर्म और राज्य में वॉल्से प्रमुख व्यक्ति हो गया—

हैनरी अष्टम के नीचे, वॉल्स का उत्थान वड़ी द्रुत गति से हुआ। व्यापार के लिए उसकी योग्यता वहुत महान थी। वह वड़ा परिश्रमी था। उसे राजा के विचारों को आगे वढाने में कोई शंका ही न होती थी। हैनरी

अष्टम के कार्य-काल मे उसने और अधिक प्रगति की। सन् १५१५ में वह चान्सलर बना दिया गया। अगले वर्ष पोप ने उसे कार्डिनल बना दिया। सन् १५१७ मे, हैनरी की विशेष प्रार्थना पर, पोप ने उसे पैपल लीगेट (Papal Legate) बना दिया। इस प्रकार धार्मिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार की प्रमुख शक्ति वॉल्से के हाथो में संगठित हो गई जो कि सम्राट का मुख्य मंत्री था। यह क्रम चौदह वर्ष तक चलता रहा। अतः लोग यह मानने के अभ्यस्त हो गए कि वॉल्से, धर्म तथा शासन (राजनीति) दोनो में प्रमुख व्यक्ति है।

वॉल्से की योजनाएँ—

वॉल्से के समक्ष तीन उद्देश्य थेः—(१) सम्राट की शक्ति को बढ़ाना, जैसा कि हैनरी सप्तम ने किया था। (२) कुछ छोटे छोटे मठो (Monastries) को ससाप्त करके और उनकी आय को नए स्कूलों एवं कालिजो की स्थापना मे लगा कर, जहां कि नए ज्ञान की शिक्षा दी जा सके, वह इङ्गलैन्ड के चर्च की स्थिति उन्नत करना चाहता था और (३) यदि संभव हो तो पोप बनना ताकि चर्चो के सामान्य सुधार पर नियन्त्रण प्राप्त हो।

हम यदि चाहे तो इन योजनाओ को महत्वाकाक्षी कह सकते है। परन्तु वे निश्चित ही महापुरुषो के विचार थे। यदि वे कार्य रूप मे परिणित किए गए होते तो इंगलैन्ड और यूरोप दोनो का ही एक भिन्न इतिहास हुआ होता।

वॉल्से की विदेश योजनाएँ अथवा नीति—

वाल्से ने देखा कि वह अपनी तीसरी योजना का हैनरी की इस इच्छा से समायोजन कर सकता था कि महाद्वीप पर उसका (हैनरी का) महत्व हो। अतः इस दिशा मे उसने किंग की इच्छाओ को आगे बढ़ाया। सन् १५१९ मे सम्राट मैक्जीमिलियन की मृत्यु हुई। साथ-ही एक नया चुनाव हुआ। सात व्यक्तियों द्वारा सम्राट चुना गया, वे सात व्यक्ति थे—मैनिज़ का आर्च विशप (The Archbishop of Maniz), कोन (Koln) और ट्रायर (Trier) तथा बोहमिया (Bohemia), सैक्सोनी (Saxony), ब्रैन्डैनवर्ग (Brandenburg) तथा पैलेटिनेट (Palatinate) के चुनाव कर्ता। इन्होने

जर्मनी का राजा चुना। उसे पोप के हाथों से राजतिलक मांगने का अधिकार था। जब उसे यह प्राप्त हो चुका तो उसे पश्चिम के सम्राटों का उत्तराधिकारी समझा गया।

स्पेन का चार्ल्स, फ्रांस का फ्रेन्सिस (Francis) तथा इङ्गलैन्ड का हैनरी सब उम्मीदवारो के रूप मे आगे आए। चुनाव करने वालो ने स्पेन के चार्ल्स को चुना। इसका परिणाम यह हुआ कि स्पेन, हालैन्ड, नीदरलैन्ड, जर्मनी, आस्ट्रिया और नेपल्स सब एक साथ संगठित होकर एक विस्तृत साम्राज्य के रूप में आए। अब यह इटैलियन प्रश्न निश्चित था कि फ्रेन्सिस एवं चार्ल्स के बीच युद्ध हो। यह अनिश्चित था कि हैनरी किस पक्ष में सम्मिलित होगा। दोनों ही पक्षो ने प्रार्थनाएं की। फ्रेन्सिस ने उसका स्वागत सत्कार 'सुनहले वस्त्र के क्षेत्र' (Field of the cloth of gold) पर किया। चार्ल्स अपनी चाची केथेरिन के पति से मिलने इङ्गलैन्ड आया। आखिरकार हैनरी और चार्ल्स की रिश्तेदारी तथा फ्लेमिश (Flemish) व्यापार के महत्व ने इंगलैन्ड को स्पेन का साथ देने के लिए जीत लिया।

कुछ समय तक हैनरी उस पर कायम रहा। यहाँ तक कि उसने सन् १५२२ और १५२३ मे छोटी छोटी टुकड़ियाँ भी फ्रान्स को भेजी। परन्तु दो घटनाओ ने इंगलैन्ड की नीति बदल दी। चार्ल्स, वॉल्से के लिए पापैसी (Papacy) प्राप्त करने मे असफल हो गया। दूसरे, चार्ल्स ने पैविया के युद्ध (Battle of pavia) में फ्रेन्सिस को पूर्णतः परास्त कर दिया। अतः ऐसा खतरा मालूम होने लगा कि कही ऐसा न हो कि यूरोप पूरी तरह उसके नियन्त्रण मे चल जाय। हैनरी पंचम के समय में फ्रास की कमजोरी, इंगलिश किंग्स के सिंहासन के अधिकार के लिए लड़ना एक उचित कारण मालूम हुआ होता। परन्तु वॉल्से ने ऐसा नही सोचा। वह पहला अंग्रेज राजनीतिज्ञ था जिसने कि 'शक्ति-समतोलन' (Balance of Power) के विचार का अनुमान लगा लिया। यह इस अर्थ मे था कि यदि कोई एक यूरोपीय राज्य ऐसे चिन्ह प्रगट करता है जिससे कि ऐसा मालून हो कि वह किसी दूसरे की स्वतन्त्रता को ललकार रहा है तो उन सबको अपनी संगठित शक्ति से उस दुर्बल राज्य के पक्ष मे मिल जाना चाहिए। इस नीति के अनुसार, हैनरी और वॉल्से,

फ्रान्स के साथ सम्मिलित हो गए। अतः शीघ्र ही चार्ल्स फ्रेन्सिस को छोड़ दिया।

उसकी घरेलू नीति—(Domestic policy)—

घरेलू (आन्तरिक) मामलो मे वॉल्से का उद्देश्य, किंग की शक्ति को बढ़ाना था। अतः उसने बिना पार्लियामेन्ट बुलाए शासन करने का प्रयत्न किया। मुश्किल से ही कभी पार्लियामेन्ट बुलाई गई। उसने राजा को उसकी आवश्यकतानुसार धन दिया। जबरन कर्जा एवं कर लगा कर रुपया बढ़ाया गया। इससे वह बहुत बदनाम हो गया। लोग उससे घृणा करने लगे।

उसकी धर्म सम्बन्धी नीति (Church Policy)—

वॉल्से के प्रमुख विचारो मे से एक विचार ऐसा लगता है कि इंगलैन्ड के चर्च मे सुधार करना। वह उसमे (धर्म नीति मे) इस प्रकार सुधार करना चाहता था कि महान प्रौटैस्टेन्ट विद्रोह जर्मनी से लेकर इंगलैन्ड तक न फैले। ऐसा वह धार्मिक पुजारियो एवं विद्वानो को नए प्रकार की शिक्षा देकर कर सकता था। वह पोप से अधिकार प्राप्त कर चुका था कि कुछ छोटी मौनस्ट्रीज (monastries) को वह समाप्त कर दे। इस प्रकार उसने जो धन बचाया उससे उसने इप्सविच (Ipswich) मे एक नया स्कूल तथा ऑक्सफोर्ड में एक नये कॉलिज की स्थापना की। इन शिक्षा संस्थाओ की स्थापना ने एक बात स्पष्ट सिद्ध कर दी। वह प्रौटैस्टैन्टिज्म (Protestantism) के खिलाफ पुरानी फैशन के भिक्षुओ (Monks) के तरीको से न लड़ना चाहता था बल्कि उन व्यक्तियो के द्वारा जो कि अच्छे स्कूलो और कॉलिजों में शिक्षा प्राप्त किए हो।

उसका पतन—

वॉल्से का पतन का प्रमुख कारण यह था कि वह पोप से कैथेरिन के तलाक को प्राप्त करने मे असमर्थ रहा। वॉल्से तलाक के पक्ष मे था। वह कहता था, "यदि मैं किंग को भली प्रकार विवाहित और चर्च को सुधरा हुआ देख सकता तो मैं खुशी से मर सकता था।" परन्तु उसकी नीति कुछ अस्पष्ट सी है। क्या यह उसकी वास्तविक इच्छा थी कि कैथेरिन को तलाक मिल जाय? अथवा वह ऐसा केवल हैनरी को प्रसन्न करने के लिए कहता था। किसी भी

प्रकार, वॉल्से ने पोप को इस वात के लिए राजी करने का प्रयत्न अवश्य किया कि विवाह को रद्द कर दिया जाय। पोप ने इंगलैन्ड के लिए कार्डिनल (Cardinal) भेजा कि वह वॉल्से के साथ तलाक के प्रश्न का मामला ले। कैथेरिन ने रोम को अपील की। इससे तुरन्त ही वॉल्से का पतन आरम्भ हुआ। हैनरी ने समझा कि यदि उसने चाहा होता तो उसने तलाक घोषित कर दिया होता। निसन्देह वॉल्से ने ऐसा कर दिया होता यदि किंग फ्रैन्च राजकुमारी से शादी करने को राजी होता। परन्तु हैनरी के साथ तो या तो ऐनी (Anne) थी या फिर अन्य कोई नही। वह वॉल्से से अत्यधिक रुष्ट हो गया। अतः उसे दरबार से एवं उसके पद से च्युत कर दिया। उसे आज्ञा दी गई कि वह यार्क (York) में आर्चविशपरिक (Archbishopric) विश्राम ले। वहाँ वह इतना लोकप्रिय हो गया कि हैनरी उससे ईर्ष्या करने लगा। अतः उस पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया। मुकद्दमा चलाने उसे लन्दन बुलाया गया। परन्तु वह भाग्यशाली था कि मार्ग मे ही सन् १५३० मे मर गया।

५—एलिजाबेथ

प्रश्न १२—एलिजाबेथ की विदेश नीति का विवरण दीजिए।

अथवा

प्रश्न १३—इंगलैन्ड को विदेशी खतरों से बचाने के लिए एलिजाबेथ प्रथम द्वारा क्या कदम उठाए गए ?

अथवा

प्रश्न १४—एलिजाबेथ की विदेश नीति उसके पिता एवं दादा की नीति से किस प्रकार भिन्न थी स्पष्ट करो।

उत्तर—भूमिका (Introduction):—

एलिजाबेथ की विदेश नीति को शान्ति नीति कहा जा सकता है। वह जानती थी कि शान्ति की प्रत्येक वर्ष इङ्गलैन्ड को शक्तिशाली और धनी देश बनाएगी। अतः उसकी विदेश नीति का उद्देश्य इङ्गलैन्ड को युद्ध से अलग रखना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने अन्य

देशों से सदैव अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयत्न किया। उसके समक्ष एक बड़ा खतरा था। रोमन कैथोलिक देश उसके विरुद्ध संगठित हो सकते थे। अतः उसकी विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य इन देशो को संगठित न होने देना था। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने स्पेन और फ्रांस के बीच चल रही प्रतिद्वन्दता का लाभ उठाया। उसने उन दोनो को एक दूसरे के विरुद्ध कर दिया। इङ्गलैन्ड के विरुद्ध उन्हे संगठित होने देने से रोकने के लिए उसने भरसक प्रयत्न किया।

एलिजावेथ ने इन दोनों देशो की आन्तरिक कठिनाइयों का भी लाभ उठाया। फ्रान्स में कैथौलिक और प्रौटेस्टैन्ट्स जो कि हुगनॉट्स (Huguenots) कहलाते थे, के बीच सिविल वार हो रही थी। एलिजावेथ ने ह्यूगनॉट्स को प्रत्येक प्रकार की सहायता दी ताकि वे लड़ना जारी रख सकें। इस प्रकार उसने फ्रान्स को घरेलू झगड़ो मे व्यस्त रखा। इसके परिणामस्वरूप वह इङ्गलैन्ड को हानि पहुँचाने की सोच ही न सका।

वस्तुतः उसी प्रकार की नीति उसने स्पेन के साथ अपनाई। वह देश नीदरलैन्ड्स (Netherlands) के विद्रोहियों को दवाने में व्यस्त था। एलिजावेथ ने चुपचाप विद्रोहियो को सहायता दी ताकि वे अपना विद्रोह जारी रख सके। इस प्रकार उसने स्पेन को व्यस्त रखा।

संक्षेप में, एलिजावेथ ने फ्रान्स और स्पेन की मुसीवतों का लाभ उठाया। इस प्रकार उसने इङ्गलैन्ड को विदेशी खतरों से सुरक्षित रखा। इस प्रकार उसकी विदेश नीति निश्चय ही उसके पिता एवं दादा की विदेश नीति से भिन्न थी। अब हम उसकी विदेश नीति का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

एलिजावेथ के विदेशी शत्रु—

एलिजावेथ के तीन विदेशी शत्रु थे फ्रान्स, स्पेन और स्काटलैन्ड। फ्रान्स पर फ्रान्सिस द्वितीय शासन करता था। स्पेन पर फिलिप द्वितीय शासन करता था। स्काट्स की क्वीन, मैरी स्कॉटलैंड की शासक थी। वह अंग्रेजी राजगद्दी को छीन लेना चाहती थी।

एलिजाबेथ और फ्रांस—

प्रारम्भ में फ्रान्सिस द्वितीय, एलिजावेथ का विरोधी था। एलिजावेथ को

हटाने के लिए उसने अपना भरसक प्रयत्न किया। ऐसा करने मे उसका उद्देश्य मैरी (Mary) को इंगलैंड की गद्दी पर जमाना था जो कि स्कॉट्स की क्विन थी। परन्तु एलिजावेथ के सौभाग्य से सन् १५६० में फ्रान्सिस की मृत्यु हो गई। फ्रान्स मे प्रमुख शक्ति गाइज (Guise) के परिवार के हाथों में पड़ गई। स्काट्स की क्विन, मैरी की माँ, मैरी इसी परिवार की थी। गाइज परिवार ने मैरी, स्काट्स की क्विन के, इंगलैंड के अधिकारों को ऊँचा किया। इस समय फ्रान्स मे कैथोलिक्स तथा ह्यूगनॉट्स के बीच सिविल वार (Civil war) हो रही थी। ऐलिजावेथ ने अपना असन्तोष दिखाने के लिए ह्यूगनॉट्स को सहायता दी थी। अतः ह्यूगनॉट्स अथवा फ्रेंच प्रोटेस्टेन्ट्स मे युद्ध चलता रहा। इससे कैथोलिक्स व्यस्त रहे। वे उसके विरुद्ध खास भाग न ले सके।

उसी समय, एलिजावेथ ने राजसी परिवार को यह वहाना करके प्रसन्न रखा कि वह दोनों फ्रेन्च राजकुमारो—अन्जु का ड्यूक (Duke of Anjou) तथा एलिन्यौन का ड्यूक (Duke of Alenoon) को प्रेम करती है। यहाँ तक कि उसने अलग अलग एक के वाद दूसरे को अपनी शादी के प्रस्ताव तक भेजे। प्रेम के ये अभिनय एलिजावेथ की फ्रान्स के प्रति विदेश नीति के कोने के पत्थर थे। एलिजावेथ के पक्ष मे एक और बात थी। फ्रान्स का शासक परिवार कैथोलिक था। परन्तु उसे स्पेन के फिलिप द्वितीय का इम्पीरियलिज्म पसन्द न था। अतः इगलैन्ड के विरुद्ध फ्रान्स और स्पेन कभी संगठित न हुए।

एलिजावेथ और स्पेन—

स्कॉट्स की क्विन मैरी ने इंगलैंड की राजगद्दी का दावा किया। उसके लक्ष्य को असफल करने के लिए, एलिजावेथ ने स्पेन के फिलिप द्वितीय के साथ अच्छे सम्वन्ध रखने का प्रयत्न किया; उसने अपने शासन के सारे प्रारम्भिक वर्षों मे ऐसा ही करने का प्रयत्न किया। यहाँ तक कि उसने उससे शादी करने का प्रस्ताव तक उसके पास भेजा। दूसरी ओर, फिलिप, फ्रान्स से ईर्ष्या रखता था। अतः उसने एलिजावेथ को प्रत्येक सहायता दी। परन्तु धीमे धीमे क्रमशः

इंगलैन्ड और स्पेन के बीच के मैत्री सम्बन्धो का अन्त हो गया। इसके दो प्रमुख कारण थे। धार्मिक और व्यापारिक।

फिलिप, रोमन कैथोलिक धर्म का सबसे कट्टर समर्थक था। दूसरी ओर, एलिजाबेथ, प्रोटैस्टैन्ट धर्म की चैम्पियन थी। फिलिप ने इंगलैन्ड मे प्रोटैस्टैन्टिज्म को नष्ट करने का निश्चय किया। अतः उसने इंगलैन्ड के रोमन कैथोलिक्स को एलिजाबेथ की हत्या करने के लिए उकसाया। अपने दाव पर ऐलिजाबेथ ने नीदरलैन्ड के विद्रोह का लाभ उठाया। वहां लोगो ने फिलिप की सख्त कार्यवाहियों के विरुद्ध विद्रोह किया था। एलिजाबेथ ने विद्रोहियों को विद्रोह जारी रखने के लिए सहायता दी।

फिलिप दावा करता था कि वह वैस्ट इन्डीज, केन्द्रीय और दक्षिणी अमेरिका का स्वामी था। उनके साथ अंग्रेजी जहाजो को व्यापार करने की अनुमति न थी। अतः अंग्रेजी समुद्री डाकुओं ने, समय समय पर अमेरिका के लिये समुद्र यात्राएँ की। उन्होने स्पेनिस अमेरिका पर आक्रमण किया। उन्होने स्पेनिस जहाजो को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। उन्होने स्पेनिस खजाने को लूटा।

उपरोक्त कारणो ने स्पेन और इंगलैन्ड के सम्बन्धो को बहुत बुरा कर दिया। फिलिप को बहुत गुस्सा आया। उस समय तो उसके क्रोध की सीमा ही न रही जब कि स्काट्स की क्विन मैरी पर इंगलैन्ड मे मुकद्दमा चला। वह कैथोलिक थी और फिलिप भी कैथोलिक ही था। उसने एलिजाबेथ को दन्ड देनी की सोची। अतः सन् १५८८ में उसने इंगलैन्ड विजय करने के लिए स्पेनिस आर्मेडा (Spanish Armada) भेजा। आर्मेडा पराजित हुआ। इससे इंगलैन्ड को यूरोप की राजनीति मे महत्वपूर्ण स्थान मिल गया। इंगलैन्ड और स्पेन का युद्ध आर्मेडा की पराजय के बाद भी चलता रहा। परन्तु स्पेन, उस इंगलैन्ड के आधिपत्य को ललकारने मे असफल हो गया जो कि समुद्रो पर शासन करने लगा।

एलिजाबेथ और स्काटलैन्ड—

स्काट्स की क्विन मैरी, एलिजाबेथ की कठोर शत्रु थी। यदि एलिजाबेथ की मृत्यु बिना सन्तान उत्पन्न किए हो जाती तो इंगलैन्ड की राजगद्दी की उत्तराधिकारी वही होती। उससे एक और भी खतरा था। वह न केवल

स्काटलैन्ड की ही रानी (क्विन) थी वल्कि फ्रान्स की भी क्विन थी। उसका पति, फ्रान्सिस द्वितीय उस देश का किंग था। गाइज (Guise) परिवार, जिसकी कि मैरी की मां सदस्य थी मैरी को गद्दी पर बैठालना चाहता था। मैरी सन् १५६१ मे विधवा हो गई। वह इंगलैन्ड वापिस आई, जहाँ उसकी मां, गाइज की मैरी रीजेन्ट थीं।

स्काटलैंड मे, स्काट्स की क्विन मैरी ने कुछ भयंकर भूलें की। वे भूलें उसके विनाश का कारण सिद्ध हुईं। सन् १५६५ मे उसने हैनरी लार्ड डार्नले (Henry Lord Darnley) से शादी करली। वह एक कैथोलिक था। अतः प्रौटेस्टैन्ट सरदारो ने उसके विरुद्ध खुला विद्रोह कर दिया। किसी प्रकार विद्रोह शान्त कर दिया गया। डार्नले, मैरी के प्रायवेट सैक्रेटरी रिजिओ, के प्रति ईर्ष्यालु हो गया। मैरी ने अपने पति को क्षमा नही किया। उसने बोथ-वैल (Both well) द्वारा उसके (पति की) हत्या करवा दी, जिससे कि उसने विवाह कर लिया। स्काटलैंड के लोग एलिजावेथ को क्षमा न कर सके। सन् १५६७ मे उन्होने उसे भाग जाने को विवश किया। अगले वर्ष वह इंगलैंड उड़ गई। उसने एलिजावेथ से प्रार्थना की कि वह उसे सुरक्षित फ्रान्स भेज दे। एलिजावेथ अपने प्रतिद्वन्द्वी को इस तरह न जाने दे सकती थी। अतः उसने उसे कैद करा लिया।

इंगलैंड मे मैरी, रोमन कैथोलिक योजनाओं का एक केन्द्र हो गई। यद्यपि वह उनमे घिरी हुई थी फिर भी एलिजावेथ ने उस पर मुकद्दमा नही चलाया। आखिर कार वैबिंगटन प्लोट (Babington plot) के पश्चात, एलिजावेथ ने उस पर मुकद्दमा चलाने की आज्ञा प्रेपित की। इस प्रकार सन् १५६७ मे, स्कॉट्स की क्विन मैरी पर मुकद्दमा चला। उसकी मृत्यु के पश्चात्, एलिजावेथ का सवसे वडा शत्रु समाप्त हो गया।

उपसंहार—

एलिजावेथ की विदेश नीति परिस्थितियो की आवश्यकता के अनुसार वनी। कभी उसने फ्रान्स को मित्र वना लिया तो कभी स्पेन को। उसने एक दूसरे को आपस मे भिड़ाने का भी प्रयत्न किया। ऐसा करने के लिए उस पर आरोप भी लगा। परन्तु इंगलैन्ड को खतरे से सुरक्षित रखने के लिए उसके

सामने इसके अलावा और कोई उपाय भी न था। अपनी नीति से उसने इंगलैंड को युद्ध से बचाए रखा। यही कारण था कि देश विभिन्न क्षेत्रों मे उन्नति कर सका। अतः उसकी नीति को न्याय संगत कहा जा सकता है। यह सदैव सफल हुई।

प्रश्न १५—एलिजाबेथ की नीति में उसका चरित्र कहाँ तक प्रतिबिम्बित था ?

उत्तर—कुछ अर्थों मे एलिजाबेथ हैनरी का बहुत कुछ प्रतिबिम्ब था। अपने पिता की भाति ही उसका शाही मिजाज, निडर साहस, आश्चर्यजनक आत्म-विश्वास, शक्ति की लालसा, दृढ संकल्प और स्वार्थ भरा हुआ था। अपनी मा से उसने अत्यधिक चपलता, चाटुकारिता के प्रति प्रेम, हस्तक्षेप करने वाली प्रकृति, ओछापन और घमंड वंशानुक्रमण में प्राप्त किया था। अपने जीवन के अन्त तक वह असाध्य चोचले वाली रही।

यद्यपि उसमे हैनरी का दृढ सकल्प और एनी (Anne) का ओछापन विद्यमान था परन्तु इन मूल-प्रवृतियो ने उसकी नीति—विदेशी अथवा घरेलू को कभी प्रभावित न होने दिया। जब भी अवसर की मांग हुई उसने कूटनीतिज्ञो का शान्त और दूरदर्शितापूर्ण स्वभाव अपनाया। वह स्टील की भांति कठोर और भावुकता रहित बन गई। अपने कार्यो में वह अक्सर अस्थिर रहती। एक निश्चित मार्ग अपनाने के दृढ संकल्प और निश्चय में वह पीछे थी। आखिरी क्षण तक कोई निर्णायक कदम उठाने मे वह कांपती। वह रूढ़िवादी मार्ग कभी न अपनाती। वह पहली तह की अवसरवादी थी। उसकी ये सब मूल प्रवृतियां उसकी नीति मे प्रतिबिम्बित होती है। यहां हम नीचे उनका विश्लेषण करते हैं।

विदेशी मामलो मे उसने काफी समय तक हिलाने वाली नीति का अनुकरण किया। उसने कोई निर्णायक कदम नही उठाया। उसकी नीति वस्तु-स्थिति पर निर्धारित होती थी। महत्वाकांक्षी योजनाओ को उसने कभी आदर नही दिया। उसने सदैव सावधानीपूर्ण बुद्धिमता से कार्य किया। वह अपने ही-शान्त, दूरदर्शितापूर्ण निर्णय से पथ-प्रदर्शित होती थी। इसीलिए वह समय से पूर्व स्पेन के साथ युद्ध के झगड़े में नही पड़ी, यद्यपि कि उसके

मन्त्रियों ने उसे ऐसा करने की सलाह दी थी। उसे उनमें विश्वास था, परन्तु इससे भी अधिक उसे स्वयं पर विश्वास था। अपनी तेज दूरदर्शिता से वह भविष्य का अनुमान लगा सकी। अतः वह इङ्गलैंड के लिए सबसे सुरक्षित मार्ग का निर्णय करने के लिए वाछित बुद्धि मे पीछे नही रही। अपनी अनिश्चितता और अस्थिरता के पतले आवरण (घूंघट) के पीछे उसमे उद्देश्य की एक स्थिरता थी। उसने अपने समय को एक सुयोग्य अवसरवादी की तरह व्यतीत करते हुए प्रतीक्षा की और जैसे ही उचित समय आया उसने कार्य किया। एक वार उसने एक नीति पर अपना मस्तिष्क स्थिर कर लिया, वह उस निश्चय पर प्रत्येक प्रकार से आरूढ़ रही। कोई भी शक्ति भले ही वह कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, कोई भी लालच भले ही कितना ही वड़ा क्यो न हो उसे उससे एक इंच भी न डिगा सका।

अपनी धार्मिक नीति में वह लगभग वीच के रास्ते का अनुकरण करती थी। उसका उद्देश्य धार्मिक राज-विप्लव का अन्त करना था। उसने इस विचार को कभी स्थान नही दिया कि उसे इङ्गलैंड की चर्च की कोई जाति एक रूढिवादी ढंग से स्थापित करनी है। सुधारवाद के विरुद्ध शक्तियों के साथ अपने लम्बे संघर्ष में वह कभी नही डगमगाई अथवा हिली। सबसे अधिक मुसीवतों तक के समय मे, उसने अपना उत्साह कम नही होने दिया और मानसिक संतुलन नंही विगड़ने दिया। वह सदैव शान्त और योजनावान रही।

पार्लियामेन्ट से उसके जो सम्वन्ध रहे वे उसके चरित्र की विशेषता की ओर इंगित करते हैं। सदस्यो के प्रति उसका व्यवहार अपने पिता के शाही ढंग की भांति ही रहता। केवल एक वार नही, बल्कि अनेकों बार उसने उनकी हस्तक्षेप की नीति के लिए उनको रगड़ा। परन्तु एकाधिपत्य के प्रश्न पर वह वडी तरकीव से दव गई। उसने अपनी उपस्थिति मे 'हॉउस ऑफ कामन्स' का एक प्रतिनिधिमंडल वुलाया। उसने वहा वताया कि यदि उसे एकाधिपत्य के सम्वन्ध मे सदस्यो की इच्छाएं ज्ञात होती तो उसने उन्हे विना किसी विलम्व के पहले ही समाप्त कर दिया होता। वह उनसे कहती थी, "ऐसा और कोइ हीरा नही जिसे मैं इस हीरा, अर्थात् आप सबके प्रेम, के समक्ष अधिक चाहती होऊँ। मैं इसे अपने मुकट की शान समझती हूँ कि मैंने

आप सबके प्रेम सहित शासन किया है।" यह था उसका ढंग जिससे वह कार्य करती थी। यह उसकी तरकीब थी। सदस्य उसके सामने सिर झुकाते थे। उनकी आंखो से प्रेम के आंसू गिरते थे।

इस प्रकार हम देखते है कि यह वास्तव मे सत्य है कि एलिजाबेथ का चरित्र उसकी नीति मे प्रतिविम्वित था।

प्रश्न १६—एलिजाबेथ का युग उचित ही इंगलिश साहित्य का स्वर्ण युग कहा जा सकता है, तर्क दीजिए।

अथवा

प्रश्न १७—एलिजाबेथ के युग को साहित्य का स्वर्ण युग क्यों कहा गया है ?

उत्तर—भूमिका—राजनैतिक महत्व में एलिजाबेथ का शासन महान था। साहित्य संसार मे भी उसका शासन काल उतना ही गौरवपूर्ण था। 'दि एलिजाबेथन स्कूल ऑफ लैटर्स' (The Elizabethan School of Letters) अंग्रेजी की सफलताओ मे सबसे महत्वपूर्ण कार्य था। साहित्य की प्रत्येक दिशा मे जीवन तथा सौन्दर्य का श्रोत उफन पड़ा था।

शैक्सपियर तथा अन्य नाटककार—

शैक्सपियर निश्चित महान और अद्वितीय रहा। वह इंगलैंड का सबसे महान नाटककार माना जाता है तथा संसार के सबसे महान नाटककारो मे से एक समझा जाता है। परन्तु उसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य नाटककार थे जिनके कार्य प्रसिद्ध हुए। वे इसलिए प्रसिद्ध नही हुए क्योंकि हमारा बहुत बड़ा ध्यान और रुचि शैक्सपियर मे ही लग गई। ब्यूमौन्ट (Beaumont) और फ्लैचर (Fletcher) ने अनेक नाटक बहुत ही अच्छी भापा मे लिखे। कुछ मे वे शैक्सपियर के ही ढंग से बहुत कुछ मिलते थे। बैन जान्सन ने ऐसे नाटक लिखे जिन्होने तुरन्त ही उसको प्रसिद्ध कर दिया। उसने इंगलिश भापा में कुछ सबसे सुन्दर गीतो की भी रचना की।

वैबस्टर (Webster) ने 'डचैज आफ माल्फी' (Duchess of Malfi) तथा 'दि व्हाइट डैविल' (The White Devil) लिखे। उनमे उसने कुछ वैभव तथा साथ ही रिनैसा (Renaissance) की क्रूरता और भय को

अंग्रेजी साहित्य मे स्थान दिया । क्रिस्टोफर मारलो (Christopher Marlowe) ने डाक्टर फॉस्टस लिखा । यह सबसे महान रोमाटिक नाटकों में से एक है । इसमे आश्चर्यजनक काव्य है । अपने 'एडवर्ड द्वितीय' मे उसने एक ऐतिहासिक नाटक की रचना की । इससे हमें कुछ कुछ उस साहित्य का आभास लगता है जो कि उसने प्रस्तुत किया होता यदि वह तीस वर्ष की आयु से पूर्व ही न मार दिया गया होता । इस युग के अन्य नाटककार फोर्ड (Ford), मैसिंगर (Massinger), किड (Kyd) और चैपमैन (Chapman) थे ।

कवि—

नाटककारो का यह आश्चर्यजनक वर्ग, एलिजावेथ युग के केवल एक भाग का प्रतिनिधित्व करता है । एडमन्ड स्पेन्सर (Edmund Spenser) ने अपने फेअरी क्विन (Faerie Queene) मे, सबसे महान रोमास काव्यों मे से एक की रचना की । यह ऐसा रोमास है जिसे कवियों ने सदैव पसन्द किया है और प्रशंसा की है । जोहन डने (John Donne) प्रथम आध्यात्मिक कवि था । वह अब तक अंग्रेज आध्यात्मिक सबसे महान कवियो मे से एक है ।

गीत रचयिता (Lyric Writers)—

कवियों के अतिरिक्त गीत रचयिता भी थे । उन्होंने हमे गीत दिए जो कि अंग्रेजी काव्य मे सबसे प्रिय रूपों मे से एक है । कुछ नाटककारो ने भी बहुत ही सुन्दर गीत लिखे । उनमे से एक फ्लेचर (Fletcher) था । हेवुड (Heywood), थौमस कैम्पियन (Thomas Campion), सर फिलिप सिडनी (Sir Philip Sidney) पील (Peale), लॉज (Lodge), थौमस डैकर (Thomas Dekker) और थौमस नाशे (Thomas Nashe), एलिजावेथ युग के महान गीत रचयिताओं मे से कुछ हैं । वे गीत जो इन कवियो ने लिखे है आज भी उतने प्रिय और प्रभाव मे ताजे हैं जितनी कि अंग्रेजी भाषा मे कोई अन्य कविता । उनके नाम, स्वयं हमारे लिए भले ही कोई अर्थ न रखें परन्तु उनकी कविताओ से हम सब परिचित हैं उदाहरणार्थ "There is a garden in her face."

"Shall I, wasting in despair, Die because a woman's fair ?"

निवन्ध और इतिहास—

विचारों की गहनता और व्यक्त करने की क्षमता मे वेकन (Bacon) के निवन्ध अभी भूले नहीं गए है। सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh) केवल समुद्र यात्री ही न थे वल्कि एक इतिहासज्ञ भी थे।

उपसंहार—

मौरिस ने सत्य ही कहा है, "साहित्यिक लौ की चमक जो कि ऐलिजावेथ के शासन काल में दैदीप्यमान हुई आश्चर्यजनक थी।"

६—ट्यूडर निरंकुशता

प्रश्न १८—वे कौन से कारण थे जिनसे कि ट्यूडर निरंकुशता संभव हुई ?

अथवा

प्रश्न १९—वे कौन से कारण थे जिन्होंने कि ट्यूडर राजाओं को एक शक्तिशाली राजतन्त्र स्थापित करने में योग दिया ?

उत्तर—ट्यूडर निरंकुशता का अर्थ—हैनरी सप्तम, हैनरी अष्टम, एडवर्ड षष्ठम, मैरी ट्यूडर और एलिजावेथ प्रथम का शासन ट्यूडर निरंकुशता (Tudor Despotism) कहलाता है। इन शासकों का शासन काल सौ वर्ष से अधिक चला। इस समूचे काल मे गवर्नमेन्ट अनियन्त्रित (absolute) थी। कर बढा दिए गए थे। अटैन्डर्स के कानून (Acts of Attainders) पारित किए गए थे। इन कानूनो के द्वारा किसी भी व्यक्ति को विना मुकद्दमा चलाए मृत्यु दण्ड दिया जा सकता था। कानून संसद (Parliament) द्वारा नही वनाए जाते थे। उनकी घोषणा शासको द्वारा की जाती थी। संक्षेप मे ट्यूडर शासक व्यवस्थापिका के मामलो (Executive matters), कर लगाने और कानून वनाने (Legislation) के मामलों मे जो कुछ मरजी होती करते थे। संसद, न्यायालय, चर्च और सामन्त सरदार कोई हस्तक्षेप न

करते थे और न कर ही सकते थे। अतः ट्यूडर्स का शासन ट्यूडर निरंकुशता (Tudor Despotism) कहलाता था।

ट्यूडर निरंकुशता की प्रकृति (Nature of Tudor Despotism)—

ट्यूडर्स को कभी कभी निरंकुश कहा जाता है। यदि इसका अर्थ उस अनियन्त्रित शासन से लगाया जाता है जिस पर पर्लियामेन्ट का नाम मात्र का नियन्त्रण रहता है तब तो नाम उपयुक्त है। यदि इसका अर्थ हम यह लगाते हैं कि वे अपने (अधीन) लोगों का उनकी इच्छा के विरुद्ध निर्दयता एवं क्रूरता से दमन करते हैं तब तो गलत है। ट्यूडर्स निरंकुश इसलिए थे क्यो कि इंगलैन्ड उन पर विश्वास करता था, भरोसा करता था और वह चाहता था कि शासक निरंकुश हो।

ऐसे बहुत से कारण थे जिन्होंने कि ट्यूडर निरंकुशता संभव बनाई। दूसरे शब्दों मे ऐसे अनेक कारण थे जिन्होने कि ट्यूडर राजाओ और रानियों को शक्तिशाली राजतन्त्र स्थापित करने में योग दिया। वे कारण निम्नलिखित थे:—

(१) सरदारों की शक्ति का ह्रास (Decay of the Power of the Nobles)—

प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण कारण था सरदारो की शक्ति का ह्रास। सरदारो मे से अधिकांश, रोजेज के युद्धों (Wars of Roses) मे मार डाले गए थे। जो शेष बच गए थे वे बहुत दुर्बल हो गए थे। वे अपनी प्रतिष्ठा खो चुके थे। उनकी संख्या कम हो चुकी थी। अतः वे राजसी शक्ति पर पहले की भाँति नियन्त्रण न कर सकते थे। इस प्रकार ट्यूडर राजाओ ने स्वयं को सरदारो के अंकुश (नियन्त्रण) से मुक्त पाया। इसके परिणाम स्वरूप उनकी शक्ति बढ गई।

(२) लोगों का समर्थन—(Support of the people)—

वार्नर (Warner), मार्टन (Marten) और म्योर (Muir) के शब्दो मे "रोजेज के युद्धो ने जनता को एक महान अभिलाषा लिए हुए छोड़ दिया था जो कि शान्ति की अभिलाषा थी। अच्छी व्यवस्था करके ही शान्ति कायम हो सकती थी; और व्यवस्था, ऐसा मालूम होता था कि, शक्तिशाली

राजा द्वारा ही की जा सकती थी। अतः क्राउन (राजा) का समर्थन करने का राष्ट्र का निश्चय। जब अकेला राजा शक्तिशाली और अच्छे साहस वाला होगा तो फिर वाकी सव ठीक हो जायगा। यदि वह दुर्वल होता अथवा उत्तराधिकार संशयात्मक होता, पुनः अशान्ति और विद्रोह प्रारम्भ हुआ होता। हैनरी सप्तम लोभी था, और हैनरी अष्टम भावुक एवं युद्ध-प्रिय मालुम होता था, मैरी कैथोलिक थी और प्रौटेस्टेन्ट प्रजा को दुख देने वाली थी, फिर भी आखिर सभी शासकों को जनता का समर्थन प्राप्त था।

(३) आर्थिक-बल (Financial strength)—

माध्यमिक काल (Mediaeval Period) में राजाओं के निर्बल होने का प्रमुख कारण यह था कि उनके पास धन वहुत थोडा था। ट्यूडर राजाओं का आर्थिक वल अच्छा था। वे निर्धन कभी नही थे। उनके पास धन का अभाव कभी न था। अतः वे पार्लियामेन्ट पर अधिक निर्भर न रहते थे।

हैनरी सप्तम ने धन का वहुत बड़ा संग्रह कर रखा था। उसके मंत्री कार्डिनल मोर्टन (Cardinal Morton), ऐम्पसन (Empson) और डडले (Dudley) अपने खजाने को भरने के लिए प्रत्येक प्रकार के तरीके अपनाते थे। वे नजरें और भेटें मांगते थे। आज्ञा उलंघन करने वाले सरदारों पर वे भारी-भारी जुरमाना करते थे। हैनरी अष्टम ने वह सारा धन जो उसके पिता ने एकत्रित किया था व्यय कर दिया। परन्तु उसने मठो और चर्चों (Churches) की आय पर नियन्त्रण कर स्वयं को धनी बनाया।

(४) सशस्त्र सेना का नियन्त्रण (Control of Armed foces)—

बारूद के जन साधारण के प्रयोग मे आ जाने के कारण ने ट्यूडर राजाओ को शक्तिशाली वना दिया। बारूद सौ वर्ष से अधिक समय से प्रचलित थी। परन्तु प्रारम्भ की वन्दूके और तोपे भोडी थी। शुरू शुरू मे उन्होने तीर कमान का स्थान नही लिया। परन्तु जव गोला बारूद अच्छी होने लगी तो सामंतो के महलो ने अपना महत्व खो दिया। केवल राजा के पास गोला-बारूद का अधिकार था। अतः उसे एक ऐसा लाभ प्राप्त था जो कि सरदारो सामन्तो के पास न था। इसके परिणाम स्वरूप सारे विद्रोहियो को आसानी से नियन्त्रित किया जा सकता था और उनका दमन किया जा सकता था।

(५) मध्यम श्रेणी का समर्थन—

मध्ययम श्रेणी के लोग शान्ति चाहते थे। वे रोसेस के युद्धो (Wars of Roses) की भाँति दूसरा युद्ध न चाहते थे। शान्तिकाल मे वे अपने व्यापारों को वड़ी आसानी से चला सकते थे। ट्यूडर राजाओ ने उन्हे शान्ति दी। मध्यम श्रेणी के वहुत से लोग सरदारो की प्रतिष्ठा तक पहुँच गए। उन पर प्रशासन का काम सौंपा गया। उन्हें न्याय प्रदान किया गया व्यवसाय, व्यापार और जहाजरानी (Shipping) को प्रोत्साहित किया गया। इन सब बातों ने मध्यम श्रेणी के लोगो को वहुत अधिक प्रसन्न किया। अतः उन्होंने अपने सच्चे हृदय से ट्यूडर शासकों को अपना समर्थन दिया।

(६) सुधार (The Reformation)—

रोमन कैथोलिक चर्च, ट्यूडर राजाओं का एक वड़ा प्रतिद्वन्द्वी था। ११८ वर्ष के अपने शासन मे ट्यूडर शासको ने इसकी शक्ति को पूर्णतः समाप्त कर दिया। इससे वे राज्य में सर्वोच्च हो गए। गिरजे की सम्पत्ति को मध्यम श्रेणी के ४०,००० परिवारों मे वांट दिया गया। इससे मध्यम श्रेणी के लोग और भी प्रसन्न हो गए। वे ट्यूडर शासको के पक्के समर्थक हो गए। इसने भी ट्यूडर शासको को अपनी निरंकुशता स्थापित करने में सहायता दी।

(७) चर्च का समर्थन (Support of the Church)—

रोमन कैथोलिक चर्च ने अपना महत्व खो दिया और इसका प्रभाव कम होने लगा। धर्म-शास्त्रियों और पुजारियो को भय होने लगा कि लॉलार्ड आन्दोलन (Lollard movement) के कारण उन्हे अपनी सम्पत्ति से न हाथ धोना पड़े। अतः वे राजसी शक्ति के आश्रित हो गए। केवल ऐसा करके ही वे अपनी सम्पत्ति को सुरक्षित रख सकते थे।

(८) पार्लियामेन्ट बहुत कम बुलाई जाती थी—

लैन्कास्ट्रियन युग (Lancastrion Period) मे पार्लियामेन्ट ने प्रमुख उत्तरदायित्व निभाने का प्रयत्न किया था। परन्तु यह असफल हो चुकी थी। ट्यूडर राजा नही चाहते थे कि पार्लियामेन्ट उनके प्रशासन मे हस्तक्षेप करे। अतः उन्होने उसे बुलाने की उपेक्षा की।

ट्यूडर युग के अन्त के समय मे पार्लियामेन्ट के वहुत से सदस्य मध्यम

श्रेणी के थे। वे ट्यूडर शासको के कट्टर समर्थक थे। अतः उन्होने ट्यूडर शासको को उत्तरोत्तर अधिक अधिकार दिए। इन अधिकारो और शक्तियो ने ट्यूडर शासकों को और भी निरंकुश बना दिया।

(६) शक्तिशाली प्रिवी काउंसिल (Powerful Privy Council)

ट्यूडर शासको की प्रिवी काउंसिल केवल राज्य परिवार के सेवको की बनी हुई थी। यह गवर्नमेन्ट की मशीनरी के प्रत्येक अंग को नियन्त्रित करती थी। चुनावो में हस्तक्षेप करके इसने हाउस ऑफ कामन्स पर भी नियन्त्रण कर लिया। इसने टयूडर शासको को एक शक्तिशाली राजतन्त्र स्थापित करने में योग दिया।

उपसंहार—

उपरोक्त कारणो ने ट्यूडर निरंकुशता को संभव बनाया। परन्तु हमे यह न सोचना चाहिए कि यह निरंकुशता क्रूर और कठोर हृदय शासकों की थी। बल्कि इसके विपरीत टयूडर निरंकुशता बहुत ही श्रेष्ठ थी। रैले (Releigh) ने कहा है कि ट्यूडर निरंकुशता तुर्कों की तरह की नही (Not Turk like) थी। इन शब्दो का अर्थ है कि वह निरंकुशता मुसलमान राजाओं की निरंकुशता की भांति नही थी। वस्तुतः ट्यूडर निरंकुशता, उनकी प्रजा के प्रेम और समर्थन पर आधारित थी। पोप इसका स्वागत करता था। यह उन पर थोपी नही गई थी। यही कारण है कि यह कहा जाता है कि ट्यूडर निरंकुशता गलत नाम रखा गया है।

७—कला कौशल तथा विद्या की जागृति का काल "रिनैसां" (Renaissance)

प्रश्न २०—शब्द 'रिनैसा' से आप क्या समझते हैं। इसने कब और किस प्रकार इंगलैण्ड पर प्रभाव डाला ?

उत्तर— भूमिका—

रिनैसा (Renaissance) अथवा रिनैसंन्स (Renascence) एक फ्रैन्च शब्द है। इसका अर्थ है कि पुनः जागरण अथवा पुनर्जन्म। यह साधारणतया ग्रीक कला एवं साहित्य की पुनः जागृति अथवा पुनर्जन्म के लिए प्रयोग किया जाता है। चौदहवीं शताब्दी में इटली के लोगो ने ग्रीक साहित्य

के अध्ययन को पुनः जागृत किया। उस समय इसे बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला जब सन् १४५३ मे तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनियां को विजय किया गया। यह शहर क्लासीकल (Classical) ज्ञान का बहुत बड़ा केन्द्र था। यह एक ऐसा स्थान था जहाँ बहुत से ग्रीक विद्वान रहते थे। जब शहर तुर्कों के हाथ में चला गया तो वे वहां से भाग गए। वे पश्चिमी यूरोप मे फैल गए। वे जहा कही भी गए, उन्होंने ग्रीक साहित्य एवं दर्शन के अपने ज्ञान का प्रसार किया। मध्यकालीन युग के लोगों का दृष्टिकोण ग्रीक लोगो के दृष्टिकोण से भिन्न था। मध्यकालीन लोगो को धर्म और बहुत सी बातो में अन्ध विश्वास था। ग्रीक विद्वानो ने उन्हें किसी बात के कारण जानने के लिए और तब उस पर विश्वास करना सिखाया। दूसरे शब्दो में ग्रीक दार्शनिको का उपदेश प्रत्येक वस्तु का 'क्यो' (कारण) मालूम करने का था। अतः हम कह सकते है कि 'रिनैसां' का अर्थ मनुष्य के मस्तिष्क का नया जन्म था।

रिनैसा ने बहुत से क्षेत्रो मे प्रभाव डाला। इटली मे कला, विज्ञान और साहित्य इससे प्रभावित हुए। इंगलेन्ड में अधिकतर साहित्य प्रभावित हुआ।

इंगलैन्ड में रिनैसां—

रिनैसां का प्रथम चिन्ह—रिनैसां का प्रथम चिन्ह इंगलेंड मे सन् १४८५ से पूर्व प्रगट हुआ। सन् १४७६ मे कैक्सटन (Caxton) अपना मुद्रणालय (Printing Press) इंगलेन्ड लाया। कुछ बड़े सरदारो ने रिनैसा के नए ज्ञान मे विशेष रुचि दिखायी।

रिनैसां का स्वर्ण युग—हैनरी सप्तम से लेकर हैनरी अष्टम तक का शासन-काल रिनैसां का स्वर्ण युग कहलाता है। हैनरी सप्तम की मा लेडी मारगरेट ने नए ज्ञान और रिनैसां के विद्वानो का उचित आदर किया। एक उच्च प्रतिष्ठित सरदार, लार्ड माउन्टजोय (Lord Mountjoy) ने भी उनको अपनाया। नए ज्ञान की ओर बहुत से अंग्रेज विद्वान आकर्षित हुए। लैटिन और ग्रीक सीखने के लिए उन्होंने इटली के विश्वविद्यालयो मे प्रवेश लिया। अपने देश वापिस आने पर उन्होंने लोगो को नया ज्ञान सिखाया। उनमे से कुछ विद्वान निम्नलिखित थे—

(१) ग्रॉक्सफोर्ड के विद्वान—ऑक्सफोर्ड के विद्वानों मे ही ग्रोसिन (Grocyn), सैलिंग (Selling), लिली (Lilly), और थौमस ल्यूअर्स (Thomas Luiarce) थे। वे ग्रीक और लैटिन का अध्ययन करने इटली गए। अपने ऑक्सफोर्ड लौटने पर उन्होंने अपने विद्यार्थियो को 'नए ज्ञान' के लिए प्रोत्साहित किया। शीघ्र ही ऑक्सफोर्ड, क्लासीकल अध्ययन का एक महान और प्रसिद्ध केन्द्र हो गया। ग्रोसिन, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे ग्रीक का प्रवक्ता (Lecturer) हो गया। ल्यूअर्स (Luiarce) ने न केवल ग्रीक का अध्ययन किया था बल्कि वेनिस (Venice) और फ्लौरैन्स (Florence) के विश्वविद्यालयो मे उसने औषधि (Medicine) का भी अध्ययन किया था। वह जब इंगलैन्ड वापिस आया तो उसने औषधि-विशेषज्ञो (डाक्टरो) के कालिज की स्थापना की।

(२) जोहन कॉलेट (Johon Colet)—वह एक धनी व्यापारी का पुत्र था। वह ग्रोसिन के उपदेशो (शिक्षा) से बहुत अधिक प्रभावित था। अतः वह 'नए ज्ञान' का अध्ययन करने इटली गया। अपने लौटने पर उसने बहुत से स्कूलों की स्थापना की। वे थे सैन्ट पॉल स्कूल, ग्रामर स्कूल और क्राइस्टस हास्पीटल स्कूल। ये सब विद्वान क्लासीकल ज्ञान के प्रसिद्ध केन्द्र हो गए।

(३) सर थौमस मूर (Sir Thomas More 1478—1535)—रैनिसां युग का वह सबसे महान विद्वान था। सन् १५१६ मे उसने एक ग्रीक पुस्तक 'यूटोपिया' (Utopia) प्रकाशित की। इस पुस्तक मे उसने अमेरिका के एक कल्पित द्वीप के बारे मे लिखा। उसने लिखा कि लोग वहाँ बहुत खुश रहते थे।

(४) एरास्मस (Erasmus 1467—1635)—वह एक डच था। वह एक सबसे महान् रैनिसां युग का विद्वान् था। वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में ग्रीक का प्रोफेसर नियुक्त हुआ। उसने मध्यकालीन चर्चों (Churches) की आलोचना की। उसने 'ग्रीक टैस्टामेन्ट' (Greek Testament) नाम की प्रसिद्ध पुस्तक लिखी।

नए ज्ञान के संरक्षक—

इंगलैन्ड मे 'नए ज्ञान' के दो महान संरक्षक थे। पहली थी हैनरी सप्तम की मा, लेडी मारगरेट। उसने दो कालिजों की, स्थापना की—क्राइस्ट कॉलिज और कैम्ब्रिज मे सैन्ट जौन्स कॉलिज। उसने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दो प्रौफेसरशिप भी स्थापित की।

दूसरा संरक्षक हैनरी अष्टम था। उसने बहुत से स्कूलों और कालिजो की स्थापना की जहाँ लैटिन और ग्रीक पढ़ाई जाती थी। इन भाषाओ की उसने आठ प्रौफेसर शिप उत्पन्न की। उसने अपने शासन काल के सभी रिनैसा विद्वानो कॉलेट (Colet), मूर (More) और लिनार्स (Linarce) को अपनाया।

एलिजावेथ का शासन—

कुछ इतिहासकारों की राय मे एलिजावेथ का शासन काल रिनैसां का स्वर्ण युग था। उसके शासन काल मे कुछ वहुत ही महान् नाटककार और कवि हुए जैसे शैक्सपियर, मारलो, फ्लैचर, बैन जोन्सन, स्पेन्सर आदि।

अन्य क्षेत्रों में रिनैसां का प्रभाव—

रिनैसां का प्रभाव कला, सगीत और शिक्षा पर देखा गया। कला में शिल्पकारी (Architecture) मे नई शैली प्रारम्भ हुई। क्राफ्टस का जागरण हुआ जैसे चांदी के सुनारों का, टैपस्ट्री आदि। सगीत के क्षेत्र मे मास्कस और पेजिएन्टस (Masques and Pageants) सामान्य मनो-रंजन हो गए। स्त्री और पुरुष दोनो की शिक्षा उच्च स्तर पर पहुँच गई।

तरीके जिनमें रिनैसां ने इंगलैन्ड को प्रभावित किया—

रिनैसां ने इगलैन्ड को अनेक तरीको से प्रभावित किया। लोगों ने मनुष्य, जीवन और संसार के प्रति विशाल दृष्टिकोण विकसित किया। वे अपने व्यवहार में बहुत आलोचनात्मक हो गए। वे प्रत्येक बात का कारण जानने लगे। वे उत्तमतर और विकसित शिक्षा प्राप्त करने लगे।

इसके अतिरिक्त रिनैसां ने राष्ट्रीयता की भावना दी। इसने व्यापार और उद्योग के विकास में सहायता की। इसने इतिहास का संगठन पुनः स्थापित किया। इसने सुधार के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इसने अंग्रेजो को नए उप-

निवेशो की रचना के लिए प्रोत्साहित किया। इसने कला एवं साहित्य को धनी किया। इसने मानवता का परिचय कराया।

८—धार्मिक विप्लव (Reformation)

प्रश्न २१—ट्यूडर काल के धार्मिक विप्लव का विवरण दीजिए।

अथवा

प्रश्न २२—इङ्गलैन्ड किस प्रकार प्रोटैस्टैन्ट देश हो गया ?

अथवा

प्रश्न २३—इङ्गलैन्ड में धार्मिक विप्लव की प्रगति, सन् १५३६ की धार्मिक विप्लव (Reformation) संसद से सन् १५५३ तक की एडवर्ड षष्टम की मृत्यु तक, का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्रश्न २४—अंग्रेजी सुधारवाद (धार्मिक विप्लव) एक राजनैतिक आन्दोलन था, व्याख्या करो।

अथवा

प्रश्न २५—इङ्गलैन्ड में कब और कैसे सुधारवाद (धार्मिक विप्लव) आया ?

उत्तर—भूमिकाः—

धार्मिक विप्लव एक धार्मिक आन्दोलन था। सोलहवी शताब्दी मे यह यूरोप के अनेक देशो मे प्रारम्भ हुआ। इसका उद्देश्य रोमन कैथोलिक चर्च के वहुत से दोपो का सुधार करना था। पोप, चर्च का नेता था। उसका अधिकार समूचे यूरोप और इङ्गलैन्ड में सर्वोच्च था। यह इस कारण था क्योकि सारे देश रोमन् कैथोलिक धर्म का अनुकरण करते थे।

चर्च में दोष—

रोमन कैथोलिक चर्च बहुत से दोपो से भरा हुआ था। पोप स्वयं को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। अतः वह सभी लोगो से सख्त आज्ञा-पालन चाहता था। यदि कोई व्यक्ति अथवा राजा आज्ञा-उल्लघन करता था तो

उसे पोप द्वारा धर्म-संस्था से बहिष्कृत कर दिया जाता था। इतना ही काफी नही था। पोप 'क्षमा-प्रमाणपत्र' (Pardon Certificates) स्वीकार किया करता था जिनके द्वारा लोगो के पाप ईश्वर द्वारा क्षमा किए जाते थे। प्रमाण-पत्र देने के लिए पोप बहुत सा रुपया लिया करता था। निर्धन लोगों को 'क्षमा-दान' (Indulgences) स्वीकार किए जाते थे। उन्हे भी इनके लिए कुछ रुपया देना रहता था।

जर्मनी में सुधार—

'नए ज्ञान' (New Learning) ने लोगों को एक नया दृष्टिकोण प्रदान कर दिया था। वे प्रत्येक बात का कारण ('Why') जानना चाहते थे। स्वभावतः वे पोप के कार्यो पर प्रश्न करते थे। पहला व्यक्ति जिसने खुले रूप मे ऐसा किया जर्मनी का मार्टिन लूथर (Martin Luther) था। सन् १५१७ में उसने रोमन कैथोलिक चर्च पर प्रहार किया। उसने पोप के अधिकारो पर प्रश्न किए। धीमे-धीमे यह आन्दोलन जो कि लूथरनिज्म (Lutheranism) कहलाया जर्मनी मे फैला। परन्तु यूरोप के किसी राज्य ने पोप के अधिकारों को अस्वीकार करके लूथर के विचारो को क्रियान्वित नही किया। इङ्गलैन्ड द्वारा पहला कदम उठाया गया।

इङ्गलैन्ड में सुधारवाद का प्रारम्भ (The Origin of Reformation in England)—

इङ्गलैन्ड मे रिफोर्मेशन, हैनरी अष्टम के पोप के साथ विवाह के सम्बन्ध में मतभेद हो जाने के साथ-साथ आरम्भ हुआ। राजा चाहता था कि पोप, कैथेरिन के साथ हुई उसकी शादी को खत्म कर दे। पोप ऐसा नही करना चाहता था। अतः उसने टालने की तरकीबें चली। हैनरी बहुत उत्सुक था। अतः उसने पोप के अधिकार को समाप्त करने का निश्चय किया। उसके शासन काल मे इङ्गलैन्ड का चर्च, रोम के चर्च से अलग कर दिया गया। हैनरी, चर्च की 'सर्वोच्च सत्ता, हो गया। इङ्गलैन्ड मे रिफोर्मेशन का यही मूल था।

इङ्गलैन्ड रिफोर्मेशन एक राजनैतिक आन्दोलन था—

जब हम उपरोक्त सत्यो पर दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि रिफोर्मेशन, इङ्गलैन्ड मे एक राजनैतिक आन्दोलन था। यह केवल इसलिए

आरम्भ हुआ क्योकि हैनरी इङ्गलैन्ड में अपने अधिकार को सर्वोच्च बनाना चाहता था। इङ्गलैन्ड एक रोमन कैथोलिक देश था। पोप का इस पर पूरा अधिकार था। उसके लोग तथा उसका राजा पोप की इच्छा के विरुद्ध कार्य न कर सकते थे। हैनरी अष्टम के मार्ग मे यह बहुत बड़ा रोड़ा था। वह कैथेरिन को तलाक देकर ऐनी बॉलिन से शादी न कर सकता था जिसको कि वह बहुत प्यार करने लगा था। अतः उसके समक्ष एक मात्र मार्ग जो था वह यही था कि पोप के अधिकारो को समाप्त कर दे और स्वयं को सर्वोच्च बनाए। और ऐसा उसने बड़ी सफलतापूर्वक किया।

यदि हम हैनरी और पोप के पिछले सम्बन्धों पर दृष्टिपात करें, तो हम देखते है कि वे बहुत ही घनिष्ट थे। सन् १५२६ तक हैनरी, पोप के प्रति बहुत ही विश्वसनीय था। वह पोप की 'होली लीग' (Holy League) में शामिल हो चुका था और फ्रान्स के विरोध में सन् १५१२–१३ मे लड़ा था। उसने ऐसा केवल पोप का समर्थन करने के लिए किया था। उसने जैसा कि हमें ज्ञात है, लूथर के कार्यों की भी खूब जोर-शोर से आलोचना की थी क्योंकि लूथर पोप का विरोध करता था और जर्मनी में सुधारवाद आन्दोलन का नेता था। सन् १५२१ मे हैनरी ने लूथर के खिलाफ एक पुस्तक लिखी। इसने पोप को इतना प्रसन्न किया कि उसने हैनरी को धर्म-रक्षक (Defender of the faith) की पदवी दे दी। परन्तु सन् १५२६ मे कैथेरिन के तलाक का प्रश्न आया। हैनरी अपनी पत्नी को तलाक देने की आज्ञा पोप से न प्राप्त कर सका। इससे वह पोप का बहुत ही कड़ा शत्रु हो गया।

इस सम्बन्ध में कुछ और भी बाते याद रखनी हैं। हैनरी ने यद्यपि पोप के अधिकार का बहिष्कार कर दिया परन्तु फिर भी वह पक्का रोमन कैथोलिक बना रहा। उसने कभी भी कैथोलिक्स का विरोध और प्रौटेस्टेन्ट्स का समर्थन नही किया। वह केवल पोप की राजनैतिक शक्तियो को नष्ट करना चाहता था। इङ्गलैंड मे धर्म नही बदला था। वह रोमन कैथोलिक देश बना रहा। यहाँ तक कि रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट तक का उद्देश्य कैथोलिक धर्म को नष्ट करना नही था। इसका साधारण उद्देश्य केवल पोप के राजनैतिक

अधिकारों को नष्ट कर देने का था। अतः यही कारण है कि इंगलैन्ड में सुधारवाद (रिफोर्मेशन) एक राजनैतिक आन्दोलन था। अपना वर्णन पूरा करने के लिए हमे उस कार्य पर भी दृष्टिपात करना पड़ेगा जो कि रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट द्वारा किए गए।

रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट—

रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट सन् १५२९ से १५३६ तक मिली। इसने धीमे-धीमे, इंगलैन्ड में रोम की राजनैतिक शक्तियो को अस्वीकार करने की हैनरी की इच्छाओ को पूरा किया। 'एक्ट ऑफ अपील' (Act of Appeals) ने घोषित किया कि इंगलिश न्यायालय के निर्णय पर विदेश मे प्रश्न न किए जाय। 'एक्ट ऑफ सुपरीमेसी' (Act of Supermacy) ने हैनरी को इंगलेन्ड में चर्च का सर्वोच्च नेता घोषित किया। 'एक्ट ऑफ सक्सेशन' (Act of Succession) ने इंगलैन्ड की राजगद्दी ऐनी वॉलिन की पुत्री एलिजाबेथ को प्रदान कर दी जो कि एक प्रोटैस्टेन्ट थी। उन नियमो तथा अन्य नियमों ने, जो कि पार्लियामेन्ट द्वारा पास किए गए, इङ्गलैंड पर पोप के राजनैतिक अधिकार को पूर्णतः नष्ट कर दिया। उसका इङ्गलैंड पर से पूरा आधिपत्य समाप्त हो गया जो कि वह लगभग ९०० वर्षो से प्राप्त किए चला रहा था।

हैनरी अष्टम के शासन काल में सुधारवाद (रिफोर्मेशन) का निरूपण—

हैनरी के शासन काल मे रिफोर्मेशन सन् १५२९ मे प्रारम्भ हुआ। यह सन् १५३९ मे समाप्त हुआ। इन दस वर्षो के समय मे, इंगलैन्ड पर पोप का अधिकार पूर्णतः नष्ट हो गया। रिफोर्मेशन पार्लियामेन्ट द्वारा पास किए गए नियमो ने इस कार्य में बहुत सहायता दी। मौनस्ट्रीज, पॉपैसी और कैथोलिसिज्म के पक्के स्थान थे। अतः उन्हे नष्ट किया गया। सन् १५३२ मे, बाइबिल का अंग्रेजी अनुवाद सामने आया। हैनरी की आज्ञा से यह इंगलैन्ड के प्रत्येक गिर्जे में प्रयोग होने लगा।

एडवर्ड षष्ठम के शासन काल में रिफोर्मेशन—

हैनरी अष्टम अपने जीवन के अन्तिम दिन तक एक पक्का कैथोलिक रहा। उसने प्रोटैस्टेन्ट्स को उपस्थित किया। उनमे से बहुत सो को जीवित जला दिया गया। परन्तु वह प्रोटैस्टेन्ट्स के आन्दोलन को न रोक सका। यह उसके

शासन काल मे ही फैलने लगा था। उसके पुत्र एडवर्ड षष्ठम के शासन काल में प्रौटेस्टेंन्टिज्म ने द्रुत गति पकड़ी। समरसैट (Somerset) के नेतृत्व में गवर्नमेन्ट ने इंगलेन्ड मे कैथोलिक धर्म को नष्ट करने के लिए वहुत सी वातें की। गिर्जाघरो मे सन्तों के चित्र व आकृतिया तोडी गईं। पुजारियो को विवाह करने की अनुमति दी गई। कॉमन (Common) प्रार्थना की प्रथम पुस्तक के लिए गिर्जाघरों में प्रयोग की आज्ञा दी गई। लैटिन प्रार्थना समाप्त करदी गई। इसका स्थान अंग्रेजी द्वारा ले लिया गया।

नर्दम्वरलेन्ड के ड्यूक (The Duke of Northumberland) ने गवर्नमेन्ट का प्रमुख हो जाने पर कैथोलिक धर्म को नष्ट करने के लिए कुछ और भी किया। कॉमन प्रेयर (Common Prayer) की द्वितीय पुस्तक चलायी गई। धर्म के वयालीस अनुच्छेद (Articles) प्रसारित हुए उनमें प्रौटेस्टैन्ट धर्म के नए सिद्धान्त थे। इस प्रकार सन् १५५३ मे प्रौटेस्टेन्टिज्म इंगलेन्ड का धर्म हो गया।

मैरी ट्यूडर काल में रिफोर्मेशन—

सन् १५५३ मे, कैथेरिन की पुत्री, मैरी ट्यूडर गद्दी पर आई। वह पक्की कैथोलिक थी। उसने घडी को पीछे किया उसने वह सब कार्य नष्ट किया जो कि प्रौटेस्टैन्टिज्म की स्थापना के लिए किया गया था। उसने कैथेरिन के तलाक को व्यर्थ किया। इस प्रकार उसने अपनी स्थिति को दृढ़ किया। उसने तव पार्लियामेन्ट को राजी किया कि एडवर्ड षष्टम के शासन काल में पास किए गए सारे कानूनो पर पुनः विचार हो। इस प्रकार छः अनुच्छेद (Six-Articles) फिर कायम हुए। पुजारियो और धार्मिक गुरुओ को शादी करने की मनाई हुई। नई इंगलिश प्रेअर पुस्तक के प्रयोग की मुमानियत हुई। कैथोलिक पुजारियो को उनकी पुरानी प्रतिष्ठा दिलाई गई। प्रौटैस्टेन्ट विशपो को वहां से वाहर निकाल दिया गया। इस प्रकार एडवर्ड षष्टम के शासन काल मे किए गए सारे परिवर्तनो को रद्द कर दिया गया।

मैरी ने पुनः पुराने एन्टी लौलर्ड नियमो (Anti-Lollard Laws) को वनाया। ये नियम नास्तिकता के विरुद्ध थे। इन नियमो की सहायता से वहुत से प्रौटेस्टेन्ट्स जला दिए गए। उसने पोप के समक्ष समर्पण किया। इससे एक

वार पुनः इंगलैन्ड मे पोप के अधिकार सर्वोच्च हो गए। देश एक बार पुनः रोमन कैथोलिक हो गया। प्रौटेस्टेन्ट्स के जलाने का अर्थ प्रौटेस्टेन्टिज्म को मारना था। परन्तु ऐसा हुआ नही। प्रौटैस्टैन्ट्स अपने धर्म के वारे में और भी कट्टर हो गए। मैरी की योजनाऐं असफल हुई और सन् १५५८ में उसकी मृत्यु हो गई।

एलिजावेथ के समय में रिफोर्मेशन—

हैनरी के वसीयतनामे के अनुसार एलिजावेथ उत्तराधिकारिणी हुई। उसके समक्ष सबसे महत्वपूर्ण और कठिन कार्य धार्मिक प्रश्न का निवटारा करना था। उसे तीन धार्मिक दलों को सन्तुष्ट करना था—कैथोलिक्स, प्रौटैस्टैन्ट्स और पुरिटन्स (Puritans) उनको सन्तुष्ट करने के लिए उसने एक वीच का मार्ग अपनाया। ऐसा करके वह आर्थोडोक्स कैथोलिक्स तथा एक्सट्रीम प्रोटैस्टेन्टस (Extreme Protestants) जो कि पुरिटन्स कहलाते थे, के वीच सुलह कराना चाहती थी। उसके द्वारा स्थापित ऐंग्लीकन चर्च एक सुलह का चर्च था। उसने अन्तिम रूप से इंगलैन्ड के चर्च की स्थिति तय कर दी। चर्च का मामला तय करने अथवा धार्मिक प्रश्न तय करने मे उसने एडवर्ड षष्ठम की नीति अपनाई। दूसरे शब्दो मे उसने पार्लियामेन्ट को अनेक कानून पास करने के लिए उकसाया। ये कानून क्या थे तथा इन्होने क्या किया, इसका अध्ययन हम नीचे करेंगे।

(१) सन् १५५३ मे सर्वोच्च सत्ता का कानून (The Act of Supremacy) पास किया गया। इस कानून के द्वारा चर्च के सर्वोच्च नेता का पद समाप्त कर दिया गया। इसकी वजाय एलिजावेथ ने कुछ कम खटकने वाली पदवी, 'इस शासन की सर्वोच्च शासक' (Supreme Governor of this Realm) ग्रहण की।

(२) एक्ट ऑफ यूनिफार्मिटी के अनुसार, जन साधारण की प्रार्थना नियमित की गई। एडवर्ड षष्टम की सैकिन्ड प्रेयर वुक को संशोधित किया गया। इंगलिश गिर्जाघरो मे इसे प्रयोग करने की आज्ञा दी गई।

(३) धर्म और आस्था के वयालीस अनुच्छेद (Forty-two Articles of faith and Religion)—

कुछ और भी साधन थे जो कि एलिजावेथ द्वारा धार्मिक मसला तय करने में अपनाए गए। पुनः निर्मित ऐंग्लीकन शासन करने के लिए उसने कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की स्थापना की। इसने एक्ट आफ सुपरीमेसी तथा एक्ट ऑफ यूनिफौर्मिटी लागू किए।

वास्तव में तो विशपों की नियुक्ति एलिजावेथ द्वारा होती थी यद्यपि नाम के लिए कंथेडरल पुजारी द्वारा होती थी। रोमन कैथोलिक्स पर चर्च में अनुपस्थित होने के कारण जुरमाना किया जाता था। Mass को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। अतः यह केवल व्यक्तिगत रूप से मनाया जा सकता था न कि गिर्जाघरो मे।

नए निर्णय के ये कुछ असाधारण चिन्ह थे। एक्स्ट्रीम विचार रखने वालो ने, चाहे वे पुरिटन्स हों अथवा रौमन कैथोलिक हो, आपत्ति की। फिर भी राष्ट्र का वडा अंश ऐसा लगा कि वे संतुष्ट हो गए हैं। इसमे सन्देह नही कि यदि इनमे से किसी एक का भी पलडा भारी होता तो यहां सिविल वार (Civil war) हो गई होती। परन्तु एलिजावेथ के कारण ८० वर्ष से अधिक से इंगलेंड उससे वचा रहा। यही कारण है कि यह कहा गया है कि एलिजावेथ ने धार्मिक प्रश्न का निवटारा एक राजनीतिज्ञ की भांति किया, धर्मोपदेशक की भांति नही।

प्रश्न २६—इंगलैन्ड में हैनरी अष्टम द्वारा प्रारम्भ किए सुधारवाद (Reformation) की मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट करो।

उत्तर—कृपया प्रश्न सख्या २५ का उत्तर देखिए।

प्रश्न २७—हैनरी अष्टम के समय का इंगलैन्ड में सुधारवादी (Reformation) कहां तक एक धार्मिक आन्दोलन था और कहाँ तक राजनैतिक ?

उत्तर—कृपया प्रश्न सख्या २५ का उत्तर देखिए।

६—काउन्टर रिफोर्मेशन

प्रश्न २८—स्पष्ट करो कि एलिजावेथ के शासन काल में इंगलैंड, काउन्टर रिफोर्मेशन से किस प्रकार प्रभावित हुआ ?

अथवा

प्रश्न २९—"एलिजाबेथ का शासन काल, काउन्टर रिफोर्मेशन के खिलाफ एक लम्बा संघर्ष था" उचित ठहराओ।

उत्तर—भूमिका—रिफोर्मेशन ने पोप तथा यूरोप के कैथोलिक देशो को बहुत बड़ा आघात पहुँचाया था। कई वर्षों तक वे उन देशो के विरुद्ध कुछ भी न कर सके जो कि प्रौटेस्टेन्ट हो रहे थे। परन्तु, धीमे धीमे उन्होने स्वय को शक्तिशाली बनाया। इस प्रकार वे प्रौटेस्टेन्ट देशों का प्रतिक्रियावादी (काउन्टर स्ट्रोक) देने के लिए तैयार हो गए। पोप के और रोमन कैथोलिक देशों के इस प्रतिक्रियावादी-आघात को प्रतिक्रियावादी सुधार अथवा काउन्टर रिफोर्मेशन का नाम दिया गया है। यह सोलहवी शताब्दी मे प्रारम्भ हुआ। इसका उद्देश्य प्रौटेस्टेन्टिज्म की प्रगति को रोकना था। इसका लक्ष्य प्रौटेस्टेन्ट देशो को कैथोलिक बनाना था।

प्रयोग किए गए तरीके—

चार तरीके प्रयोग किए गए जो निम्नलिखित थे :—(१) कैथोलिक चर्च में सुधार (२) प्रौटेस्टेन्ट देशो मे कैथोलिक धर्म के पुजारियों, जो जीसट्स (Jesuits) कहलाते थे, द्वारा उपदेश (३) कैथोलिक देशो मे प्रोटैस्टेन्टस को जलाना और (४) प्रौटेस्टेन्ट देशो के विरुद्ध युद्ध। ये तरीके आस्ट्रिया, पोलेन्ड, इटैली, बेल्जियम, स्पेन और दक्षिणी जर्मनी मे प्रयोग हुए। उनके परिणाम स्वरूप सफलता प्राप्त हुई। इंगलैन्ड तक मे मैरी ट्यूडर के शासन काल मे वे सफल हुए। परन्तु वे एलिजाबेथ के शासन काल मे वैसे सिद्ध नही हुए। उसने उनके विरुद्ध संघर्ष किया। वास्तव मे तो, एलिजाबेथ का शासन काल, काउन्टर रिफोर्मेशन के विरुद्ध एक लम्बा संघर्ष था।

वे शक्तियां जिनके विरुद्ध एलिजाबेथ ने संघर्ष किया—

एलिजाबेथ द्वारा इंगलैन्ड एक प्रौटैस्टेन्ट देश बना दिया गया था। इसके लिए उसे पोप एवं रोमन कैथोलिक देशो द्वारा क्षमा नही किया जा सकता था। उनकी राय मे उसने एक जघन्य अपराध किया था। इसके लिए उसको दण्ड दिया जाना था। अतः उसके विरुद्ध काउन्टर रिफोर्मेशन के सभी तरीके प्रयोग किए गए। इंगलैन्ड के विरुद्ध एक सुयोजित आन्दोलन प्रारम्भ किया

गया। इस आन्दोलन के दो नेता थे। वे पोप और स्पेन के किंग फिलिप द्वितीय थे। इस आन्दोलन मे फ्रान्स, स्कौटलैन्ड तथा नीदरलैन्ड ने महत्वपूर्ण भाग लिया।

हम अब देखेंगे कि एलिजावेथ ने किस प्रकार इन शक्तियों को रोका और अन्त मे वह सफल हुई।

एलिजावेथ तथा पोप—

एलिजावेथ के लिए पोप सबसे वड़े खतरे का सूत्र था। यही था जिसने कि जेसुट (Jesuits) पुजारियो को इङ्गलेन्ड मे कैथोलिक धर्म का प्रसार करने भेजा था। यही था जिसने कि उन सारी योजनाओ को आशीर्वाद दिया जो कि एलिजावेथ की हत्या करने के लिए बनी। यही था जिसने कि सन् १५७० मे एलिजावेथ का धार्मिक वहिष्कार किया। उसने एलिजावेथ की निन्दा की और कैथोलिक्स को उसके विरुद्ध खड़ा होने के लिए कहा। अन्ततः, वही था जिसने कि स्काट की रानी मैरी से पत्र व्यवहार किया। परन्तु एलिजावेथ को हानि पहुँचाने के पोप के सभी प्रयत्न असफल हुए। इसका मुख्य कारण यही था कि कोई भी कैथोलिक देश इतना शक्तिशाली न था जो पोप की सहायता कर सकता।

एलिजाबेथ और स्काटलैंड—

स्काटलैन्ड की चिन्ता से एलिजावेथ एक धार्मिक युद्ध द्वारा मुक्त हुई। स्कॉट्स ने यकायक प्रैसवायटेरियन (Presbyterian) दृष्टिकोण अपना लिया। उनका महान नेता और उपदेशक जोहन नॉक्स (John knox) था। उसने औरतो की मांस्ट्रस सरकार (Monstrous Government of Woman) के विरुद्ध असाधारण पैम्फलेट लिखा। इसका लक्ष्य मैरी गाइज (Mary Guise) का शासन था। स्काट्स ने विद्रोह कर दिया। एलिजावेथ ने विद्रोहियो की सहायता करना पसन्द नही किया। परन्तु अवसर इतना अच्छा था कि छोड़ना उचित न था। उसने फ्रैन्च दुर्ग रक्षक सेना को घेरने मे स्कॉट्स की सहायता करने के लिए टुकड़िया भेजी। मैरी ऑफ गाइज (Mary of Guise) की मृत्यु हो गई। सन् १५६० मे, एडिनवरा की

सन्धि के अनुसार, फ्रेन्च व अंग्रेज दोनो को ही स्कॉटलैन्ड खाली करना था। एलिजाबेथ ठीक यही चाहती थी। फ्रान्स और स्कॉटलैन्ड की पुरानी सलाह टूट गई। मैरी स्टुअर्ट, जो कि अब विधवा थी, स्कॉटलैन्ड लौटी। उसने देखा कि उसकी जनता के अधिकांश लोग कट्टर प्रौटेस्टेन्ट थे। वे उसका कड़ा विरोध करते थे। अतः मैरी, एलिजाबेथ के लिए खतरा नही रही।

एलिजाबेथ और मैरी स्टुअर्ट—

मैरी स्टुअर्ट ने स्काटलैन्ड मे दूसरी बार विवाह किया। उसने अपने चचेरे भाई, हैनरी डार्नले को चुना। डार्नले की हत्या के बाद, उसने उसके हत्यारे, बॉथवैल से शादी करली। इसने कुलीन व्यक्तियों (Nobles) को रुष्ट कर दिया। उन्होने उसे विवश किया कि वह अपने शिशु पुत्र जेम्स के पक्ष में अपने अधिकारो को अपराध स्वरूप त्याग दे। मैरी को कैद कर लिया गया परन्तु वह बच निकली। उसने गद्दी पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु असफल हुई। सन् १५६८ मे वह इंगलैन्ड चली गई। उसने स्वयं को एलिजाबेथ की दया पर छोड़ दिया। एलिजाबेथ क्या कर सकती थी ? मैरी को वापिस स्काटलैन्ड भेजा जाय, शस्त्रों की शक्ति से अथवा सन्धि से ? अथवा फ्रान्स भेजा जाय ? अथवा उसे इंगलैन्ड मे रखा जाय ? प्रत्येक कारण खतरनाक था। अन्ततः उसने उसे इंगलैन्ड मे रखा।

एलिजाबेथ के लिए यह खतरनाक था कि उसकी प्रतिद्वन्द्वी इङ्गलैन्ड में रहे। वहां मैरी को छुड़ाने की और एलिजाबेथ की हत्या करने की योजनाएँ बन रही थी। बेबिंग्टन की योजना (Babington Plot), एलिजाबेथ के जीवन के विरुद्ध अन्तिम योजना थी। यह दिखाने के लिए कि मैरी योजना के बारे मे जानती थी, पत्रो को उपस्थित किया गया। अतः उन्नीस वर्ष के कारावास के पश्चात सन् १५८७ की फर्वरी मे उसका सिर काट लिया गया।

एलिजाबेथ और फ्रांस—

सन् १५६० मे फ्रेन्सिस की मृत्यु हो गई। प्रमुख शक्ति 'गाइज परिवार के हाथो में आ पड़ी। वे कट्टर कैथोलिक्स थे। सन् १५६२ में, एलिजाबेथ ने फ्रेन्च प्रौटेस्टेन्ट्स अथवा (Hugnenots) को इसलिए सहायता भेजी

ताकि गवर्नमेन्ट घबड़ा जाय। फ्रान्स मे (Hugnenots) और कैथोलिक्स के बीच का संघर्ष एलिजाबेथ को बहुत उपयोगी था। इसने कैथोलिक्स को उसके विरुद्ध सक्रिय कदम उठाने से रोका और (Hugnenots) उसके मित्र थे। इस प्रकार फ्रान्स का खतरा टल गया।

एलिजाबेथ और नीदरलैन्डस—

जैसे जैसे वर्ष गुजरी, एलिजाबेथ ने देखा कि सबसे डरावना शत्रु अब फ्रान्स न था बल्कि स्पेन था। फिलिप, मैरी स्टुअर्ट का चेम्पियन हो गया। इङ्गलैन्ड में स्पेन के राजदूत ने एलिजाबेथ की हत्या की योजनाएँ बनाईं। दूसरी ओर फिलिप, नीदरलैन्डस के संघर्ष में व्यस्त कर दिया गया। वहां उसके प्रजा-जनों ने स्वायत्त-शासन के अधिकारो की माग की। एलिजाबेथ ने इस अवसर का लाभ उठाया। उसने नीदरलैन्डस के लोगों को स्वतन्त्र हो जाने के लिए सहायता की। इस प्रकार उसने फिलिप को नीदरलैन्डस में व्यस्त रखा। इसने एलिजाबेथ की स्थिति अपेक्षाकृत और भी सुदृढ़ करदी।

एलिजाबेथ और स्पेन—

फिलिप, एलिजाबेथ का सबसे खतरनाक शत्रु था। अतः अपने शासन के प्रारम्भ मे उसने उसके साथ अच्छे संबंध बनाए रखने का प्रयत्नकिया। यहाँ तक कि उसने उसके पास विवाह तक करने का प्रस्ताव भेजा। परंतु वह काफी दिनो तक उससे अच्छे सम्बन्ध न स्थापित कर सकी। फिलिप एक कट्टर रोमन कैथोलिक था। वह इङ्गलेड मे प्रौटेस्टेन्टिज्म-समाप्त करना चाहता था। इङ्गलैड मे अपने राजदूत द्वारा उसने एलिजाबेथ की हत्या करने की योजनाओ की व्यवस्था की। इसके अतिरिक्त, वेस्ट इन्डीज और दक्षिणी अमेरिका मे, इङ्गलेड तथा स्पेन के बीच एक बहुत बड़ी व्यापारिक प्रतिद्वन्दता थी। इन सब बातो ने स्पेन और इङ्गलेड के बीच एक चौडी खाई पैदा कर दी। दोनो देशो के बीच युद्ध आवश्यक हो गया।

अवसर उस समय आया जब मैरी स्टुअर्ट को फाँसी दी गई। उसने इङ्गलेड के ताज का अपना अधिकार, स्पेन के इनफेन्टा (Infanta of Spain) को छोड़ दिया। वह फिलिप की पुत्री थी। अतः फिलिप ने अपनी

पुत्री के अधिकारों को इङ्गलैंड पर आक्रमण के द्वारा कार्यान्वित करने का निश्चय किया। इस कार्य के लिए उसने जहाजो की १ बहुत बड़ी टुकड़ी तैयार की। इसका नाम आरमैडा (Armada) था। सन् १५८८ में आरमैडा रवाना हुआ। उस लड़ाई मे सभी बड़े स्पेनिश जहाज इंगलिश लोगों द्वारा नष्ट कर दिये गये। ठीक तभी एक हवा वही। लहरें उठीं। तूफानों के बाद तूफान आये। स्पेनिश जहाज चट्टानो की ओर वहे। वहाँ वे टकराकर डूब गये। प्रतिष्ठित टुकड़ी के, जिसने कि संसार का इतिहास बदल दिया होता केवल कुछ टूटे फूटे जहाज स्पेन पहुँचे। आरमैडा की पराजय ने इंगलैंड की स्थिति पूर्णतः बदल दी। अपने शासन के शेप समय मे ऐलिजावेथ को स्पेन से बहुत थोड़ा भय रह गया।

उपसंहार—

इस प्रकार अपने सम्पूर्ण शासन काल में एलिजावेथ को कैथोलिसिज्म की शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ा। यही कारण है कि उसका शासन, काउन्टर रिफोर्मेशन के विरुद्ध एक लम्बा संघर्ष कहा गया है।

प्रश्न ३०—"एलिजावेथ की विदेश नीति, काउन्टर रिफोर्मेशन के विरुद्ध एक लम्बा संघर्ष था" व्याख्या करो।

उत्तर—इसका उत्तर वही है जो कि प्रश्न नं० २९ का था।

स्टुअर्ट काल (The Stuart Period)

१०—प्रारम्भिक स्टुअर्ट्स और उनकी संसदें

प्रश्न ३१—स्टुअर्ट काल के समय में किंग और पार्लियामेन्ट के बीच के संघर्ष के कारणों का संक्षेप में विश्लेषण कीजिए।

अथवा

प्रश्न ३२—सन् १६०३ से १६८३ तक किंग और पार्लियामेन्ट के बीच के संघर्ष की मुख्य रूपरेखा दीजिए।

उत्तर-भूमिका—

स्टुअर्ट काल के प्रारम्भिक सारे समय मे राजाओ और उनकी संसदो (Parliaments) मे एक लगातार संघर्ष चला। उनके मध्य संघर्ष, राज्य

में निर्णायक शक्ति थी। स्टुअर्ट निरकुश रूप से शासन करना चाहते थे। परन्तु पार्लियामेन्ट (संसद) उस समय तक अपनी शक्तियो एवं अधिकारो को समझने लगी थी। अतः वह राजाओं को राज्य के मामलो में मनमानी नही करने देना चाहती थी। अतः राजाओ और उनकी संसदों (Parliaments) के बीच ४ मतभेद अवश्यम्भावी हो गए। इस संघर्ष के कारण निम्नलिखित थे :—

(१) राजाओं के ईश्वरीय अधिकार—

संघर्ष का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारण 'ईश्वरीय अधिकार का सिद्धान्त' (Theory of Divine Right) था। जेम्स प्रथम इस सिद्धान्त का पक्का विश्वासी था। उसका विश्वास था कि राजा, पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि था। इस प्रकार वह केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी था। वह उन व्यक्तियो के प्रति उत्तरदायी न था जिन पर कि वह शासन करता था। पार्लियामेन्ट ने यह सुनने की कभी परवाह नही की कि जेम्स क्या कहता था। सन् १६०४ मे, पार्लियामेन्ट के सदस्यो ने राजा को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि उनके क्या अधिकार थे। राजा ने अनुसुनी कर दी। उसी वर्ष उसने Convocation of the church से उसके 'ईश्वरीय अधिकार के सिद्धान्त' को धार्मिक स्वीकृति प्रदान करने के लिए कहा। उसके पश्चात उसने, एक महान लेखक डाक्टर कॉवैल (Doctor Cowell) से इस सिद्धान्त पर एक पुस्तक लिखने को कहा। कॉवैल ने ऐसा ही किया। अपनी पुस्तक मे उसने सिद्ध किया कि राजा सर्वोच्च था। जेम्स के ये कार्य पार्लियामेन्ट को बहुत रुष्ट करने वाले थे।

सन् १६११ मे, पार्लियामेन्ट और जेम्स के बीच खुला मतभेद हुआ। पार्लियामेन्ट राजा की विदेश-नीति पर विचार करना चाहती थी। राजा सोचता था कि ऐसा विचार (तर्क-वितर्क) नही हो सकता था। इस पर पार्लियामेन्ट ने घोषित किया कि राजा, राज्य और चर्च (धर्म) से सम्बन्धित मामलो पर तर्क वितर्क करने का उसको अधिकार था। जेम्स को यह असह्य हो गया। अतः उसने पार्लियामेन्ट को समाप्त कर दिया। इससे जेम्स तथा पार्लियामेन्ट मे मतभेद और भी बढ गया।

चार्ल्स प्रथम भी 'ईश्वरीय अधिकार के सिद्धान्त' में विश्वास करता था।

यही कारण था कि उसने सन् १६२६ से १६४० तक विना पार्लियामेन्ट के शासन किया। उसने अपनी भूल उस समय अनुभव की जब कि उसका शासन काल समाप्त होने को था। यदि उसने ऐसा पहले कर लिया होता तो उसने अपना जीवन न गँवाया होता।

चार्ल्स द्वितीय सबसे बुद्धिमान स्टुअर्ट शासक था। चार्ल्स प्रथम की फासी से उसने एक सबक सीख लिया था। परन्तु इतने पर भी उसने 'ईश्वरीय अधिकार के सिद्धान्त' में अपना विश्वास व्यक्त किया। किसी हद तक, पार्लियामेन्ट से उसके सम्बन्ध बुरे होने का कारण यही था।

(२) धर्म—

स्टुअर्ट और पार्लियामेन्ट के बीच झगड़े का दूसरा कारण धर्म था। जब जेम्स प्रथम गद्दी पर आया, उस समय देश मे बहुत से धार्मिक दल थे। उनमे से पुरिटन्स (Puritans) का दल सबसे अधिक शक्तिशाली था। हाउस ऑफ कामन्स में अधिकाश सदस्य पुरिटन्स थे। वे चाहते थे कि एलिजाबेथ का धार्मिक निर्णय संशोधित होना चाहिए। कैथोलिक पार्टी चाहती थी कि इंगलैंड, पोप के साथ अपने सम्बंध पुनः आरम्भ करे। परतु जेम्स ने इन दोनों कामो में से कोई काम न करने का निश्चय कर लिया था।

सन् १६०४ में, पार्लियामेण्ट ने अपनी मागे जेम्स के आगे रखी। उन मांगो मे से दो मांगें निम्न प्रकार थी—पहली माग यह थी कि बिशप का कार्यालय समाप्त कर दिया जाय। दूसरी माग थी कि इगलैन्ड का चर्च और प्रजातांत्रिक किया जाय। अतः राजा ने हैम्पटन कोर्ट में एक कान्फरेन्स बुलाई। परन्तु इसमे कुछ भी निश्चय न हुआ, सिवाय इसके कि ऐलिजाबेथ की प्रार्थना पुस्तक संशोधित हो जानी चाहिए।

चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में धर्म का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो गया। वह एग्लीकर चर्च का कट्टर अनुयायी था। वे लोग जो इस चर्च को स्वीकार न करते थे उन्हे मृत्यु दण्ड दिया जाता था। कैन्टरबरी (Canterbury) के आर्कबिशप (Archbishop) लॉड (Laud) ने स्कॉटलैंड के प्रेसबीयटेरियन (Presbyterian) धर्म को समाप्त कर देने वाले आघात का प्रयत्न किया। इंगलैन्ड में उसने पुरिटन्स (Puritans) के धर्म को कुचलने

का प्रयत्न किया। इसके परिणाम स्वरूप राजा और पार्लियामेन्ट मे एक गंभीर मतभेद आरम्भ हो गया। वह यही मतभेद था जो सिविल वार (Civil war) का कारण बना।

चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में धर्म के प्रश्न ने अपना महत्व खो दिया। इसके कारण दो थे। कॅवेलियर संसद ने धार्मिक प्रश्न को तय कर दिया। इसके अतिरिक्त, यह पार्लियामेन्ट इतनी शक्तिशाली थी कि चार्ल्स इसके विरुद्ध कार्य न कर सकता था।

(३) धन (Finance)—

स्टुअर्ट राजाओं और उनकी पार्लियामेण्ट के बीच के झगडो का तीसरा कारण धन (Finance) था। यह झगड़ा १६०६ से आरम्भ हुआ। एक व्यापारी ने जिसका नाम बेट (Bate) था, मुनक्के पर लगाया हुआ टैक्स चुकाने से मना कर दिया। परन्तु उसे टैक्स चुकाने के लिए विवश किया गया। राजा के इस व्यवहार ने लोगों को तथा पार्लियामेण्ट को झुंझला दिया। सन् १६०८ मे उसने 'दरों की पुस्तक' (Book of Rates) जारी की जिसके द्वारा बहुत बड़े महसूल लगाए गए थे। राजा के इस कार्य ने पार्लियामेन्ट को अधिक अप्रसन्न कर दिया। इसने राजा की महसूल लगाने की नीति की आलोचना की। जेम्स ने पार्लियामेन्ट समाप्त करके शान्त करना चाहा। सन् १६१४ में उसने अपनी दूसरी पार्लियामेन्ट बुलाई। यह ऐडल्ड पार्लियामेन्ट (Addlled Parliament) कहलाती है। इसने राजा के लिए धन की किसी प्रकार की स्वीकृति नही दी। ऐसा करने से पूर्व, इसने राजा से कर हटा लेने को कहा। राजा ने इसे समाप्त (Diss-olvc) कर दिया।

जेम्स प्रथम की विदेश नीति शान्तिपूर्ण थी। उसने परोपकारिता (Bene-volenccs) की पुरानी प्रथा को भी प्रारम्भ कर दिया था। उसने एकाधिकारों (Monopolies) को भी बेचा। राजा ने सन् १६२१ में अपनी तीसरी पार्लियामेन्ट बुलाई। इसने जेम्स की शान्तिपूर्ण नीति को पसन्द नहीं किया। इसने उससे परोपकारिता और एकाधिकारों को समाप्त कर देने को कहा। पार्लियामेन्ट के सदस्यों ने राज्य से सम्बन्धित मामलों पर तर्क

वितर्क करने के अपने अधिकार को दुहराया। इसका राजा को बहुत बुरा लगा और उन्होंने पार्लियामेन्ट भंग कर दी।

जब चार्ल्स प्रथम गद्दी पर बैठा, पार्लियामेन्ट ने उसे टनेज (Tonnage) और पाउन्डेज (Poundage) केवल एक वर्ष के लिए स्वीकार किए। उसके पहले वे राजाओं को जीवन-पर्यन्त के लिए स्वीकार होते थे। पार्लियामेन्ट के इस कार्य ने राजा और उसकी पार्लियामेन्ट के बीच बुरी भावना उत्पन्न कर दी। वह विदेशी युद्ध मे व्यस्त था। वह रुपया चाहता था। अतः उसने भेटे (Benevolences) ली। उसने जंगलो के नियम (Forest laws) क्रियान्वित कर धन बढाया। पार्लियामेन्ट ने उसे अपनी मर्जी के अनुसार करने की अनुमति नही दी। उसने अधिकार के पिटीशन (Petion of Right) का ड्राफ्ट लिखा। चार्ल्स को उसे स्वीकार करना पडा। उसने उसे निरंकुश करो के लगाने की अनुमति न दी। इसके शीघ्र बाद ही उसने पार्लियामेन्ट को भंग कर दिया।

ग्यारह वर्ष तक चार्ल्स ने बिना पार्लियामेंन्ट के शासन किया। सन् १६४० में उसे इसे बुलाना पड़ा। उस समय वह स्काटलैन्ड के खिलाफ युद्ध जारी कर रहा था। युद्ध के लिए उसे धन की आवश्यकता थी। पार्लियामेन्ट ने उसके लिए धन स्वीकार करने से मना कर दिया जब तक कि उनकी कुछ शिकायतें न दूर हो जावें। उसने एक बड़ी व्यथा-विनती (Grand Remonstrance) तैयार की जिसमे चार्ल्स के सभी अत्याचारो का उल्लेख था। इसने राजा तथा पार्लियामेन्ट के बीच बहुत ही कटु भावनाएं उत्पन्न कर दीं। दोनों के बीच के कटु और विराट मतभेद ने गृह युद्ध (Civil war) को जन्म दिया और अन्ततः चार्ल्स को फांसी लगी।

(४) विदेश-नीति—

राजा और पार्लियामेन्ट के बीच झगड़े का चौथा कारण विदेश नीति थी। स्टुअर्टस की विदेश नीति में राज्य के हितो को ध्यान मे न रखा जाता था। इसमें सदैव व्यक्तिगत स्वार्थ आधार मे रहता था।

जेम्स प्रथम स्वभाव से ही कायर था। वह स्वयं को किसी विदेश-युद्ध मे नही फँसाना चाहता था। इंगलैन्ड के लोग अपने देश की स्थिति को ऊपर उठाना चाहते थे। पार्लियामेन्ट और वहां के लोग चाहते थे कि जेम्स, स्पेन के

विरुद्ध फ्रेडरिक (Fredrick) की सहायता करे। परन्तु जेम्स युद्ध घोषित न करना चाहता था। इसका कारण यह था कि वह अपने पुत्र का विवाह स्पेन की राजकुमारी इनफैन्टा (Princess Infanta) से करना चाहता था। सन् १६२१ में पार्लियामेन्ट ने राजा से स्पेनिश विवाह का विचार त्याग देने को कहा। उसने पार्लियामेन्ट को यह कह कर शान्त कर दिया कि उसे उसके व्यक्तिगत मामलो मे हस्तक्षेप न करना चाहिए।

अम्बोयना (Amboyna) के नरसंहार (Massacre) के लिए डच उत्तरदायी थे। पार्लियामेन्ट और लोगों ने मांग की कि डचो से उसका हरजाना चुकाने को कहा जाय। राजा ने उनकी वात सुनी अनसुनी कर दी।

चार्ल्स प्रथम की विदेश नीति पार्लियामेन्ट को विल्कुल पसन्द न थी। वह फ्रान्स के साथ वैवाहिक सम्वन्ध स्थापित कर चुका था। फ्रान्स कैथोलिक देश था। अतः पार्लियामेन्ट ने वैवाहिक सम्वन्धों का विरोध किया। चार्ल्स के विदेश युद्ध वहुत ही अप्रिय थे। इसका कारण यह था कि युद्ध का बोझ लोगों पर वहुत भारी पड़ा।

चार्ल्स द्वितीय की विदेश नीति का भी पार्लियामेन्ट ने स्वागत नही किया। उसने फ्रान्स के साथ गुप्त मित्रता कर ली थी। फ्रान्स एक कैथोलिक देश था। लोग चाहते थे कि इंगलैन्ड, फ्रान्स के विरुद्ध हॉलैन्ड की सहायता करे क्योंकि हालैन्ड एक प्रोटैस्टेन्ट देश था।

(५) मंत्रियों का नियन्त्रण—

स्टुअर्ट राजाओ और पार्लियामेन्ट के वीच मतभेद का पांचवां कारण मंत्रियो के नियन्त्रण का प्रश्न था। पार्लियामेन्ट मंत्रियो पर पूरा नियन्त्रण रखना चाहती थी। राजाओं ने उसकी अनुमति नही दी। उन्होने कहा कि मंत्री उनके सेवक थे। यह दिखाने के लिए कि मंत्रियो के नियन्त्रण के प्रश्न पर राजा (Kings) और पार्लियामेन्ट्स किस प्रकार लड़ी, हम कुछ उदाहरण दे सकते है।

जेम्स प्रथम के शासन काल में, पार्लियामेन्ट ने वहुत से मंत्रियो पर अभियोग लगाए। सन् १६२१ में मोपासां (Mopesson) पर एकाधिकारों (Monopolies) का अभियोग लगाया गया। उसी वर्ष वैकन पर रिश्वत

लेने का अभियोग लगाया गया। सन् १६२४ में लार्ड मिडलसैक्स (Lord Middlsex) पर अभियोग लगाया।

चार्ल्स प्रथम के शासन काल में लार्ड वकिंघम पर अभियोग लगाया गया। राजा ने मंत्री का जीवन बचाया। परन्तु राजा के इस कार्य ने पार्लियामेन्ट को बहुत रुष्ट कर दिया।

चार्ल्स द्वितीय के मंत्री, लार्ड डैनवी (Lord Danby) पर अभियोग लगा। राजा पार्लियामेन्ट की शक्ति को जानता था। अतः वह शान्त बना रहा।

उपसंहार—

उपरोक्त कारणो के कारण, प्रारम्भिक स्टुअर्टस में और उनकी पार्लियामेन्टों मे एक लगातार संघर्ष रहा। इसमे कुछ और भी कारण जोड़े जा सकते हैं। वे निम्नलिखित थे।

(१) राजा द्वारा लोगो की निरंकुश गिरफ्तारियां और सजाएँ।
(२) राजाओं का मार्शल लॉ तथा सैनिक-आवास का अधिकार।
(३) शान्ति-काल मे राजाओं की सेना रखने की प्रथा।
(४) पार्लियामेन्ट के चुनावो मे राजा का हस्तक्षेप।

११—जेम्स प्रथम

प्रश्न ३३—जेम्स प्रथम के अपनी विदेश नीति में क्या उद्देश्य थे? उनको क्रियान्वित करने में वह कहाँ तक सफल हुआ?

अथवा

प्रश्न ३४—जेम्स प्रथम की विदेश नीति के समर्थन में क्या कहा जा सकता है?

अथवा

प्रश्न ३५—जेम्स प्रथम की विदेश नीति के पक्ष में जो कुछ भी आप कह सकते हों, कहें।

उत्तर—भूमिका :—

सन् १६०३ मे जेम्स प्रथम, क्विन एलिजाबेथ के बाद गद्दी पर बैठा।

उसने सन् १६२५ तक शासन किया। उसे ब्रिटिश सिंहासन पर बैठने वाले राजाओं में सबसे योग्य व्यक्ति कहा जाता है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त था। उसके गद्य लेख एवं भाषण बुद्धिमतापूर्ण होते थे। वह पूरी तरह समझदार और कुशल व्यक्ति था जिसका विचार अपना कर्तव्य पूरा करने का रहता था। वह उच्च विचारों का व्यक्ति था। युद्ध के काल मे उसका नारा (Beati pacifici or Blessed are the peace makers) 'शान्ति-निर्माता धन्य है' रहता था। लगभग उस अकेले ने इंगलेन्ड और स्काटलेन्ड की राजनैतिक एकता का महान् मूल्य आंका। किसी प्रकार यह एकता सन् १७०७ तक न प्राप्त हुई। दुर्भाग्य से जेम्स के दोष, उसके गुणो से अधिक थे। वह कायर था और उसमे निर्णय करने की शक्ति का अभाव था, जैसा कि उसने अपनी विदेश नीति में दिखाया। फ्रेन्च बादशाह एक समय जेम, क्राइस्टैन्डम का सबसे बुद्धिमान मूर्ख (The wisest fool in Christondom) कहा जाता था। संभवतः यह उसका सबसे उत्तम वर्णन है। जेम्स प्रथम के इन गुणों और दोषो की पृष्ठभूमि में हमारे लिए उसकी विदेश नीति का अध्ययन करना, न्यायोचित ठहराना अथवा उसकी आलोचना करना, आसान होगा।

सन् १६०३ में इंगलैन्ड की स्थिति —

कुछ अर्थों मे इङ्गलैंड की स्थिति सन् १६०३ मे जितनी सुरक्षित थी उतनी पहले नही थी। स्काटलैण्ड का जेम्स षष्टम, जब इङ्गलैंड का जेम्स प्रथम हो गया, तो ये दोनो देश, सैकड़ों वर्षो की प्रतिद्वन्दता के बाद अन्ततः एक राजा के नीचे संगठित हुए। अब तक जब इङ्गलैंड विदेश-युद्धो मे व्यस्त रहता था, स्काटलैन्ड को सदैव आक्रमण करने का अवसर मिलता था। परन्तु इसके बाद से स्काटलैंड, इङ्गलैंड की विदेशी शर्तो मे उसका मित्र हो गया और शत्रु न रहा। इसके अतिरिक्त, सिंहासन के कोई प्रतिद्वन्द्वी भी न थे जिनको कि विदेशी शक्तियाँ सहायता देती। अतः उत्तराधिकार सुरक्षित लगा। पुनः आरमेडा (Armada) की पराजय के पश्चात, स्पेन से कोई खतरा न रह गया। इसने इङ्गलैंड को समुद्र की स्वामिनी बना दिया था। फलतः

इङ्गलैंड अब यूरोप के मामलों से उतना सम्बन्धित न था जितना कि वह एलिजाबेथ के शासन काल में स्पेन के भय के कारण रहता था।

जेम्स की शान्ति की नीति—

सन् १६१८ से पूर्व की जेम्स प्रथम की विदेश नीति से हमारा विशेष सम्बन्ध यहा नहीं। सन् १६१२ की उसकी मृत्यु तक, जेम्स प्रथम के मंत्री लार्ड सैलिसबरी (Lord Salisbury) का नियन्त्रक प्रभाव था। और वह शान्ति की सावधानी की नीति का अनुकरण करता था। लार्ड सैलिसबरी की मृत्यु के पश्चात्, जेम्स ने अपने दो बच्चो के विवाह की रूपरेखा बनाई। सन् १६१३ में, उसकी पुत्री एलिजाबेथ का विवाह जर्मनी मे राइन के एलैक्टर पैलेटाइन (Elector Palatine of the Rhine in Germany) के साथ हो गया। उसने अपने पुत्र चार्ल्स के विवाह के सम्बन्ध में स्पेन के राजा की लड़की से पत्र-व्यवहार किया। चूंकि स्पेन एक कैथोलिक देश था, अतः इङ्गलैंड के लोगों ने इस पत्र-व्यवहार के प्रति रोष प्रगट किया। अतः उनका अन्त असफलता में हुआ।

सन् १६१८ में जर्मनी की स्थिति—

सन् १६१८ में, 'तीस वर्षीय युद्ध' (Thirty Year War) जर्मनी में प्रारम्भ हुआ। युद्ध ने यूरोपीय युद्ध का रूप ले लिया। धीरे-धीरे इसने यूरोप के सभी मुख्य राज्यो को खीच लिया। इस युद्ध के परिणाम महत्वपूर्ण थे। युद्ध तथा ग्रेट ब्रिटेन द्वारा लिए भाग को समझने के लिए, हमे उस समय की जर्मनी की स्थिति पहले समझ लेनी चाहिए। उस समय जर्मनी मे लगभग तीन सौ राज्य थे। वे एक सगठन मे बंधे थे जो कि 'होली रोमन एम्पायर' (Holy Roman Empire) कहलाता था। यह एक चुने हुए सम्राट (Elected Emperor) द्वारा शासित था। राज्य के शासको मे एक बहुत बड़ा मतभेद था। इसके अतिरिक्त प्रौटेस्टैन्ट्स और कैथोलिक्स में भी मतभेद था। प्रौटेस्टैन्टस जर्मनी के उत्तर में थे और कैथोलिक्स दक्षिण में।

सन् १६१६ का बोहेमिया का चुनाव—

सन् १६१६ में वहां एक आपत्ति आई। जर्मनी मे सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति 'हॉउस ऑफ हैप्सबर्ग' (House of Hapsburg) का प्रधान था। वह-

सदैव सम्राट निर्वाचित होता था। वह आस्ट्रिया और हंगरी पर भी शासन करता था। बोहेमिया का भी राजा था। हंगरी की भांति ही बोहेमिया का राजा भी चुना हुआ होता था। हैप्सवर्गस (Hapsburg) कैथोलिक्स थे, जब कि बोहेमिया के सरदार लोग प्रौटेस्टेन्ट्स थे। सन् १६१६ में हुई सम्राट की मृत्यु का सरदार लोगो ने लाभ उठाया। उन्होंने एक प्रौटेस्टेन्ट, फ्रैडरिक, ऐलेक्टर पैलेटाइन (Elector Palatine) को राजसिंहासन प्रस्तुत किया। वह, जैसा कि हम ऊपर बता चुके है, जेम्स प्रथम का दामाद था। फ्रैडरिक ने इस बात की सलाह जेम्स से ली कि वह इसे स्वीकार करे अथवा नही। जेम्स निर्णय पर पहुँचने में सुस्त था। अतः फ्रैडरिक ने सिंहासन इससे पहले ही स्वीकार कर लिया, जब तक कि जेम्स किसी निर्णय पर पहुँच पाता।

फ्रैडरिक की कठिनाइयाँ—

फ्रैडरिक ने स्वयं को अनेक कठिनाइयो से घिरा पाया। जर्मनी में कैथोलिक शक्तियां तुरन्त संगठित हो गई। उन्होंने आस्ट्रिया के नए सम्राट फर्डीनेंड (Ferdinand) के लिए बोहेमिया के दावे का समर्थन किया। दूसरी ओर, फ्रैडरिक का समर्थन जर्मनी मे प्रौटेस्टेन्ट राजकुमारी द्वारा नही था। फलतः उसकी सेनाएं पराजित हुई। उसे बोहेमिया से निकाल दिया गया। परन्तु इतने पर ही अन्त न था। बावेरिया के ड्यूक ने फ्रैडरिक के राज्य के उस भाग पर अधिकार कर लिया जो कि अपर पैलेटिनेट (Upper Palatinate) कहलाता था। स्पेन के राजा ने लोअर पैलेटिनेट को अधिकृत कर लिया। इस प्रकार एलैक्टर पैलेटाइन ने न केवल बोहेमिया से ही हाथ धोया बल्कि उसे अपना स्वयं का राज्य भी खोना पड़ा।

इंगलैन्ड की नीति—

इङ्गलैंड मे जनता की आवाज फ्रैडरिक के पक्ष में थी। वह एक अंग्रेज राजकुमारी का प्रौटैस्टेन्ट पति था। लोगो ने मांग की कि इङ्गलैंड को स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर देनी चाहिए। परन्तु जेम्स ने अपनी कायरता और शीघ्र निर्णय पर न पहुँचने वाली आदत के कारण कोई कार्यवाही नही की। अंग्रेज स्वयंसेवक (Volunteers) महाद्वीप पर लड़ने को गए। हाउस ऑफ कामन्स ने फ्रैडरिक के पक्ष मे प्रस्ताव पास किए। परन्तु जेम्स ने कुछ

भी नही किया। वह यूरोप का शान्ति निर्माता होने का इच्छुक था। उसने महाद्वीप के लिए असंख्य राजदूत भेजे। उसने यह कभी न अनुभव किया कि वह कूटनीति, जिसके पीछे सैनिक शक्ति न हो, व्यर्थ थी। उसने यह कभी न समझा कि जर्मनी मे प्रॉटैस्टेन्टस और कैथोलिक्स के बीच मतभेद इतना गहरा था कि वह केवल बातचीत से हल न हो सकता था।

स्पेनिश विवाह—

जेम्स ने मूर्खता मे सोचा था कि यदि वह अपने पुत्र चार्ल्स की स्पेनिश इन्फैन्टा से शादी कर लेगा तो स्पेनियर्डस पैलेटिनेट का अधिकार छोड़ देंगे। अतः उसने उस पत्र-व्यवहार को पुनः चालू किया जो कि उसने सन् १६१७ में आरम्भ किया था। अन्ततः सन् १६२३ मे चार्ल्स इन्फैण्टा से विवाह की कहने मैडरिड गया। जेम्स का प्रिय मन्त्री बकिंघम भी उसके साथ गया। स्पेनिश नेताओं ने शादी के बदले में रोम कैथोलिक्स के लिए इंगलैंड में रियायतें मांगी। साथ ही वे पैलेटिनेट को छोडने को राजी न थे। चार्ल्स और बकिंघम, परिणामस्वरूप निराश होकर वापिस आए।

उपसंहार—

जेम्स की असफलता पर इङ्गलैंड के लोगो ने खुशियाँ मनाई। उन्हें प्रसन्नता थी कि चार्ल्स बिना इन्फैन्टा के लौटा था। चार्ल्स और बकिंघम दोनो ही अब युद्ध के लिए और पैलेटिनेट को वापिस लेने पर तुले थे। जेम्स झुक गया। पार्लियामेन्ट ने धन एकत्रित कराया। एक फौज सग्रहित की गई। परन्तु वह कभी भी अपने गंतव्य स्थान पर न पहुँची। वह एक अन्य घेरे की ओर सन् १६२५ में मोड़ दी गई। उसी वर्ष जेम्स की मृत्यु हो गई। पैलेटिनेट वापिस न लिया जा सका।

प्रश्न ३६—जेम्स प्रथम की विभिन्न संसदों (Parliaments) एवं उसके प्रत्येक से सम्बन्ध का वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रश्न ३७—जेम्स प्रथम की पार्लियामेन्टों की मुख्य शिकायतों का संक्षिप्त वर्णन दीजिए। वे कहां तक न्यायोचित थी ?

अथवा

प्रश्न ३८—जेम्स-प्रथम और उसकी पार्लियामेन्ट के बीच संघर्ष के क्या कारण थे ? उनके बीच जो सम्बन्ध रहे उनका विवरण दीजिए।

उत्तर—भूमिकाः—

जेम्स के शासन काल के बिल्कुल प्रारम्भ से ही जेम्स प्रथम और पार्लियामेन्ट के बीच मत भेद आरम्भ हुआ। यह स्टुअर्ट काल मे आद्योपान्त चलता रहा। जेम्स प्रथम पार्लियामेन्ट के विचारो को कभी स्वीकार न कर सका। इसके विपरीत पार्लियामेन्ट नही चाहती थी कि वह राजा द्वारा निर्देशित हो। जेम्स प्रथम और पार्लियामेन्ट के बीच के संघर्ष के कारण अनेक और विभिन्न थे। हम उनका संक्षिप्प विवेचन निम्न पंक्तियो मे करेंगे।

संघर्ष के कारण—

राजा और पार्लियामेन्ट के बीच संघर्ष के अनेक कारण थे। प्रथमतः, हाउस ऑफ कामन्स के सदस्यो का अधिकांश पुरिटन्स (Puritons) थे। वे कैथोलिको के कट्टर विरोधी थे। जेम्स सहनशील विचारों का व्यक्ति होने के कारण कैथोलिक के प्रति सहनशील सा था। उसने इंगलिश चर्च में ऐंग्लीकन अथवा आरमीनियन स्थिति का समर्थन किया। हाउस आफ कॉमन्स का बहुमत आरमीनियन सिद्धान्त का कट्टु विरोधी था।

दूसरे, वहां कोई वाह्य खतरा न था। यह अक्सर कहा जाता है कि अंग्रेज लोग एक समय मे केवल एक ही वात के वारे मे सोच सकता है। ऐलिजावेथ के शासन काल मे सदैव वाह्य खतरा रहता था। अतः उस समय अधिकारो और सुविधाओं के वारे मे तर्क-वितर्क का समय ही न था। आर्मेडा की पराजय का अर्थ विदेशी खतरे का समाप्त होना था। परन्तु इसका अर्थ ट्यूडर डिक्टेटरशिप का अन्त भी था क्योकि उसके वाद उसकी आवश्यकता न थी। अतः अंग्रेजी लोगो ने स्वय को अपनी स्वंय की सरकार के सुधार एव आलोचना मे लगाया।

तीसरे, वहाँ उन नागरिको का एक नया वर्ग विकसित हुआ जो कि स्वयं के लिए सोच सकते थे और कार्य कर सकते थे। वे ऐसे प्रश्नो पर तर्क-वितर्क करते थे—"किस उपाधि से राजा ने सिंहासन प्राप्त किया ?" ईश्वरीय

वंशानुकम के अधिकार से अथवा पार्लियामेन्ट के एक्ट के आधार पर ?" "किंग के प्रेरोगेटिव्स (King's Prerogatives) से क्या अर्थ था ?" राजा और उसका दल यह मानता था कि यह राजा में एक प्रकार की सुरक्षित शक्ति थी कि वह अन्ततः जो चाहे सो करे। पार्लियामेन्ट पार्टी सोचती थी कि सभी अधिकारों और शक्तियों का आधार कानून (Law) था और राजा को कानून से शक्तियाँ मिली हुई थी। अन्य प्रश्न थे, "राजतन्त्र का स्थान कहां था ?", "क्या यह केवल राजा के साथ ही था अथवा मिश्रित रूप में राजा और पार्लियामेन्ट के साथ ?"

चौथे, कुछ व्यावहारिक (Practical) प्रश्न उत्पन्न हुए। "क्या राजा, विना पार्लियामेन्ट की सहमत के धन एकत्रित कर सकता था ?" "क्या वह विना अभियोग लगाए लोगों को कैद कर सकता था ?" "क्या पार्लियामेन्ट मंत्रियो से उनके कार्यो का स्पष्टीकरण माग सकता था ?" राजा और पार्लियामेन्ट के वीच के संघर्ष का वहुत वडा आधार इन प्रश्नो के उत्तर। पर निर्भर था।

अन्ततः एकतंत्रवाद की शक्तियो की परिभाषाएँ गलत-सलत थी। अंग्रेजी-संविधान स्थिर प्रकार का न था। राजा के दल के निर्णत मत, पार्लियामेन्टरी पार्टी की भाति ही थे। अपने-अपने दल के विचारों के पक्ष में दोनो के अलग-अलग सशक्त तर्क थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया, इन विचारो की खाई चौड़ी होती गई।

इन सारे कारणो से जेम्स प्रथम और उसकी पार्लियामेन्ट के बीच एक लगातार संघर्ष चला। यह निम्न विवरण से बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है।

प्रथम संसद (The First Parliament 1604-1611)—

जेम्स ने अपनी प्रथम पार्लियामेन्ट सन् १६०४ में बुलाई। उसने चुनने वालों को सावधान कर दिया कि वे अवाछित अथवा सिरे के विचारो वाले व्यक्तियो को न छाटे। परन्तु वकिंघमशायर ने एक न्याय विरुद्ध आचरण वाले व्यक्ति को, जिसका नाम गौडविन था चुना। चान्सलर द्वारा एक नए चुनाव का आदेश हुआ। हाउस ऑफ कॉमन्स ने अपने अधिकारो के हनन के विरुद्ध

प्रदर्शन किए । अतः राजा को वह मानना पड़ा । हाउस ऑफ़-कामन्स की इस विजय ने उसे सभी झगडेतलब चुनावों की अच्छाइयों को तय करने का अधिकार दे दिया । यह बहुत ही महत्व की बात थी । शर्ले (Shirley) के मामले मे जिसको कि कर्ज के लिए सजा हुई थी, यह तय किया गया कि सदस्य साधारणतया कैद नही किया जा सकता था जब तक कि उस पर विद्रोह, गद्दारी अथवा शान्ति-भंग का आरोप न हो ।

जेम्स का सबसे गंभीर, कानून के विरुद्ध जाना उसके कर लगाने के सम्बन्ध में था । आय के उसके प्रमुख साधन; राजसी भूमि (Crown lands), जागीरदारो पर कर्ज, तथा टनेज और पौंडजे था । वे उसे जीवन-पर्यन्त के लिए स्वीकृत थे । इन साधनो से प्राप्त धन यथेष्ट न था । अतः जेम्स ने उन्हे बदलने का दावा किया । अपनी आमदनी को बढाने के लिए उसने मुनक्को पर नए कर लगाए । चूंकि उसने उनके लिए पार्लियामेन्ट से स्वीकृति नही ली थी, एक व्यापारी बेट (Bate) ने वे कर चुकाने से मना कर दिया । जजो ने निर्णय राजा के पक्ष मे दिया । इससे प्रोत्साहित हो कर उसने 'करो की पुस्तक' (Book of rates) जारी की । इसके द्वारा अतिरिक्त कर जो कि इम्पोजीशन्स (Impositions) कहलाते थे लगाए गए । कॉमन्स ने इन इम्पोजीशन्स के विरुद्ध प्रदर्शन करना कभी नही रोका जो कि उनके करो पर नियन्त्रण रखने के अधिकार को चुनौती देते थे ।

सामान्य राजनीति के मामलो मे कॉमन्स, राजा से उससे अधिक सहमत न थे जितने कि सुविधाओ के मामलों में । सन् १६०७ में पार्लियामेन्ट ने इंगलैन्ड तथा स्काटलैन्ड के एक राज्य मे संगठित होने की अनुमति नही दी जबकि जेम्स ने इसे पसन्द किया होता । जेम्स ने जागीरदारी के कर्ज के चुकता कराने तथा विवाह और संरक्षता (Wardship) के अधिकारो का जागीरदारो द्वारा अधिकृत भूमि पर २००,००० पौंड के निश्चित कर का प्रस्ताव रखा । यह 'महान शर्तनामा' (Great Contract) कहलाता था । कॉमन्स ने इसे बहुत ज्यादा समझा और योजना असफल हुई । सन् १६११ मे जेम्स ने प्रथम पार्लियामेन्ट भंग कर दी ।

दूसरी पार्लियामेन्ट (१६१४)

दरवार के खर्चे वहुत बढ गए। इम्पोजीशन्स द्वारा अतिरिक्त आय प्राप्त करने के बावजूद भी जेम्स खर्चे पूरे करने मे असफल रहा। अतः सन् १६१४ में पार्लियामेन्ट बुलानी पडी। राजा के कुछ दरवारियो ने एक मित्रता-पूर्ण ससद चुनवा ली। इसी कारण वे अन्डर टेक्स (Under takers) कहलाते हैं। परन्तु जब पार्लियामेन्ट एकत्रित हुई तो राजा ने इसे विरोधी पाया। अतः उसने इसे किसी नियम के पारित करने से पूर्व ही भंग कर दिया। यह केवल दो महीने बैठी। इसके कार्यानुसार यह 'एन्डिल्ड पार्लियामेन्ट'' (Andled Parliament) कहलाती है।

तीसरी पार्लियामेन्ट (१६२१—१६२२)

विदेशी उलझनो के कारण जेम्स को सन् १६२१ में तीसरी पार्लियामेन्ट बुलानी पडी। यह पार्लियामेन्ट वहुत महत्वपूर्ण थी। पहले ही स्थान मे हाउस ऑफ कामन्स ने मुकद्दमा चलाने के अपने अधिकारो को ताजा किया। यह असाधारण शक्ति का शस्त्र था जो कि सन् १४९५ से प्रयोग नही हुआ था। हाउस ऑफ कामन्स ने इसे सर गाइल्स मौम्पेसो (Sir Giles Mompesson) और फान्सिस बेकन (Francis Bacon) के विरुद्ध प्रयोग किया। सर गाइल्स मौम्पेसो के विरुद्ध एकाधिकार रखने (Monopolies) का तथा फान्सिस बेकन के विरुद्ध रिश्वतें लेने के अभियोग थे। दोनो पर मुकद्दमा चला और दंडित किए गए।

दूसरे, इस हाउस ऑफ कामन्स ने भाषण स्वतन्त्रता पर जोर दिया। यह उस समय एकत्रित हुई जब कि जेम्स, चार्ल्स और स्पेनिस राजकुमारी के बीच शादी का प्रस्ताव कर रहा था। कॉमन्स ने यह पसन्द नही किया क्यो कि स्पेन कैथोलिक था जबकि इंगलैन्ड प्रोटेस्टेन्ट था। अतः इसने राजा के पास तक एक स्मरण-पत्र (Petition) भेजा जिसमे प्रार्थना की कि चार्ल्स को एक प्रोटेस्टेन्ट राजकुमारी से विवाह करना चाहिए। इनसे जेम्स अत्यधिक क्रुद्ध हो गया। उसने उन्हे चेतावनी दी कि वे उसके व्यक्तिगत मामलों की जनता मे तर्क वितर्क न करें तथा राज्य और सरकार के मामलों मे हस्तक्षेप न करें। अंग्रेजी स्वतन्त्रता के सौभाग्य से हाउस ऑफ कामन्स ने साहस बनाए रखा।

अपनी भापरण स्वतन्त्रता को घोषित करते हुए इन्होंने एक प्रोटेस्टेशन तैयार किया। इसमें कामन्स ने विशेष जोर देते हुए न्यायोचित ठहराया कि "उनकी स्वतन्त्रताएँ और सुविधाएँ, इंगलेन्ड के प्रजाजनो के असंदिग्ध जन्मसिद्ध अविकार थे।" जेम्स क्रोध से जल उठा। उसने अपनी पत्रिकाओं से स्वयं अपने ही हाथों से प्रोटेस्टेशन को फाड़ दिया। उसने तब पार्लियामेन्ट को भंग कर दिया और चार सदस्यों को कैद कर लिया जिनके नाम निम्न थे—कोक (Coke), पिम (Pym), फेलिप्स (Phelips), तथा मैलोरी (Mallory).

चौथी पार्लियामेन्ट (१६२४)—

चार्ल्स का विवाह स्पेनिश इनफेन्टा से कराने के अपने पत्र व्यवहार में जेम्स असफल रहा। इससे दोनो देशो के वीच युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। इन परिस्थितियों में चौथी पार्लियामेन्ट बुलाई गई। इसने इंगलैन्ड और स्पेन के वीच वैवाहिक एकता कभी न चाही थी। राजा तथा पार्लियामेन्ट के वीच सम्वन्व अच्छे हो गए। पार्लियामेन्ट ने उत्साह से, स्पेन से होने वाले युद्ध के लिए रसद पर्याप्त की। इसके वाद शीघ्र ही सन् १६२५ मे जेम्स प्रथम की मृत्यु हो गई।

१२—चार्ल्स प्रथम

प्रश्न ३९—चार्ल्स प्रथम तथा उसकी प्रथम तीन संसदो (पार्लियामेन्ट) के मध्य संघर्ष के कारणों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

अथवा

प्रश्न ४०—चार्ल्स प्रथम की पहली तीन संसदों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए तथा प्रत्येक से उसके सम्बन्ध बतलाइए।

उत्तर—भूमिका:—

अपने शासन के प्रथम चार वर्षो मे चार्ल्स ने तीन पार्लियामेन्टें बुलाई। वह उनमे से प्रत्येक से झगड़ा। तव ग्यारह वर्ष तक उसने विना पार्लियामेन्ट के शासन किया। अन्ततः स्काटलेन्ड के युद्ध तथा निरन्तर धन की आवश्यकता ने उसे सन् १६४० मे दो पार्लियामेन्टे बुलाने के लिए विवश कर दिया।

इन पालियामेन्टो मे से दूसरी ने उसकी शक्तियां कम कर दी। घटनावश, सन् १६४२ में गृह-युद्ध (Civil War) फूट पड़ा। चार्ल्स के अपनी पालियामेन्टो के साथ सम्बन्धों का यह है संक्षिप्त इतिहास।

झगड़े के कारण—

चार्ल्स प्रथम तथा उसके पालियामेन्टो के बीच झगड़े के कारण बहुत से थे। प्रथमतः धार्मिक कठिनाई थी। चार्ल्स, 'एग्लीकन हाइ चर्चमैन' (Anglican High Churchman) था। उसकी पत्नी एक कैथोलिक थी, वह रोमन कैथोलिक्स को सहन करता था। पालियामेन्ट, राजा के मंत्रियो पर अविश्वास करती थी। इसके विपरीत राजा इन मंत्रियों को योग्य और कुशल समझता था। वह पालियामेन्ट द्वारा उनकी आलोचना किया जाना सहन न कर सकता था। पालियामेन्ट, राजा से उसकी विदेश-नीति की असफलता के कारण रुष्ट थी। दरवार के कार्यो ने भी पालियामेन्ट को असंतुष्ट किया था।

परन्तु इन संघर्षो की तह मे और महत्वपूर्ण प्रश्न थे। प्रभुत्व कहाँ रहता था ? देश की सरकार का उत्तरदायित्व किस पर था ? पालियामेन्ट, सरकार पर और अधिक नियन्त्रण चाहती थी। चार्ल्स यह सुविधा देने के लिए असहमत था। यही सारी कठिनाई थी।

चार्ल्स की प्रथम पालियामेन्ट (१६२५)—

चार्ल्स की प्रथम पालियामेन्ट सन् १६२५ मे मिली। यह ठीक उस समय के वाद ही हुई थी जवकि राजा ने डैनमार्क के राजा को वहुत वड़ी धन राशि चुकाने का प्रवन्ध किया था। उसने स्पेन पर आक्रमण करने के लिए एक फौजी टुकड़ी भेजने का भी प्रवन्ध कर लिया था। इन दोनो वातो के लिए काफी धन की आवश्यकता थी। उस समय समाचार पत्र न थे। अतः पालियामेन्ट के सदस्य यह न जानते थे कि क्या हो रहा था। चार्ल्स अपनी नीति स्पष्ट न करता और न चार्ल्स अपनी आवश्यकताएँ ही वतलाता। उसने नेवी की निश्चित माँग की। परन्तु उसने जितनी वड़ी धन राशि की उसे आवश्यकता थी उसका केवल संकेत दिया। परिणामस्वरूप चार्ल्स को जितने धन की आवश्यकता थी उसका उसे केवल सातवाँ भाग प्राप्त हुआ।

उसी समय पार्लियामेन्ट ने राजा को केवल एक वर्ष के लिए टनेज (Tonnage) तथा पौन्डेज (Poundage) स्वीकार किए। पिछली दो शताब्दियों से ये, राजा को जीवन पर्यन्त के लिए स्वीकृत होती थी। यहाँ पार्लियामेन्ट अनुचित थी। राजा बिना धन के काम न चला सकता। बेट (Bate) के मुकद्दमे मे जो निर्णय हुआ उसने चार्ल्स के बिना पार्लियामेन्ट की स्वीकृति के कर लगाने को कानूनी (Legal) बना दिया। अतः उसने ऐसा किया। पार्लियामेन्ट अब इस बात पर तुली कि वह अब, तब तक कोई अनुदान स्वीकार न करेगी जब तक कि बकिंघम प्रथक नही कर दिया जाता। अतः चार्ल्स रुष्ट हो गया। उसने पार्लियामेन्ट भंग कर दी।

चार्ल्स की दूसरी पार्लियामेन्ट (१६२६)—

चार्ल्स की दूसरी पार्लियामेंन्ट सन् १६२६ में मिली। यह फ्रेन्च राजा को जहाजो के ऋण तथा कैडिज की टुकड़ी का सर्वनाश हो जाने के पश्चात मिली। हाउस ऑफ कामन्स ने पहले माँग की कि रसद की किसी स्वीकृति से पूर्व कैडिज (Cadiz) सर्वनाश मे जाच होनी चाहिए। यह विशेषतः बकिंघम के व्यवहार व चरित्र की छान बीन चाहते थे। चार्ल्स ने कहा कि अपने मंत्रियों का निर्णय करने वाला वह है न कि पार्लियामेन्ट। उसने कहा, "मै अपने सेवको पर टिप्पणी करने के लिए, हाउस न चाहूँगा, विशेपतः ऐसा सेवक जो मेरे इतना घनिष्ठ है।" हाउस ऑफ कामन्स तब एक कदम और आगे बढ गया। इलियट (Eliot) के नेतृत्व में इसने बकिंघम पर अभियोग लगाया। बकिंघम पर अभियोग लगने से चार्ल्स ने दूसरी पार्लियामेन्ट भग कर दी।

चार्ल्स की तीसरी पार्लियामेन्ट (१६२८)—

तीसरी पार्लियामेन्ट सन् १६२८ में मिली। चार्ल्स अपने प्रथम भाषण मे आवश्यकरूप से अशिष्ट था। उसने कहा कि यदि पार्लियामेन्ट ने उसकी आवश्यकताओ की पूर्ति न की तो अवश्य ही वे सब साधन प्रयोग करने चाहिए जो कि ईश्वर ने उसके हाथ सौपे हैं। उसने आगे कहा, "इसे धमकी न समझिए, क्योकि मैं सिवाय अपने बराबर वालो के किसी को धमकाता नही।" यह एक बुरा प्रारम्भ था। परन्तु पार्लियामेन्ट को राजा के भाषण की अपेक्षा असंतोष

के और अधिक महत्वपूर्ण कारण थे। योजना असफल हो गई थी। पार्लियामेन्ट धर्म के बारे में अभी भी निरुत्साहित थी। इसके अतिरिक्त राजा ने हाल ही में जबरन कर्ज लादा था। परन्तु यही सब न था। पांच सरदारो (Knights) ने यह जबरन कर्ज देने से मना कर दिया था और उन्हे सजा होगई थी। पार्लियामेन्ट का विश्वास था कि यह राजा द्वारा शक्ति का दुरुपयोग था।

पार्लियामेन्ट ने राजा को शक्ति का दुरुपयोग करने से रोकने का निश्चय किया। अतः इसने अधिकारों का प्रार्थना-पत्र (Petition of Right) तैयार किया। इसके चार अनुच्छेद निम्न थे :—

(१) कर्ज और कर, बिना पार्लियामेन्ट की सहमति के अवैधानिक थे।

(२) सभी निरंकुश (स्वेच्छाचारी), बिना किसी अभियोग के, सजाएँ अवैधानिक (Illegal) थी।

(३) व्यक्तिगत मकानों मे सैनिको का आवास कराने की मुमानियत थी।

(४) शान्तिकाल मे मर्शल-ला का प्रयोग अमान्य था।

राजा ने टालने का हर संभव प्रयत्न किया। आखिरकार उसे उस प्रार्थना पत्र पर अपनी सहमति देनी ही पड़ी। परन्तु उसने इसके अनुच्छेदों मे से प्रत्येक को भंग किया।

तीसरी पार्लियामेन्ट का दूसरा अधिवेशन सन् १६२९ मे हुआ। पार्लियामेन्ट ने कहा कि राजा ने 'अधिकार के प्रार्थना पत्र' के अनुच्छेदो (Articles) के विपरीत आचरण किया है। राजा और पार्लियामेन्ट के बीच मतभेद और कटु होता गया। चार्ल्स ने पार्लियामेन्ट को भंग करने का निश्चय किया। परन्तु उसके पार्लियामेन्ट भंग करने से पूर्व ही सुप्रसिद्ध घटना घट गई। स्पीकर को उसकी कुर्सी पर ही दबा लिया गया। दरवाजो पर ताले लगा दिए गए। इलियट (Eliot) द्वारा प्रस्तावित तीन प्रस्ताव पास कर दिए गए। वे इलियट के तीन प्रस्ताव (Eliot's Three Resolutions) कहलाते हैं। उन्होने घोषणा की कि जो कोई भी धर्म मे परिवर्तन प्रस्तावित करता था, अथवा बिना पार्लियामेन्ट की सहमति के करो का प्रस्ताव करता था अथवा कर देता था वह राज्य का शत्रु था। ये प्रस्ताव अन्तिम थे जो कि तीसरी पार्लियामेन्ट को पास करने थे क्योकि यह तुरन्त ही भंग कर दी गई।

उपसंहार—

इस प्रकार राजा और पार्लियामेन्ट के मध्य संघर्ष का प्रथम काल इस प्रकार समाप्त हुआ। कभी कभी पार्लियामेन्ट बहुत ही संदेहास्पद थी। कभी यह रसद पूर्ति न करती थी। धर्म के मामलो मे यह सदैव असहनशील थी। परन्तु, सब मिलाकर, इसने स्वयं को राजाओं तथा उनके सलाहकारों की अपेक्षा अधिक धैर्यवान, अधिक व्यावहारिक और अधिक स्पष्ट-विचारक प्रदर्शित किया। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि पार्लियामेन्ट सही थी। परन्तु हमें यह न भूल जाना चाहिए कि पार्लियामेन्ट राजा तथा उसके सलाहकारो पर नियन्त्रण करने का प्रयत्न कर रही थी। अतः यह अस्वाभाविक नही था कि शासकों ने इसका विरोध किया।

प्रश्न ४१—चार्ल्स प्रथम (१६२६–१६४०) की व्यक्तिगत सरकार का संक्षेप में विवेचन कीजिए तथा वे परिस्थितियां बताइए जिनके कारण कि लम्बी संसद (Long Parliament) की मीटिंग हुई।

अथवा

प्रश्न ४२—चार्ल्स प्रथम के शासन काल की सन् १६२६ से १६४० के बीच के समय का संक्षिप्त इतिहास लिखिए।

उत्तर—भूमिका :—

अपनी तीसरी पार्लियामेन्ट को भंग करने के पश्चात् चार्ल्स ने ग्यारह वर्ष तक बिना पार्लियामेन्ट के शासन किया। सन् १६२६ से १६४० के इस समय में उसने अपनी मर्जी का शासन किया। उसने अपने अधिकारों का सर्वाधिक प्रयोग किया। उसने दो सलाहकारो—लॉड (Laud) तथा वेन्टवर्थ (Wentworth) की सहायता से शासन किया। लार्ड, चर्च के मामलो में उसका सलाहकार था। वेन्टवर्थ राज्य के मामलो में उसका परामर्शदाता (सलाहकार) था। उनके पथ-प्रदर्शन मे चार्ल्स ने बहुत ही स्वतन्त्र, निरंकुश मार्ग का अनुशरण किया। इसके परिणाम स्वरूप, पार्लियामेन्ट से मतभेद आवश्यक हो गया।

चार्ल्स के निरंकुश कानून—

अपने व्यक्तिगत शासन में चार्ल्स ने बहुत से निरंकुश कार्य किए।

उसका पहला कार्य, हाउस ऑफ कामन्स के सारे नेताओं को गिरफ्तार करना था। उसके बाद उसने अनुचित साधनो से धन एकत्रित करना आरम्भ कर दिया। 'कोर्ट आफ स्टार चैम्बर' (The Court of Star Chamber) तथा क़ोर्ट आफ हाई कमीशन (The court of High commission) ने उन सभी व्यक्तियो को दंडित किया जिन्होने कि राजा की आज्ञा नहीं मानी। इस प्रकार हम चार्ल्स के निरंकुश कानूनों को तीन शीर्षको मे बांट सकते हैं : (१) अनुचित तरीकों द्वारा धन एकत्रित करना (२) लोगों को इस बात के लिए विवश करना कि वे उसके धार्मिक विचारो को मानें (३) बिना किसी अभियोग के, इच्छानुसार लोगो को जेलों मे ठूंसना।

धन एकत्रित करने की चार्ल्स की विधि—

धन स्वीकार करने के लिए वहां कोई पार्लियामेन्ट न थी। अतः धन एकत्रित करने के लिए चार्ल्स ने विभिन्न उपाय प्रयोग किए। उसने भूमि के नियमों को खुले आम नही तोड़ा। परन्तु उसने ऐसा करने के लिए अन्दरूनी तरीके अपनाए। उसने इस प्रकार जो उपाय प्रयोग किए वे निम्नलिखित थे—

(१) टनेज (Tonnage) तथा पौंडेज (Poundage)—चार्ल्स ने जहाज से आए हुए माल पर महशूल (Tonnage) तथा कमीशन प्रति पौंड (Poundage) का कानून बना दिया। ऐसा उसने इस आधार पर किया कि उसे व्यापार को सुव्यवस्थित करनें का अधिकार था।

(२) जुरमाने (Fines)—उसने उन लोगो पर जुरमाने किए जिन्होने कि पार्लियामेन्ट के पुराने भूले हुए कानूनो को उलंघन किया। उन व्यक्तियों पर भी जुरमाने हुए जिन्होने कि राजकीय जंगलों का अनधिकृत प्रयोग किया।

(३) नाइट की पदवी की कुर्की (Distraint of Knighthood)

उसने नाइटहुड की कुर्की की पुरानी प्रथा को पुनः ताजा किया। इस प्रथा के अनुसार उन सभी व्यक्तियो को जिनके पास चालीस पौंड प्रतिवर्ष अथवा उससे अधिक की सम्पत्ति थी उन्हे स्वयं को 'नाइट' की पदवी लेनी थी। जो लोग ऐसा करने में लापरवाही करते थे उन पर राजा द्वारा जुरमाना किया जाता।

(४) बेनेवोलेन्सेज तथा मोनोपोलीज (Benevolences and Monopolies) बेनेवोलेन्सेज तथा मौनोपालीज को पुनः ताजा किया गया।

(५) शिप-मनी (Ship-Money)—एक नए प्रकार का टैक्स जो कि 'शिप-मनी' कहलाता था, लगाया गया। यह एक वहुत पुराना कर (Tax) था। यह केवल उन नगरो पर लगाया गया था जो समुद्री-बन्दरगाहों के नजदीक थे। युद्ध काल के जहाजो को एकत्रित करने के लिए लगा था। चार्ल्स ने इस टैक्स को समुद्री बन्दरगाहों तथा अन्दर के नगरो दोनों पर ही लगाया। लोगों ने इसके विरुद्ध एक तगड़ी शिकायत थी। उन्होंने कहा कि यह कर, पार्लियामेन्ट की स्वीकृत के विना लगाया-गया था।

हैम्पडन (Hampden) ने 'शिप-मनी' (Ship-Money) चुकाने से मना कर दिया। उसे गिरफ्तार कर लिया गया। न्यायाधीशों (Judges) ने निर्णय उसके विरुद्ध किया। इसके परिणाम-स्वरूप सारे देश भर मे बड़ा जोर का असन्तोष भड़का। राजा और पार्लियामेन्ट के वीच की खाई और भी चौड़ी होती गई।

चार्ल्स के नागरिक दमन (Civil Oppressions)—

नागरिक मामलो मे वैन्टवर्थ (Wentworth) चार्ल्स का प्रमुख सलाहकार था। जिस समय 'अधिकार का प्रार्थना-पत्र' (Petition of Right) तैयार किया गया था, वह राजा की नीति का अग्रणी आलोचक था। परन्तु उसके कुछ समय वाद वह चार्ल्स से जा मिला। राजा ने उसे उत्तर की काउंसिल (Council of the North) का प्रेसीडेन्ट वना दिया। बाद को उसने उसे आयरलेन्ड का लार्ड डिप्टी (Lord Deputy) नियुक्त किया। अन्ततः उसे स्ट्रैफर्ड का अर्ल (Earl of strafford) वना दिया।

वेन्टवर्थ (Wentworth) का शासन आयरलैन्ड मे अनेक प्रकार से प्रशसनीय था। देश ने अच्छी प्रगति की। परन्तु उसके तरीके पसन्द न किए गए। अतः लोग उससे घृणा करने लगे। वह शक्तिशाली सरकार (Government) मे विश्वास करता था। उसकी प्रणाली 'थौरो' (Thorough) कहलाती थी। इसका अर्थ यह था कि कुशलता अनियन्त्रित शासकीय विधि पर आधारित थी।

लोगों को इस बात के लिए विवश करना कि वे उसका धर्म मानें—

चार्ल्स, पुरिटन्स (Puritans) का एक बड़ा शत्रु था। वह आर्मीनियन पार्टी (Arminian-Party) के पक्ष मे था। वह उत्सवो के कुछ निश्चित तरीको को पसन्द करता था जिनको पुरिटन्स (Puritans), पोपिश सोचते थे। अपनी धर्म-नीति को सफल बनाने के लिए उसने लॉड (Laud) को केन्टरबरी का आर्चबिशप (Archbishop of Canterbury) नियुक्त कर दिया। लॉड उसी प्रकार की आराधना द्वारा धर्म (Church) में एकता लाना चाहता था। इसी उद्देश्य को मस्तिष्क मे रखकर उसने धार्मिक मामलो की सभी अनुपयुक्त आवाजो को जड़ से समाप्त करने का प्रयत्न किया। उसने अनेक ऐसे उत्सवो को शक्ति पूर्वक चालू किया जिनको कि पुरिटन्स घृणा करते थे। उसने रोमन कैथोलिक्स से नम्रता का व्यवहार किया। अनेक धर्मोपदेशको ने लॉड की इस धार्मिक-नीति का विरोध किया। अतः उन्हे उनके स्थानो से निष्कासित कर दिया गया। कोर्टस आफ स्टार चैम्बर एन्ड हाइ कमीशन (Courts of Star Chambur and High Commission) के द्वारा उसने पुरिटन्स को दडित किया।

दमन की विधियां (Methods of Oppression)—

कोर्ट आफ स्टार चैम्बर तथा कोर्ट आफ हाइ कमीशन, ये चार्ल्स के दमन के यन्त्र थे। ये न्यायालय सबमे पहला ध्यान राजा के हितो का रखते थे। कोर्ट आफ स्टार चैम्बर उन व्यक्तियो को दन्डित करता जो राजा की नीति का विरोध करते। कोर्ट आफ हाइ कमीशन इस व्यक्तियो को दन्डित करता जो कि लॉड (Loud) की धर्म-पद्धति को स्वीकार न करते। ये न्यायलय, लोगो पर भारी भारी जुरमाने करते और उन्हे जेल मे डाल देते। उन्होंने देश के कानून का कभी ध्यान नही किया बल्कि अपने स्वयं के, इच्छानुसार तरीके अपनाये।

चार्ल्स प्रथम तथा स्काटलैन्ड—

अपने निरंकुश शासन काल मे, चार्ल्स, स्काटलैन्ड के लोगो का धर्म बदलना चाहता था। इसी उद्देश्य को ध्यान मे रख कर उसने उनको एक नई प्रार्थना पुस्तक (Prayer-book) प्रयोग करने के लिए विवश किया। यह उसी

प्रकार की थी जैसी कि इङ्गलैंड में प्रयोग की जा रही थी। स्कॉटलैन्ड निवासियों को यह परिवर्तन पसन्द नही आया। उन्होने इसका विरोध करने का निश्चय किया।

यह देख कर चार्ल्स ने शक्ति (हिंसा) का प्रयोग किया। प्रथम विशप युद्ध (The First Bishop's war) लड़ा गया। चार्ल्स को बहुत थोड़ा समर्थन मिला। अतः उसे 'बेरविक की सन्धि' (Treaty of Berwick) पर हस्ताक्षर करने पड़े। यह निश्चय किया गया कि धार्मिक प्रश्न, एक जनरल एसेम्बली तथा पार्लियामेन्ट द्वारा तय किया जायगा। ये दोनों, चार्ल्स के विचारो को स्वीकार न करते थे। उसने स्काटलैन्ड के विरुद्ध लड़ने का निश्चय किया। चूंकि उसके पास धन न था अतः उसे विवश हो कर पार्लियामेन्ट बुलानी पड़ी। उसने उस समय तक धन स्वीकार करने से मना कर दिया जब तक कि लोगो का असन्तोष न दूर हो जाय। इससे राजा इतना क्रुद्ध हो गया कि उसने पार्लियामेन्ट भंग कर दी। यह अल्पकालीन (Short) पार्लियामेन्ट कहलायी क्योंकि इसका अस्तित्व केवल तीन सप्ताह का था।

चार्ल्स ने तब तक सेना एकत्रित की और स्काटलेन्ड के विरुद्ध युद्ध के लिए रवाना हुआ। दूसरा विशप युद्ध (The Second Bishop's war) लड़ा गया। म्यूबर्न (Mewburn) पर राजा की सेनाएं पराजित की गई। चार्ल्स को सन्धि करनी पड़ी। उसने स्कॉटलेन्ड की सेना के व्यय चुकाने का वचन दिया।

चार्ल्स अब पार्लियामेन्ट (१६४०) की मीटिंग बुलाने के लिए विवश था। यह इतिहास में लौंग (Long) पार्लियामेन्ट के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसकी मीटिंग के साथ ही चार्ल्स के स्वेच्छाचारी, निरंकुश व्यक्तिगत शासन का अन्त हो गया।

१३—दीर्घ संसद (Long Parliament)

प्रश्न ४३—दीर्घ संसद (Long Parliament) की मीटिंग के क्या कारण थे ? इसकी लाभदायक विधियों का कुछ उल्लेख कीजिए।

उत्तर—लम्बी पार्लियामेन्ट की मीटिंग—

स्कॉटलैन्ड के झगड़ों ने इंगलेन्ड में संघर्ष आरम्भ कर दिया जिसका परिणाम सिविल वार (Civil War) हुई । लैसिली के स्कौटलैंन्ड निवासियों (Leslie's Scots) का सामना करने के लिए चार्ल्स युद्ध क्षेत्र में केवल उत्तरी देशों के अप्रशिक्षित सैनिकों को ही लगा सका । उसके पास धन न था । फलतः उसे स्कौटलैंन्ड निवासियो से बड़े अपमानित रूप मे सन्धि करनी पड़ी और पार्लियामेन्ट बुलानी पड़ी । कॉमन्स (Commons) का नेतृत्व जोहन पिम (John Pym) कर रहे थे । उनकी मांग उनके कष्टो व शिकायतो का निराकरण था विशेषतः शिप-मनी (Ship-Money) कर का समाप्त करना । चार्ल्स, धन की स्वीकृत शीघ्रतम चाहता था । उसने किसी भी प्रकार का वायदा करने से मना कर दिया । उसने उस पार्लियामेन्ट को समाप्त कर दिया जो कि उसी कारण लघु संसद (Short Parliament) कहलाती है । इसके बाद ही द्वितीय बिशप (The Second Bishop's War) प्रारम्भ हुआ । इसमे इंगलिश लेवीज टूट गई । वे स्कॉटस के सम्मुख लड़ी । चार्ल्स बिल्कुल असहाय था । उसने स्कॉटस के साथ दूसरी सन्धि की । अन्ततः उसने नवम्बर १६४० में दीर्घ संसद (लौंग पार्लियामेन्ट) बुलाई ।

लौंग पार्लियामेन्ट की विशेषता—

अंग्रेजी इतिहास मे प्रसिद्ध संस्था सबसे लम्बी (Longest) पार्लियामेन्ट न थी । यह आठ वर्ष तक चली । चार्ल्स द्वितीय की कैवेलियर (Cavalier) पार्लियामेन्ट अठारह वर्ष तक चली । न यह हिंसक रैडीकल्स (Radicals) द्वारा निर्मित थी । इसके सदस्य मुख्यतः देश के प्रतिष्ठित व्यक्ति और वकील लोग थे । वे कानूनी सरकार के भक्त थे । पिम (Pym) ने नेतृत्व किया । शिप-मनी (Ship-Money) की ख्याति वाला हैम्पडन सबसे लोक प्रिय सदस्य था । उस समय कोई अनुमान भी न लगाता था कि कैम्ब्रिज का शान्त सदस्य, ओलीवर क्रौमवैल, उस समय इतिहास पर पिम (Pym) अथवा हैम्पडन (Hampden) से अधिक गहरी छाप छोड़ेगा ।

लौंग पार्लियामेन्ट का प्रथम कानून—

पॉलियामेन्ट ने तुरन्त काम शुरू कर दिया । त्रिवर्षीय (Triennial

Act) कानून पास किया गया। भविष्य में यदि एक किंग विना पार्लियामेन्ट के तीन वर्ष तक शासन करने का प्रयत्न करे तो ऐसी व्यवस्था की गई जिसके द्वारा विना किंग की आज्ञा की प्रतीक्षा की आवश्यकता के चुनाव हो जाय।

दूसरे, पार्लियामेन्ट ने राय दी कि यह विना अपनी स्वयं की सहमति के भंग नही की जा सकती थी। यह वहुत अधिक महत्वपूर्ण थी। व्यापारी तव तक धन ऋण नही देते थे जब तक कि उन्हे इस वात का आश्वासन न हो कि पार्लियामेन्ट भंग न होगी क्योकि चार्ल्स कानून को तोड़ सकता था।

वह प्रत्येक वात जिसकी शिकायत और आपत्ति की गई थी सदैव के लिए दूर करदी गई जैसे जवरन ऋण, शिप-मनी, स्टार चैम्बर, हाई कमीशन कोर्ट, कोर्ट ऑफ नौर्थ, काउन्सिल ऑफ वेल्स। स्ट्रैफर्ड (Strafford) तथा लॉड (Laud) पर अभियोग लगे। लाउड (Laud) के विरुद्ध केस चला। वह टावर (Tower) मे रखा गया। उसे अन्ततः सिविल वार के मध्य में फांसी दे दी गई।

पार्लियामेन्ट ने किस प्रकार स्ट्रैफर्ड से पीछा छुड़ाया—

स्ट्रैफर्ड (Strafford) के विरुद्ध कोई प्रमाण ढूंढना कठिन था। उसके वारे में यही अभियोग लगाया जाता था कि चार्ल्स को सारे अनुचित कार्य करने मे वही परामर्श-देता था। फिर भी शिप-मनी (Ship-Money) का प्रस्ताव करने वाला नौय (Noy) था। किसी भी दशा मे, परामर्श, भले ही बुरा क्यो न हो, देना अपराध नही हो सकता विशेषतः तव जव कि यह राजा के व्यक्तिगत हित मे दिया गया हो। न्याय मे तो स्ट्रैफर्ड पर 'सामान्य चर्चा' (Common fame) के आधार पर ही अभियोग न लगाया जा सकता था अर्थात केवल इस वदनामी के आधार पर कि वह दुष्टता का परामर्शदाता था। एक मात्र निश्चित आरोप यह था कि उसने चार्ल्स को आइरिश सेना को 'इस राज्य' का दमन करने के लिए प्रयोग करने का परामर्श दिया। पिम (Pym)कहता था कि 'इस' से अर्थ इङ्गलैन्ड का था। स्ट्रैफर्ड कहता था कि इसका अर्थ स्कॉटलैन्ड से था जव वह देश स्पष्टतः विशप युद्ध (Bishop's War) मे व्यस्त था।

स्वयं को कठिनाई मे अनुभव-करके कॉमन्स ने अभियोग समाप्त कर दिया।

वे अटैन्डर का विल (Bill of Attainder) लाए। वे इस बात पर दृढ संकल्प थे कि किसी प्रकार अपने शत्रु से छुटकारा प्राप्त करें। कॉमन्स तथा लॉर्डस ने विल पास कर दिया। क्या राजा उस पर हस्ताक्षर कर देगा ? चार्ल्स ने वड़ी दुर्वलता के साथ जनसाधारण के क्रोध के लिए स्ट्रैफर्ड (Strafford) को वलि कर दिया। उसने विल पर हस्ताक्षर कर दिया। अतः पार्लियामेन्ट के कानून के अनुसार स्ट्रैफर्ड को जीवित रहने के अयोग्य घोषित कर दिया गया। ऐसा व्यक्ति न्याय का प्रतिलोमी (विरोधी) है। कानून सर्वमान्य है। यह परिभाषा करता है कि कौन देशद्रोही है तथा दन्ड निश्चित करता है। जूरी ज्ञात करता है यदि कोई व्यक्ति अपराधी है तथा जज दण्ड की आज्ञा करता है। परन्तु एक पार्लियामेन्ट का कानून (Act of Parliament) जो कि किसी व्यक्ति विशेष के लिए बनता है कानून की विधि को उलट देता है। लोकप्रिय आवाज एक अनाहूत (Victim) की मांग करती है। अतः स्ट्रैफर्ड को फासी का दण्ड दिया जाता है।

धार्मिक प्रश्न (Church Question):—

अत्याचार के सारे निकृष्ट दोष समाप्त कर दिये गए थे। स्ट्रैफर्ड को मार्ग से हटा दिया गया था। परन्तु अविश्वास की गहरी भावना विद्यमान थी। चार्ल्स अव भी कानून को भंग करने का दूसरा प्रयत्न कर सकता था। फिर भी ऐसी कोई तनाव वाली वात न थी जिसके वारे मे लड़ा जाय। अव तक प्रायोगिक रूप में पार्लियामेन्ट निष्क्रिय थी। अव दल (Parties) बनाए गए थे।

यहाँ पक्के कट्टर रॉयलिस्ट (Royalists) थे। यहाँ रॉयलिस्ट तथा चर्च-मैन थे। उन्होने स्ट्रैफर्ड का विरोध किया था; परन्तु अव वे किंग तथा स्थापित धर्म (Established Church) के साथ कदम उठाते थे। उनमे मुख्य सर एडवर्ड हाइड (Sir Edward Hyde) थे। हाउस मे वहुमत या तो प्रैस्विटेरियन (Presbetarian) का था अथवा दूसरे चर्चमैनो का या जिनकी शक्तिशाली पुरीटेनिकल योग्यताएं थी। वे स्काटिश मौडल पर प्रैस्विटेरियन चर्च स्थापित करना चाहते थे। वहां एक छोटा सा परन्तु शक्ति-शाली दल स्वतन्त्रो (Independents) का था। उनका नेतृत्व क्रॉमवैल

एवं हैरीवान द्वारा किया जाता था। वे दोनों न तो विशप थे न प्रेसबायटर्स (Presbyters) थे। परन्तु वे चाहते थे प्रत्येक पुरिटन (Puritan) स्वयं को शामिल करने के लिए स्वतन्त्र हों तो जैसा चाहें धर्म अपनाएँ

दो विल (Bills) लाए गए—रूट एन्ड ब्रान्च विल (Root and Branch Bill) तथा विशपो का एक्सक्लूजन विल (Exclusion Bill) पहले ने चर्च गवर्नमेन्ट के सारे ढाचे को ही समाप्त कर दिया होता। दूसरे ने विशपो को हाउस ऑफ लार्डस के वाहर निकाल दिया होता। अन्ततः विल समाप्त कर दिए गए। परन्तु उसके कारण हाउस में फूट हो गई।

सेना का प्रश्न (Army Question)—

वहा सेना (Army) का प्रश्न था। यह एक दुर्वल शस्त्र था। परन्तु यह देश की एक कानूनी शक्ति थी। अकेला राजा इसे काम मे ले सकता था। स्ट्रैफर्ड (Strafford) की फांसी से आयरलैन्ड के रोमन कैथोलिक्स ने विद्रोह कर दिया। वे प्रौटेस्टेण्ट कायम करने वालों पर मुड़े। उन्होने वहुत सी नृशंस क्रूरताएं की। इङ्गलैन्ड उद्वेलित था। आयरलैन्ड के लिए टुकड़ियाँ भेजनी पड़ी। परन्तु उन पर नियन्त्रण किंग को करना था अथवा पार्लियामेन्ट को ?

एक मिलिशिया विल (Militia Bill) पेश किया गया। इसके द्वारा पार्लियामेन्ट को अधिकार दिया जाने वाला था कि वह सैनिक अधिकारियों (Militia officers) को कमीशन (पदोन्नति) स्वीकार करे। चार्ल्स को इससे कुछ भी न करना होगा।

जनमत के लिए एक प्रार्थना—

नवम्वर सन् १६४१ में कामन्स ने एक विशेष दस्तावेज तैयार किया। यह ग्रान्ड रिमौन्स्ट्रैन्स (Grand Remonstrance) था। यह एक प्रकार की चार्ल्स के पिछले जीवन के सारे अनुचित कार्यों की सूची थी। यह उस पर एक अशिष्ट प्रहार था। यह इस प्रकार का था कि इसमें घृणा और द्वेष उत्पन्न करने वाली विनती थी। यह एक ऐसी चीख पुकार थी जो कि जनता से सामूहिक रूप मे की गई थी। इससे राजा के अनुचित कार्य सवसे निकृष्ट रूप में प्रगट हुए। उसका आशय था कि वह भविष्य में कभी भी उचित प्रकार से शासन न करेगा।

काफी वाद विवाद के पश्चात यह ग्यारह मतों के वहुमत से पास कर दिया गया। तव इसे छापा गया और सारे देश मे प्रसारित किया गया। इससे चार्ल्स और रॉयलिस्ट कट्टर शत्रु हो गए। इससे उस भावना को वढ़ावा मिला जिससे केवल युद्ध की संभावना ही दृढ़ हुई। जव लोगों के मस्तिष्को में इस प्रकार की आग भड़क रही थी, शान्ति के तर्क और अधिक संभव न थे। चार्ल्स को सामान्यतः यह दिखलाने का कोई अवसर न था कि स्ट्रेफोर्ड की मृत्यु के पश्चात कानून से वह शासन कर सकता था अथवा करेगा। एक संक्षिप्त काल के लिए उसके शत्रुओं की हिंसा ने उसे वास्तविक रूप मे लोकप्रिय बना दिया।

चार्ल्स, डायरेक्ट फोर्स से प्रार्थना करता है—

तव चार्ल्स ने भी एक हिंसक वात की। इसने युद्ध को अवश्यम्भावी वना दिया। पिम (Pym) और हैम्पडन ने निसन्देह सहायता एवं समर्थन के लिए स्काटलेन्ड की प्रतीक्षा की। चार्ल्स ने उन पर विशप-युद्ध काल मे देश-द्रोही पत्र व्यवहार करने का अभियोग लगाया। परन्तु उसने एक भारी भूल की। उसने उन पर तथा तीन अन्य पर मुकद्दमा चलाने की आज्ञा दी। परन्तु मुकद्दमा चलाने की विधि वह थी जिसके द्वारा कामन्स राजा के मंत्रियो पर आक्रमण करते थे। किंग्स वेन्च का न्यायालय (Court) उस राजा के लिए सदैव खुला हुआ था जो अपने किसी प्रजा-जन पर अभियोग लगाना चाहता था।

वाद मे, चार्ल्स व्यक्तिगत रूप से व्हाइट हाल (White Hall) से हाउस ऑफ कामन्स गया। उसकी सेवा मे पांच सैनिक वीर थे। उसका उद्देश्य पांच सदस्यों को गिरफ्तार करना था। ठीक समय पर चेतावनी प्राप्त हो गई। पांचों सदस्य खिसक गए। उन्हे नदी के मार्ग से शहर भेज दिया गया। चार्ल्स हाउस मे घुसा। उसने देखा कि चिड़ियां उड़ चुकी थीं। स्पीकर, लैन्थॉल (Lenthall) उसके पैरो पर गिरा परन्तु उसने यह वताने को मना कर दिया कि वे कहां थे।

अगले दिन राजा शहर गया। अपनी वारी आने पर लार्ड मेयर ने उन्हे समर्पित करने से मना कर दिया। राजा की वग्गी (कोच, गाड़ी) में एक कागज फेंका गया। जिस पर लिखा हुआ था, "ओ इसरायल (Israel)

अपने डेरे पर वापिस जा" (To your tents, O Israel) इन दिनों उत्तेजना बहुत बड़ी हुई थी। चार्ल्स की लोकप्रियता समाप्त हो गई। उसने कभी न लौटने के लिए लन्दन छोड़ दिया जहां वह केवल कैदी के रूप में वापिस आया। यह जनवरी १६४२ मे हुआ। अगस्त के उसने अपना स्तर नटिंघम (Nottingham) मे स्थापित किया।

१४—सिविल वार (Civil War)

प्रश्न—सिविल वार (नागरिक युद्ध) के बारे में आप क्या जानते हैं बताइए।

अथवा

प्रश्न ४५—महा-विद्रोहियों (Great Rebellion) का वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रश्न ४६—सिविल वार (Civil War) का इतिहास संक्षेप में बताइए।

उत्तर—भूमिका—

चार्ल्स के अपनी पार्लियामेंन्ट से अच्छे सम्बन्ध कभी न थे। सन् १६४० में उसने जो लम्बी (Long) पार्लियामेन्ट बुलाई वह उसकी अवनति और अन्ततः उसके मृत्युदण्ड का कारण सिद्ध हुई। जब पार्लियामेन्ट पूरी हुई उस समय आयरलैन्ड मे एक कैथोलिक विद्रोह था। वहां एक सेना भेजी जानी थी। यह राजा के नियन्त्रण मे था। पार्लियामेन्ट ने मिलिशिया बिल (फौज का कानून) पास कर दिया जिसके द्वारा यह सैनिक अधिकारियो (Officers) को कमीशन दे सकता था। चार्ल्स को इससे कोई सम्बन्ध न था।

आयरलैंड से युद्ध करने की तैयारियां—

पार्लियामेन्ट ने तब अपने हाथ में आइरिश युद्ध के लिए तैयारी करने का कर्त्तव्य अपने हाथ में लिया। सेना को बढाने का निश्चय था। सेना के अफसर सामान्यतः लार्डस लैफ्टीनेन्ट द्वारा नियुक्त किए हुए थे।

अपने क्रम पर उन्हे राजा द्वारा नाम दिया जाता था। एक कानून पास

किया गया जिसके द्वारा पार्लियामेन्ट को लार्ड्स-लेफ्टीनेन्ट की नियुक्ति दे दी गई। इस प्रकार पार्लियामेन्ट ने सेना पर आधिपत्य कर लिया। यह मार्ग अवैधानिक था, क्योकि पार्लियामेन्ट स्वयं कार्यकारिणी सरकार के कर्त्तव्यो को ले रही थी। राजा ने उस कानून (Act) से सहमत होने को मना कर दिया। पार्लियामेन्ट ने निश्चय किया कि इसे विना राजा की अनुमति के ही प्रयोग में आ जाना चाहिए। अतः उनका कार्य अवैधानिक तथा गैरकानूनी दोनो ही था।

सिविल वार के लिए तैयारियां—

दोनो दलों ने अब युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ कर दी। राजा ने रानी को शस्त्र खरीदने हालैन्ड (Holland) भेजा। वह स्वयं अपने सबसे बड़े लड़के के साथ उत्तर की ओर यौर्क (York) गया। वहां उसके साथ बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा कॉमन्स के सदस्य मिल गए। इस क्षण पर सीमाबद्ध स्थानो का कमान्ड (आज्ञा) सबसे अधिक महत्व का था। इनमें से टावर (Tower) पोर्टसमाउथ (Portsmouth) तथा हल (Hull) जहां पर कि स्काटिश युद्ध के लिए एकत्रित शस्त्र रखे गये थे, तीन सरदार थे। पार्लियामेन्ट ने इन्हें सुरक्षित रखने के साधन किए। इसने अपने सदस्यो में से एक सर जोहन, हॉथम को हल (Hull) पर नियन्त्रण करने भेजा। किंग ने स्वयं हल (Hull) पहुँचने की इच्छा व्यक्त की। परन्तु उन्हे प्रवेश को मना कर दिया गया। युद्ध अवश्यम्भावी हो गया।

दोनों दल शक्तियां (सेनाएँ) बढ़ाते हैं—

दोनो दलो ने अब अपनी सेनाएं बढाई। पार्लियामेन्ट ने अपने लार्ड्स लेफ्टीनेन्ट को नियुक्त किया। राजा ने सेना के कमीशन जारी किए। जुलाई मे पार्लियामेन्ट ने अर्ल ऑफ ऐसैक्स (Earl of Essex) को अपनी सेनाओ का कैप्टेन जनरल घोषित किया। ऐसैक्स, क्वीन ऐलिजाबेथ के पुराने कृपा-पात्र का एक लड़का था। वह एक कुशल सैनिक और एक ईमानदार व्यक्ति था। परन्तु वह भली प्रकार सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यकता से अधिक सावधान था। अपनी टुकड़ियो (Troops) को वेतन देने के लिए

कामन्स ने टनेज तथा पौन्डेज कर लगाने की आज्ञा बनाई। चार्ल्स की दशा बहुत खराब थी। उसे अपने अनुयाइयो की कृपा पर विश्वास करना पड़ा।

दोनों दलों के मध्य किसी भूगोलिक रेखा का खीचना आसान नही है। प्रत्येक देश मे कुछ लोग राजा के पक्ष के होते हैं और कुछ पार्लियामेन्ट के पक्ष के। हाई चर्चमैन तथा रोमन कैथोलिक्स ने चार्ल्स का अनुकरण किया। पुरिटन्स तथा सैपैरेटिस्टस (Separatists) ने पार्लियामेन्ट का अनुकरण किया। मोटे तौर पर, किसी प्रकार, यदि हम एक ऐसी रेखा खीचे जो हल (Hull) से ग्लाउसैस्टर (Gloucester) फिर ब्रिस्टल (Bristol) और वहां से वीमाउथ (Weymouth) जाय तो हम ज्ञात करेंगे कि दक्षिण तथा पूर्व का बहुमत पार्लियामेन्ट के पक्ष का था तथा उत्तर और पश्चिम का राजा के पक्ष का। वहां दो अपवाद थे। आक्सफोर्ड की यूनिवर्सिटी राजा का समर्थन करती थी। कपडे के नगर 'West Riding of Yorkshire' पार्लियामेन्ट के समर्थक थे। नगर तथा सम्पन्न जिले पार्लियामेन्ट के साथ थे। निर्धन, राजा का अनुकरण करते थे। सभी पद विभाजित थे। प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा सभ्य व्यक्ति दोनो ही पक्ष मे लडे। व्यापार करने वाले लोग नियमित विधि में पार्लियामेन्टेरियन थे, विशेषतः लन्दन निवासी। अपेक्षाकृत निर्धन वर्ग सामान्यतः अपने जमीदारों के साथ गया। समान प्रतिष्ठा और पवित्र उद्देश्य के लोग प्रत्येक पक्ष मे पाये जाते थे।

चार्ल्स, नॉटिंघम में अपना स्तर ऊँचा करता है—

पतझड़ के मौसम मे दोनो दलों की सेना मैदान मे आ गई। राजा ने नौटिंघम मे अपना स्तर ऊंचा किया। उसने श्रविसवरी (Shrewsbury) में अपना हैड क्वार्टर निश्चित किया। वहा सभी भागो के उसके अनुयायी उसको योग दे सकते थे। उसका प्रमुख उद्देश्य लन्दन को रवाना होना था और एक निर्णायक सफलता द्वारा युद्ध को समीप लाना था। ऐसैक्स का उद्देश्य चार्ल्स को राजधानी से दूर रखना था। इसी लक्ष्य के लिए उसने दुर्गरक्षक सेना को नौथम्पिटन से लेकर वौर सैस्टर (Worcester) तक के नगरो में क्रम से नियुक्त किया ताकि राजा का मार्ग रुके। ऐसैक्स ने स्वयं वॉर सैस्टर पर घेरा डाला। वहां प्रिन्सेज एलिजावेथ के पुत्र प्रिन्स रुपर्ट (Prince

Rupert) के साथ एक कुश मल्ल युद्ध हुआ। वह अपने चाचा की सहायता करने वहां आया था।

राजा लन्दन की ओर बढ़ता है—

राजसी सेनाएं जब श्रूसबरी (Shrewsbury) में एकत्रित की गई। चार्ल्स ने लन्दन की ओर अपनी सेनाएँ बढ़ाई। वह ऐसेक्स की दुर्ग रक्षक सेनाओ के बीच से गुजरा। उसने चलने में एक दिन का लाभ उठा लिया।

शिरिव्सरी (Shrewsbury) तथा वॉरसैस्टर (Worcester) से लन्दन आने वाली सड़कें बैनबरी (Banbury) पर मिलती थी। उस स्थान के समीप राजा एक हो गया। उसने ऐजहिल (Edgehill) पर एक दृढ़ स्थिति घेर ली जिस पर होकर ऐसैक्स (Essex) को गुजरना होता था।

ऐजहिल (Edgehill) का युद्ध—

सिविल वार का पहला युद्ध यहां २१ अक्टूबर सन् १६४२ मे ज्ञात हुआ। राजा ने ऐसैक्स (Essex) से मैदान मे लड़ने के लिए सेना सहित नीचे उत्तर कर अपनी स्थिति का लाभ खो दिया। रौयलिस्ट दांए पर प्रिन्स रुपर्ट (Prince Rupert) तथा उसके घुडसवार सबको उनके सामने ले गए। परन्तु केन्द्र मे ऐसैक्स ने अपनी स्वयं की पैदल सेना रखी। जब रुपर्ट लौटा तो उसने ज्ञात किया कि वह दिन राजा के विरुद्ध समाप्त हुआ।

यद्यपि चार्ल्स, ऐसैक्स को पराजित करने मे असफल हुआ था फिर भी वह ऐसैक्स की अपेक्षा, लन्दन के अधिक समीप था। परन्तु दूसरे ने शीघ्रता से नर्थैम्पटन चलकर चार्ल्स की सीमा का अतिक्रमण कर दिया जिसने कि राजधानी पहुँच कर इसे दुष्कर पाया। अतः उसे ऑक्सफोर्ड वापिस आना पड़ा।

सन् १६४३ का वर्ष—

अगले वर्ष सन् १६४३ मे, इङ्गलैंड के प्रत्येक भाग मे संघर्ष दिखाई दिया। दक्षिण मे, ऐसैक्स तथा किंग ने ऑक्सफोर्ड और लन्दन के बीच सड़क पर एक दूसरे का सामना किया कार्नवाल (Cornwall) तथा डैवनशायर (Devonshire) मे पार्लियामेन्ट के सर विलियम वॉलर ने सर रैल्फ हैप्टन का विरोध किया। पूर्व में, क्रौमवैल तथा अर्ल ऑफ मानचैस्टर रायलिस्टो से लड़ रहे थे। उत्तर में, फर्नीनैन्ड लार्ड फेअरफैक्स तथा उसका

लड़का सर थौमस ने अपने किराए दारो और कपड़े के नगरो के मनुष्यों का उस न्यू कैसिल (New Castle) के अर्ल के विरुद्ध नेतृत्व किया जिसके साथ कि हैनरीता मैरिया (Henrietta Maria) थी।

पार्लियामेंन्ट के लिए वर्ष का प्रारम्भ विनाशकारी हुआ। आक्सफोर्ड के समीप, चलग्रोव क्षेत्र (Chalgrove Field) में हैम्पडन (Hampden) मारा गया जबकि वह रुपर्टस की घोड़ा टुकड़ी को काट कर अलग करने का प्रयत्न कर रहा था। डैविजेस (Deviges) के समीप राउन्ड अवे डाउन पर सर विलियम वालर पूर्णतः पराजित हुआ। प्रिन्स रुपर्ट ब्रिस्टल की सुरक्षा पर उबला। नगर समर्पित कर दिया। किसी प्रकार अनेक अफसरो तथा पाच सौ 'अतुलनीय पैदलों' (Incomparable Foot) की बड़ी कीमत से रुपर्ट की सफलता खरीदी गई। वह लूट जो कि उस स्थान के पार्लियामेन्टेरियन्स की हुई उसने अन्य स्थानों पर अधिक निराशापूर्ण गतिरोध किया। उत्तर मे, एथरटन मूर (Atherton Moor) में फेअर फेक्सेज (Fairfaxes) पीटे गए। उन्हे हल (Hull) मे शरण लेने के लिए विवश किया गया। केवल पूर्व मे पार्लियामेन्टेरियन्स ने अपना प्रभाव रखा।

ग्लाउसैस्टर का घेरा तथा न्युबरी का प्रथम युद्ध—

अपनी सफलता से प्रोत्साहित हो कर, चार्ल्स ने चाहा कि लन्दन के निर्णय प्रस्थान मे उसके साथ न्यूकैसिल (New Castle) सम्मिलित हो जाय। परन्तु न्यूकेसिल ने मना कर दिया। राजा को अपनी योजना छोड़ देना ही हितकर लगा। अब पार्लियामेन्ट के प्रमुख प्रभुत्व वाला ग्लाउसस्टर ही सॅवर्न वैली (Severn Valley) मे अकेला था। परन्तु ग्लाउसस्टर डरता था कि कही ब्रिस्टिल (Bristol) जैसा परिणाम ही न हो। अतः इसने कुशल प्रतिरक्षा की। ऐसैक्स ने लन्दन ट्रेनबेन्डस के साथ चलते हुए घेरा ऊंचा कर दिया। न्यूबरी (Newbury) मे राजा ने ऐसैक्स (Essex) की लन्दन की वापिसी को रोकने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रयत्न असफल हो गया। फॉकलैन्ड मारा गया। चार्ल्स तब ऑक्सफोर्ड वापिस आया। ऐसैक्स लन्दन चला गया। इसी बीच क्रौमवैल (Cromwell) ने गेन्सबरो (Gains borough) तथा विन्सबी (Winceby) में रॉयलिस्ट

सेनाओ को पराजित कर दिया था। न्यूकैसिल स्वयं को हल (Hull) का घेरा ऊंचा करने को विवश किया गया था। इस प्रकार वर्ष, पार्लियामेन्ट के लिए यद्यपि अवरोधपूर्ण रही परन्तु समाप्ति पर ठीक रही।

सैलैन लीग तथा कॉवैनेन्ट (The Solemn League and Covenant)

शीत काल मे दोनो दलो ने मित्रराज्यो के परस्पर सम्बन्ध सुरक्षित करने का प्रयत्न किया। पिम के संरक्षण मे, पार्लियामेन्ट ने स्कॉट्स के साथ सैलैन लीग तथा कॉवैनेन्ट पर हस्ताक्षर किए। इक्कीस हजार व्यक्तियो की एक फौज ने पार्लियामेन्ट के पक्ष मे लड़ने के लिए सीमा पार की। यह कार्य, जो कि प्रैसबाईन्टेरियन्स की प्राप्त सर्वोच्च शक्ति, माना जाता था, पिम की अन्तिम सफलता थी। इस वर्ष के अन्त मे उसकी मृत्यु हो गई। राजा ने अपनी ओर से आयरिश विद्रोहियों से एक सन्धि करली। उसकी आयरिश सेना की एक इकाई वेल्स (Wales) में उतरी। उस समय चार्ल्स ने हाइड की सलाह से, आक्सफोर्ड मे पार्लियामेन्ट बुलाई।

नानविच तथा क्रौपरेडी ब्रिज के युद्ध—

सन् १६४४ का प्रारम्भ पार्लियामेन्ट के लिए शुभ हुआ। जनवरी में सर थॉमस फेअरफैक्स ने नानविच (Nantwich) मे आयरिश टुकड़ी को पराजित कर दिया। तब वह उत्तर की ओर मुड़ा, अप्रैल मे उसने उस चौकी (Outpost) को भग्न कर दिया जिसे कि न्यूकैसिल (New castle) ने आउस (Ouse) पर सैल्बी (Selby) मे यार्क (York) की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया था। सैल्बी की पराजय ने न्यूकैसिल को, स्कौटिश फौज के सामने, यार्क (York) को लौट आने को विवश किया। वहां उसे स्कॉट्स (Scots), फेअरफैक्सज (Fairfaxes) तथा पूर्वी-देशो की सेनाओ की संगठित शक्ति द्वारा लार्ड मानचैस्टर (Lord Manchester) तथा क्रौमवैल (Cromwell) के नेतृत्व मे घेर लिया गया। दक्षिण मे, ऐसैक्स तथा वालर (Essex and waller) ने किंग को आक्सफर्ड मे ही रोक रखने का प्रयत्न किया ताकि नगर को घेरा जाय। परन्तु चार्ल्स बड़ी चालाकी से दोनो सेनाओ के बीच से निकल गया। लौटने पर वह उनसे अच्छी प्रकार लड़ा। वालर (Waller) को बैन्डरी (Bandury) के समीप,

क्रौप्रेडी ब्रिज (Cropredy Bridge) पर भंग कर दिया गया था। तब रॉयललिस्टो ने ऐसैक्स को उनके सामने कौर्नवाल (Cornwall) तक पीछे हट जाने को विवश किया। वहां उसकी सेना ने लौस्टविथील (Lostwithiel) मे शस्त्र डाल दिए, ऐसैक्स स्वयं समुद्र-मार्ग से लन्दन के लिए बच कर भाग गया।

यह महान सफलता, किसी प्रकार उससे भी बडे उत्तर के विनाश से संतुष्ट हो गई। आक्सफोर्ड छोड़ने के बाद किंग ने प्रिन्स रूपर्ट को यॉर्क का घेरा ऊँचा करने की आज्ञा दी थी। प्रिन्स ने अपना मार्ग चोशायर तथा लकाशायर से यॉर्कशायर का अपनाया। स्किप्टन (Skipton) पर ऐरे (Aire) को तथा ओटली (Otley) पर हर्फे (Wharfe) को पार करने के बाद निड (Nidd) पर कैंरसबरो (Knaresborough) पहुँचे।

मार्टन मूर (Marston Moor) का युद्ध

जब उसके आगमन की सूचना मित्र राज्यो पर पहुँची तो उन्होने यौर्क के घेरे को बढा दिया। उन्होने मार्टन मूर (Marston Moor) पर मिलने की योजना बनाई जो कि उस स्थान के सामने था जहा पर कि नैरिसबरो (Knareshborough) से यार्क (York) जाने वाली सड़क निड (Nidd) को स्किप ब्रिज (Skip Bridge) को पार करती थी। रूपर्ट (Rupert) ने किसी प्रकार उत्तर की ओर चल कर उनको बहका दिया। उसने, उनके जकशन से ऊपर उरे (Ure) तथा स्वेल (Swabil) को पार किया। वह आउसे (Ouse) के पूर्वी किनारे पर नीचे आया तथा यॉर्क को छुडवाया। इन पर पार्लियामेन्टेरियन्स पीछे हट गए ताकि रूपर्ट की वापिसी के विरुद्ध हार्फे (Wharfe) की पक्ति को अधिकृत रख सके। परन्तु रॉयलिस्ट, उनके विरुद्ध यार्क के बाहर चले गए। पार्लियामेन्टेरियन्स तब रुक गए। वे मूर के दक्षिणी ओर उठी हुई भूमि (टीले) पर एकत्रित हुए। रॉयलिस्ट ने उन पर आक्रमण नही किया। अतः उन्होने आक्रमण किया। पहले ही धावे पर रूपर्ट के कैवेलियर्स (Cavaliers) भंग कर दिए गए। यद्यपि न्यूकैसिल के पैदलो ने खूब प्रतिरोध किया, रॉयलिस्ट सेनाएँ

पूरी तरह खदेड़ दी गई । मार्टन मूर के युद्ध (The Battle of Marston Moor) ने उत्तर में राजा के पक्ष को पूरी तरह नष्ट कर दिया । न्यूकैसिल (Newcastle) स्वयं, महाद्वीप के लिए भाग गया । रूपर्ट कठिनाई से राजा के साथ पुनः आया । इस विजय के पश्चात, मानचेस्टर तथा क्रौमवेल, फेअरफैक्स तथा स्कॉट्स को पौन्टेफ्रैक्ट (Pontefract) घेरने के लिए छोड़ कर दक्षिण की ओर कूच कर गए । इस प्रयत्न में राजा की वापिसी कौर्नवाल से आक्सफर्ड की कट जाय, वे वैलर (Waller) के साथ हो गए । दोनो सेनाएं न्यूवरी (Newbury) में मिली । राजा सुलझाए हुए ऊन की तरह था । परन्तु मानचेस्टर की हिचकिचाहट ने क्रौमवैल (Cromwell) तथा वैलर (Waller) को निर्णायिक सफलता प्राप्त करने से रोक दिया । अतः राजा आक्सफर्ड को पुनः प्राप्त करने योग्य हुआ ।

क्रौमवैल की उन्नति तथा आयरन साइड्स

यह असफलता, पार्लियामेन्ट पार्टी के अधिक उत्साही सदस्यो के असंतोष को आगे बढ़ाने का कारण हुई । अधिकाशतः ये धर्म स्वतन्त्र (Independents) थे; मौडरेट सदस्य प्रैसवायटेरियन्स (Presbyterians) थे । मौडरेट्स के नेता ऐसैक्स मानचेन्टर तथा वॉलर (Waller) थे । क्रौमवैल (Cromwell) स्वतन्त्रो (Independents) का नेतृत्व करता था । यह महान व्यक्ति बड़ी शीघ्रता से सामने आ रहा था । वह यह देखने वाला प्रथम व्यक्ति होता था कि स्वामिभक्ति एवं प्रतिष्ठा की भावनाएँ जो कि कैवॅलियर्स (Cavaliers) को प्रोत्साहित करती थी वे केवल धार्मिक उत्सुकता से प्राप्त की जा सकती थी । पहले पार्लियामेन्टरी सेनाएं पैदल सैनिको (Infantry) मे शक्तिशाली थी । परन्तु घुड़सवार सेना मे दुर्बल थी । क्रौमवेल ने किसी प्रकार ज्ञात किया कि पूर्वी देशो के योमेन (Yeomens) के पुत्र घुड़सवार सैनिको के भांति ही कुशल घुड़सवार थे और ऐसे व्यक्ति थे जो कि अपने धर्म के निमित अत्यधिक प्रेरणा से भरे हुए थे । उनमें से उसने आयरनसाइड्स (Ironsides) का निर्माण किया और उनको ड्रिल करा कर घुड़सवारो की सबसे कुशल सेना का ऐसा रूप दिया जो कि ससार ने तब तक न देखी थी । लोगों ने मार्टन मूर (Morston Moor) पर

दिन व्यतीत किया। केवल मानचेस्टर की हिचकिचाहट ने उनको न्यूबरी (Newbury) मे शाही सेनाओ को कुचलने से रोका। तब स्वतन्त्र (Independents) आगे आए। उन्होने घोषित किया कि सेना को पुनः ठीक किया जाना चाहिए तथा पुराने सैन्य अधिकारियो (Generals) को रिटायर्ड हो जाना चाहिए। चूँकि वे दैवयोग से पार्लियामेन्ट के सदस्य होते थे अतः एक स्व-विरोधी (Self-denying) आर्डीनेन्स पास किया गया जिसके द्वारा सारे सदस्य सैन्य उच्च पद से वंचित हो गए। इस प्रकार ऐसैक्स, मानचेस्टर तथा वालर (Waller) हटा दिए गए, परन्तु क्रोमवेल की सेनाएँ इतनी मूल्यवान थी कि वे एक विशेष आर्डीनेन्स की सहायता से ज्यो की त्यो रखी गईं।

चार्ल्स शर्त मानने से मना करता है—

शीत काल मे उक्सब्रिज (Uxbridge) मे राजा के साथ पत्र-व्यवहार होता रहा था। चार्ल्स, अब भी हतोत्साहित नही हुआ था। अतः उसने शर्तों पर आने से मना कर दिया। जनवरी १६४५ मे, एक अन्यायी क्रूर कानून के द्वारा, आर्कबिशप (Archbishop) को जो कि किसी भी अपराध से अबोध था, उसे बुलाया गया और फांसी दी गई।

नेसबी (Naseby) का युद्ध—

ग्रीष्म ऋतु तक एक नई आदर्श सेना, जिसमे चौदह हजार घोडे थे तैयार हो गई। इसे सर थौमस फेअरफैक्स (Sir Thomas Fairfax) के नियन्त्रण में रखा गया। फेअरफैक्स तथा क्रोमवेल, लीसैस्टर (Leicester) के समीप नैसबी (Naseby) मे, १४ जून को मिले। उन्होने पूर्णतः उसको बहिष्कृत किया। राजा का सामान निकाला गया। उसके क्विन को लिखे गए पत्र तथा आयरिश विद्रोहियो को लिखे पत्र जो यह प्रदर्शित करते थे कि जब वह पार्लियामेन्ट से पत्र-व्यवहार कर रहा था उसका वास्तव मे शर्तों पर आने का कोई विचार न था, प्रकाशित किए गए।

फिलिफौग (Philiphaugh) तथा रौटन हीथ (Rowton Heath) के युद्ध—

राजा को आशाए अब मॉनरोज (Montrose) के मारक्विस (Mar-

quess) पर केन्द्रित थी। उस प्रतिष्ठित व्यक्ति ने उत्सुकतापूर्वक राजा के लक्ष्य मे योग दिया था। टिपरमुर (Tippermur), इन्वरलची (Inver-lochy) तथा किल्सिथ (Kilsyth) मे उसने आरगिल (Argyll) के मारक्विस (Marquess) के नियन्त्रण में कावेनैन्टर्स (Covenanters) को पीटा था। चार्ल्स आशा करता था कि वह इंगलैन्ड पर आक्रमण करने में समर्थ होगा। परन्तु नेसबी (Naseby) के युद्ध के तीन महीने पश्चात माँन्ट्रोज (Montrose) फिलिफाफ (Philiphaugh) मे पराजित हुआ। इसके १० दिन पश्चात, चार्ल्स ने, चैसर (Chester) की दीवालो से देखा कि उसकी अन्तिम सेना, रौटन हीथ (Rowton Heath) पर पराजित हुई। अगले पूरे शीतकाल, चार्ल्स देश में इधर उधर घूमता रहा। अन्ततः, मई १६४६ मे उसने स्वयं को स्काटिश सेना की सुरक्षा मे जुटा दिया। यह उन दिनो निवार्क (Newark) मे कैम्पो मे सीमित थी।

स्काट्स, किंग को पार्लियानेन्ट को सौंपते हैं—

स्काट्स, राजा को अपने साथ लेकर, न्यूकैसिल (Newcastle) हट आए। वहाँ पार्लियामेन्ट के साथ पत्र-व्यवहार पुनः प्रारम्भ हुआ। परन्तु राजा ने, यद्यपि उसने सेना का नेतृत्व (Command of the militia) छोड़ दिया होता, प्रैसबाइटेरियनिज्म (Presbyterianism) स्थापित करने से मना कर दिया। अतः पत्र-व्यवहार टूट गया। पार्लियामेन्ट ने तब स्कॉट्स को पहली किश्त ४००,००० पौंड वी जो कि उनके खर्च की उधार थी, चुकाई। इसके तुरन्त वाद ही स्काट्स ने किंग को पार्लियामेन्ट के कमिश्नरो के सुपुर्द कर दिया। चार्ल्स के साथ सम्मान का व्यवहार हुआ। उसे नार्थैम्पटन शायर (Northampton Shire) मे हौम्बी हाउस (Holmby House) में रखा गया।

पार्लियामेन्ट तथा सेना के बीच की कठिनाइयां—

इसी बीच पार्लियामेन्ट तथा सेना के बीच कठिनाइयां उत्पन्न हो चुकी थी। सन् १६४३ से एक सनिति धर्म के नियमो के लिए वेस्ट मिनिस्टर (West minster) में होती आ रही थी। इसने ऐपिस्कोपेसी (Episcopacy) के स्थान पर प्रेसबाइटेरियनिज्म (Presbytrianism) को इंगलैन्ड के

स्थापित धर्म के रूप में स्थानापन्न कर दिया था। इसने प्रार्थना-पुस्तक (Prayer book) को सर्विस-बुक (Service-Book) से स्थानापन्न कर दिया था। अर्थात् प्रार्थना पुस्तक के स्थानानन्न पर सर्विस बुक प्रयुक्त होती थी जो कि डायरैक्टरी (Directory) कहलाती थी। इन परिवर्तनो की सम्पुष्टि पार्लियामेन्ट द्वारा भी की जा चुकी थी। धार्मिक प्रश्न का यह निर्णय, सेना के विचारो के विरुद्ध था। इसका कारण यह था कि अधिकांशतः स्वतन्त्रो (Independents) की वनी थी। प्रैस वायटेरियन्स (Presbyterians) जो कि पार्लियामेन्ट मे बहुमत मे थे, उन्होने अब सेना से पीछा छुड़ाने का प्रयत्न किया। अतः उन्होने चार आर्डीनैन्स पास किए, इसकी संख्या कम करने का, पार्लियामेन्ट के सदस्यों को उनके सैन्य पदो से वंचित करने का, सब अधिकारियो को कॅवेनेन्ट (Covenant) लेने का, तथा सैनिकों को उस राशि का केवल छटवां भाग चुकाने का जो उनकी उधार थी। सेना ने स्वभावतः आपत्ति की। जब पार्लियामेन्ट के कमिश्नर कुछ रेजीमेन्टो को तोड़ने के लिए तथा कुछ को आयरलैंन्ड भेजने के लिए आए तो सैनिको ने आज्ञा मानने से मना कर दिया। उन्होने अधिकारियो की एक काउन्सिल नियुक्त की। एक चतुरता से उन्होने राजा को अपने हाथ (कब्जे) मे कर लिया। क्रौमवेल की आज्ञा से, कार्नेट जायेस (Cornet Joyce) तथा घुड़सवार होम्बे (Holmby) आए। चार्ल्स को उनके साथ न्यूमार्केट (Newmarket) जाने को विवश किया गया। वहा उन्होने ग्यारह प्रेसबायटेरियन (presby-terian) सदस्यो को निकाल देने की मांग की। अपनी माग को बल देने के लिए वे लन्दन चले। उन्होंने किंग को हैम्पटन कोर्ट (Hampton Court) मे रखा। जिस समय यह सब हो रहा था उन्होने किंग के सामने शर्तें रखी इस आधार पर कि अन्य वर्गों के प्रति सहनशीलता के साथ ऐपिस्कोपेसी पुनः प्राप्त हो। राजा के लिए ये शर्तें उन शर्तो से अधिक हितकर थी जो कि पार्लियामेन्ट ने उसके समक्ष रखी थी। परन्तु राजा ने, इस आशा मे कि सेना तथा पार्लियामेन्ट का मतभेद संभवतः उसके लिए और हितकर सिद्ध हो, उनसे मना कर दिया। वह बचकर इसले ऑफ विट (Isle of wight) भाग गया, उसने सभी दलो से पत्र-व्यवहार बनाए रखा।

प्रैसन का युद्ध (Battle of Preston)—

जैसी कि चार्ल्स को आशा थी, सन् १६४८ में एक द्वितीय नागरिक युद्ध (Civil war) आरम्भ हुआ । रॉयलिस्टों का राजविद्रोह केन्ट (Kent) तथा वेल्स (Wales) मे फूटा । हैमिल्टन के ड्यूक ने सामान्य प्रैसवायटेरियन्स सैनिको की एक सेना के साथ इङ्गलैंड मे प्रवेश किया । इस नए खतरे के खिलाफ, सेना ने अपनी सबसे उत्तम कुशलता एवं क्षमता से कार्य किया । फेअरफैक्स ने मेडस्टोन (Maidstone) मे रॉयलिस्ट को परास्त किया और घेर कर कॉलचेस्टर (Calchester) लिया । क्रामवैल ने पैम्बब्रोक कैसिल (Pembroke Castle) लिया । तब उत्तर की ओर बढते हुए उसने रिबल (Ribble) पर प्रेस्टन (Preston) मे हैमिल्टन (Hamilton) की सेना के दो टुकड़े कर दिए । उसने इसका अन्त विगॅन (Wigan) तथा वारिन्गटन (Warrington) मे किया ।

चार्ल्स को फांसी—

इसी बीच सेना की अनुपस्थिति मे, चार्ल्स, पार्लियामेण्ट के साथ शर्तें रख चुका था । वह न्यूपोर्ट (Newport) मे तीन वर्षों तक प्रैसबाइटेरियनिज्म स्थापित करने के लिए सहमत हो गया । परन्तु सेना, वारिंगटन (Warrington) ने इस प्रकार के सम्बन्ध को सहन करने वापिस आ गई । कलनल प्राइड (Colonel Pride) ने, अफसरो के आदेश पर, प्रैसवायटेरियन (Prerbyterion) सदस्यो को निकाल दिया । इसके पश्चात, पार्लियामैन्ट को राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने का कानूनी अधिकार बिल्कुल न था । परन्तु तिरेपन सदस्यो के स्वतन्त्र अल्पमत ने (जो कि अक्सर रम्प Rump कहलाते थे) सेना की इच्छाओं के अनुसार मत दिया कि किंग (King) को अभियोगी के रूप मे एक विशेष अथवा उच्च न्यायालय के समक्ष लाया जाय । लार्ड्स द्वारा यह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया गया । इस पर कॉमन्स (Commons) ने अपनी सम्पत्ति का अनावश्यक होना घोषित कर दिया । तब राजा को लन्दन लाया गया । उसे एक न्याय के न्यायालय कहेजाने वाले कोर्ट के समक्ष उपस्थित किया गया । कोर्ट मे सदस्य स्वतन्त्र नेताओं में से कुछ थे । उसने इसके अधिकार को मानने से मना कर

दिया। कोर्ट ने उसे उच्चकोटि के देश-द्रोह का अभियुक्त ठहराया। इसके कुछ दिनो पश्चात, ३० जनवरी सन् १६४० को चार्ल्स को एक फांसी दिए जाने के ऊंचे स्थान (मचान) पर ले जाया गया जो कि व्हाइट हॉल (White Hall) के महल की खिड़की के सामने रखा गया था।

चार्ल्स की पराजय के कारण—

चार्ल्स की पराजय का प्रमुख कारण, उसके स्वयं के अफसरों की धृष्ठता एवं अनाज्ञाकारिता थी। उन्होने उसके निर्णायक सफलता के परिणाम प्राप्त करने मे बाधाएं प्रस्तुत की। इससे पार्लियामेन्ट को इतना समय दिला दिया गया कि वह अपनी सेनाओं को संगठित करे तथा प्रशिक्षित सैनिको का वीर परन्तु अर्धअनुशासित योद्धा (Cavaliers) मुकाविला करे। समूचे युद्ध मे, रॉयलिस्ट घुडसवार एक दूसरे आक्रमण के लिए कभी तैयार न किए जा सके। परन्तु पार्लियामेन्टरी सेना ने मार्सन मूर (Marston Moor) तथा नेसबी (Naseby) दोनो स्थानो, पर दिखा दिया कि वे कितनी अच्छी प्रकार काम कर सकते थे। रॉयलिस्ट इतिहासकार, क्लैरैन्डन (Clarendon) अपने पृष्ठो को स्वार्थता तथा कुबुद्धि के उन चित्रों से भरता है जिन्होने बार-बार राजा की योजनाओ को असफल किया। वह दिखलाता है कि चार्ल्स की सेनाओ की पराजय, उन्ही कारणों से हुई जिन्होने कि फ्रेन्च, फ्यूडल (सामन्त ग्रुप) लेवीज को क्रैसी (Crecy) तथा ऐगिनकोर्ट (Agincourt) में नष्ट भ्रष्ट किया था।

कॉमनवैल्थ (Commonwealth)

प्रश्न ४७—क्रॉमवैल की विदेश-नीति का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

अथवा

प्रश्न ४८—क्रॉमवैल की विदेश-नीति के क्या लक्ष्य थे ? वह कहां तक सफल हुआ ?

अथवा

प्रश्न ४९—"क्रॉमवैल की देश में महानता एवं प्रतिष्ठा, उसके अन्य देशों

में व्याप्त सम्मान एवं महानता की परछाई मात्र थी" क्या तुम सहमत हो ? सप्रमाण उत्तर दीजिए।

उत्तर—कॉमवैल की विदेश नीति के लक्ष्य—

सन् १६४६ से १६५८ तक इंगलैन्ड मे क्रॉमवैल की शक्ति सर्वोपरि थी। उसकी विदेश नीति के तीन लक्ष्य थे :—

(१) प्रौटैस्टेन्ट धर्म को बनाए रखना तथा उसका प्रसार करना।

(२) अंग्रेजी व्यापार को सुरक्षित रखना तथा विस्तृत करना।

(३) विदेशी सहायता के द्वारा स्टुअर्टस (Stuarts) की पूर्वावस्था की प्राप्ति को रोकना। "इंगलैन्ड का यूरोपियन मिशन, इसकी भौतिक महानता, तथा इसकी राजनैतिक स्वतन्त्रता, उसके मस्तिष्कमें अविच्छिन्नततः सम्बन्धित थे। तथा इस सारी प्रत्यक्ष हिचकिचाहट एवं संकोच मे ये तीनो लक्ष्यो का निरन्तर अनुकरण किया जाय।

फ्रान्स के साथ सम्बन्ध—

सन् १६४८ मे वेंस्टाफेलिया की सन्धि के साथ ही 'तीस-वर्षीय' युद्ध समाप्त हो चुका था। फ्रान्स तथा स्पेन के बीच युद्ध तब भी चल रहा था। उनमे से प्रत्येक इङ्गलैण्ड की सहायता चाहता था। फ्रांस, चार्ल्स द्वितीय को शरण दे चुका था। हुगनोट्स (Huguenots), अग्रेज प्रौटैस्टेन्ट्स से सहायता प्राप्त करने की आशा करता था। फिर, फ्राउड (Froude) के युद्धो ने अग्रेज गणतन्त्रवादियो (Republicans) को फ्रान्स मे राजनैतिक स्वतन्त्रता के अन्तिम रक्षकों की मदद करने का यथेष्ट अवसर दिया।

परन्तु क्रौमवैल एक रिपब्लिकन न था। वह एक यथार्थवादी राजनीतिज्ञ था। वह यूरोप के देशो मे रिपब्लिकन सिद्धान्तो का प्रसार करने की अपेक्षा अपने देश के व्यापार को विस्तृत करने के लिए अधिक चिन्तित था। उसने मैजॅरिन (Magarin) से पत्र व्यवहार आरम्भ किया। उसके द्वारा उसने सन् १६५८ मे इंगलिश कॉमनवैल्थ की फ्रैन्च मान्यता प्राप्त की। परन्तु दोनो देश बहुत दिन तक मित्र न रह सके। फ्रैन्च तथा इंगलिश समुद्र-तटवर्ती मल्लाहो मे वैमनस्य था। ब्लेक (Blake) अपनी प्रसिद्ध समुद्रीयात्रा (१६५४-५५) पर गया। इससे ब्रिटिश ध्वज का भय तथा सम्मान सारे मैडीटेरियन मे हो

गया। जब इङ्गलैंड तथा स्पेन के बीच युद्ध आरम्भ हुआ तो क्रॉमवैल को फ्रांस के साथ आक्रामक गठबधन पर हस्ताक्षर करने के लिए सन् १६५७ में विवश किया गया। स्पेन के विरुद्ध फ्रांस को सैनिक सहायता देने के लिए मारडायक (Mardyke) तथा डनकिर्क (Dunkirk) मिले। फिर इङ्गलेंड को चार्ल्स द्वितीय स्पेनिश सहायता न प्राप्त कर सका।

स्पेन के साथ सम्बन्ध—

फ्रैन्को-स्पेनिश युद्ध (१६४८-५९) मे क्रौमवैल की नीति फ्रैन्च समर्थक थी। अतः इङ्गलेंड स्वभावतः स्पेन के प्रति शत्रुता मे फंस गया। क्रामवैल स्पेन के साथ दो शर्तो पर ही मित्र रहने को तैयार था। पहली, स्पेन को स्पेनिश बन्दरगाहो मे इङ्गलिश व्यापारियो के धर्म मे हस्तक्षेप नही करना चाहिए। दूसरे, स्पेन को अग्रेज व्यवसाइयो तथा वैस्ट इन्डीज के उपनिवेशको को उचित व्यावसायिक अधिकार देने चाहिए।

पैन सन् १६५४ मे वैस्ट इन्डीज गया। उसे स्पेनिश उपनिवेशो पर आक्रमण करने के आदेश दिए गए। क्रामवैल ने इन उपनिवेशो को जीतने का निर्णय कर लिया था। उसके कारण धार्मिक तथा व्यापारिक थे। सन् १६५५ में जमैका (Gamaica) ले लिया गया। क्रामवैल ने प्रस्ताव रखा कि जिब्राल्टर पर अधिकार किया जाय। परन्तु इङ्गलेंड अब भी यह कार्य करने के लिए सशक्त न था। स्पेन ने चार्ल्स द्वितीय का कारण लिया। स्पेन क्रौमवैल को, इङ्गलेंड मे एक जागृति के साधनो द्वारा, फैंक देने की आशा करता था। सन् १६५७ मे इङ्गलेंड ने डनकिर्क (Dunkirk) पर अधिकार कर लिया। इसने स्पेन के साथ के लम्बे संघर्ष को तय कर दिया।

हालैन्ड के साथ सम्बन्ध—

इंगलैन्ड तथा हालैन्ड के बीच एक व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता थी। सत्रहवी शताब्दी के लगभग मध्य मे यह बहुत गंभीर हो गई। क्रॉमवैल ने सन् १६५१ मे नेवीगेशन एक्ट पास कर दिया। इसने एक बार मे ही तीन बातें की। इसने अंग्रेज उपनिवेशो के साथ डचो (Dutch) के व्यापार को अस्वीकृत कर दिया। इसने डच के मछुओ को इङ्गलेंड मे उनके व्यापार से वंचित कर दिए। इसने डच व्यापार को समाप्त करने की धमकी दी।

सन् १६५२ मे युद्ध आरम्भ हुआ क्रॉमवैल शान्ति चाहता था। इस युद्ध ने प्रौटैस्टेन्ट शक्तियो की लीग की योजना को समाप्त करने की धमकी दी। क्रॉमवैल इस लीग के लिए बहुत ही इच्छुक था। उसने फलतः, डचो के साथ सन् १६५४ मे एक सन्धि का रूप दिया। इसके द्वारा डच तीन बातो को सहमत हो गए। उन्होंने ब्रिटिश समुद्रो मे ब्रिटिश की सर्वोच्चता स्वीकार कर ली। उन्होंने कहा कि वे 'नेवीगेशन एक्ट' मे किसी सुधार की मांग न करेंगे। उन्होने वचन दिया कि पूर्व में अग्रेज व्यापारियो की क्षति पूर्ति करने के लिए वचन दिया।

अन्य यूरोपीय शक्तियों के साथ सम्बन्ध—

क्रॉमवैल ने सन् १६५४ में स्वीडन के साथ एक सन्धि की। इसके द्वारा दो देशो मे व्यापारिक सम्बन्ध नियमित हो गए। फिर, स्वीडन ने चार्ल्स द्वितीय की सहायता न करने का वचन दिया।

उसी वर्ष में क्रॉमवैल ने डेनमार्क तथा पुर्तगाल के साथ व्यापारिक सन्धियां की।

"इन सारी सन्धियो ने, उन व्यापारिक लाभों के अतिरिक्त जो इनसे हुए, नई सरकार को, रॉयलिस्टो के विरुद्ध अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान की, परन्तु क्रॉमवैल ने प्रौटैस्टेन्ट स्टेट्स के साथ उनको सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया, क्योकि वे भी विदेशो मे प्रौटेस्टेन्ट्स के हितो से अधिक सुरक्षा देते थे।"

क्रामवैल की विदेश-नीति का मूल्यांकन—

क्रामवैल की विदेश नीति की बहुत से इतिहासकारो ने आलोचना की है। लन्दन के व्यापारी शिकायत करते है कि उनका सर्वनाश हो गया क्योकि वे स्पेन के साथ व्यापार न कर सकते थे। व्यापारिक वर्ग तथा रिपब्लिकन्स कहते थे कि स्पेन नहीं बल्कि हालेन्ड, इङ्गलेड का वास्तविक शत्रु था। परन्तु क्रामवैल ने इङ्गलैंड को यूरोप मे एक महान देश बना दिया। इसके लिए अंग्रेज लोग उसके ऋणी थे।

क्रामवैल की विदेश नीति की सफलता का आधार इस सत्य मे था कि उसने अपने देश की भौतिक समृद्धि को उन्नति किया। इसके साथ ही उसने इङ्गलेंड को उसके घरेलू मामलो मे विदेशी हस्तक्षेप से बचाया। "क्रॉमवैल की अपने यहाँ की महानता, उसकी विदेशी महानता की परछाई मात्र थी।"

उसकी विजय तथा क्रूरताएँ—क्रॉमवेल ने स्काट्स पर द्वितीय सिविल वार मे विजय प्राप्त की। इसने उसे इङ्गलैन्ड मे सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बना दिया। चार्ल्स प्रथम की फासी के पश्चात, आयरलैन्ड तथा स्कॉटलेन्ड ने चार्ल्स द्वितीय को राजा घोपित कर दिया था। क्रॉमवेल को यह विचार पसन्द नही आया अतः उसने ड्रॉगहैडा (Droghede) तथा वैक्सफूड (Wexfood) के आयरिशो की सामूहिक हत्या की आज्ञा की। इस प्रकार उसने आयरलैन्ड के लोगो को वश में किया। स्कॉट्स के साथ उसके ऐसे सम्बन्ध अच्छे, न थे। परन्तु अन्ततः वह चार्ल्स द्वितीय को यूरोप भगाने मे सफल हो गया। इसके बाद शीघ्र ही आयरलैन्ड तथा स्कॉटलैन्ड, इंगलेंड के साथ संगठित हो गए। तीनो ने अब कौमनवैल्थ की रचना की।

क्रौमवैल तथा रम्प—रम्प का पार्लियामेन्ट अपनी शक्तियो का दुरुपयोग कर रही थी। यह स्वय को विलीन करने को तैयार न थी। अतः क्रौमवेल ने सदस्यो को शस्त्रो की शक्ति से बाहर निकाला। उसने हाउस के दरवाजो मे ताला लगा दिया। क्रॉमवेल का यह कार्य अनुचित था। यह अवैधानिक भी था। परन्तु उसने उचित बात की। रम्प ने प्रतिनिधि पार्लियामेन्ट के बुलाने का विरोध किया। इस प्रकार इसने सिविल वार के उद्देश्य को असफल करने का प्रयत्न किया। अतः क्रॉमवेल इस सम्बन्ध मे उचित था कि उसने उसे समाप्त करने के लिए शक्ति का प्रयोग किया।

क्रामवेल तथा सभा (Assembly)—

'रम्प' को समाप्त करने के बाद, क्रामवेल ने प्रतिनिधि पार्लियामेन्ट नही बुलाई। उसने विना इसके शासन चलाने का प्रयत्न किया। इसके स्थान पर उसने पवित्र सिद्धान्तवादियो की एक सभा बुलाई। यह असफल सिद्ध हुई। इस सभा (Assembly) का बुलाया जाना उचित नही ठहराया जा सकता। उसने ऐसा केवल, प्रतिनिधि पार्लियामेन्ट के बुलाए जाने को टालने के लिए किया।

शासन का यन्त्र—

सन् १६५३ मे शासन के सूत्र ने क्रामवेल को इङ्गलेंड का लार्ड प्रौटैक्टर बना दिया। "यह सैनिक की तलवार की नोक पर एक कानूनी टोपी मात्र

थी।" क्रामवैल की प्रथम पार्लियामेन्ट सन् १६५४ में मिली। अपने साहस तथा निर्भयता के लिए इसकी प्रशंसा होनी ही चाहिए। यह वह अधिकार जानना चाहती थी जिसके द्वारा सेना, समूचे देश के लिए एक विधान बना सकती थी। इससे क्रामवैल बहुत क्रुद्ध हो गया अतः उसने इसे भंग कर दिया।

क्रामवैल तथा उसकी दूसरी पार्लियामेन्ट—

क्रॉमवेल की दूसरी पार्लियामेन्ट ने 'हम्बुल पिटीशन एण्ड एडवाइस' (Humble Petition and Advice) प्रस्तुत की। इसमें क्रॉमवैल को राजमुकुट प्रस्तुत किया गया था। परन्तु वह अपनी सेना से भयभीत था। अतः उसने उसे अस्वीकार कर दिया। इसके कुछ ही वाद हाउस ऑफ कामन्स ने लार्ड का विरोध किया। अतः उसे क्रामवेल द्वारा भंग कर दिया गया।

क्रामवैल तथा विदेशी मामले—

विदेश-नीति वहुत सफल थी। उसने महाद्वीप पर इंगलैन्ड की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। उसने इंगलैन्ड की नाविक-शक्ति की धाक जमवा दी। डच युद्ध तथा नैवीगेशन एक्ट, समुद्री व्यापार को उसके देश के लोगो के हाथ मे ले आया। उसने यूरोप के प्रौटैस्टैन्ट देशो के साथ मित्रता कर ली। उसने फ्रास से एक सन्धि कर ली। इस प्रकार वह प्रौटेंस्टेन्ट्स का रक्षक हो गया।

क्रामवैल की मृत्यु—

३ सितम्बर १६५८ को औलिवर क्रॉमवैल की ५६ वर्ष की अवस्था मे मृत्यु हो गई। यह डन्वर (Dunbar) तथा वौरसैस्टर (Worcester) का दिन था।

प्रश्न ५१—लॉर्ड प्रौटैक्टर के रूप में क्रौमवैल के सम्बन्ध मे आप जो कुछ जानते हो उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर—रम्प (Rump) को पदच्युत करने के वाद क्रामवेल तथा अधिकारियो द्वारा कुछ लोगो को सगठित किया गया। यह सगठन, एक सदस्य के नाम से वेरवोन्स (Barebones) पार्लियामेन्ट कहलाता थी। यह सिवाय वाते अधिक करने के और कुछ विशेष न करती थी तथा इसे शीघ्र ही समाप्त कर दिया गया।

तव अधिकारियो ने एक विशेष-पत्र, शासक का शस्त्र (Instrument

क्लैरैन्डन कहता था। महान रॉयलिस्ट इतिहासकार की इस सम्मति से हम कामनवैल्थ की विदेश नीति के अध्ययन को छोड़कर संतुष्ट हो सकते हैं। कामन वैल्थ ने उस सम्मान और प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के लिए कुछ किया था जो कि इङ्गलेड ने यूरोप मे, प्रथम दो स्टुअर्ट के शासन मे खो दिया था।

प्रश्न ५०—क्रॉमवैल की सफलताओं एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर — ऑलीवर क्रॉमवैल के कार्य—

लौंग पार्लियामेन्ट के सदस्य—क्रौमवैल का जन्म सन् १५९९ मे हन्टिंगडन मे हुआ था। वह एक प्रतिष्ठित परिवार से था। वह उन्तीस वर्ष की आयु मे पार्लियामेन्ट का सदस्य हो गया। वह उस पार्लियामेन्ट मे बैठा जिसने 'पिटीशन का अधिकार' पास किया। वह लौंग पार्लियामेन्ट मे बैठा। लौंग पार्लियामेन्ट के सदस्य के रूप में उसने धार्मिक प्रश्नो मे तथा ग्रान्ड रिमॉन्स्ट्रैन्स मे महान रुचि ली। वह कहता था। "यदि ग्रान्ड रिमॉन्स्ट्रैन्स, पारित न हुआ होता तो मैंने अपना सर्वस्व, अगली सुबह बेच दिया होता तथा इङ्गलेन्ड मे कभी दुवारा न आया होता।

उसकी योग्यता—

क्रॉमवैल एक लम्बा, हृष्ट पुष्ट व्यक्ति था। अपने वेष तथा कपड़ो के सम्बन्ध मे लापरवाह, तथा कुशल वक्ता न था परन्तु उसके दृढ धार्मिक रीतिया तथा विश्वास थे तथा महान राजनैतिक योग्यता थी तथा वह जन्मजात नेता था।

उसके धार्मिक विचार—

क्रॉमवैल धार्मिक विश्वासो की भावना वाला व्यक्ति था। वह सब का ध्यान रखता था तथा वह करता जो ईश्वर की आज्ञा मे होता। इसके साथ ही उसमे सशक्त व्यावहारिक बुद्धि थी। ईश्वर में विश्वास करो तथा अपने साधनो को तैयार रखो।" वह रोमन कैथोलिक धर्म को घृणा करता था। वह ऐंग्लीकन बिशपो के प्रति बहुत उदार न था। परन्तु वह विशाल हृदय था। सहनशक्ति के उसके विचार हमे अपूर्ण प्रतीत होते थे। परन्तु विचार उनने बहुत स्वतन्त्र थे जो कि उसके स्वयं के जीवन काल मे प्रचलित थे।

उसके सेना कार्य—

क्रॉमवैल का सेना मे कार्य उस समय आरम्भ हुआ जब वह बावन वर्ष का था। उसके सिविल वार (Civil War) के दिनो मे घुड़सवार सेना मे अपनी ख्याति बनाई। यह ही वह व्यक्ति था जिसने घुडसवारो को संगठित किया तथा प्रशिक्षित किया जो कि प्रिन्स रूपर्ट के प्रतिद्वन्दी थे। अपने घुड़सवारी के कौशल में वह ऐसी गलती न करता था कि आक्रमण से पूर्व गोलियाँ चलाए (फायर करे)।

स्वयं निष्क्रमण (सेल्फ डिनाइंग) आर्डीनेन्स तथा न्यू मौडल आर्मी—

सिविल वार के दिनो में उसने वह उदासीनता का ढंग देखा जिसमे कि पार्लियामेन्टरी सेनाए लड़ रही थी। अतः उसने सेल्फ डिनाइग आर्डीनेन्स पास कराया। इसने पार्लियामेन्ट के सदस्यो को सेना मे कमीशन लिए रखने की अनुमति नही दी। क्रॉमवैल को अपवाद (Exception) बनाने के लिए एक अलग कानून पास किया गया। सेना को फेअरफैक्स के नेतृत्व में रखा गया। न्यूमॉडल आर्मी ने एक के बाद एक विजय प्राप्त की। चार्ल्स प्रथम शीघ्र ही पराजित कर दिया गया तथा उसे बन्दी बना लिया गया।

क्रॉमवैल तथा उसकी सेना—

क्रॉमवैल तथा उसकी सेना इङ्गलेन्ड मे एक महान प्रभाव रखती थी। वे धार्मिक दल के थे जो कि इडिपेन्डेन्ट् कहलाते थे। वे पापिस्ट्स के अतिरिक्त सब को धार्मिक सहिष्णुता प्रदान करते थे।

प्रेसबाइटेरियन्स ने प्रयत्न किया कि चार्ल्स प्रथम को पुनः नियुक्त किया जाय। उनकी शर्त थी कि इङ्गलेन्ड को प्रेसबाइटेरियनिज्म स्वीकार करना चाहिए। यह क्रॉमवैल की धार्मिक नीति तथा उसकी सेना की नीति के विरुद्ध था अतः कलनल प्राइड (Colonel Pride) ने क्रौमवैल की आज्ञा से प्रेसबाइटेरियन्स को हाउस ऑफ कॉमन्स के बाहर कर दिया। चार्ल्स पुनः इङ्गलेन्ड का राजा न हो सका। यह क्रॉमवैल के तथा उसकी सेना के प्रभाव के कारण था कि चार्ल्स को, रम्प (Rump) पार्लियामेन्ट द्वारा फांसी दी गई।

उसकी विजय तथा क्रूरताएँ—क्रॉमवेल ने स्काट्स पर द्वितीय सिविल वार मे विजय प्राप्त की। इसने उसे इङ्गलैन्ड मे सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बना दिया। चार्ल्स प्रथम की फांसी के पश्चात, आयरलैन्ड तथा स्कॉटलेन्ड ने चार्ल्स द्वितीय को राजा घोषित कर दिया था। क्रॉमवेल को यह विचार पसन्द नहीं आया अतः उसने ड्रॉगहेडा (Droghede) तथा वैक्सफूड (Wexfood) के आयरिशो की सामूहिक हत्या की आज्ञा की। इस प्रकार उसने आयरलैन्ड के लोगो को वश मे किया। स्कॉट्स के साथ उसके ऐसे सम्बन्ध अच्छे, न थे। परन्तु अन्ततः वह चार्ल्स द्वितीय को यूरोप भगाने मे सफल हो गया। इसके बाद शीघ्र ही आयरलैन्ड तथा स्कॉटलैन्ड, इंगलेंड के साथ संगठित हो गए। तीनो ने अब कौमनवैल्थ की रचना की।

क्रौमवैल तथा रम्प—रम्प का पार्लियामेन्ट अपनी शक्तियो का दुरुपयोग कर रही थी। यह स्वय को विलीन करने को तैयार न थी। अतः क्रौमवेल ने सदस्यो को शस्त्रों की शक्ति से बाहर निकाला। उसने हाउस के दरवाजो मे ताला लगा दिया। क्रॉमवेल का यह कार्य अनुचित था। यह अवैधानिक भी था। परन्तु उसने उचित बात की। रम्प ने प्रतिनिधि पार्लियामेन्ट के बुलाने का विरोध किया। इस प्रकार इसने सिविल वार के उद्देश्य को असफल करने का प्रयत्न किया। अतः क्रॉमवेल इस सम्बन्ध मे उचित था कि उसने उसे समाप्त करने के लिए शक्ति का प्रयोग किया।

क्रामवेल तथा सभा (Assembly) —

'रम्प' को समाप्त करने के बाद, क्रामवेल ने प्रतिनिधि पार्लियामेन्ट नहीं बुलाई। उसने बिना इसके शासन चलाने का प्रयत्न किया। इसके स्थान पर उसने पवित्र सिद्धान्तवादियों की एक सभा बुलाई। यह असफल सिद्ध हुई। इस सभा (Assembly) का बुलाया जाना उचित नहीं ठहराया जा सकता। उसने ऐसा केवल, प्रतिनिधि पार्लियामेन्ट के बुलाए जाने को टालने के लिए किया।

शासन का यन्त्र—

सन् १६५३ में शासन के यन्त्र ने क्रामवेल को इङ्गलैन्ड का लार्ड प्रोटैक्टर बना दिया। "यह सैनिक की तलवार की नोक पर एक कानूनी टोपी मान

थी ।" क्रामवेल की प्रथम पार्लियामेन्ट सन् १६५४ मे मिली। अपने साहस तथा निर्भयता के लिए इसकी प्रशंसा होनी ही चाहिए। यह वह अधिकार जानना चाहती थी जिसके द्वारा सेना, समूचे देश के लिए एक विधान बना सकती थी। इससे क्रामवेल बहुत क्रुद्ध हो गया अतः उसने इसे भंग कर दिया।

क्रामवेल तथा उसकी दूसरी पार्लियामेन्ट—

क्रॉमवेल की दूसरी पार्लियामेन्ट ने 'हम्बुल पिटीशन एण्ड एडवाइस' (Humble Petition and Advice) प्रस्तुत की। इसमे क्रॉमवेल को राजमुकुट प्रस्तुत किया गया था। परन्तु वह अपनी सेना से भयभीत था। अतः उसने उसे अस्वीकार कर दिया। इसके कुछ ही बाद हाउस ऑफ कामन्स ने लार्ड का विरोध किया। अतः उसे क्रामवेल द्वारा भंग कर दिया गया।

क्रामवेल तथा विदेशी मामले—

विदेश-नीति बहुत सफल थी। उसने महाद्वीप पर इंगलैन्ड की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। उसने इंगलैन्ड की नाविक-शक्ति की धाक जमवा दी। डच युद्ध तथा नैवीगेशन एक्ट, समुद्री व्यापार को उसके देश के लोगो के हाथ में ले आया। उसने यूरोप के प्रौटैस्टैन्ट देशो के साथ मित्रता कर ली। उसने फ्रास से एक सन्धि कर ली। इस प्रकार वह प्रौटैस्टेन्ट्स का रक्षक हो गया।

क्रामवैल की मृत्यु—

३ सितम्बर १६५८ को ओलिवर क्रामवैल की ५९ वर्ष की अवस्था मे मृत्यु हो गई। यह डन्बर (Dunbar) तथा वौरसैस्टर (Worcester) का दिन था।

प्रश्न ५१—लॉर्ड प्रौटैक्टर के रूप मे क्रौमवैल के सम्बन्ध में आप जो कुछ जानते हो उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर—रम्प (Rump) को पदच्युत करने के बाद क्रामवेल तथा अधिकारियो द्वारा कुछ लोगो को संगठित किया गया। यह संगठन, एक सदस्य के नाम से बेरबोन्स (Barebones) पार्लियामेन्ट कहलाता थी। यह सिवाय बातें अधिक करने के और कुछ विशेष न करती थी तथा इसे शीघ्र ही समाप्त कर दिया गया।

तब अधिकारियों ने एक विशेष-पत्र, शासक का शस्त्र (Instrument

of Government) तैयार किया। इसके द्वारा क्रॉमवैल को लार्ड प्रोटैक्टर होना था वस्तुतः उसका नियन्त्रण सामान्य शासन पर ही होना था जैसे कि थल-सेना (Army), जल सेना (Navy) तथा विदेश नीति। उसे हर तीन साल मे एक वार पार्लियामेन्ट बुलानी थी। इसमें केवल एक मात्र सदन (Single House) होना था।

इस प्रकार के सदन की बैठक उसने दो वार बुलाई, और दो वार उसे भंग किया। कारण यह था कि वह पार्लियामेन्ट के साथ सौहार्द्र से शासन करने मे उतना ही असमर्थ था जितना कि कोई भी स्टुअर्ट। परन्तु एक बहुत ही महत्वपूर्ण वात यह हैं कि उसने इसके सदस्यो को स्काटलेन्ड तथा आयरलेन्ड से बुलाया। वास्तव मे तो तीनो देशो का शासन, एक देश के रूप मे होता था। निस्सन्देह ही यह एक दिवश किया गया संगठन था। इगलैन्ड तथा स्काट-लैंन्ड का स्वेच्छापूर्ण सगठन पचास वर्ष उपरान्त आरम्भ हुआ इस बीच मौंक (Monk) ने स्काटलेन्ड पर न्यायपूर्ण तथा शान्ति से शासन किया। संभवतः बहुत से स्काट्स स्वय इस वात से प्रसन्न थे कि उसने एक समय के लिए प्रैसवायटेरियन चर्च की राजनैतिक शक्ति को तोड़ दिया।

क्रामवैल, स्पष्टतः एक सैनिक निर्दय था। उसने राष्ट्र के हित के लिए शासन किया। वह स्ट्रैफोर्ड की भाँति ही पूर्ण था। आत्म-जागृति की वास्तविक स्वतन्त्रता, वहा अपेक्षतः अधिक अंशो मे विद्यमान थी। सिवाय रोमन कैथोलिक्स के लिए। सामान्य गति के ऐपिस्कोपैलियन्स को इतनी स्वतन्त्रता न थी। इस प्रकार की धार्मिक स्वतन्त्रता अंग्रेज लोगो ने कभी उपभोग नही की। प्रैसवाय-टेरियन्स को शक्ति द्वारा, दूसरो को पीड़ा पहुँचाने से, रोका गया। फिर भी वे स्वयं अपनी इच्छानुसार आराधना एवं प्रार्थना करने को स्वतन्त्र थे। कैवे-लियर्स (Cavaliers) पर भारी कर लगाए गए। परन्तु गुप्त रूप से वे अपनी प्रथानुसार आराधना कर सकते थे। किसी भी वर्ग के मिनिस्टर्स, प्रैसवाइटेरियन्स, वैपटिस्ट्स अथवा इन्डिपैन्डैन्ट्स, इच्छानुसार जब तक चाहे और ट्रयर्स (Triers) को सन्तुष्ट करें, धर्मोपदेश दे सकते थे। यह व्यक्तियो को एक बोर्ड था जो कि मिनिस्टर्स को योग्यता की जाच करने को नियुक्त किया गया था।

परन्तु क्रामवेलियन शासन का व्यय कुचलने वाला था। शान्तिकाल की वार्षिक राजकीय आय २½ लाख पहुँचाती थी। यह धनराशि उस धनराशि के तिगुने से ज्यादा थी जो कि चार्ल्स की आय अपने ग्यारह वर्ष के बिना पार्लियामेन्ट के शासन काल में थी। फिर भी शान्ति काल मे, इस आय से खर्च पूरा नही होता था। बन्दरगाहो पर कर, चुंगी तथा महसूल इतने काफी न थे कि राष्ट्र की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सकें यद्यपि कि नेवीगेशन आर्डीनेन्स के प्रयोग मे आ जाने के बाद भी।

सबसे हिंसक कार्य जो क्रामवेल ने किया वह इंगलैन्ड को दस सैनिक जिलो मे बाटना था। उनमे से प्रत्येक मेजर जनरल के अन्तर्गत थे। वह टैक्सो के चुकता कराने का जिम्मा लेता था तथा विशेषतः कैवेलियर्स की आय पर दस प्रतिशत टैक्स की। परन्तु कोई भी सरकार यथासम्भव वार्षिक क्षति उठाकर नही चल सकती अथवा इस प्रकार की क्षति को निरन्तर एक वर्ग पर जुर्माना कर करके पूरा नही कर सकती। वास्तव मे यदि क्रामवेल अगले पाच वर्ष और जीवित रहा होता तो उसने इङ्गलैंड को दिवालिएपन की स्थिति मे फँसा दिया होता। यह है डा० एस० आर० गार्डिनर का अन्तिम कथन, जो कि उस काल के प्रमुख इतिहासकार थे।

प्रश्न ५२—ओलिवर क्रॉमवेल के चरित्र तथा कार्य के बारे में आप जो कुछ जानते हो लिखिए।

अथवा

प्रश्न ५३—ओलिवर क्रॉमवेल का उसके देश के इतिहास में क्या स्थान है ?

उत्तर—ओलिवर क्रामवेल, अपने देश के इतिहास के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियो के बीच एक स्थान रखते हैं। वह एक अजेय साहस तथा लौह-इच्छा शक्ति का व्यक्ति था। यद्यपि उसका कार्य तथा चरित्र कटु आलोचना के विषय रहे हैं फिर भी प्रत्येक व्यक्ति इस बात से सहमत है कि वह इंगलिश इतिहास मे एक बहुत ऊंचा स्थान रखता है। यह उसकी सेना थी जिसने इङ्गलैंड को राजसी क्रूरता से बचाया। वही था जिसने कि अपने देश को विनाश से बचाया।

वह इंगलैंड का प्रथम इम्पीरियलिस्ट माना जाता है। उसने इङ्गलैंड के औपनवेशिक साम्राज्य को विस्तृत करने तथा इङ्गलंड को उन्नत करने मे कोई कमी नहीं छोड़ी। वह एक तीव्र धर्मोन्माद के युग में रहता था परन्तु वह इससे अधिक प्रभावित न था। उसकी पार्लियामैन्टरी सुधार तथा ब्रिटिश आइल्स के संगठन की इच्छा वहुत ही प्रशंसनीय थी। फिर, वह स्वार्थी कभी न था। वह व्यक्तिगत लाभ कभी न चाहता था। वह केवल अपने देश की प्रगति के लिए कार्य करता था। "यह सादा गाव का भद्रपुरुष, अपनी पुस्तक, अपने घोड़े तथा अपके पाइप (Pipe) का शौकीन, पहले एक घुड़ सवार सेना का कुशल सेनापति तव जनरल सारी सेनाओ का मुख्याधिकारी, अपने युग की कुछ सवसे प्रभुत्व कठिनाइयो में स्वयं को जी जान से लगा देने वाला हो गया था और अन्ततः वह ब्रिटिश एम्पायर का शासक हो गया था। एक ऐसे युग मे जवकि विनाश और क्रूरता सारी भूमि पर आच्छादित थी उसने शान्ति तथा व्यवस्था प्रदान की थी और लालायित इंगलिश जहाज रानी (Shipping) की की स्वतन्त्रता को प्राप्त किया था।"

निस्सन्देह ही, क्रामवैल वहुत ही अच्छी भावनाओ का व्यक्ति था परन्तु उसकी घरेलू नीति असफल थी। यह इस कारण था क्योकि उसके विचार समय से वहुत आगे थे। उसकी पार्लियामेन्टरी योजना अपरिपक्व थी। अतः उसे पसन्द न किया जा सका। धार्मिक सहिष्णुता के उसके विचारो ने संसार को प्रभावित नही किया क्योकि वे धर्मोन्माद के संसार मे रहते थे। यद्यपि उसकी सरकार कुशल थी परन्तु फिर भी वह सैनिक क्रूरता पर आधारित थी। क्रूरता मे उसकी तुलना चार्ल्स प्रथम से की गई है। उसने वहुत अधिक कर लगाए। उसने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा भाषण स्वतन्त्रता की वहुत कम अनुमति दी। उसने पार्लियामेन्ट के प्रति भी वडा कठोर व्यवहार रखा। लोग भली प्रकार समझ सकते थे कि वह एक क्रूर शासक था। अतः वह उनकी स्वामिभक्ति प्राप्त न कर सका। परन्तु उसकी विदेश नीति वहुत ही अधिक सफल थी। उसने समूचे महाद्वीप पर इङ्गलड की प्रतिष्ठा को ऊंचा कर दिया।

क्रामवैल ने इङ्गलैंड पर विना अधिकार के, केवल तलवार से शासन किया। ऐसा उसने जानबूझ कर, और बुरी चीजो को होने से रोकने के लिए

किया। उसने ऐसा इसलिए भी किया कि वह स्टुअर्टस तथा प्रेसवायटेरियन्स को शक्ति हथियाने मे अलग रखे और एक दूसरी सिविलवार को रोक सके। अपने प्रमुख इतिहासकार डा० एस० आर० गार्डिनर के उपसंहार के शब्दो मे, क्रॉमवैल की इंगलैंड के प्रति सारी सेवाएँ निषेधात्मक थी। उसने चार्ल्स प्रथम तथा रौयल प्रेरोगेटिव को तोड़ दिया। उसने प्रेसवायटेरियन क्रूरता को इङ्गलैंड तथा स्काटलैंड दोनो मे रोका। उसने रम्प को बाहर निकाल दिया जो कि सदैव के लिए बैठना चाहता था।

उसने यूरोप को सिखा दिया कि अंग्रेज लड़ सकते थे, यद्यपि यह एक पुरिटन को आश्चर्यजनक प्रशसा देना मालूम हो सकता है। इसके अतिरिक्त उसने अंग्रेजो मे इस विचार के प्रति घृणा बना दी कि अत्यधिक टैक्स लगाकर एक सेना को रखा जाय। इसको हम इस प्रकार दुहरा सकते है कि थल-सेना तथा जल-सेना को बनाए रखने का व्यय इतना अधिक था कि वह इङ्गलैंड को दिवालिएपन के किनारे पर ला रहा था। अतः वह इङ्गलैंड की शक्ति को, विदेशियो की आँखो मे, महान शक्ति लगने वाली बना सकता था। परन्तु उसने ऐसा करने के लिए इङ्गलैंड के सभी साधन-सूत्रो को समाप्त कर दिया। सेना, सन् १६५२ की ७०,००० की शक्ति की गिरकर १६५८ मे ३०,००० रह गई थी। नेवी मे सन् १६४९ से वृद्धि हो गई थी, चाहे नए निर्माण द्वारा अथवा विभिन्न शत्रुओ के पुरस्कार से, २०० से अधिक सभी प्रकार के जहाज बढ गए थे। परन्तु मितव्ययता पहले से ही इसकी कुशलता को नष्ट कर रही थी। क्रामवैल का आत्मा की स्वतन्त्रता का प्रेम, उसकी सच्ची शुद्धता, उसका अपना व्यक्तिगत महान लाभ करने की मनाही, उन लोगो द्वारा भुला दिए गए थे जो कि केवल लाल कोट देख सकते थे। उसने गंभीरता से पुरिटैनिज्म का आधार ही नष्ट कर दिया जिसके लिए कि वह रहा और उसने कार्य किए।

फिर भी हमे उसकी मानवता की प्रशसा करनी ही पड़ती है। वह हैनरी अष्टम की भांति अस्पष्ट-विचारो वाला अत्याचारी नही था। ब्लेक (Blake) की भाँति वह इसे अपना कर्त्तव्य समझता था कि वह विदेशियो को अंग्रेज लोगो को मूर्ख बनाने से रोके। वह एक कुशल अद्वितीय विजय का संगठनकर्ता था। फिर भी उसने इङ्गलैंड की स्थायी सम्पत्ति मे केवल जमैका

(Gamaica) जोडा। यह उसकी मृत्यु के वाद तक भी न हुआ कि गन्ने की पैदावार ने जमैका को धनी कर दिया। आयरलैंड में उसने राष्ट्रीय घृणा तीव्रतर कर दी।

१६—पूर्वावस्था की प्राप्ति (The Restoration)

प्रश्न ५४—इङ्गलैंड में सन् १६६० में राजतन्त्र की पूर्वावस्था आने का आप क्या कारण ठहराते है ?

अथवा

प्रश्न ५५—वे परिस्थितियां बतलाइए जो पूर्वावस्था लाई तथा सन् १६६० की कन्वेन्शन पार्लियामेन्ट के कार्यो का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्रश्न ५६—चार्ल्स द्वितीय.की पूर्वावस्था की प्राप्ति न केवल राजतन्त्र की पुनः स्थापना थी बल्कि पार्लियामेन्ट की पुनः स्थापना भी थी" व्याख्या कीजिए।

उत्तर—यूजर्पर (Usurper) का उत्तराधिकारी कौन होगा—

क्रामवैल की मृत्यु ३ सितम्वर १६५८ मे हो गई। अव प्रश्न उठा वह यह था कि अन्यायी अधिकारी का उत्तराविकारी कौन होगा ? निस्सन्देह ही पुराना प्रश्न दुवारा स्मरण आया। एक पुराने स्थापित राजतंत्र में हम सवसे वडे पुत्र का उत्तराधिकारी होना समझते हैं। हम एक शक्तिशाली अनधिकृत शासक का शासन भी समझ सकते हैं। परंतु एक वलप्रयोग से अधिकार प्राप्त करने वाले का पुत्र, प्राकृतिक अधिकारों से उत्तराधिकारी वने, यह अनुचित है। अन्य शक्तिशाली पुरुष, वलप्रयोग से अधिकार प्राप्त करने वाले का स्थान लेने के लिए स्वयं को पूरा पूरा समर्थ समझते है, जैसा कि इस मामले मे जनरल लैम्बर्ट तथा फ्लीटवुड (Fleetwood) ने किया। ओलीवर क्रामवैल का सवसे वडा लड़का, रिचार्ड क्रामवैल, प्रौटैक्टर घोषित किया गया। उसको आयरलैंड मे अपने भाई हैनरी की तथा स्काटलैंड में मौंक का समर्थन प्राप्त था।

रिचार्ड क्रामवैल प्रौटैक्टर हो जाता है—

यह दुर्भाग्य था कि दूसरा पुत्र हैनरी उत्तराधिकारी न बना होता। वह कुशल सैनिक तथा अनुभवी नेता था। रिचार्ड, यद्यपि एक दयालु भद्र पुरुप था, न एक नेता था और न एक सैनिक ही। उसमें वह धार्मिक विशेषता न थी जो कि उत्साही व्यक्तियो के आदर को जीत सके। परन्तु उसको विना किसी कठिनाई के उत्तराधिकार प्राप्त हुआ।

रिचार्ड का त्याग—

रिचार्ड की प्रथम पार्लियामेन्ट हुई। पुराने विरोध फूटे। रिचार्ड ने देखा कि उसे या तो सेना की सहायता पर विश्वास करना चाहिए अथवा पार्लियामेन्ट पर। उसने सेना को अपेक्षतः पसन्द किया। पार्लियामेन्ट भंग करदी गई। सैनिको ने तव मामलों को अपने स्वयं के हाथो मे लिया। उन्होने लौंग पार्लियामेन्ट के अवशेपो जो सामान्यतः रम्प कहलाते थे, का स्मरण किया। रिचार्ड ने स्वयं को परिष्कृत अनुभव किया। उसने मई १६५६ मे त्याग-पत्र दिया। उसने व्हाइट हाल छोड दिया और व्यक्तिगत जीवन मे अवकाश का आनन्द लिया।

राज विप्लव का काल—

सेना द्वारा रम्प को पुनः लाया गया परन्तु यह क्रोधित हो गया। इसने सेना को नियन्त्रित करने का एक प्रयत्न किया। अतः लैम्बर्ट ने जो कि सेना का नेता था, इसे पुनः निकाल दिया। सेना शासन न कर सकी। अतः रम्प को पुनः बुलाया गया। परन्तु सेना तथा रम्प कभी भी अच्छे सम्बन्धो पर न हो सके। उनका झगडा अशान्ति तथा बुरे शासन का कारण बना। देश मे राज विप्लव था। चेशायर (Cheshire) मे, बूथ (Booth) के नीचे एक जागृति फैल गई। इसे लैम्बर्ट (Lambert) द्वारा शीघ्र ही दवा दिया गया। लैम्बर्ट की लन्दन की वापिसी पर, उसे पार्लियामेन्ट द्वारा वर्खास्त कर दिया गया। अतः अगले दिन वह वेस्ट-मिनिस्टर में चला गया। दूसरी बार सेना ने रम्प को निकाल दिया। अब सेना सर्वोच्च शक्ति थी। परन्तु इसकी शक्ति को जनरल मौंक के स्कॉटलैन्ड से चलने से धौस दी गई।

मौंक तथा लैम्बर्ट—

इङ्गलेंड का भाग्य एक आदमी के कन्धों पर आश्रित था। वह जार्ज मौंक

था। वह बचपन से ही भाग्य का सैनिक था। चार्ल्स की फांसी के बाद उसने क्रामवैल की सेवा एक मात्र संभव शासक के रूप मे की। उसमे तत्कालीन सरकार की आज्ञा मानने वाली सच्ची सैनिक प्रवृति थी। गवर्नमेन्ट उसे वेतन देती थी। इसकी सेवा करके, वह इङ्गलैंड की सेवा करता था चाहे स्कॉट्स के विरुद्ध भूमि द्वारा अथवा डचो के विरुद्ध समुद्र द्वारा दूसरी ओर लेम्वर्ट था। वह इंगलेंड मे सेना का नेता था। वह एक वकील रह चुका था। उसने यकायक, सिविल वार, मे विशिष्ट सैनिक कुशलता दिखाई थी। उसका विचार था कि सैनिको को गवर्नमेन्ट पर नियन्त्रण करना चाहिए और इसलिए उनके वेतन की व्यवस्था हो। प्रश्न, स्वयं सैनिको द्वारा तय होगा। उनमे से अब ३०,००० से कम सशस्त्र थे। परन्तु बहुत से सैनिक उनके साथ सम्मिलित होने को तैयार थे। क्या उनमे से अधिकाश मौंक (Monk) की अथवा लैम्वर्ट की तरह ही सोचेंगे ? क्या वे सेवक होना पसन्द करेंगे अथवा स्वामी होना ?

मौंक, लन्दन में—

मौंक, बहस करने की अपेक्षा कार्य करने का अधिक शौकीन था। उसने धीमे धीमे स्काटलेन्ड मे ट्रुप्स एकत्रित किए। उसने स्वामिभक्त, अफसरो के अतिरिक्त सबसे मुक्ति पाली। उसने पहली जनवरी १६६० को कोल्डस्ट्रीम पर टवीड को पार किया। उसकी स्वयं की रेजीमेन्ट अब भी कोल्डस्ट्रीम गार्ड कहलाती है। उसे प्रैसब्रायटेरियन्स तथा स्कॉटस, पैदल सेना के अफसरो, लन्दन के नागरिको तथा हल (Hull) एवं अन्य बन्दरगाहो का समर्थन प्राप्त था।

मौंक एक सतर्क व्यक्ति था। वह अपना निजी सलाहकार रखता था। परन्तु यह समझा जाता था कि वह अंग्रेजी सेना के नेताओ के विरुद्ध था। अतः लैम्वर्ट, उससे लड़ने के लिए उत्तर की ओर रवाना हुआ। परन्तु लार्ड फेअरफैक्स, जिसने कि जब से प्रौटेक्टोरेट ने जन-जीवन स अवकाश ग्रहण किया था, ने यॉर्कशायर की सेनाओ को एकत्रित किया। उसने मौंक के साथ हो जाने की धौंस दी। इस पर लैम्वर्ट की सेनाएं इधर उधर हो गईं। उस समय युद्ध न हुआ। मौंक बिना किसी विरोध के लन्दन पहुंच गया।

कन्वेन्शन पार्लियामेन्ट—

फरवरी सन् १६६० मे मौंक (Monk) लन्दन पहुँच गया। उसने

रम्प (Rump) को बैठे हुए पाया । उसने रम्प (Rump) को स्वयं को सन् १६४१ के एक्ट के अनुसार विलीन करने के लिए विवश किया। रम्प ने स्वतन्त्र पार्लियामेन्ट (Free Parliament) के लिए घोषणा की तथा स्वयं को विलीन (Dissolve) कर दिया । नई पार्लियामेन्ट अप्रैल सन् १६६० मे मिली । यह कन्वेन्शन पार्लियामेन्ट कहलाई क्योंकि इसे राजा द्वारा नही बुलाया गया था ।

कन्वेन्शन का चुनाव, क्रॉमवैल की योजनानुसार नही हुआ वल्कि पुराने वरो (Borough—वह नगर जहा से पार्लियामेंट के सभासद होते हैं) द्वारा हुआ । इसमे पूर्णतः रॉयलिस्ट तथा प्रैसवायटेरियन्स रहते थे । उन्हें अव तक सेना द्वारा शासन मे रखा गया था । इसके शासन से सारा इङ्गलैन्ड सिवाय कुछ गिने चुने धर्मावलम्वियो के हृदय से परेशान था । एक आवाज से कन्वेन्शन ने चार्ल्स द्वितीय को दुवारा बुलाने का निश्चय किया । वह अपने पिता के कुकृत्यों के लिए उत्तरदायी था ।

ब्रैडा (Breda) को घोषणा—

चार्ल्स, हालेन्ड में ब्रैडा (Breda) में कन्वेन्शन पार्लियामेन्ट के राजदूतो से मिला । वह उनकी शर्तों से सहमत हो गया । इसका वास्तव मे अर्थ यह था कि राजतन्त्र की पुनः स्थापना, पार्लियामेन्ट की पुनः स्थापना भी थी । उसने ब्रैडा की घोषणा जारी की । इसके द्वारा उसने स्वयं को, सेना के सारे वकाया हिसाव को चुकता करने अपने पिता के शत्रुओ को क्षमा करने, तथा भूमि के फैसले को अस्पर्श छोडने के लिए वाध लिया । चूंकि वह पार्लियामेन्ट के द्वारा केवल धन वढा सकता था तथा चूकि राजा की हत्या करने वालों को पार्लियामेन्ट के सामान्य क्षमादान द्वारा ही मुक्त किया जा सकता था, अतः इस प्रकार चार्ल्स द्वितीय को वैधानिक राजा की भाति पुनः स्थापित किया गया ।

चार्ल्स की पुनः स्थापना (पुनः प्राप्ति)—

चार्ल्स डॉवर (Dover) पर उतरा । वह पुरानी डॉवर रोड पर हो कर लन्दन की ओर चला । ब्लैक हीथ मे उसने सेना को तैयार पाया ।

वह उत्तेजित भीड से गुजरा। अपने जन्म दिन २९ मई को सन् १६६० में वह लन्दन मे पुनः घुमा "रास्ते फूलों से ढक गए, घन्टे बजे, गलियों मे उल्लास छाया और फुवारों मे शराब बिखरी।" कॉमनवैल्थ समाप्ति पर थी।



१७—चार्ल्स द्वितीय

प्रश्न ५७—चार्ल्स द्वितीय के शासन काल के घरेलू मामलों का एक संक्षिप्त इतिहास बताइए।

उत्तर—राज्य का निपटारा (Settlement of the Kingdom) ब्रेडा की घोषणा मे चार्ल्स ने चार वायदे किए थे। इन वायदो का पूरा होना पार्लियामेन्ट की सहमति पर निर्भर था। प्रथमतः, सैनिको से बकाया वेतन देने का वायदा किया गया था। वह दिया गया। न्यूमॉडल आर्मी को सिवाय कोल्डस्ट्रीम गार्डस के खतम कर दिया गया।

दूसरे, चार्ल्स ने सामान्य क्षमादान का वायदा किया था। चार्ल्स स्वयं बदला लेने का इच्छुक न था। वह क्षमा करने तथा भूल जाने को पूरी तरह तैयार था। पार्लियामेन्ट ने 'इन्डेमनिटी एन्ड ऑबलिवियन' का कानून (Act of Indemnity and oblivion) पारित किया। इसके द्वारा बहुत से अपवाद किए गए। तेरह आदमियो को जिन्होने चार्ल्स प्रथम के मृत्यु-पत्र (Death-Warrant) पर हस्ताक्षर किए थे, फाँसी दे दी गई। पच्चीस राज-हत्यारो को आजन्म करावास दिया गया। क्रॉमवैल का शव, वैस्टमिन्स्टर आबे मे कब्र से खोदा गया। उसे टायबर्न (Tyburn) मे फाँसी पर चढा दिया गया। उसे कनाट स्क्वायर (Connaught square) मे फाँसी देने की टिकटी के नीचे जला दिया गया।

तीसरे, चार्ल्स ने उन लोगो से लगान की सुरक्षा का वायदा किया था जिनके पास कि कॉमनवैल्थ के नियन्त्रण मे भूमि थी। भूमि का प्रश्न बहुत ही उलझन का सिद्ध हुआ। अन्ततः उसका फैसला इस प्रकार हुआ। वह सारी भूमि जो चर्च की थी तथा वह सारी भूमि जो कि कॉमनवैल्थ द्वारा जब्त कर ली गई थी, उनके मालिको को लौटाई जानी थी। भूमि का व्यक्तिगत बेचना

सही मान लिया गया। यह निवटारा एक सुलहनामा था। इससे कोई भी पक्ष प्रसन्न न हुआ। इससे दोनों पक्षों को मुसीवत हो गई। परन्तु इसे टाला भी न जा सकता था।

चौथे, चार्ल्स ने आत्मा की स्वतन्त्रता का वायदा किया था। उसने प्रमुख धर्मोपदेशकों मे सुलहनामा कराने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रयत्न असफल हुआ। इसे एक नई पार्लियामेन्ट के लिए प्रश्न पर विचार करने को छोड दिया गया।

कैवेलियर पार्लियामेन्ट—

यह पार्लियामेन्ट कैवेलियर पार्लियामेन्ट कहलाती है। यह सन् १६६१ से १६७९ तक रही। यह राजा से अधिक राजसी (Royalist) थी। यह कैवेलियर पार्लियामेन्ट इसलिए कहलाती थी क्योंकि इसमे राजा के प्रति पुरानी कैवैलियर (हितैषी) भावना वहुत अधिक वलवती थी। धर्म मे यह अत्यधिक सशक्त एन्ग्लीकन थी। इसने सवसे महत्वपूर्ण कार्य जो किया वह चर्च का निवटारा था। यह पुरिटन्स (Puritans) को घृणा करती थी। अतः इसने उनके विरुद्ध चार कानून पास किए। वे निम्नलिखित थे :—

१—कारपोरेशन एक्ट—इस कानून के द्वारा कोई भी म्युनिस्पिल संस्थाओ का तव तक सदस्य न हो सकता था जव तक कि वह यह प्रतिज्ञा न करे कि राजा के विरुद्ध शस्त्र न उठावेगा। म्युनिस्पल संस्थाएं कस्वो एवं नगरो का शासन करती थी तथा पार्लियामेण्ट के सदस्यो का निर्वाचन करती थी। फिर, कोई भी व्यक्ति तव तक म्यूनिसिपल संस्थाओ का सदस्य न हो सकता था जव तक कि वह इङ्गलैंड के चर्च के श्लोको एवं मन्त्रो के अनुसार कम्यूनियन (Communion) न प्राप्त कर ले। इस कानून का आशय पुरिटन्स (Puritans) को नगरो तथा हाउस ऑफ कामन्स पर अपना प्रभुत्व जमाने से वंचित करना था।

२—यूनिफार्मिटी का कानून (The Act of Uniformity)—इस कानून के द्वारा प्रत्येक विद्वान, धर्म विशेषज्ञ एवं अध्यापक को विरोध न करने की उसी प्रकार की शपथ लेनी पडती थी। कॉमन प्रेयर की पुस्तक मे जो कुछ भी अच्छा वुरा दिया होता उसके अनुसार ही उसे सहमति घोषित करनी होती।

इस पुस्तक मे उसी समय छः सौ अभियोग जोड़ गए थे। वे पुरिटन विरोधी थे। लगभग दो हजार पादरियो ने इस कानून को मानने से मना कर दिया। उन्हे उनके रहन-सहन से वंचित कर दिया गया।

३—पांच मील का कानून (The Five Mile Act)—इस कानून के द्वारा उपयुक्त दो हजार पादरियो को अपने पहले के निवास स्थान अथवा समीपवर्ती नगर के पाच मील दूर तक के क्षेत्र में आने की अनुमति न थी। वे ऐसा तभी कर सकते थे जव कि वे विरोध न करने की, कारपोरेशन एक्ट द्वारा नियत शपथ ग्रहण करते। उन्हे यह भी वचन देना पडता था कि वे चर्च तथा राज्य की सरकार मे कोई परिवर्तन करने का प्रयत्न न करेंगे।

४—धर्म-सभा कानून (The Conventicle Act)—इस कानून के द्वारा, इंगलैन्ड के चर्च की मीटिंगो के अतिरिक्त अन्य धर्म-सभाओ की अनुमति न थी। जो लोग पहली वार ऐसा करते थे उनको कैद की सजा दी जाती थी। यदि वे तीसरी वार ऐसा दुहराते थे तो उन्हे देश से निकाल दिया जाता था।

क्लेरैन्डन कोड (Clarendon Code)—इन कानूनो ने इङ्गलैंड के चर्च तथा अधिक उन्नत पुरिटन्स को अलग कर दिया। ये कानून क्लेरैन्डन कोड कहलाते हैं। ऐसा इसलिए था क्योकि एडवर्ड हाइड, क्लॅरेन्डन का अर्ल, कैवैलियर पार्लियामेन्ट का एक वहुत महत्वपूर्ण सदस्य था। परन्तु यह अनुचित है। यद्यपि क्लैरैन्डन मुख्य मंत्री था परन्तु न तो उसे और न राजा को कानूनो से कोई मतलव था।

क्लॅरैन्डन कोड, इङ्गलॅन्ड को धार्मिक ग्रुपो मे वाँटता था। वे एन्ग्लीकन्स तथा डिसेण्टर्स अथवा नॉनकन फोर्मिस्ट्स थे। डिसैन्टर्स को कोई धार्मिक स्वतन्त्रता तथा राजनैतिक शक्ति न दी गई थी।

सन् १६६० के वाद क्राउन के अधिकार—

हत्यारो का मामला, भूमि तथा धार्मिक प्रश्न सव तय हो चुके थे। परन्तु एक समस्या अव भी रह गई थी राजतन्त्र तथा पार्लियामेन्ट की शक्तियो एवं अधिकारो का कैसे सामञ्जस्य हो ? पहली नजर मे ऐसा मालूम हो सकता था कि राजतन्त्र ने पुनः प्राप्ति (Restoration) पर अपने सभी पुराने अधिकार

फिर से ले लिए। किंग ने पहले की भाति ही अपने मंत्री चुने। उसने देश की आन्तरिक तथा विदेशी नीति का संचालन किया। सामन्तो के ऋण समाप्त कर दिए गए। परन्तु किंग के लिए पार्लियामेन्ट द्वारा जीवन के लिए, कर तथा महसूलो से वृत्ति स्वीकार हुई। एक दिशा मे, वास्तव मे चार्ल्स अपने पूर्वजो से अधिक शक्तिशाली था। उसकी एक लगभग पाँच हजार व्यक्तियो की तैयार सेना थी। जैसे जैसे शासन ने प्रगति की यह बढा दी गई।

परन्तु वास्तव मे, किंग अपने पुराने अधिकारो की स्थिति मे न था। स्टार चैम्बर के न्यायालय जैसे, स्वच्छन्द न्यायालय अब न थे। पुनः प्राप्ति (Restoration) केवल राजतन्त्र की पुनः प्राप्ति ही न थी बल्कि साथ ही पार्लियामेन्ट की पुनः प्राप्ति (Restoration) भी थी। अत: पार्लियामेन्ट की इच्छाएँ अब और अधिक न टाली जा सकती थी। कहा जाता था कि, "फ्रान्स का राजा अपनी प्रजा को अपनी इच्छानुसार चला सकता है; परन्तु इङ्गलेंड के राजा को अपने लोगो के साथ अवश्य चलना चाहिए।" फिर सन् १६७७ मे पार्लियामेन्ट ने महान प्रगति की। इसने निश्चय किया कि राजा के अतिरिक्त अनुदानो को विशेष मदो पर व्यय किया जाना चाहिए। हिसाव किताब की पार्लियामेन्ट द्वारा जाच की जाती थी ताकि इस प्रकार किए गए व्यय की पुष्टि हो सके। इसके दो अर्थ थे। पार्लियामेन्ट राजा को धन देती थी। यह उन तरीको पर नियन्त्रण तथा देख-रेख रख सकती थी जिनसे कि व्यय होता था।

क्लैरैन्डन का मन्त्रिमंडल—

चार्ल्स के शासन काल (१६६०-६७) के प्रथम सात वर्षों मे लार्ड क्लैरैन्डन मुख्य मत्री था। उसका बहुत बडा प्रभाव था। अतः यह कहा जाता था कि चार्ल्स केवल आधा राजा था। ऐडवर्ड हाइड (Edward Hyde) की भाति, क्लैरैन्डन लम्बी पार्लियामेन्ट का सदस्य रह चुका था। उसने इसके कार्य को ठीक माना था जव तक कि ग्रान्ड रिमोस्ट्रेन्स (Grand Remonstrance) आगे लाया गया था। वह क्लैरैन्डन कोड के लिए उत्तरदायी न था। बल्कि वह बहुत ही असहनशील हाई चर्चमैन था। इतना ही नही वह राजनीति में सामान्य, साहसी एवं परिश्रमी था। उसका महान उद्देश्य राजा तथा पार्लिया-

मेन्ट के वीच शक्ति का सतुलन स्थापित करना था। अपनी प्रकृति के कारण वह सभी वर्गों मे अप्रिय हो गया। राजा उसके उपदेशो से ऊब गया। दरवारी उसके चरित्र का मखौल उड़ाते। रॉयलिस्ट उससे उसकी पुरिटन्स की रियायतों (Leniency) के लिए घृणा करते। नान कनफर्मिस्ट्स उससे उसके कोड के कारण घृणा करते। उसकी पुत्री का किंग के भाई जेम्स से विवाह होने से वह स्वार्थी लगने लगा। उसने डनकर्क (Dunkirk) को फ्रान्स के राजा लुइस चौदहवे (Louis XIV) को बेच दिया। कहा जाता था कि लुइस ने उसे रिश्वत दी थी। अतः लोग उस पर भ्रष्टाचार का अभियोग लगाते।

दो विपत्तियों से क्लैरेन्डन की अप्रियता वढ गई। परन्तु वह उनके लिए किसी प्रकार उत्तरदायी न था। सन् १६६५ की प्लेग की महामारी ने लन्दन की जनसंख्या के पाचवे भाग को समाप्त कर दिया। अगले वर्ष 'महा-अग्नि' (Great Fire) ने दो तिहाई मकानो को तथा सौ गिर्जाघरों को राख कर दिया। अन्ततः सन् १६६७ में, इङ्गलैंड के लोगो ने उसे उस डच फ्लीट के लिए उत्तरदायी ठहराया जो थेम्स तक वढी। अतः अन्ततः किंग द्वारा क्लैरेन्डन को वर्खास्त कर दिया गया। उस पर पार्लियामेन्ट द्वारा मुकद्दमा चलाया गया। क्लैरेन्डन देश से चला गया।

प्रश्न ५८—संक्षेप में चार्ल्स द्वितीय का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—तीस वर्ष की आयु मे चार्ल्स द्वितीय राजा हो गया। वह इक्कीस वर्ष की आयु से विदेश मे रहा था तथा कुछ समय हालैंड में रहा था। वह महान प्राकृतिक पवित्रता का व्यक्ति था। उसके चॅकर्ड के कार्य ने उसे मनुष्यो एवं वस्तुओं का महान अनुभव प्रदान किया था। अपने पिता से अधिक योग्य, उसमे, अपने दादा से अधिक ससार का ज्ञान था। अपने साथ वह एक दृढ संकल्प वापिस लाया। वह दुबारा यात्राओं पर न निकला। इसके साथ ही वह इस वात के लिए दृढ संकल्प था कि उतनी अधिक शक्ति अर्जित की जाय जितनी कि परिस्थितियां प्रदान करें।

उसमे अभ्यास के प्रति अंग्रेज का प्रेम था। उसे टैनिस तथा शिकार का विशेष शौक था। वह अक्सर व्हाइट हॉल (White hall) से हैम्पटन कोर्ट (Hampton court) तक पैदल जाता। उसके निश्चित तरीके ने लोगो मे

उसके वास्तविक चरित्र के प्रति वशीकरण कर दिया। यही कारण था कि उसे अधिक सफलता मिल सकी। कार्य करने मे वह सुस्त था। उसने स्वय माना था कि "स्वभावतः मै आवश्यकता से अधिक सुस्त हूँ।" वह उस समय भी एक शिकार का पीछा करने में व्यस्त था जब कि डच तोपें वन्दूके थेम्स मे गड़गड़ा रही थी। वह बहुत अधिक स्वार्थी था। उसके कोई सिद्धान्त न थे। यदि उसका स्वार्थ पूरा होता हो तो वह अपने धर्म, मित्रो अथवा मन्त्रियो की आहुति देने को तैयार था। इसके अतिरिक्त, निष्कासन मे उसका जीवन-चरित्र बड़ा पतित रहा था। जब वह इङ्गलैंड लौटा तो उसका कोर्ट भ्रष्टाचार के लिए प्रसिद्ध हो गया। स्त्रियाँ जैसे कि लेडी कैसिलमेन (Lady Castlemaine) तथा पोर्टमाउथ की डचेज (Duchess of Portmouth) बहुत बड़ा प्रभाव रखती थी। वह हृदय से कैथोलिक था। परन्तु वह इतना बुद्धिमान था कि लोगो को उसने पता न चलने दिया।

उसकी प्रकृति, कला तथा विज्ञान मे विशेष रुचि थी। द रॉयल सोसायटी ऑफ साइन्स (The Royal Society of Science) उसके राज्यकाल में ही स्थापित हुई। वह बड़ा विनोदप्रिय था। उसमें हाजिर जवाबी की प्रतिभा थी। वह जेम्स द्वितीय से अधिक योग्य था। कहा जाता था कि "किंग यदि चाहता तो वस्तुएं देख सकता था; तथा ड्यूक (अर्थात जेम्स) यदि समर्थ होता तो वस्तुएँ देखता।" "The King could see things if he would; The Duke (i. e. James) would see things if he could."

संक्षेप मे, वह एक बुरा व्यक्ति होने के साथ ही एक बुरा पति था। अपने व्यक्तिगत जीवन मे वह चरित्रभ्रष्ट था। उसका दरबार (Court) दुश्चरित्र औरतो से भरा हुआ था। वह गुप्त रूप से रोमनकैथोलिक धर्म का अनुकरण करता था। वह किंग के ईश्वरीय अधिकारो का विश्वास करता था। अपने पिता तथा दादा की भांति वह पार्लियामेन्ट को नष्ट करना चाहता था तथा राजसी क्रूरता स्थापित करना चाहता था। इससे भी अधिक खतरनाक बात यह थी कि वह इङ्गलैंड मे कैथोलिसिज्म को वापिस लाना चाहता था। वह ऐसा फ्रेन्च किंग की सहायता से करना चाहता था। उसके सारे शासनकाल

मे मात्र उद्देश्य निरंकुशता तथा कैथोलिसिज्म को स्थापित करना था। प्रथम मे उसे कुछ सफलता मिली। परन्तु द्वितीय उद्देश्य मे वह असफल रहा।

१८—जेम्स द्वितीय

प्रश्न ५९—"जेम्स द्वितीय अपने स्वयं के दुर्भाग्य के लिए उत्तरदायी था," क्या तुम इस कथन से सहमत हो ?

उत्तर – जेम्स द्वितीय का राज्याभिषेक—

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात्, उसका भाई जेम्स द्वितीय राजा घोषित हुआ। अपने प्रथम भाषण मे उसने घोषित किया कि धर्म तथा राज्य (Church and State) दोनो मे वह गवर्नमेन्ट को चालू रखेगा। जेम्स अपने भाई से बिल्कुल भिन्न व्यक्ति था। वह बहुत ही सकुचित भावना का व्यक्ति था। उसमे भी राष्ट्र की इच्छाओ को समझने की योग्यता की उतनी ही कमी थी जितनी उसके पिता ने प्रदर्शित की थी।

यदि वह सहन शक्ति प्राप्त करने से ही संतुष्ट हो गया होता तो संभवतः वह सफल हो गया होता। उसके रोमन कैथोलिक्स के लिए शक्ति अर्जित करने को लक्ष्य बनाया और असफल हुआ। उसने उसी वर्ग को तग किया जिसको कि चार्ल्स ने तंग किया था—कैवेलियर्स तथा चर्चमैनो को—जिनके पूर्वजो ने उसके उस पिता के लिए कष्ट उठाए थे और अपने जीवन दिए थे जिसको कि टैस्ट एक्ट (Test Act) उतना प्यारा था जितना कि ग्रेट चार्टर (Great Charter) उसकी ख्याति उसके विरुद्ध थी। साहसी एवं कुशल नाविक के रूप मे, उसने स्काटलैंड मे बोथवैल ब्रिग (Bothwell Brig) के बाद दुख देने वाले के रूप मे उसे बड़ी बदनामी मिली। उस टाइटस ओट्स (Titus Oates) के विरुद्ध वह बहुत ही क्रूर था जो लगभग मृत्यु के समीप था और वास्तव मे चाहता था। इस पहले वर्ष मे किग के रूप मे, सेजमूर (Sedgemoor) के बाद मामथ (Monmouth) के अनुयायियो के विरुद्ध निर्दयता मे वह हर्षित हुआ।

परन्तु जेम्स के विरुद्ध जो सब से ज्यादा कहा जाता है वह लुइस चौदहवें

(Louis XIV) की आक्रामिक नीति तथा नान्टेस के एडिक्ट का खन्डन (Revocation of the Edict of Nantes) था। जेम्स, लुइस का मित्र न था परन्तु किसी भी क्षण वह उसका मित्र हो सकता था। जेम्स ने इङ्गलैंड मे नही सताया। परन्तु यह सोचा जाता था कि किसी भी क्षण वह सताना प्रारम्भ कर सकता था, इतना जितना कि लुईस ने फ्रान्स मे किया।

इंगलिश भूमि का अंतिम युद्ध—

जेम्स की एक स्वामिभक्त पार्लियामेन्ट थी जिसने उसके लिए लगभग १½ लाख की सालाना आय का मत दिया। उसने इसे इसलिए भंग कर दिया क्योकि वह टेस्ट एक्ट (Test Act) को तोड़ना चाहता था। स्काटलैंड मे आर्गिल (Argyll) के अर्ल ने विद्रोह किया परन्तु उसे शीघ्र ही कुचल दिया गया। मामथ (Monmouth), सिंहासन प्राप्त न कर पाने से निराश, डौरसैट (Dorset) मे लाइम रैजिस (Lyme Regis) पर, राष्ट्र की प्रोटैस्टेन्ट भावनाओ से प्रार्थना करने उतरा। निवासियो का समूह तथा माइनर्स उसके पास चले, टान्टन (Taunton) तथा ब्रिगवाटर (Bridgwater) के कस्बो के निवासी भी, जो कि सिविल वार की भाँति ही पुरिटन्स (Puritans) के शक्तिशाली केन्द्र थे परन्तु सभ्य व्यक्ति कम थे। आन्दोलन वड़ी दुर्वलता से संचालित हुआ। घोडो की टुकड़ी के साथ चर्चिल आया तथा राज-द्रोहियो को धकेल दिया जवकि तैयार सेना की थोड़ी-सी रेजीमेन्टें तैयार हो रही थी। तव फीवरशैम (Feversham) ने नेतृत्व लिया। परन्तु वह इतना ढीला और अकुशल था कि मामथ (Monmouth) तक ने साहस कर लिया कि सैजमूर (Sedge-moor) पर कैम्प को आश्चर्यचकित करने का प्रयत्न किया। अधूरे हथियार वाले तथा पूर्णतः अप्रशिक्षित देहातियो परन्तु उत्साही गँवारो की केवल एक रात की यात्रा सफल हो गई होती। यदि एक वडी खन्दक ने उनका रास्ता न रोक लिया होता। इसके पीछे चर्चिल ने रैंगुलर्स को उनकी नीद से जगाया और तड़के ही विद्रोहियो को यात्रा के मार्ग पर कर दिया। मामथ (Mon-mouth) जिस समय खन्दक मे छिपा हुआ था, पकड़ लिया गया और यद्यपि उसने दया के लिए प्रार्थना की परन्तु उसे मार डाला गया। जज

जैफरीज (Judge Jeffreys) ने उस समय वडी वदनामी पाई जब वह खूनी एसाइज (Bloody Assize) लेने आया। उसने सैंकड़ों विद्रोहियो तथा उनसे सहानुभूति रखने वालो को जिसमे औरतें और लड़कियाँ भी थी उपनिवेशो में गुलामी के लिए भेज दिया।

रोमन कैथोलिक्स को दी गईं पदोन्नतियां (Commission)—

अब तक जेम्स सुरक्षित था परन्तु एक नई जागृति हो सकती थी तथा विदेशी प्रशिक्षित सैनिक बुलाए जा सकते थे। अतः यह बुद्धिमता थी कि तत्कालीन सेना को कुछ दर्जन नई रेजीमेन्टो द्वारा वढ़ा लिया जाय। अतः उसने स्वामिभक्त अफसरो को अर्थात् रोमन कैथोलिक्स को अपनाने को सोचा। टैस्ट एक्ट (Test Act) मार्ग मे वाधा था। रॉयल प्रैरोगेटिव के अधिकार से उसने अपनी डिस्पेन्सिग शक्ति (Dispensing power) को प्रयोग करने के अधिकार का दावा किया। थोडे से व्यक्तियो ने कभी राजा के, अधिकार से वाहर जाने को, विशेप मामलो मे चुनौती (.Challange) दी। परन्तु जेम्स ने कैथोलिक्स को इतने अधिक कमीशन दिए कि, टैस्ट एक्ट मृत और प्रभावहीन हो गया। एक कलनल पर जजो की फुल वेन्च के समक्ष मुकदमा चला। इस तारीख को, जैसा कि हैम्पडन के 'शिप-मनी' के मामले मे, किंग जजो को वर्खास्त कर सकता था अथवा वर्खास्त करने की धौंस दे सकता था। उन्होने निर्णय किया कि उसे अपनी सारी प्रजा, कैथौलिक्स तक, की सेवा का सम्पूर्ण अधिकार था। कोई भी कानून उसे ऐसी सेवा से वचित न कर सकता था। इस निर्णय का कवच धारण कर उसने और अनेकों कैथौलिक्स को कमीशन (पदोन्नत्ति) दी। इस प्रकार वढी हुई सेना, लन्दन के पश्चिम मे हौन्स्लोव (Hounslow) मे ठहराई गई।

धर्म (Church) पर प्रहार—

रोमन कैथोलिक्स के लिए और सुविधाएँ प्राप्त कराने के लिए जेम्स ने हस्तक्षेप की घोपणा (Declaration of Indulgence) जारी की। वह उन लोगों को जो टैस्ट एक्ट तथा अन्य एक्टो का उल्लंघन करेंगे, कानून के दण्ड से मुक्त अथवा युक्त करेगा। निसन्देह, वह नान-कनफर्मिस्टों (Non-Con formists) की भी सद्भावना प्राप्त करने की आशा करता था। परन्तु जैसा

कि उसके भाई के शासन काल मे हुआ, वे उस कृपा को स्वीकार करने के विचार से घृणा करते थे जो कि रोमन कैथोलिक्स के लिए विचारी गई हो। उसने केवल क्वेकर्स (Quakers) पर विजय प्राप्त की। बाद मे उसने रोमन कैथोलिक्स के लिए आक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज की यूनीवर्सिटिया खोलना चाही। विशेषतः उसने, मैगडेलेन कालेज (Magdalen College) आक्सफ़ोर्ड में एक रोमन कैथोलिक प्रेसीडेन्ट को थोप दिया। उसने फैलोज (Fellows) को निकाल दिया और उनकी जगह रोमन कैथोलिक्स को भर लिया। अन्ततः उसने केन्टरबरी के आर्चविशप (Archbishop of Canterbury) तथा छः विशपो, जिन्होने अपने पादरियो से चर्च मे घोषणा पढ़ने की आज्ञा देने से मना कर दिया था, पर मुकद्दमा चलाया। निसन्देह, उसने केवल इन कार्यो के कारण ही सिहासन से हाथ नही धोया बल्कि उसने सारे चर्च-मैनो को सामूहिक रूप से परेशान किया। ऐसा करके उसने उनके उस विश्वास और श्रद्धा को हिला दिया जो कि वे किंग के ईश्वरीय अधिकारो के प्रति रखते थे। जब चार्ल्स प्रथम, किंग था तब अवरोधहीनता सब प्रकार से उचित थी, ऐसा वे सोचते थे। परन्तु क्यो जेम्स के लिए अवरोध इतना बुरा था ? उस समय एक बार फिर असतोष, पराकाष्ठा पर पहुँच गया जब कि सात विशपो का मुक्द्दमा (Trial of the Seven Bishops) आरम्भ हुआ। उनके मुक्त हो जाने पर लन्दन शहर खुशी से पागल हो उठा ; यहा तक कि हॉन्सलो हीथ (Hounslow Heath) के सैनिको तक ने खूब खुशिया मनाई।

विलियम को निमन्त्रण भेजा गया—

लोगो ने यह सब बरदाश्त कर लिया होता, और संभवतः इमसे भी अधिक, यदि जेम्स तथा मोडेना की मैरी (Mary of Modena) के पुत्र उत्पन्न न हुआ होता। यह अन्तिम तिनका था, क्योकि निसन्देह, शिशु का अपने पिता के धर्म मे ही लालन-पालन होता। अब केवल एक व्यक्ति था जिससे प्रार्थना की जा सकती थी। ऑरेंज (Orange) का विलियम तृतीय जेम्स की प्रोटैस्टेन्ट पुत्री मैरी का पति, पहले से ही तैयारी कर रहा था और फ्रेन्च के

विरुद्ध गठबन्धन कर रहा था। इंगलैन्ड तथा हॉलैन्ड के बीच की ईर्ष्या भुला दी गई। उसके पास एक निमन्त्रण भेजा गया।

५ नवम्बर १६८८ को टौर बे (Tor Bay) मे ब्रिक्सहैम (Brixham) पर विलियम उतरा। जेम्स की सेना सैलिसबरी पहुंच गई। तब कुछ अफसर विलियम के पास गए। उनमे ही जोहन चर्चिल (John Churchill) तथा ऐनी का पति, डैनमार्क का जार्ज (George of Denmark) था। बिना योजना के वे पीछे गिर गए। जेम्स भागा, पकड़ा गया और वापिस लाया गया। सौभाग्य से वह पुनः भागा और फ्रान्स को बच निकला। यदि सिविल वार को टालना था तो यही समय था कि वह तुरन्त चला जाय। इससे एक राष्ट्रीय विपत्ति आएगी यदि वह शहीद का दिखावा करने के लिए रुका और अपनी परदादी की भाति एलिजाबेथ द्वारा अथवा अपने पिता की भाति क्रॉमवैल एवं सेना द्वारा कैद कर लिया गया। उसको अपना अवसर मिला परन्तु उसने इसका दुरुपयोग किया। मामथ के अनुयायियो के प्रति बदला लेने की भावना का व्यवहार करके उसने अपना चरित्र दिखा दिया था। उसने 'टैस्ट एक्ट' का इतना उल्लंघन किया था कि कानून ही मृतप्रायः हो गया था। परन्तु वह समय रहते ही इंगलेन्ड को सिविल वार के खतरो से बचाने के लिए चला गया।

सारांश इस प्रकार रखा जा सकता है। जेम्स ने एक बुरे कानून को समाप्त करने की उत्सुकता मे वस्तुतः सारे कानून ही समाप्त कर दिए। अतः उसने अपना सिंहासन खो दिया। वस्तुतः अपने स्वय के दुर्भाग्य के लिए वह स्वयं ही उत्तरदायी था।

प्रश्न ६०—स्पष्टतः समझाइए कि अधिकारों की घोषणा (Declaration of Rights) किस प्रकार जेम्स द्वितीय के दावों तथा कार्यो की पूर्ण अस्वीकृति थी।

उत्तर—अधिकारो की घोषणा, वास्तव मे, जेम्स द्वितीय के दावो तथा कार्यो की पूर्ण अस्वीकृति थी। यह उस से बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। जब हम घोषणा मे दिए हुए वाक्याशो (Clauses) का अध्ययन करते हैं।

विलियम तथा मैरी, राजा तथा रानी हो जाते है—

जनवरी १६८६ मे, कन्वेन्शन मिला। कुछ सदस्य इस पक्ष मे थे कि जेम्स अब भी नाम मे किंग रहे और विलियम को शासक (Regent) की भाति रखे। दूसरे लोग सोचते थे कि अपने पिता की उड़ान के तथ्य से मैरी क्विन थी। परन्तु इन योजनाओं मे से कोई भी विलियम को स्वीकार्य न थी। मैरी अधिकतर पीछे हट जाती। अतः ऐसा निश्चय किया गया कि विलियम तथा मेरी पर राज-मुकुट रखा जाय तथा अधिकारों का एक घोषणा पत्र तैयार किया जाय जो उन सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्तो की पुष्टि करे जिन पर कि देश का विधान आश्रित था। विलियम तथा मैरी तब किंग और क्विन हो गए।

अधिकारों का घोषणा-पत्र—

अधिकारो के घोषणा पत्र, जिसने बाद मे 'अधिकारो के बिल' (Bill of Rights) की आधार रचना की, इंगलिश इतिहास मे सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेजो मे से एक है। इसने किंग तथा पार्लियामेन्ट के बीच के महान संघर्ष की समाप्ति कर दी। संघर्ष चलते हुए लगभग एक सौ वर्ष हो चुकी थी। घोषणा मे अनेक विवादास्पद विषयो पर नियम दिए गए थे। इस काल मे वे सब पार्लियामेन्ट की ओर से अस्वीकृत (Protest) मामले रहे थे। जेम्स द्वितीय के अवैधानिक कार्यो को एक एक कर लेने के बाद, यह निम्नलिखित घोषणा की ओर अग्रसर हुई :—

(१) कानून से मुक्त करने अथवा शामिल करने की दिखावटी शक्ति जो कि बाद मे मानी गई, अवैधानिक (Illegal) है।

(२) एक्लेसिएस्टिकल (Ecclesiastical Commisson) के बाद के कोर्ट तथा और ऐसे ही कोर्ट अवैधानिक है।

(३) राजा के विशेषाधिकार के बहाने, बिना पार्लियामेन्ट के अनुदान के रुपयो का कर लगाना गैरकानूनी है।

(४) शान्ति काल मे स्टैन्डिग सेना का जब तक कि पार्लियामेन्ट की सहमति न हो, गैर कानूनी है।

(५) प्रजा को किंग की आलोचना एवं उससे न्याय पाने का अधिकार है।

(६) पार्लियामेन्ट के सदस्यो का निर्वाचन स्वतन्त्र हो।

(७) पार्लियामेन्ट मे वादविवाद तथा भाषण स्वतन्त्रता पर किसी भी न्यायालय अथवा पार्लियामेन्ट के बाहर के स्थान पर प्रश्न न किए जांय।

(८) अत्यधिक बड़े जुरमाने न किए जाय तथा उच्चकोटि की देशद्रोहिता के मामलो मे जूरी स्वतन्त्र हो।

(९) तमाम शिकायतो, कठिनाइयो एवं आपत्तियो का हल प्राप्त करने के लिए तथा कानून को सशक्त बनाने के लिए पार्लियामेन्ट की मीटिंगे अक्सर बुलाई जावे।

(१०) विलियम तथा मैरी को इंगलेंन्ड का किंग एवं क्विन घोषित किया जाता है। वे सब जो पापिस्ट (Papists) हैं अथवा जो पापिस्ट से शादी करेंगे उन्हे राजमुकट प्राप्त करने के लिए अयोग्य घोषित किया जाता है। विलियम तथा मैरी दोनों की मृत्यु के पश्चात, राजमुकट, यदि उनके कोई बच्चा हो तो उसको मिलेगा और यदि कोई बच्चा न होगा तो राजकुमारी ऐनी (Princess Anne) तथा उसके बच्चो को मिलेगा। उनकी असफलता की दशा मे, विलियम के किसी अन्य स्त्री से उत्पन्न बच्चों को।

१९—शानदार अथवा रक्तहीन क्रान्ति

प्रश्न ६१—सन् १६८८ की क्रान्ति का क्या आधार था ? इसके क्या परिणाम हुए ?

अथवा

प्रश्न ६२—यह कहना कहां तक सत्य है कि सन् १६८८ की अंग्रेज क्रान्ति ने लम्बी पार्लियामेन्ट के कार्य को पूरा कर दिया ?

अथवा

प्रश्न ६३—सन् १६८८ की रक्तहीन क्रान्ति का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर—चार्ल्स द्वितीय का चरित्र—

जेम्स द्वितीय एक हठधर्मी था। वह ऐसा व्यक्ति था जो प्रत्येक बात में सिरो पर था। रोमन कैथोलिक धर्म का पक्का अनुयायी था। निरंकुश राजतन्त्र मे उसका अटूट विश्वास था। उसके विचार चार्ल्स की भांति ही थे।

परन्तु उसमे चार्ल्स की नीति और कुशलता ने थी। यह कारण था कि जब कि चार्ल्स सफल हुआ। चार साल से भी पहले उसे अलग होना पडा। इस पृष्ठभूमि के साथ हमारे लिए शानदार रक्तहीन क्रान्ति के कारणो का समझना आसान होगा।

शानदार क्रान्ति के कारण—

इस यशस्वी क्रान्ति के अनेक कारण थे। परन्तु वास्तविक कारण उसका रोमन कैथोलिसिज्म का पुनः स्थापित करना तथा निरकुशता से शासन करना था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह उसकी कमी करने अथवा जोड़ने की शक्ति (Dispensing and suspending power) पर निर्भर था तथा एक सशक्त सेना पर जो कि लोगो को डरा सके। हम अब कारणो का विस्तार मे अध्ययन करेगे।

(१) **रोमन कैथोलिज्म को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न**—सबसे पहले जेम्स ने सुरक्षित (Standing) सेना की सख्या तीस हजार सिपाहियो तक बढा दी। सेना पहले से ही बदनाम थी। इसकी शक्ति की वृद्धि ने इसे और भी बदनाम कर दिया ; जेम्स इसके परिणामो से न बच सका। उसने सेना के अफसरों पर रोमन कैथोलिक्स के नियन्त्रण की नीति आरम्भ कर दी। उसने ऐसा 'डिस्पेन्सिग' अधिकार का प्रयोग करके किया। इस शक्ति के द्वारा उसने विशेप व्यक्तियो के मामले मे रोमन कैथोलिक्स के विरुद्ध पास किया कानून समाप्त कर दिया।

उसके मंत्रीगण अब तक सामान्य व्यक्ति तथा हैलीफाक्स (Halifax) एवं रोचेस्टर (Rochester) जैसे उच्च धर्म शास्त्री (High churchmen) थे; जेम्स ने उन्हे बदल दिया। उनके स्थान पर उसने रोमन कैथोलिज्म के नए धर्म परिवर्तितो जैसे कि सन्डरलैन्ड (Sunder land) को नियुक्त किया। उसने टिरियोनैल (Tyreonnel) को नियुक्त किया जो कि हठधर्मी रोमन कैथोलिक, आयरलैन्ड का वायसराय था।

जेम्स आक्सफोर्ड की यूनीवर्सिटी को रोमन कैथोलिसिज्म मे परिवर्तित करना चाहता था। एक रोमन कैथोलिक को क्राइस्ट चर्च कालिज का डीन नियुक्त करके उसका ऐसा करने का इरादा था। उसका दूसरा इरादा

मैग्डल्यू कॉलेज (Magdaleu College) मे प्रौटैस्टैन्ट फैलोज (Protestant Fellows) के स्थान पर कैथोलिक फैलोज को नियुक्त करना था। इस प्रकार उसने यूनीवर्सिटी को रुष्ट कर दिया जिसने कि सदैव स्टुग्रर्टस को समर्थन दिया था।

जेम्स ने हाई कमीशन का कोर्ट पुनः स्थापित किया। उसने इन्डल्जेन्स की घोषणा (Declaration of Indulgence) जारी किया। इसके द्वारा उसने रोमन कैथोलिक्स तथा डिसेन्टर्स के विरुद्ध दण्ड विधान के नियमो को समाप्त कर दिया।

अन्ततः उसने प्रथम पार्लियामेन्ट को विना तोडे हुए स्थगित कर दिया और सन् १६८७ मे उसे समाप्त कर दिया। उसने तव लार्ड लैफ्टीनेन्ट से उसे रोमन कैथोलिक्स तथा नानकनफर्मिस्ट की सूची देने को कहा। ऐसे सदस्यो के साथ वह नई पार्लियामेन्ट को भरना चाहता था। वहुत से लॉर्ड लैफ्टीनेन्टो ने जेम्स के इस कार्य के प्रति विरोध प्रगट किया। उन्होने त्याग पत्र दे दिया।

जेम्स के इन कार्यो ने न केवल उन वर्गो को ही पराधीन न कर दिया जो कि उसके लिए लडे थे। दूसरे वर्ग थे ग्रामीण तथा धर्म शास्त्रियो के।

(२) सात विशपों का मुकद्दमा—

विकट सकट सन् १६८८ की प्रारम्भिक ग्रीष्म ऋतु मे आया। मई के महीने मे राजा ने हस्तक्षेप की दूसरी घोषणा प्रसारित की। उसने इसे गिर्जाघरो मे पढ़े जाने की आज्ञा की। पादरियो ने इसका पालन करने से मना कर दिया। कैन्टरवरी के आर्कविशप तथा छः अन्य विशपो ने राज को एक लिखित प्रतिवेदन (Protest) दिया। जेम्स ने उन पर 'निन्दा पत्र' के अभियोग मे मुकद्दमा चलाने का निश्चय किया। उन्हे गिरफ्तार किया गया तथा न्यायालय के समक्ष लाया गया। किसी भी जूरी ने उन पर अभियोग न माना। अतः वे मुक्त कर दिए गए। उनकी मुक्ति से लन्दन के निवासी वहुत प्रसन्न हुए। लन्दन मे वडी खुशी, हर्ष और आनन्द का दृश्य सर्वत्र छा गया।

(३) जेम्स के एक पुत्र का जन्म—

क्रान्ति का तत्कालीन प्रमुख कारण, जेम्स की दूसरी पत्नी मैरी ऑफ मौडेना (Mory of Modena) से पुत्र का जन्म होना था। अब तक तो लोग जेम्स की यातनाओं और क्रूरताओ को एक आशा से सहन करते आए थे कि जेम्स का उत्तराधिकार उसकी प्रौटेस्टेन्ट पुत्री मैरी (Mary) तथा उसके पति औरेन्ज के विलियम (William of Orange) द्वारा प्राप्त किया जायगा। परन्तु अब जेम्स के उत्तराधिकारी का जन्म हो चुका था। लोग सोचते थे कि उसके पुत्र का लालन पालन एक रौमन कैथोलिक की भाति होगा। इस प्रकार इङ्गलैन्ड पर कैथोलिक सम्राटों का निरंकुश शासन चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त सामान्यतः यह विश्वास किया जाता था कि नव-जात शिशु जेम्स तथा उसकी पत्नी से उत्पन्न शिशु न था। उसका लालन पालन एक-सहृदय पलने में महल के अन्दर हुआ था।

विलियम को निमन्त्रण—

सभी वर्गो के लोगो मे असन्तोष बहुत अधिक था। वे जेम्स तथा रोमन कैथोलिक राजाओ से मुक्त होना चाहते थे। अतः ३० जून १६८८ की शाम को सात प्रमुख व्यक्तियो ने ओरैन्ज के विलयम को एक पत्र लिखा। उन्होने उसे इस बात के लिए आमन्त्रित किया कि वह इङ्गलैन्ड को एक सेना ले कर आए और वहा के लोगो को उनकी स्वतन्त्रता दिलाए।

एक सेना के साथ विलियम इंगलैन्ड आया। वह बिना किसी विरोध के लन्दन पहुँचा। जेम्स से उसकी सेना ने ही धोका किया। उसे गिरफ्तार कर लिया गया और रौचैस्टर भेज दिया गया। वहा उस पर बहुत ही लापरवाही की देख रेख तैनात की गई। जेम्स बच कर फ्रान्स भाग गया। पार्लियामेन्ट की बैठक हुई। उसने कहा कि चूंकि जेम्स इंगलैन्ड से भाग गया था अतः वह अपराधस्वरूप पद त्याग चुका था। उसने तब, राजमुकुट, विलियम तथा मैरी को प्रस्तुत किया। वहां अब तक कभी भी ऐसी द्रुत तथा रक्तहीन क्रान्ति न हुई थी।

महान शानदार क्रान्ति की विशेषताएँ—

विद्रोह की शान, शस्त्रो के कौशल में न थी। यह इस सत्य में भी निहित

न थी कि सम्पूर्ण अंग्रेज राष्ट्र, मूर्ख राजा से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। वास्तव मे यह बडी ही शर्म की बात थी कि अग्रेज लोगो ने अपनी स्वतन्त्रता विदेशी सेना की सहायता से प्राप्त की। क्रान्ति की शान तो कही अन्यत्र ही निहित थी। अतः इसे शानदार क्रान्ति अथवा ग्लोरियस रिवोल्यूशन कहा गया।

क्रान्ति की शान इस सत्य मे निहित थी कि यह रक्तहीन थी। इसमे रक्त की एक भी बूँद नही बही और न कोई हत्या ही की गई। कोई गृह-युद्ध (Civil-war) भी नहीं हुआ। इसका परिणाम राजनैतिक तथा धार्मिक मतभेदों का शन्तिपूर्ण निबटारा हुआ। राजा तथा पार्लियामेन्ट के बीच इतने लम्बे अरसे से चले आ रहे वैमनस्य का अन्त हो गया। दोनो मे एक सहयोग आरम्भ हुआ। राजा की अपेक्षा पार्लियामेन्ट अधिक शक्तिशाली हो गई। संवैधानिक समस्या हल हो गई। इसने इंगलैन्ड को अपने साम्राज्य का निर्माण करने के लिए समर्थ कर दिया। इसने उसे महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय स्थान प्राप्त करने मे सहायता दी। अन्ततः कोई विषय परिवर्तन नही किए गए। केवल परम्परागत संवैधानिक सिद्धान्तो की पुनः पुष्टि की गई। यह उन्ही के लिए था कि पार्लियामेन्ट ने इतने समय तक संघर्ष किया। इस प्रकार यह उचित ही कहा गया है कि इस क्रान्ति ने लम्बी संसद (Long Parliament) का कार्य पूरा कर दिया।

वार्नर, मार्टन म्युर (Warner, Marten and Muir) के शब्दों मे कहा गया है : "विलियम तृतीय तथा मैरी का राज सिंहासन पर बैठना उस विशिष्टता को अंकित करता है जो" शान्ति पूर्ण क्रान्ति के नाम से जानी जाती है क्योंकि इसने वास्तव मे ही उस प्रश्न का निबटारा किया जिसने सारे देश को उस सारे समय चिन्तित कर रखा था जब कि स्टुअर्ट इङ्गलैंड की गद्दी पर थे। पार्लियामेन्ट ने अन्ततः सम्राट के संघर्ष को जीत लिया।

क्रान्ति का प्रभाव अथवा परिणाम—

हम अब क्रान्ति के प्रभावो तथा परिणामो पर विचार करेंगे। वे निम्न-लिखित थे :—

(१) पार्लियामेन्ट तथा धन का नियन्त्रण—क्रान्ति का महान परिणाम यह था कि राजा की वृत्ति (Revenue) पार्लियामेन्ट से वार्षिक अनुदानो

के रूप मे प्रात किया जाने लगा। इसका अर्थ यह था कि पार्लियाभेन्ट को प्रतिवर्ष बैठक करनी पडी। इसके परिणाम स्वरूप, पार्लियामेन्ट ने धन पर पूर्ण नियन्त्रण प्रात कर लिया। इससे, पार्लियामेन्ट ने प्रशासन पर अधिक नियन्त्रण प्रात कर लिया। फिर, हाउस ऑफ कामन्स की शक्ति हाउस ऑफ लार्डस की अपेक्षा अधिक हो गई।

(२) अधिकारों का बिल (The Bill of Rights)—इस क्रान्ति के परिणाम स्वरूप 'अधिकारो का विल' (Bill of Rights) (1689) पारित हो गया। इसने राजा की शक्तियो को सीमित कर दिया। अधिकारो के विल की घोपणा (The Declaration of Bill of Rights) ने उस कार्य को पूरा कर दिया जोकि मैग्ना कार्टा (Magna Carta) ने आरम्भ किया था। इसके अनुच्छेद (Clauses) थे :—

(१) विलियम तथा मैरी, राजा तथा रानी घोपित किए गए। कोई भी व्यक्ति जो कि रौमन कैथोलिक था अथवा जो रौमन कैथीलिक से शादी करता था वह इङ्गलैड का सम्राट न हो सकता था (२) विघटन की शक्ति (The dispensing power), सम्राट की समात कर दी गई। (३) सम्राट कानूनो को स्थगित न कर सकता था (४) हाई कमीशन के न्यायालय तथा इसी प्रकार के न्यायाल्य समात कर दिए गए। (५) पार्लियामेन्ट का स्वतन्त्ररूप से चुनाव होना था। उसे अवसर बैठकें करनी थी। उसे भाषण की स्वतन्त्रता रखनी थी इसकी सम्मति के विना कोई कर न लगाए जा सकते थे। (६) स्टैन्डिग सेना (Army) को गैर कानूनी घोपित कर दिया गया।

(३) निबटारे का कानून (The Act of Settlement)—निवटारे का कानून (१७०१) The Act of Settlement भी क्रान्ति के परिणाम स्वरूप पारित कर दिया गया। इसने उत्तराधिकार के प्रश्न का निवटारा कर दिया। विलियम तथा मैरी के कोई सन्तान न थी। राजकुमारी ऐनी (Princess Anne) के सारे बच्चे मर चुके थे। अतः राजमुकुट, राजकुमारी सोफिया (Princess Sophia) के लिए निश्चित हुआ। वह जेम्स प्रथम की पौत्री (Grand-daughter) थी। कानून मे कुछ और भी अनुच्छेद थे। प्रथम, सम्राट बिना पार्लियामेन्ट की सहमति के इंगलैन्ड न

छोड़ सकता था। दूसरे, न्यायाधीशो को केवल तभी बर्खास्त किया जा सकता था जब कि उन पर कानूनी न्यायालयो (Law courts) में अभियोग सिद्ध हो अथवा पार्लियामेन्ट के दोनो सदनो मे विचार हो जावे। इस प्रकार न्यायाधीशों (Judges) को बर्खास्त करने का अधिकार, राजा का समाप्त हो गया। तीसरे, राजा उस व्यक्ति को क्षमा अथवा मुक्त न कर सकता था जिस पर हाउस ऑफ कामन्स ने अभियोग लगाया हो।

(४) मुद्रणालयों की स्वतन्त्रता (Liberty of the Press)—अब तक सारे प्रकाशन, लाइसेन्सिग एक्ट के अन्तर्गत सैन्सर (Censor) किए जाते थे। सन् १६९५ मे हाउस ऑफ कामन्स ने एक्ट मे परिवर्तन करने का निश्चय किया। इस प्रकार मुद्रणालयो की स्वतन्त्रता सुरक्षित हो गई।

(५) सहनशीलता का कानून—(The Toleration Act)—सहनशीलता के कानून द्वारा (१६८९), धार्मिक प्रतिबन्ध कम कठोर कर दिए गए। वस्तुतः सभी लोगों को, सिवाय रोमन कैथोलिक्स एवं यूनिटैरियन्स (Unitarians) को छोड़कर आराधना करने की स्वतन्त्रता स्वीकार की गई।

उपसंहार—

साराश मे हम वार्नर, मार्टन तथा म्यूर (Warner, Marten and Muir) के शब्दो मे कह सकते है कि "यद्यपि सम्राट अब भी मन्त्रियो को चुनता रहा तथा विलियम के शासन काल मे सभी अवसरो पर, देश की आन्तरिक एव वैदेशिक नीति को नियन्त्रित करने के लिए, फिर भी क्रान्ति ने व्यक्तिगत इगलिशमैन के लिए उसकी राजनैतिक स्वतन्त्रता उपलब्ध कराई तथा पार्लियामेन्ट के लिए, जो उसका प्रतिनिधित्व करती थी। कर (Tax) का पूर्ण नियन्त्रण दिलाया तथा विधान (Legislation) का राजा का प्रमुख मत (King's Veto) प्रदान कराया।

प्रश्न ६४—इंगलिश इतिहास में विलियम तृतीय का शासन काल क्यों महत्वपूर्ण है ?

उत्तर—इंगलिश इतिहास मे विलियम तृतीय का शासन काल अनेक कारणो से बहुत महत्वपूर्ण है। सर्व प्रथम, विलियम के आगमन का अर्थ पार्लियामेन्ट की सर्वोच्च सत्ता था। निस्सन्देह, प्रेरोगेटिव (Prerogative)

समाप्त नहीं हुआ ; विलियम ने अपने सारे विदेशी मामले स्वयं ही निवटाए। उसका प्रमुख मत (Veto) का अधिकार था और अनेकों वार उसने उसका उपयोग किया। अधिकारों की घोषणा (The Declaration of Rights) ने विघटन की शक्ति (Dispensing Power) की आलोचना 'जैसी कि आखिर मे प्रयुक्त हुई' (as used of late) की अर्थात् जैसी कि जेम्स द्वितीय ने निरर्थक प्रयुक्त की। परन्तु राजा के मन्त्रियो पर संसदीय नियन्त्रण (Parliamentary Board) की शासन काल की समाप्ति से पूर्व विजय हुई। दो वातों ने वार्षिक अधिवेशन का जन्म हुआ यद्यपि घोषणा में 'बहुधा, (Frequently) शब्द था, वार्षिक (Yearly) नहीं। प्रथम, म्यूटिनी विल (Mutiny Bill) वार्षिक पास होता था। यह केवल एक वर्ष तक चलता था। इस प्रकार राजा यदि सेना पर नियन्त्रण रखना चाहता था तो प्रतिवर्ष पार्लियामेन्ट की बैठक बुलाने को विवश था। दूसरे, कामन्स ने एक वार्षिक वजट की व्यवस्था की। जबकि मन्त्रियों को केवल एक वर्ष के धन उपलब्ध होता था तो उन्हें प्रतिवर्ष कामन्स की मीटिंग बुलानी आवश्यक थी ही।

सर्व प्रथम विलियम ने, अपनी इच्छानुसार, ह्विग्स (Whigs) तथा टौरीज (Tories) मे से अपने मंत्री चुने। परन्तु शीघ्र ही उसने देखा कि अपने विचारों मे वे एक दूसरे के बहुत ही विरोधी थे। अतः उसे अपने मंत्री केवल एक दल से, अर्थात उस दल से जिसके मत कि कामन्स मे अधिक थे, चुनने पडे। इंगलैन्ड की दलीय सरकार की आधुनिक पद्धति के प्रारम्भिक वीज यही पडे। ह्विग्स (Whigs) का मत था कि पार्लियामेन्ट, सम्राट से उच्च सत्ता थी। वे नान-कन्फर्मिस्ट्स (Nonconfirmists) के लिए सहनशीलता का पक्ष लेते थे। उन्हे व्यापारिक एवं धनी वर्गों का समर्थन प्राप्त था। अतः वे विशेषतः शहरों मे विशेषतः शक्तिशाली थे। वे फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध के समर्थक थे—स्टुअर्टस को वाहर रखने के लिए तथा इंगलैन्ड के प्रगतिशील व्यापार के प्रस्तावित लाभ के लिए। टौरीज अव भी इस वात मे विश्वास रखने का दिखावा करते थे कि सम्राट को, पार्लियामेन्ट की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होना चाहिए। वे रोमन कैथोलिक्स तथा नानकन-

फर्मिस्ट दोनो के विरुद्ध सशक्त चर्चमैन थे। वे स्थानीय नागरिक सभ्य-जनों तथा किसानो का दल थे जो कि व्यापारियो तथा व्यवसाइयो के विरुद्ध थे। चाहे तो गुप्ततः अथवा स्पष्टतः, वे फ्रैन्च युद्ध से घृणा करते थे। निसन्देह ही प्रत्येक ह्विग (Whig) अथवा टौरी (Tory) के ये विचार न थे। डैन्वी (Danby) एक उत्सुक धर्म प्रवर्तक तथा टौरी (Tory) था, फिर भी युद्ध के पक्ष मे था। गौडोल्फिन एक चतुर धनी (Financier) था, फिर भी एक टौरी था। यद्यपि भूस्वामियो मे बड़ा अधिकांश टौरियों (Tories) का था, सबसे धनवान भूस्वामियो में से कुछ, जैसे कि बेडफोर्ड के ड्यूक तथा डेवन शायर ह्विग्स (Whigs) थे। हाउस ऑफ लार्ड्स मे उसकी स्थिति, तथा वह महान प्रभाव जो कि उनकी सम्पत्ति, उन्हे कामन्स के ऊपर प्रदान करती थी, ने पार्लियामेन्ट की सर्वोच्च सत्ता को बनाए रखने का मार्ग प्रशस्त किया।

धर्म में सहनशीलता अब निश्चिततः टौलरेशन एक्ट (Toleration Act) के द्वारा तय हो गई। इसका एकमात्र अर्थ यही था कि आराधना अन्ततः स्वतन्त्र थी तथा कन्वेंन्टीकल एक्ट (Conventical Act) रद्द कर दिया गया। टैस्ट तथा कारपोरेशन एक्ट अब भी कार्य मे थे। अनेक नानकन्फर्मिस्ट कठिनाई को सुगम करने के लिए, कभी कभी पुष्टि करते थे, अर्थात गिर्जे मे साल मे कुछ बार, सैकरामेन्ट (Sacrament) लेते थे। तब वे, भार ग्रहण करने लिए योग्यता प्राप्त करके वापिस अपने गिर्जाघरो को जाते थे। रोमन कैथोलिक्स अब भी किसी कार्यालय मे पद प्राप्त करने से वंचित थे।

परन्तु इन सबसे ऊपर विलियम के इङ्गलैंड आने का अर्थ फ्रान्स के साथ खुला युद्ध था। सन् १६८८ तथा १८१५ के बीच अंग्रेजो ने सात लम्बे युद्ध लड़े। इनमे से चार युद्धो में हालैन्ड, इङ्गलैन्ड का सशक्त मित्र राष्ट्र था। इसका पुरस्कार, यद्यपि मुश्किल से कोई इसका अनुमान लगा सकता था, ब्रिटिश साम्राज्य था। इन युद्धो मे से छः युद्धो मे ब्रिटिश के अनेक मित्र थे और आगे चलकर इसने फ्रान्स को समाप्तप्राय कर दिया। उसे सेना तथा समुद्री बेड़ा दोनो रखना कठिन लगा। इङ्गलैंड ने अपना सबसे अधिक ध्यान

अपने समुद्री वेड़े पर लगाया। फिर भी अपनी छोटी सी सेना को अपने मित्र-राष्ट्रो की सेनाओ के साथ जोड़कर, उसने फ्रान्स का ध्यान समुद्र से थल सेना की ओर आकर्षित किया। यही था जो कि लार्ड रौवर्ट का अर्थ था जब कि उन्होंने हाल ही में कहा था कि ब्रिटिश सेना ने इङ्गलैन्ड के लिए ब्रिटिश समुद्री शक्ति अर्जित की थी। लुइस चौदहवें तथा नैपोलियन ने समुद्र के लिए धन और सैनिक न जुटा सकने की दशा मे एक सा ही दुष्परिणाम उठाया था। अमेरिकन इन्डिपैन्डैन्स के एकमात्र युद्ध मे फ्रान्स के मित्र थे तथा ग्रेट ब्रिटेन अकेला रह गया था और उसने समुद्र का नियन्त्रण खो दिया था।

प्रश्न ६५—स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध के क्या कारण थे ?

उत्तर—स्पेनिश उत्तराधिकार की समस्या का आधार।

सोलहवी शताब्दी मे स्पेन एक महान देश था। सत्रहवी शताब्दी में उसका पतन शीघ्रता से शुरू हो गया।

चार्ल्स द्वितीय, हैप्सवर्ग परिवार का अन्तिम पुरुष प्रतिनिधि था। वह स्पेन का राजा था। वह शरीर तथा मस्तिष्क से दुर्बल था। अतः वह अपने देश के पतन को रोकने के लिए कुछ न कर सका। उसके कोई संतान न थी। प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि उसकी मृत्यु के पश्चात "वडी-वड़ी शक्तिया उसके राज्य पर इस प्रकार मंडरायेगी जिस प्रकार कि एक वैल की लाश पर भेड़ियो का झुन्ड टूटता है।" यहा तक कि उसकी मृत्यु से पहले ही महान शक्तियो द्वारा उसके राज्यो को नियन्त्रित करने की योजनाएं वनाई जा रही थी।

स्पेनिश उत्तराधिकार की समस्या में उलझनें—

स्पेन के राजमुकुट के उत्तराधिकार का प्रश्न वहुत ही उलझन का था। "यह, यूरोपियन अन्तराष्ट्रीय कानून तथा जनसाधारण एवं व्यक्तिगत प्रतिष्ठा नीति के सर्वोत्तम संकेतो के द्वारा उलझी हुई थी।" यह आशा करना व्यर्थ था कि इस प्रकार की उलझी हुई समस्या शान्ति से हल हो सके।

स्पेन की राजगद्दी के अधिकार, स्त्रियो के द्वारा लगाए गए। डॉफिन (Dauphin) का सवसे सशक्त दावा था। वह फ्रान्स के राजा लुइस चौदहवे का पुत्र था। लुइस की पत्नी, चार्ल्स द्वितीय की सवसे वड़ी वहिन थी। इसके

उपरान्त वावेरिया के इलैक्टर (Elector of Bavaria) के पुत्र का दावा आता था। इलैक्टर के पुत्र की मा, चार्ल्स द्वितीय की वडी वहिन की पुत्री थी। इसके वाद आस्ट्रिया के सम्राट ल्योपोल्ड (Emperor of Leopold) का दावा था। उसकी मां, चार्ल्स द्वितीय के पिता की वहिन थी। इस प्रकार तीन दावेदार (Claimaints) थे—हाउस आँफ वौर्वन (House of Bourbon)—(France) हाउस आँफ विटिलवैंक (House of wittleback),—(Bavaria) तथा हाउस आँफ हैप्सवर्ग (House of Hapsburg)—(Austria)

परन्तु परिस्थितिया वहुत उलझी हुई थी। पिरिनीज की सन्धि (Treaty of the Pyrenees) से, लुइस चौदहवे की पत्नी से, उसके उस पिता द्वारा वहुत अधिक दहेज का वचन दिया गया था। जो कि उस समय स्पेन का राजा था। इस दहेज को विचार मे रखते हुए, उसने अपना तथा अपने वच्चो का स्पेन की गद्दी का दावा त्याग दिया था अतः डॉफिन (Dauphin) का स्पेन की गद्दी पर कोई दावा न था। परन्तु लुइस चौदहवे ने इसे स्वीकार नही किया। उसने दो कारण प्रस्तुत किए। पहला, वह कहता था कि उसकी पत्नी उस समय नावालिग थी जव उसने अपना दावा त्यागा। दूसरा, वह वतलाता था कि दहेज चुकाया न गया था।

जहा तक इलैक्टोरल प्रिन्स के दावे का प्रश्न था, उसकी मा को अपना तथा अपने वच्चो का स्पेन की गद्दी के लिए दावा त्यागने के लिए, उसके पिता एम्पॅरर ल्योपोल्ड द्वारा विवश किया जा चुका था। इस वात की सत्यता वहुत अधिक सदिग्ध थी।

"इस मामले के कानूनी दृष्टिकोण की तह मे एक द्रुत यूरोपीय प्रश्न की प्रतिक्रिया अनुभव की जाती थी।" प्रश्न केवल कानूनी अधिकार के द्वारा ही तय न हो सकता था। स्पेन के विस्तृत साम्राज्य को केवल उन सिद्धान्तो पर ही न वाटा जा सकता था जो कि व्यक्तिगत उत्तराधिकार का निर्णय करते थे। सारे व्यक्तिगत अधिकारो के पीछे, सारे कानूनी दावो के पीछे, यहा तक कि सारी राष्ट्रीय नीतियो के पीछे, शक्ति सतुलन तथा व्यापार स्वतन्त्रता के अधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त निहित थे। प्रथमतः यदि स्पेनिश साम्राज्य को

आस्ट्रिया अथवा फ्रांस जैसी महान शक्तियो के साथ जोड़ दिया गया तो यूरोपीय शक्ति का संतुलन अत्यधिक असंतुलित हो जाता। स्पेनिश साम्राज्य बहुत विस्तृत था। इसमे स्पेनिश नीदरलैंन्डस इटली के क्षेत्र तथा अमेरिका के औपनिवेशिक आधिपत्य निहित थे। दूसरे, व्यापार का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण था। इंगलिश तथा डच लोग, स्पेनिश उपनिवेशों के साथ अमेरिका मे व्यापार करने के बहुत उत्सुक थे। यदि स्पेनिश साम्राज्य पर, फ्रान्स जैसी किसी समुद्री बेडे की शक्ति का अधिकार हो गया तो अग्रेज तथा डचो को व्यापार करने की अनुमति न मिलेगी।

विभाजन सन्धि (The Partition Treaties)—

यह बिल्कुल स्पष्ट था कि किसी शक्ति को स्पेनिश साम्राज्य न प्राप्त करने दिया जायगा। इङ्गलेंड तथा हालैन्ड बावेरिया का पक्ष लेते थे क्योंकि वह तीनो मे सबसे दुर्बल था। इसके अतिरिक्त उसकी कोई नौसेना न थी। यदि फ्रास तथा स्पेन, स्पेनिश एम्पायर के अपने दावो को छोड़ देते तो उनकी क्षतिपूर्ति हो सकती थी। विभाजन की नीति स्पेनियर्डस द्वारा पसन्द न की गई। वे अपने साम्राज्य को अविभाजित रखना चाहते थे। उनके लिए यह राष्ट्र की प्रतिष्ठा का प्रश्न था।

सन् १६९८ मे, फ्रास, इङ्गलैंड तथा हालैंड ने प्रथम विभाजन सन्धि पर हस्ताक्षर किए। इलैक्टोरल प्रिंस को स्पेन की गद्दी मिलनी थी। स्पेनिश साम्राज्य के विभिन्न भाग आस्ट्रिया तथा फ्रास के बीच विभाजित होने थे। इस योजना मे सफलता की बहुत अधिक सभावना थी। परन्तु इलैक्टोरल प्रिन्स की यकायक मृत्यु हो गई। सारी योजनाएँ धूल मे मिल गईं। महान शक्तियो ने अपनी योजनाएँ पुनः आरम्भ की। सन् १६९९ मे, फ्रान्स, इगलैन्ड तथा हालैंड ने दूसरी विभाजन सन्धि पर हस्ताक्षर किए। स्पेन की गद्दी रूस (Russia) को प्रस्तुत की गई। फ्रास को स्पेनिश साम्राज्य का अधिकांश भाग प्राप्त होना था।

लुइस चौदहवें द्वारा विभाजन सन्धि को तोड़ना—

समस्या का हल दूसरी विभाजन सन्धि से भी नही हुआ। स्पेन का राजा, चार्ल्स द्वितीय मर रहा था। फ्रैन्च तथा आस्ट्रियन दल, मैड्रिड (Madrid)

मे थे। उन्होने दुखी चार्ल्स की मृत्यु शैया पर अपने झगड़े आरम्भ कर दिए। सन् १७०० मे चार्ल्स द्वितीय ने एक वसीयतनामा लिखा। इसके द्वारा, स्पेनिश आधिपत्य लुइस चौदहवे के पौत्र को जाने थे। अतः लुइस ने द्वितीय विभाजन सन्धि का तिरस्कार करने का सकल्प किया, यद्यपि वह स्वयं इसका प्रमुख लिखने वाला था। उसने अपने पौत्र की ओर से स्पेनिश साम्राज्य को स्वीकार करने का निश्चय किया।

कहा जाता था कि 'यूरोप की जनसाधारण की इच्छा को तोड कर तथा लिखित वचनो एवं सन्धियो का पालन न करके लुइस विनाशकारी मूर्खता कर रहा था।" परन्तु उसके निर्णय को उचित सिद्ध करने के लिए अनेक ठोस तर्क दिए गए थे। यदि वह स्पेनिश राज्यो को मान्यता न देता तो वे चार्ल्स द्वितीय के वसीयतनामे की शर्तो के अनुसार आस्ट्रिया के साथ चले जाते। उस दशा मे आस्ट्रिया बहुत शक्तिशाली हो जाती। इसका अर्थ, फ्रास तथा यूरोप की संतुलित शक्ति के लिए और भी बडा खतरा होगा। इसके अतिरिक्त इङ्गलैंड तथा हालैंड के लोगो ने 'विभाजन-सन्धि' को कभी पसन्द नही किया था। वे लुइस चौदहवें के कार्य को उचित ठहराने को तैयार थे। अतः यदि लुइस ने द्वितीय विभाजन-सन्धि को स्वीकार नही किया तो इसमे कोई हानि न थी। यह फ्रांस तथा यूरोप दोनो के ही हित मे था।

स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध का तत्कालीन कारण—

चार्ल्स द्वितीय के वसीयतनामे ने लुइस को एक बहुत बडा लाभ दिया था। वह इस लाभ को विना युद्ध का खतरा लिए बनाए रखना चाहता था। अतः यह उसके लिए आवश्यक था कि वह अग्रेज तथा डच लोगो के मस्तिष्को मे किसी प्रकार की शका न उत्पन्न होने दे। परन्तु वह ऐसा करने मे असफल रहा। वह कहता था कि फ्रास तथा स्पेन, चार्ल्स द्वितीय के वसीयतनामे की अनुपस्थिति मे भी सगठित हुए होते। उसने डच सीमान्त किलो पर अधिकार कर लिया। अन्तः उसने इंगलिश तथा डचो को स्पेनिश अमेरिका से व्यापार करने की अनुमति अस्वीकृत कर दी। उसकी सबसे बड़ी भूल यह थी कि उसने जेम्स द्वितीय के पुत्र को इङ्गलैंड का अधिकृत राजा माना। वह इस तथ्य को भूल गया कि जेम्स को गद्दी से उतार दिया गया था। इस प्रकार उसने यूरोप

के शक्ति के सन्तुलन को खतरे मे डाल दिया। फिर उसने अंग्रेजो तथा डचो को स्पेनिश अमेरिका के व्यापार से वचित कर दिया। इसके अतिरिक्त, उसने इङ्गलैंड के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप किया। इसके परिणामस्वरूप, इंगलैन्ड, प्रसिया (Prussia) तथा आस्ट्रिया मे वडी मित्रता हो गई। स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध आरम्भ हो गया। इसका अन्त यूटरैच्ट (Uterech) की सन्धि से हुआ। इस सन्धि के अनुसार, लुइस चौदहवें का पौत्र स्पेन की गद्दी पर बैठा। परन्तु फ्रास को इटली तथा नीदरलैन्ड को अधिकृत करने की अनुमति स्वीकार न हुई। इस प्रकार लुइस चौदहवे की महत्वाकाक्षाएँ केवल आधी पूरी हुई।

२२—इङ्गलैन्ड तथा स्काटलैन्ड का संगठन
(The Union of Enqland and Scotlond)

प्रश्न ६५—उन विभिन्न स्थितियो का वर्णन करो जिनके द्वारा इंगलैन्ड तथा स्काटलैन्ड एक राजतन्त्र में संगठित हुए।

अथवा

प्रश्न ६६—उन परिस्थितियो का संक्षेप मे वर्णन कीजिए जिन्होने कि एंग्लो-स्काटिश संगठन को जन्म दिया।

अथवा

प्रश्न ६७—वे कौन सी दशाएँ थी जिन्होने इंगलिश तथा स्काटिश पार्लियामेन्टों के संगठन को अग्रसर किया ?

उत्तर—भूमिका :—

क्विन ऐनी के शासन काल की महान घटना, इङ्गलैंड तथा स्काटलैन्ड का संगठन था। जेम्स प्रथम के राज्याभिषेक के समय से दो देश, सिवाय क्रामवेल के थोडे से समय के अलग अलग ससद रखते। वास्तव मे, वे एक दूसरे से स्वतन्त्र थे। प्रवन्ध ठीक प्रकार से नही चला था, और दोनो देशो की कुछ शिकायतें थी। स्काट्स की प्रमुख आपत्ति थी कि, नेवीगेशन के नियमो की शर्तो के अनुसार उन्हें अंग्रेज उपनिवेशो से व्यापार करने की अनुमति न थी।

दूसरी ओर अग्रेजो को भय था कि स्काट्स, सैटिलमैन्ट के कानून को स्वीकार न करके, एनी की मृत्यु पर, दो अलग राजगद्दिया न करदें। स्काट्स को भी भय था कि यदि दो देश सगठित हो गए तो स्काटलैन्ड का प्रेसवाइटेरियन चर्च कही कष्ट मे न पड़ जाय और उनके देश के नियम तथा प्रथाएं कहीं वदल न जाय। उन्हे यह भी डर था कि उन्हे अतिरिक्त कर भी लगाने पड़ेंगे ताकि इंगलिश नेशनल ऋण चुक सके।

डेरियन योजना की असफलता—

ऐनी के राज्याभिषेक पर स्काट्लेंड निवासी (स्काट्स), डेरियन योजना की असफलता के नीचे कार्य व्यस्त थे। सन् १६६९ मे स्कॉटिश उपनिवेशियो (Colonists) का एक मंडल डेरियन (Darien) के इस्थुमस (Isthumus) को अधिकृत करने के लिए भेजा जा चुका था। स्पेनियर्डस उस मिट्टी का दावा करते थे जिस पर यह लगाया गया था। उन्होंने देखा कि उपनिवेश की केवल रचना व्यापार के लिए, स्पेनिश नियम के विरुद्ध, स्पेनिश उपनिवेशो के साथ हो सकती थी। अतः स्वभावतः वे क्रुद्ध थे। जलवायु अस्वास्थ्यकर थी। स्कॉटस के पास अपने निवास स्थान को व्यापारिक वाजार वनाने के साधन न थे। योजना असफल होगई। वसने वालो का वड़ा भाग वडी दयनीयता मे समाप्त होगया। स्काट्स ने इसका कलंक इङ्गलैन्ड पर मढ़ा। उनका असतोष वड़ा धमकी देने वाला होने लगा।

संगठन के लिए विलियम की राय—

विलियम ने स्पष्टतः देखा कि वास्तविक उपचार दो पार्लियामेन्टों के संगठन तथा सभी व्यापारो को दोनो देशो के लिए खुल जाने मे था। उसका मरते समय का सुझाव था कि संघ (Union) की शर्तों को तय करने के लिए कमिश्नरो को मिलना चाहिए। तदनुसार सन् १७०२ में कमिश्नर मिले। परन्तु कोई समझौता न हुआ। स्काट्स अव और अधिक क्रुद्ध थे। सन् १७६३ मे, स्कॉटिश पार्लियामेन्ट ने तय किया कि राज्य मे प्रैसवाइटेरियनिज्म एक मात्र क्राइस्ट का चर्च था। इसने सुरक्षा का एक कानून (Bill of Security) पास किया। इसने स्काटिश पार्लियामेन्ट के लिए यह अधिकार सुरक्षित किया कि इंगलैन्ड द्वारा नियुक्त गद्दी के उत्तराधिकारी को मान्यता देने से इन्कार

कर सके। इसके साथ ही उन्होने राज्य के बडे अधिकारियो को नियुक्त करने का अधिकार राजा के हाथ से बदल कर पार्लियामेन्ट के हाथ मे दे दिया। स्काट निवासियो के इस व्यवहार ने युद्ध की संभावना कर दी। अतः इसका परिणाम इंगलिश पार्लियामेन्ट का एक कानून हुआ उसे ह्विग (Whig), सौमर्स (Somers) द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस कानून के द्वारा यह घोषित किया गया कि वडे दिन (Christmas) के वाद, सन् १७०५ मे, सारे स्काट निवासियो को विरोधी माना जाय। स्काटिश वस्तुओ का इंगलैंड मे आयात करना रोक दिया गया। सीमान्त नगरो पर पुनः सुरक्षा का प्रवन्ध करने की आज्ञाएं प्रसारित कर दी गई ।

संगठन की शर्तें (Terms of Union)—

अव यह स्पष्ट था कि इङ्गलैंड उत्सुकता मे था। कमिश्नर पुनः मिले। प्रमुख कठिनाइया धर्म, कानून और करो से सम्वन्धित थी। इन सभी वातों मे इङ्गलैंड झुक गया। संगठन सन् १७०७ मे पूरा हो गया। स्थायी कानून तथा न्यायिक विधि सुरक्षित होगई। दो राष्ट्रो के भारो को सम्मान करने के लिए, इङ्गलैंड ने स्काटलैंड को ३९८,००० पौंड दिए। यह धन स्काटिश राष्ट्रीय ऋण को चुकाने तथा डेरियन कम्पनी के साझेदारो को निपटाने के लिए प्रयुक्त होना था। इङ्गलैंड के व्यापारिक लाभ विना किसी भेद भाव के स्काट्स के लिए खोल दिए गए। स्काट्स किसी भी प्रकार के टैक्स को चुकाने के लिए उत्तरदायी न थे जिसके लिए कि इङ्गलैंड को पार्लियामेन्ट पहले ही वोट दे चुकी थी। दूसरी ओर, यह व्यवस्था की गई कि इस संगठित राज्य का नाम ग्रेट ब्रिटेन होना था। हाउस ऑफ कामन्स मे स्काटलैंड के पैंतालीस सदस्य वैठते थे तथा सोलह प्रतिष्ठित व्यक्ति (Peers) जो प्रत्येक साधारण चुनाव द्वारा चुने गए हो स्काटलैंड के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को प्रतिनिधित्व करने को हाउस ऑफ लार्डस मे वैठते थे। अव और नए स्काटिश प्रतिष्ठित व्यक्ति न उत्पन्न होते थे।

संगठन के परिणाम—

प्रारम्भ मे, स्काटलैन्ड मे सगठन सवसे अधिक निन्दनीय था। फिर भी दोनो देश इस सगठन से लाभान्वित हुए। इंगलैन्ड एक वड़े खतरे से मुक्त हो

गया। जब कि धर्म और कानून के मामलो मे स्काटिश इच्छाओं को पूरी तरह स्थान दिया गया, वह लाभ जो उसने अंग्रेज उपनिवेशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्राप्त करके उठाया उसका मूल्य, एक छोटी सी भावना के त्याग से निस्सन्देह अधिक था। ग्लासगो (Glasgow) की द्रुत उन्नति तथा लोलैं-न्डस (Lowlands) के निर्माणक उद्योग उनके उन्नत भाग्य का प्रमाण है। हाल के वर्षो मे हाईलैन्ड (Highland) के दृश्यो की लोक प्रियता जो कि अब हजारों अंग्रेज दर्शकों को आकर्षित करते हैं तथा न्यायाधीशो के बालमोरल (Balmoral) मे निवास ने दो राष्ट्रो की परस्पर सहानुभूति की श्रंखलाओ को मजबूत किया है।

हनोवैरियन युग
(THE HANOVERIAN PERIOD)
२३—मंत्रिमंडल पद्धति (The Cabinet System)

प्रश्न ६८—इङ्गलैन्ड में मंत्रिमंडल पद्धति के आधार तथा विकास का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्रश्न ६९—दिखाइए कि किस प्रकार जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के शासन काल में मंत्रिमंडलीय सरकार का विकास हुआ।

उत्तर—मंत्रिमंडल का अर्थ—

मंत्रिमंडल अथवा मंत्रिपरिषद उत्तरदायी कार्यकारिणी है। इसका राज्य के प्रशासन का पूर्ण नियन्त्रण होता है। विधान परिषद (Legislature) के सारे कार्यो के लिए यह उत्तरदायी था। प्रोफेसर मुनरो (Munro) ने मंत्रिमंडल की परिभाषा इन शब्दो मे की है, "सक्षेप मे मन्त्रिमंडल की परिभाषा राज्य परामर्शको के उस समूह को कहते हैं जो कि प्रधान मंत्री (Prime minister) द्वारा सम्राट के नाम से चुना जाय और जिसको हाउस ऑफ कामन्स मे बहुमत का समर्थन प्राप्त हो।" इङ्गलिश मंत्रिमंडल के सम्बन्ध मे एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह क्रमशः धीमे-धीमे विकसित हुई।

मंत्रिमंडल का आरम्भिक संचालक—(Fore-runner of the cabinet)–

चार्ल्स द्वितीय का कवल (Cabal), मंत्रिमंडल का आरम्भिक संचालक माना जाता है। राज्य के मामलो में चार्ल्स द्वितीय कवल (Cabal) का परामर्श लेता था। कवल का ग्रुप, प्रिवी कौंसिल से विकसित हुआ। परन्तु कैविनेट (मंत्रिमंडल) काउन्सिल का नाम चार्ल्स प्रथम के शासन काल मे भी सुना गया। सन् १६६० के पश्चात मंत्रिमंडल पद्धति (Cabinet System) के विकास के लिए परिस्थितिया अनुकूल हो गई। पार्लियामेन्ट ने राजा से ऊपर सफलता प्राप्त की थी। इस प्रकार राजा को किसी भी वात के लिए पार्लियामेन्ट को चुनौती देने की कोई शक्ति न थी। इस प्रकार की परिस्थितियो मे मत्रिमंडलीय पद्धति आसानी से विकसित हो सकी। ये परिस्थितियां, पुनः प्राप्ति (Restoration) तथा शानदार क्रान्ति (Glorious Revolution) के पश्चात और अनुकूल हो गई।

चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में मंत्रिमंडलीय पद्धति—

चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल मे मंत्रिमंडलीय पद्धति ने अधिक विकास नही किया। काउन्सिल का आकार वड़ा था। अतः गोपनीयता को रखना संभव न था। परन्तु मत्रिमंडलीय पद्धति के वीज विद्यमान थे। चार्ल्स के लगभग आधे दर्जन मत्री थे। वह उनसे परामर्श लेता था। उनका पार्लियामेन्ट पर विशेष प्रभाव था। अतः उनकी सहायता से चार्ल्स कानून को पास कराता था। परन्तु यह पद्धति अपूर्ण थी। राजा मत्रियो को स्वयं चुना करता था। वह यह देखने की परवाह न किया करता था कि वे पार्लियामेन्ट मे प्रभावशाली भी हैं अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त, वह यह देखने की परवाह न करता था कि वे किस दल से सम्वन्धित थे। तव मंत्रिगण, पार्लियामेन्ट के लिए उत्तरदायी न थे। वे केवल राजा के लिए उत्तरदायी थे। वे पार्लियामेंट का प्रतिनिधित्व न करते थे। वास्तविकता तो यह थी कि उस समय 'मत्रिमंडल' (Cabinet) शब्द का सही अर्थो मे प्रयोग न होता था। उसको यह नाम इसलिए दिया गया था क्योंकि चार्ल्स अपने मत्रियो से एक छोटे से व्यक्तिगत कमरे अथवा कैविनेट मे मिला करता था। यह कमरा महल के अन्दर था।

विलियम के शासनकाल में मंत्रिमंडलीय पद्धति—

शानदार क्रान्ति (Glorious Revolution) के पश्चात पार्लिया-मेन्ट सर्वोच्च सत्ता हो गई। इसने मंत्रिमंडलीय पद्धति के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। विलियम द्वितीत ने स्वयं अपने मंत्रियो को चुना। उन पर उसका पूर्ण नियन्त्रण था। परन्तु उसके समय मे एक बहुत ही महत्वपूर्ण विकास हुआ। अपने शासनकाल के आरम्भ मे उसने अपने मंत्रियों को ह्विग्स (Whigs) तथा टौरीज (Tories) मे से चुना। उसने इस पद्धति को सन्तोषजनक नही पाया। अतः सन् १६५३ ई० से उसने उन्हे केवल ह्विग पार्टी से चुनाव आरम्भ किया। विलियय ने यह कार्य केवल अपनी सुविधा के लिए किया। परन्तु पद्धति स्थायी हो गई। मंत्रीगण, उस दल से चुने जाने लगे जिस दल के सदस्य हाउस ऑफ कॉमन्स मे बहुसंख्या (Majority) मे होते थे।

सन् १७०० से १७१४ तक मंत्रिमंडलीय पद्धति—

पार्लियामेन्ट ने नई पद्धति पसन्द न की। सैंटिलमैंन्ट के कानून (१७०१) (Act of Settlement) के द्वारा मंत्रिमंडलीय पद्धनि को उसकी शिशुवस्था मे ही नष्ट कर देने का एक प्रयत्न किया गया। कानून के अनुसार "कोई भी व्यक्ति जो कि राजा के आधीन कोई पद रखता है अथवा लाभ का पद रखता है अथवा सम्राट से वृत्ति (Pension) प्राप्त करता है वह हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य के रूप मे सेवा करने के योग्य न माना जायगा।" इसका स्पष्ट अर्थ था कि राजा के सेवक हाउस ऑफ कॉमन्स मे न बैंठ सकते थे। अप्रत्यक्ष रूप से इसका आशय मंत्रिमंडल को तोडना था।

सैंटिलमेण्ट के एक्ट में यह भी कहा गया था कि प्रिवी-काउन्सिल का कार्य प्रिवी काउन्सिल मे ही होना चाहिए न कि किसी अन्य स्थान पर। रावर्टसन (Robertson) की राय मे, "इसका उद्देश्य प्रिवी काउन्सिल को नीति का कानूनी तथा संवैधानिक अग पुनः बनाना था, नवनिर्मित मंत्रिमडल की भर्त्सना करने को, उस प्रशासन को सुरक्षित करने को जैसा कि प्रिवी काउन्सिलर्स, उन बातो पर परामर्श देने के लिए जो कि पार्लियामेन्ट द्वारा अस्वीकार कर दी गई, कानूनी रूप से उत्तरदायी हो।"

यदि यह व्यवस्था बनाए रखी गई होती तो मंत्रिमंडलीय पद्धति के लिए वडी क्षति हुई होती। यदि प्रिवी काउन्सिल का कार्य प्रिवी काउन्सिल मे ही होना था तो मंत्रिमडल का अंत हो चुका होता। इसका कारण यह था कि मंत्रिमंडल, प्रिवी काउन्सिल का एक छोटा अंग था। यदि मंत्रियो को उत्तरदायी बनाना था जो कि राजा को परामर्श देते थे तब तो वे यही अधिक उचित सोचते होंगे कि अच्छा हो यदि वे राजा को कोई परामर्श ही न दें। सौभाग्य से यह व्यवस्था सन् १७०३ मे टूट गई।

जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के शासन काल में मंत्रिमंडलीय पद्धति –

जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के शासन काल मे मन्त्रिमडलीय पद्धति को विकसित होने का अच्छा अवसर मिला। जार्ज प्रथम अंग्रेजी न जानता था। अतः वह मंत्रियो की मीटिंगो मे सभापतित्व न करता था। इसके अतिरिक्त वह अंग्रेजी प्रशासन पद्धति को समझ न सकता था। उसके लिए वह बहुत उलझा हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप उसने सारे कार्य अपने ह्विग (Whig) मंत्रियो पर छोड दिए। उन्होंने उस अधिकार का पूरा प्रयोग किया जो कि उन्हे इस प्रकार राजा से प्राप्त हुआ। उन्होने हाउस ऑफ कामन्स को अपने नियन्त्रण में कर लिया। जैसा कि राजा, मन्त्रिमंडल की मीटिंगो मे भाग न लेता था, वाल्पोल (Walpole) ने उनका सभापतित्व करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार प्रधानमन्त्री का जन्म हुआ। लोगो ने इस पद को पसन्द नही किया। उन्होने प्रधान मंत्री हो जाने के लिए वाल्पोल (Walpole) को दोष दिया। परन्तु इसमें कुछ न हो सकता था। ऐसा इसलिए था क्योंकि जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय अंग्रेजी नीतियों के प्रति बिल्कुल उदासीन थे। उनके बाद कोई राजा मन्त्रिमडल की मीटिंगो मे उपस्थित नही हुआ। अंग्रेज जार्ज तृतीय ने अपना व्यक्तिगत शासन स्थापित किया, वह कैबिनेट (मंत्रिमंडल) की मीटिंगो में भाग लेने कभी नही गया। इस प्रकार कैबिनेट पद्धति मे बहुत सी विशेषताएं विकसित हुई। प्रधान मन्त्री का कार्यालय उत्पत्ति मे आया। सारे मन्त्री उसके नीचे काम करते थे। वे सम्मिलित रूप से प्रशासन के लिए उत्तरदायी हो गए। इस प्रकार मंत्रिमंडलीय उत्तरदायित्व का सिद्धान्त लागू किया गया। सारे मन्त्री उसी दल के सदस्य थे।

जार्ज तृतीय के नीचे मंत्रिमंडलीय पद्धति—

सन् १७६० में जार्ज तृतीय राजा हो गया। वह एक अच्छा व्यक्ति था परन्तु एक बुरा राजा था। उसका मुख्य उद्देश्य शासन करना और नियन्त्रण करना दोनों था। वह केवल नाम से राजा न होना चाहता था बल्कि वास्तव में राजा होना चाहता था। वह कहता था कि पिछले दो शासनों में हुआ कैबिनेट का विकास कानूनी न था। अतः उसने घोषित किया कि वह इसका अनुकरण न करेगा। वह राजा की शक्तियों को पुनः जीवित करने के लिए तुला हुआ था। इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए उसने ह्विग्स (Whigs) को हटा दिया। वस्तुतः वे सन् १७१४ से १७७० तक शक्ति में रहे थे। उसने लार्ड नार्थ (Lord North) के नेतृत्व में एक मन्त्रिमंडल नियुक्त किया। परन्तु वह कैबिनेट पद्धति के विकास को अवरुद्ध करने में असफल रहा। अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम (The American War of Independence) तथा ब्रिटिश पराजय ने कैबिनेट पद्धति के आधार को सहायता की। सन् १७८३ में छोटा पिट (Pitt, The Younger) प्रधान मंत्री हो गया। उसे राजा तथा राष्ट्र दोनों का विश्वास मिला हुआ था। अतः जार्ज ने राज्य प्रशासन का सारा कार्य उस पर छोड़ दिया। इससे कैबिनेट की उन्नति का मार्ग साफ हो गया।

अठारहवीं शताब्दी में कैबिनेट पद्धति—

लोग अठारहवीं शताब्दी के अन्त तक कैबिनेट पद्धति का अर्थ न समझते थे। यह बहुत सी बातों से सिद्ध हुआ है। यू० एस० ए० के विधान में कैबिनेट पद्धति का कोई उल्लेख न किया गया था। लोअर तथा अपर कैनाडा की सरकार में भी मन्त्रिमंडलीय (कैबिनेट) पद्धति के लिए कोई स्थान न था। राजनैतिक लेखकों, जैसे कि ब्लैकस्टोन (Blackstone) तथा डि लोमे (De Lolme) ने कैबिनेट पद्धति के बारे में कभी नहीं लिखा। यह केवल सन् १८६७ में हुआ कि बेजहोट (Bagehot) ने कैबिनेट पद्धति का विस्तृत

उन्नीसवीं शताब्दी में कैबिनेट पद्धति—

कैबिनेट पद्धति ने अपना अन्तिम स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी में प्राप्त किया।

कुछ निश्चित सिद्धान्त स्थापित हो गए। मन्त्रिमंडल (कैबिनेट) के सारे सदस्य उस दल के होते जो दल कि हाउस आफ कामन्स मे बहुसंख्या मे होता। उनमें से सब हाउस के सदस्य हैं। उनका एक सामूहिक नेता होता जो कि प्रधान मंत्री कहलाता है। यदि प्रधान मन्त्री त्यागपत्र देता है तो वे भी त्याग-पत्र देते है। यदि उनमे से किसी एक के प्रति अविश्वास का मत होता है तो सारे सदस्य त्याग-पत्र देते हैं।

उपसंहार—

इंगलैन्ड का मन्त्रिमंडलीय सिद्धान्त बहुत लोक प्रिय हो गया है। यह संसार के लगभग सभी महान देशो द्वारा अपनाया गया है। इस पद्धति को हम फ्रान्स, बेल्जियम, इटली, जापान, जर्मनी, आस्ट्रिया, पौलैन्ड, जैकोस्लोवेकिया, आस्ट्रेलिया तथा कैनाडा मे पाते हैं। यह सिद्धान्त हमारे देश मे भी अपनाया गया है।

२४—सर रौबर्ट वाल्पोल
(Sir Robert Walpole)

प्रश्न ७०—वाल्पोल के कार्य तथा सफलताओं का वर्णन कीजिए।

अथवा

प्रश्न ७१—'रौबर्ट वाल्पोल इंगलैन्ड को समृद्ध बना सकता था परन्तु महान नहीं' विवेचना कीजिए।

अथवा

प्रश्न ७२—रौबर्ट वाल्पोल के कार्य तथा नीति की विवेचना कीजिए।

अथवा

प्रश्न ७३—इंगलैन्ड के आर्थिक तथा राजनैतिक विकास में रौबर्ट वाल्पोल की क्या देन थी ?

उत्तर—सर रौबर्ट वाल्पोल (Sir Robert Walpole) का जन्म सन् १६७६ मे नौरफोक (Norfolk) मे हुआ था। अपने पिता का सबसे बड़ा लड़का न होने से, चर्च के लिए उसका विचार किया गया था। वह भली

प्रकार शिक्षित था। उसके बड़े भाई की मृत्यु हो जाने से वह पारिवारिक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७०० मे वह एक ह्विग (Whig) के रूप मे पार्लियामेन्ट मे प्रविष्ट हुआ। शीघ्र ही उसने अपने प्रभाव का अनुभव दल मे करा दिया सन् १७०८ मे वह मार्लबरो (Marlborough) के नीचे सैक्रेटरी एट वार (Secretary at War) हो गया। सन् १७१० मे वह अपनी पार्टी सहित पदच्युत हो गया। संभवतः टौरीज (Tories) ने उसे पहचान लिया कि उनके विरोधियो मे सबसे योग्य वही है और उसका कुचलना वाछनीय है। अतः उसके विरुद्ध वेईमानी के आरोप लगाए गए। उसे हास आफ कामन्स से निष्कासित कर दिया गया। परन्तु उस पर लगाए गए अभियोगो मे कोई सत्यता न थी। उस पर मुकद्दमा नही चलाया गया। कुछ समय उपरान्त उसे मुक्त कर दिया गया।

जार्ज प्रथम के राज्याभिपेक पर ह्विग (Whig) पार्टी ने पुनः शक्ति प्राप्त की। वाल्पोल (Walpole) को प्रारम्भ मे चैल्सी अस्पताल (Chelsea Hospital) का पेमास्टर (Paymaster) नियुक्त किया गया। यह छोटा सा पद शीघ्र ही अधिक महत्वपूर्ण 'पेमास्टर-जनरल' (Paymaster-General) के पद मे बदल गया। सन् १७१५ मे वह खजाने का प्रथम लार्ड (First Lord of the Treasury) तथा चान्सलर ऑफ दि ऐक्सचैकर हो गया। परन्तु न तो वह स्वयं और न उसका साला (brother-in-law) टाउनशैन्ड (Townshend), स्टेन होप (Stonhope) की विदेश नीति को मानने को तैयार थे। उसने देश को विदेशी उलझनो से मुक्त रखना अधिक पसन्द किया। यदि फिलिप पचम तथा चार्ल्स पष्ठम (Charles VI) की रुचि स्पेनिश उत्तराधिकार तथा यूरोप मे स्पेनिश प्रदेश के अधिकार के प्रश्न को पुनः उठाने की थी तो वह इस बात के लिए तैयार था कि वह उन्हे विना ब्रिटिश हस्तक्षेप के इसके लिए लड़ने को छोड दे। जिस समय सन् १७१७ मे त्रिसन्धि (Triple alliance) हुई, उसने टाउनशैन्ड (Townshand) सहित मन्त्रिमंडल छोड़ दिया। वह तीन वर्प तक विरोधी दल मे रहा। सन् १७२० से जब लन्दन की सन्धि (Treaty of London) हुई तो वाल्पोल (Walpole) पुनः मन्त्रिमंडल मे सम्मिलित हुआ। साउथ सी बब्ल

(South Sea Bubble) के परिणाम स्वरूप स्टेनहोप के पदच्युत होने पर सन् १७२१ मे वह इस मन्त्रिमडल का नेता हो गया ।

अगले इक्कीस वर्षो मे वाल्पोल ने अधिकारी पद जो रखे वे थे खजाने का प्रथम लार्ड (First Lord of the Treasury) तथा ऐक्सचैकर का चान्सलर (Chancellor of the Exchaquer), परन्तु जनसाधारण मे उसकी ख्याति प्रथम प्रधान मंत्री के रूप मे है । इस पद की कोई वैधानिक मान्यता न थी । वाल्पोल ने मना किया है कि वह प्रधान मन्त्री था । परन्तु वह जानता था कि वह अपने साथियो का नेता था । वह अनुभव करता था कि ऐसा पद होना चाहिए ।

उसकी विदेश नीति—

सन् १७३० तक उसने पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त कर लिया । अपने शासन-काल के प्रथम दस वर्षो मे, सैक्रेटरीज ऑफ स्टेट का विदेशी मामलो की नीति पर बहुत वड़ा प्रभुत्व था । उनकी नीति पूर्णतः वैसी न थी कि वाल्पोल को प्रभावित करती । उसके लगातार हस्तक्षेप ने उनके कार्यो को वाहर सीमित करने के उद्देश्य से, उससे हुए झगड़ो को पैदा किया—पहले कार्टरैट (Carteret) से और वाढ़ मे टाउनशेन्ड (Townshend) से । घटनाओ का क्रम सक्षेप मे दिया जा सकता है । फिलिप पंजम (Philip V), स्पेन के खोए हुए राज्य को प्राप्त करने के लिए उतना इच्छुक था जितना कि कभी हुआ है । इसके अतिरिक्त, उसकी पत्नी एलिजावेथ अपने दो पुत्रो डौन कार्लोस (Don Carlos) तथा डौन फिलिप (Don Philip) के लिए इटैलियन प्रिन्सपैलिटीज (Italian Principalities) उपलब्ध कराने की इच्छुक थी। फिलिप का पुराना प्रतिद्वन्द्वी चार्ल्स षष्टम (Charles VI), इस समय तक, स्पेन की राजगद्दी कभी भी प्राप्त करने की आशा खो चुका था । वह अपनी पुत्री मैरिया थैरैसा (Maria Theresa) को आस्ट्रियन राज्य के उत्तराधिकार के लिए व्यवस्था करने मे पहले से ही रुचि रखता था । यूरोप की शक्तियो की एक दस्तावेज, जो कि प्रैगमैटिक सैन्कशन (Pragmatic Sanction) कहलाता था, के लिए स्वीकृति प्राप्त करके वह इसमे सफल होना चाहता । सन् १७२५ मे, रिपैर्डा (Ripperda) नाम के एक डच व्यक्ति के

प्रभाव के द्वारा इन पुराने शत्रुओ के बीच वियना (Vienna) की प्रथम सन्धि (First Treaty) की व्यवस्था की गई। इसके अनुसार सम्राट ने ग्रेट-ब्रिटेन के साथ, मिनोर्का (Minorca) तथा जिबराल्टर (Gibraltar) के फिलिप के द्वारा, पुनः प्राप्ति के लिए पत्र व्यवहार करने तथा डॉनकार्लोस (Don Carlos) को अपने बडे चाचा (Great-uncle), पार्मा के पुराने ड्यूक (Old Duke of Parma) का उत्तराधिकार स्वीकृत करने का वचन दिया। इसके बदले मे फिलिप पंजम (Philip V) ने प्रेगमैटिक सैन्कशन की गारन्टी कर दी।

फ्रान्स मे रीजेन्ट ऑर्लियन्स (Regent Orleans) अब मर चुका था। लुइस पन्द्रहवा वयस्क हो गया था तथा उसका विवाह हो चुका था। उसका प्रमुख मन्त्री कार्डिनल फ्लियुरी (Cardinal Fleury) ने ग्रेट ब्रिटेन के साथ रीजेन्ट की मित्रता की नीति जारी रखी। वियना सन्धि, सन् १७१७ को त्रिमैत्री-सन्धि (Triple Alliance) के पुनरुत्थान मे आई। सन् १७२६ मे ग्रेट ब्रिटेन, फ्रान्स, हालैन्ड, हैनोवर तथा ब्रैन्डनवर्ग (Brandenburg) ने फिलिप तथा चार्ल्स के गठबन्धन का विरोध करने के लिए हैनोवर की सन्धि (Treaty of Hanover) बनाई। इसके परिणामस्वरूप सन् १७२७ मे कुछ संघर्ष हुआ। जिबराल्टर पर एक स्पेनिश आक्रमण असफल हो गया जैसा कि एक पोर्टो बैलो (Porto-Bello) के एक इंगलिश ब्लोकेड (English blockade) ने किया। वालपोल (Walpole) इस बात के लिए अत्यधिक उत्सुक था कि किसी प्रकार युद्ध आगे न चले। अतः सन् १७२९ मे सेविले की सन्धि (Treaty of Seville) द्वारा शान्ति पैदा की गई। फिलिप तथा चार्ल्स की कुछ कुछ अस्वाभाविक मित्रता का अन्त हो गया।

सन् १७३१ में पार्मा के ड्यूक (Duke of Parma) की मृत्यु हो गई। सम्राट ने डौन कार्लोस (Don Carlos) को डची (Duchy) का उत्तराधिकार प्राप्त करने से रोकने के लिए भरसक प्रयत्न किया। पुनः यूरोपीय युद्ध आवश्यक दिखने लगा। परन्तु वाल्पोल ने जो कि ब्रिटिश मामलो के अपने नियंत्रण मे अब बन्धन मुक्त था, प्रैगमैटिक सैन्कशन की गारन्टी करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया, यदि सम्राट डौन कार्लोस को पारमा का ड्यूक

स्वीकार कर ले। शर्त लुभावनी थी। वियना की दूसरी सन्धि (Second Treaty of Vienna) के द्वारा, चार्ल्स ने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार वाल्पोल के कार्य से युद्ध रुक गया।

सन् १७३३ मे, ऑगस्टस द्वितीय, पोलैन्ड के राजा, की मृत्यु ने पोलिश उत्तराधिकार युद्ध (Polish Succession War) को जन्म दिया। इस समय तक फ्रास तथा स्पेन के सम्बन्ध अच्छे हो गए थे। वे पोलिश राजगद्दी पर स्टानिस्लौस (Stanislaus) के अधिकार का पक्ष लेते थे।

सम्राट, ऑगस्टस तृतीय (Augustus III) के पुत्र ऑगस्टस द्वितीय (Augustus II) पर जोर देता था। वाल्पोल युद्ध को तो न रोक सका, परन्तु उसने इसमे भाग लेने से मना कर दिया। उस संघर्ष मे ग्रेट ब्रिटेन तटस्थ रहा जो कि कुछ वर्षों तक चला। वियना की तीसरी सन्धि (Third Treaty of Vienna) के द्वारा यह सन् १७३८ मे समाप्त हुआ जिसके द्वारा कि औगस्टस (Augustus) पोलैण्ड का राजा हो गया तथा डौन कार्लोस को नेपल्स का पुराने स्पेनिश राज्य दे दिया गया।

सन् १७३३ मे ग्रेट ब्रिटेन, स्पेन के साथ युद्ध मे आ गया जिसका वाल्पोल को बहुत ही दुख था। उसने कुशलता से इनका मुकाबिला किया। राष्ट्र युद्ध के लिए उत्सुक था। अतः वह बदनाम हो गया। इसका परिणाम उसका पतन हुआ।

उसकी धार्मिक नीति (His Religious Policy)—

वाल्पोल, 'यथावत्' की नीति का पक्का विश्वासी था। उसने कोई महान सुधार नहीं किया। उस पर अपने दल के डिसैन्टर्स (Dissenters) के प्रति अपने दल की नीति को क्रियान्वित करने के लिए तथा कारपोरेशन एक्ट तथा टैस्ट एक्ट का खंडन करके उनको पूर्ण अधिकार देने के लिए जोर डाला गया था। परन्तु उसने इन कानूनो के अन्तर्गत लगे दण्डो एवं जुरमानो को एक साल के लिए रोक देना तथा एक समय मे एक साल के लिए जारी रखना अधिक उत्तम समझा। इस प्रकार इन काण्डो को रोकने के लिए प्रत्येक वर्ष एक इन्डैमनिटी एक्ट (Indemnity Act) सन् १७२७ से १८२८ तक पास किया गया। तब बिना कठिनाई के कारपोरेशन एक्ट एवं टैस्ट एक्ट के खन्डन

किए गए । वाल्पोल ने अनुभव किया कि सन् १७२७ मे उनका खंडन करने के प्रयत्न ने चर्च के समर्थको के तीव्र विरोध को जन्म दिया होता जब कि इनडेमिनिटी एक्ट को विना किसी प्रतिवेदन के पास किया ।

उसकी आर्थिक नीति—

वाल्पोल की महानता सवसे स्पष्ट अर्थ तथा व्यापार के क्षेत्रो (Domain of finance and trade) मे देखी गई । उसने अनुभव किया कि देश की समृद्धि, इसके व्यापार के विकास से निश्चिततः ही उन्नत होगी । उस समय इस समृद्धि के मार्ग मे आयात तथा निर्यात की सैकडो वस्तुओ पर लगा हुआ कर एवं महसूल एक रोडा था । वह ऐसा व्यक्ति न था कि सारे करो एव महसूलो को समाप्त कर देने का उत्तरदायित्व लेता । वह एक साथ ही स्वच्छन्द व्यापार पद्धति (Free Trade System) को भी लागू न कर सकता था । इसके कारण यह थे कि व्यवसायी वर्ग तव तक भी, विद्यमान पद्धति का चलाना ही राष्ट्रीय समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण मानता था । यदि वह कर मुक्त व्यापार के वारे मे विल्कुल भी सोचता था तो संभवतः वह इसे एक अप्राप्य आदर्श मानता था जिसकी ओर समय की थोडा सी प्रगति भी आशानुकूल थी । परन्तु उसने वहुत सी वस्तुओ से कर हटा लिया । वहुत सी वस्तुओ के कर कम कर दिए । वह अनुभव करता था कि कर अथवा महसूल की दर कम करके कुछ दशाओ मे वस्तुओ के उपभोग मे इतनी वृद्धि हो सकती थी कि उच्च दरो के महसूल से अधिक महसूल (कर) प्राप्त हो । किसी भी दशा मे नीची दर से व्यापार वढेगा, समृद्धि वढेगी तथा कालान्तर मे राष्ट्र की आय वढेगी ।

सन् १७२४ मे उसने चाय तथा काफी (Coffee) के लिए चहारदीवार खिचे वाडो (bonded warehouses) की पद्धति स्थापित की । इन वस्तुओ के आयातकर्ताओ के लिए यह काफी लाभ की वात थी । अब तक काफी पर कर (Duty) चुकाना पड़ता था तव वस्तुएँ देश मे पहुँचती थी । उनकी विक्री तक कुछ महीने सदैव व्यतीत हो जाते । इस कर की राशि विक्रेता से वसूल की जाती । इस प्रकार आयातकर्ताओ को अपनी वहुत सी रकम फँसी रखनी पडती थी । नई पद्धति मे सामान से लदे जहाज आते ही 'वाड़े' (Bond) में खाली किए जाते । वे वहाँ तव तक रहते जव तक कि

खुदरा विक्री (Retail) के लिए उनकी आवश्यकता होती। उन्है बौन्ड (Bond) से छोटी मात्रा में आवश्यकतानुसार समय समय पर हटाया जाता। कर केवल उस मात्रा पर चुकाया जाता जो कि निकाली जाती। यह नई योजना इतनी सफल हुई कि सन् १७३३ मे वाल्पोल (Walpole) ने इसे तम्बाकू तथा शराव पर भी लागू करने का प्रस्ताव रखा। दुर्भाग्य से वह विल जिसमें इस प्रकार का सुझाव तथा 'एक्साइज विल' (Excise Bill) कहा गया। एक्साइज नाम वदनाम था। साधारण लोगो ने विल का अर्थ गलत समझा। वाल्पोल (Walpole) के विरोधियो द्वारा इसका गलत प्रतिनिधित्व किया गया। जनता मे महान असंतोप फैल गया। वाल्पोल ने उस सुधार को समाप्त कर दिया जो कि देश के लिए सवसे अधिक लाभदायक और महत्वपूर्ण हुआ होता और इस प्रकार इसके चालू करने की दशा मे होने वाले दंगो और हत्यारो से वचाया।

जव वाल्पोल प्रधान मत्री हुआ, राष्ट्रीय ऋण का योग लगभग ५१,०००,००० पौड था। गवर्नमेन्ट ने इस पर 'साउथ सी कम्पनी फियास्को' (South Sea Company fiasco) के वाद नियन्त्रण प्राप्त कर लिया। वाल्पोल ने एक लाख पौंड प्रति वर्ष का एक अतिरिक्त-कोष (Sinking Fund) स्थापित किया जिससे यह चुके। यदि उसने इसे अपने सारे कार्यकाल मे चालू रखा होता तो इसे कम से कम आधा कर लिया होता। परन्तु ऋण का चुकाना उत्सुकतारहित तथा अप्रिय होता है। कर को कम करने की उत्सुकता मे, उसने व्यय की कुछ अन्य मदो पर अतिरिक्त-कोप के निमित्त कमी की। फिर अपने वीस वर्ष के कार्यकाल मे ऋण को चार पाच लाख पौड कम कर दिया। अपनी मितव्ययताओ तथा अप्रत्यक्ष कर मे किए सुधार द्वारा वह भूमि कर की दर कम करने मे समर्थ हुआ। ग्रामवासियो को यह चार शिलिंग मे कम हो कर एक पौड मे एक शिलिंग रह गया। इस कमी से उसके सदस्यो मे उसकी ख्याति और प्रशसा वहुत वढ गई।

वाल्पोल औपनिवेशिक व्यापार के सम्वन्ध मे नियमो तथा कर्तव्यो की विस्तृत पद्धति मे उतना ही कम विश्वास रखता था जितना कि आन्तरिक व्यापार मे। उसके आदेश के अन्तर्गत नौसैनिक नियम कम कड़ाई से प्रयुक्त होते थे, जितने

कि अब हुए। पुरानी कौलोनियल पद्धति, जिसे कौलोनिस्ट् एक बोझ अनुभव करते थे, चालू रही। परन्तु यह कड़ाई से प्रयोग मे न आया। कौलोनियो मे अन्दर तथा बाहर बहुत सा तस्कर व्यापार (Smuggling) बिना प्रतिबन्ध चलता रहा। ब्रिटिश वैस्ट इन्डीज मे प्लान्टर्स (Planters) को सन्तुष्ट करने के लिए सन् १७३३ मे उसने मोलेसेजएक्ट (Mollasses Act) पास किया। इसने अमेरिकन कौलोनिस्टो द्वारा, फ्रैन्च वैस्ट इन्डियन द्वीपो से सीरे (मौलेसेज) का आयात प्रतिबन्धित कर दिया। परन्तु कानून को लागू करने के लिए यह उसके सिद्धान्तो के विरुद्ध था। ऐसा करने का प्रयत्न कौलोनियल विरोध कहलाता होता। सन् १७३१ मे उसने गणनीय वस्तुओ की सूची मे से चावल निकाल दिया। उसने इसके लिए अनुमति दे दी कि वह कौलोनीज से सीधा मैडीटेरियन बन्दरगाहों को भेजा जा सकता था। सन् १७३६ मे उसने चीनी के साथ भी उसी प्रकार की रियायत की।

उसका चरित्र—

वालपोल, ग्रामीण भद्र पुरुषो के दल का नेता था। वह स्वय भी एक ग्रामीण था। वह ग्रामीण रुचियो का शौकीन था। खेल तथा शिकार उसके मस्तिष्क मे जनता के मामलों की भाँति ही महत्वपूर्ण थे। उसके पास चित्रों का जो संग्रह था उसमे वह बडा शुष्क निर्णायक था। कहा जाता है कि साहित्यिक अभिरुचि का उसमे अभाव था। वह एक अच्छा वक्ता था यद्यपि कि अच्छा भाषण करने वाला न था। जिन आदर्शों मे वह विश्वास न करता था उन पर वह हंसता था। उनके समय मे राजनीति भ्रष्टाचार साधारण बात थी। यद्यपि वह व्यक्तिगत रूप मे ईमानदार था परन्तु वह दूसरो के भ्रष्टाचार का लाभ उठाने से न हिचकता था। उसके शत्रु, विशेषतः बौलोगब्रोक की धारणा थी कि वह बेईमान था। वह कहता था वाल्पोल ने अनुचित साधनो से धन एकत्रित किया था। वह अभियोग गलत था। वह धनी था परन्तु उसके धन के स्रोत ज्ञात थे। उने पैतृक सम्पत्ति मिली थी। उसकी पत्नी साधन सम्पन्न महिला थी। उसने स्वय भी अनेक साधनों से धन उपार्जित किया था।

उसका विवेचन

उसके कार्यकाल मे ग्रेट ब्रिटेन ने अपना व्यापार बढ़ा लिया तथा अपने

साधनो को उत्तमतर कर लिया। इसी के कारण था कि आने वाले फ्रान्स के संघर्ष मे वह कौलोनियल साम्राज्य के संघर्ष में अपने पड़ोसी का सामना कर सका एवं उसे पराजित कर सका इसका श्रेय वाल्पोल को ही है कि देश की आर्थिक तथा व्यापारिक पद्धति मे प्रथम परिवर्तन हुआ। इसका श्रेय भी वाल्पोल को है कि इंगलैन्ड को इतनी लम्बी अवधि के लिए शान्ति और समृद्धि मिली कि जैकोविट्स कोई गति न कर सके। इससे भी ऊपर यह कि वाल्पोल उन गिने चुने नेताओ मे से था जिसने शान्ति की नीति मे राष्ट्र का हित पूरी तरह अनुभव किया।

२५—सप्तवर्षीय युद्ध
(The Seven Years' War)

प्रश्न ७४—सप्त वर्षीय युद्ध के कारणो तथा प्रभावो का विवेचन कीजिए।

उत्तर—भूमिका :—

फ्रैडरिक महान ने सन् १७४० मे सिलीसिया (Silesia) पर आधिपत्य कर लिया। इसके साथ ही महान यूरोपियन संघर्ष आरम्भ हुआ। इसका अन्त सन १७६३ की सन्धि से हुआ। वर्लेन (Berlen) की सन्धि (१७४२) ने सिलीसिया के अतिक्रमण को मान्यता दी। परन्तु मैरिया थैरिसा तथा फ्रैडरिक जानते थे कि यह मान्यता अन्तिम न थी। छः वर्ष तक युद्ध चला। इसका अन्त 'ऐक्स ला चैपला की शान्ति' (Peace of Aix-la-chapelle) द्वारा हुआ। यूरोप मे पुनः शान्ति स्थापित हुई। परन्तु सारे देश जानते थे कि यह सन्धि के अतिरिक्त और कुछ न था। दो वड़े प्रतिद्वन्द्वी ग्रुप थे—पर्सिया और आस्ट्रिया तथा इङ्गलैंड और फ्रान्स। उनकी प्रतिद्वन्दता अभी समाप्त न हुई थी। आस्ट्रिया ने दृढ रूप से सिलीसिया को पुनः प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने फ्रान्स से मित्रता कर ली। इङ्गलैंड, भारत तथा अमेरिका मे फ्रान्स का प्रभाव समाप्त कर देने पर तुला हुआ था। अतः वह पर्शिया के साथ हो गया। जव इस प्रकार के गठ वन्धन हो गए तो युद्ध आरम्भ हो गया।

सप्तवर्षीय युद्ध के कारण—

सप्त वर्षीय युद्ध दो प्रश्नो को निपटाने के लिए हुआ—महाद्वीप की शक्तियां नई पर्शिया के प्रभुत्व के समक्ष समर्पण कर दे अथवा ग्रेट-ब्रिटेन अन्तर्देशीय नाविक साम्राज्य फ्रान्स के व्यय पर पोषित हो। पर्शिया ने ग्रेट इलैक्टर्स के समय मे उन्नति करना आरम्भ कर दिया था। परन्तु आस्ट्रियन राज्याधिकार के युद्ध मे यह उसकी विजय थी जिसने उसे यूरोप की महान शक्तियो मे स्थान दिला दिया। इससे आस्ट्रिया तथा फ्रान्स उससे ईर्ष्या करने लगे। वे उसकी महानता स्वीकार करने को तैयार न थे वे उसके परो को बाध देना चाहते थे ताकि वह ऊंचा न उड सके। आस्ट्रिया तथा फ्रान्स की यह ईर्ष्या ही सप्तवर्षीय युद्ध का मुख्य कारण थी।

दूसरा कारण ऐंग्लो फ्रैन्च प्रतिद्वन्दता थी। ऐक्स ला चैपला की सन्धि ने उनके सम्बन्धों को अधिक अच्छा नही किया। इसने केवल सन्धिकाल प्रदान किया। अतः यह आवश्यक था कि प्रश्न स्थायी रूप से हल हो। इंगलैन्ड इस वात के लिए तैयार न था कि फ्रान्स को भारत पर अपना प्रभाव बढ़ाने की अनुमति दे। अतः यह कहा गया है कि "आस्ट्रिया के लिए 'सप्त वर्षीय युद्ध' पर्शिया को नष्ट करने का एक प्रयत्न था, यह इङ्गलैड तथा फ्रान्स के बीच के महान औपनिवेशिक संघर्ष मे एक मोड़ विन्दु था।'

सन्धियां—

सन् १७५३ मे दो सन्धियो के द्वारा सप्तवर्षीय युद्ध का अन्त किया गया। पहली, पेरिस की सन्धि थी जो कि इङ्गलैड, फ्रान्स और स्पेन के वीच हुई। दूसरी ह्यूवर्टस वर्ग (Hubertsburg) की सन्धि थी जो कि आस्ट्रिया तथा पर्शिया के वीच हुई। पेरिस की सन्धि द्वारा इङ्गलैड को फ्रान्स के तट पर वड़े प्रदेश मिले। इङ्गलैड को उत्तरी अमेरिका मिला। भारत मे फ्रान्स ने फैक्ट्रियां पुनः प्राप्त करली। परन्तु उन्हे वहां सैनिक स्थापना की अनुमति नही दी गई। इङ्गलैड ने स्पेन से फ्लोरिडा की पैनिनमुला प्राप्त की। उसने हुन्डुराज (Hunduras) मे लट्ठे काटने का अधिकार प्राप्त किया। इस प्रकार पेरिस की सन्धि द्वारा इङ्गलैड का साम्राज्य वहुत वढ़ गया। पर्शिया और आस्ट्रिया

उसी स्थिति में रहे जिसमे कि वे युद्ध के आरम्भ मे थे। फ्रैडरिक को सिलीसिया वनाए रखने की अनुमति मिल गई।

सप्त वर्षीय युद्ध के प्रभाव—

सप्त वर्षीय युद्ध ने यूरोप मे 'शक्ति के सतुलन' (Balance of Power) में वहुत महान परिवर्तन किए। प्रथमतः इङ्गलैंड, यूरोप मे एक महत्वपूर्ण राष्ट्र हो गया। वह सर्व प्रथम तथा सबसे अग्रणी कोलोनाइजिंग शक्ति माना जाने लगा। परन्तु सत्यता यह थी कि उसकी स्थिति दुर्वल हो गई थी। उसने फ्रैडरिक महान को क्रुद्ध कर दिया था। अतः वह भविष्य मे उससे सहायता प्राप्त करने की आशा न कर सकता था। सन् १७६३ के निश्चयानुसार इङ्गलैंड, निसन्देह, विजयी था परन्तु वह अकेला रह गया था। फ्रान्स इङ्गलैंड से अपना वदला लेना चाहता था। यह अवसर उसे उस समय मिला जव अमेरिकन स्वतन्त्रता का युद्ध आरम्भ हुआ।

दूसरे, पर्शिया यह दावा करने लगा कि वह इङ्गलैंड की महान शक्तियो में से एक है। "जर्मनी मे नेतृत्वता के लिए वर्लिन तथा वियना के दरवारो के वीच होने वाले संघर्ष मे जर्मनी को युद्ध-स्थल वनना था।"

तीसरे, युद्ध के वाद रशा (Russia) एक महानशक्ति होगया। चौथे, आस्ट्रिया ने फ्रैडरिक का एक वडा प्रतिद्वन्दी स्वयं को सिद्ध किया यद्यपि वह युद्ध से शिथिल था। उसकी स्थिति निश्चित ही सन् १७४१ की उसकी स्थिति से उत्तम थी।

अन्ततः युद्ध, फ्रान्स तथा स्पेन के लिए एक वडा दुर्भाग्य सिद्ध हुआ। फ्रान्स ने अपने बहुत से उपनिवेश खो दिए। वह उपनिवेशो पर शासन करने की अव कल्पना भी न कर सकता था। उपनिवेशो की उसकी क्षति ने उसे यूरोप मे दुर्वल कर दिया।

उपसंहार—

साराश मे हम कह सकते है कि 'सप्त वर्षीय युद्ध' ने संसार का मानचित्र ही वदल दिया। इसलिए इस युद्ध को विश्व इतिहास में एक मोड़ विन्दु कहा गया है।

———

२६—जार्ज तृतीय
(George III)

प्रश्न ७५—जार्ज तृतीय राजा के अधिकार को पुनः प्राप्त करना चाहता था। उसके द्वारा क्या प्रयत्न किए गए तथा उनका क्या प्रभाव था ?

अथवा

प्रश्न ७६—जार्ज तृतीय के शासनकाल में सम्राट् की शक्ति की वृद्धि के क्या कारण थे ?

उत्तर—सन् १७६० में जार्ज द्वितीय सम्राट हुआ। अपने शासनकाल के प्रारम्भ से ही वह उस थोड़े से अधिकारो के प्रभाव से असंतुष्ट था जो कि वह जनता के कार्यों से सम्बन्धित अधिकार रखता था। वह अपनी शक्ति की तुलना प्रारम्भ के अँग्रेज शासकों की शक्ति से करता था। ट्यूडर्स ने देश पर शासन किया था तथा स्टुअर्टस भी शासक रहे थे। यहाँ तक कि विलियम तृतीय तथा ऐनी (Anne) तक जनता से सम्बन्धित मामलो मे अपना अधिकार रखते थे। जार्ज प्रथम के समय तक राजतन्त्र महत्वपूर्ण नही हुआ। जार्ज तृतीय ने भी अपने अधिकारो तथा शक्तियो की तुलना अपने समय के अन्य यूरोपीय सम्राटो से की। रूस मे कैथेरिन द्वितीय पर्शिया मे फ्रैडरिक महान, आस्ट्रिया मे मैरिया थिरैसा, स्पेन मे चार्ल्स तृतीय निरंकुश सम्राट थे। वे तथा कम महत्व के बहुत से शासक निरंकुश शासक समझे जाते थे। अठारहवीं शताब्दी के यूरोपीय वादशाह अपनी जनता के लाभ के लिए शासन करने का प्रयत्न करते थे। वे अपने पद को पवित्र ईश्वरीय मानते थे। परन्तु यद्यपि महान सुधार हुए परन्तु वे सब सम्राट की ओर से प्रारम्भ हुए जनता की ओर से नही। सरकार जनता के लिए थी परन्तु जनता की नही थी। यूरोप मे राजा उदार थे परन्तु निरकुश भी थे। और जार्ज निरकुश बनने की स्थिति मे न था।

राजकीय शक्ति के इस ह्रास का कारण वह ह्विग्स (Whigs) के अनुचित रूप से समृाटो के कार्यों पर अधिकार कर लेने का कार्य मानता था। उसकी राय मे जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय भी दोष मुक्त न थे। परन्तु ह्विग

दल (Whig party) देशभक्त राजा की विशेष अरुचि थी। वह प्रारम्भ से ही इसे उखाड़ फेंकने को दृढ संकल्प था।

कुछ भी सही, वैधानिक स्थिति पूर्ण स्थापित थी। स्टुअर्ट राजाओ के दिन जो कि विना पार्लियामेन्ट के शासन कर सकते थे वहुत पहले वीत चुके थे। विधान के संचालन के लिए पार्लियामेन्ट आवश्यक थी। इसकी मीटिंगें नियमित रूप से होती थी। राजा के मन्त्रियो को अपने पीछे पार्लियामेन्ट का वहुमत साथ रखने के योग्य होना चाहिए। किसी प्रकार वह उस दशा मे तो खोई शक्ति को किसी अंश तक प्राप्त कर सकता था। यदि वह ऐसी व्यवस्था कर पाता जिन मन्त्रियो की वह स्वीकृति देता उनको हाउस आफ कामन्स का समर्थन प्राप्त होता।

उसने अनुभव किया ह्विग पार्लियामेन्ट का वहुमत अनुचित साधनो द्वारा चल रहा था। वह इस वात को भली भाँति जानता था कि उस पद्धति को असफल करके ही ह्विग्स. से मुक्ति हो सकती थी। इसको चालू करने के लिए उसने स्वयं अपनी ओर से पद्धति के तरीके अपनाने का प्रस्ताव रखा। उन तरीको के द्वारा जो कि न्यूकैस्टिल (Newcastle) के तरीको की नकल थे, उसने पार्लियामेन्ट के मेम्वरो के एक ग्रुप का समर्थन प्राप्त कर लिया। राजा, प्रतिष्ठा का दाता था। वह लोगो को उपाधियाँ, नियुक्तियाँ तथा वृत्तियाँ वितरित करने की स्थिति में था। वह विभिन्न प्रकार से लालची राजनीतिज्ञो के समक्ष लुभावनी शर्ते रख सकता था। वे लोग जो कि राजनीति के खेल मे इसलिए भाग लेते थे कि इससे जो मिल सके प्राप्त किया जाय। वे राजा के साथ स्वयं को जोड़ने के लिए तत्पर थे। वह सदैव प्रभाव में था जव कि कोई दल विशेप वचित भी रह सकता था। नया दल 'किंग्स-फ्रेंड्स' कहलाता था। यह राजा की इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर था अर्थात् उनका समर्थन करने को जिनका राजा समर्थन करे तथा उनका विरोध करने को जिनका वह विरोध करे।

राजा की योजनाएँ इस अनुमान पर आधारित थी कि ह्विग्स तथा टोरी सदैव एक दूसरे का विरोध करेंगे। अतः किंग्स फ्रेंड्स के दल के लिए यह आवश्यक था कि वह अपने दल में उतने सदस्यो से ज्यादा कर ले जितना उन

दोनो दलो (ह्विग्स तथा टौरो) की सख्या मे अन्तर हो। जव उसका दल इस स्थिति पर पहुँच गया तो राजा राजनैतिक परिस्थिति का स्वामी हो गया। उसके मित्र टौरीज (Tories) के साथ मत देकर ह्विग्स को कार्यालय के बाहर खदेड़ सकते थे।

फिर भी जार्ज का, टौरी दल के आश्रित वनने का वैसा कोई विचार न था जैसा कि उसके पूर्वज ह्विग्स के आश्रित रहे थे। परन्तु इसका भय कम था। ह्विग्स जो सिद्धान्त मानते थे, उनका आवार था कि राजा, पार्लियामेन्ट के आधीन है। टौरीज उन व्यक्तियो के राजनैतिक उत्तराधिकारी थे जिन्होने कि सम्राट का उसके शत्रुओ के विरुद्ध समर्थन किया था। और यद्यपि कि अब सिंहासन पर दूसरी पंक्ति का अधिकार था तथापि नए टौरी ह्विग्स की अपेक्षा अधिक सहायक और सहयोगी होगे।

जार्ज की योजनाओ को कार्य-रूप मे आने मे कुछ वर्षं अवश्य व्यतीत हो गई। उसके शासनकाल के प्रथम दस वर्षों मे अनेक मन्त्रिमडलीय परिवर्तन हुए। जव यह राजा हुआ, पिट (Pitt) तथा न्यूकैस्टिल (Newcastle) तव भी कार्य पर थे। जार्ज ने इसे अपना कार्य वना लिया कि उन्हे शीघ्र से शीघ्र हटाया जाय। यदि वह स्पष्ट दूरदर्शिता का व्यक्ति होता तो उसने अनुमान लगा लिया होता कि पिट, यद्यपि एक ह्विग होते हुए भी उस पद्धति से असहमत था, जिसके द्वारा कि न्यूकैसिल सरकार को साथ रखता था। उसने इन परिस्थितियो मे पद स्वीकार करने की सम्मति इसलिए दे दी कि सप्तवर्षीय युद्ध मे फ्रान्स को हराना आवश्यक था। पिट तथा युवक राजा मे एक समझौता हो गया होता जिसके परिणामस्वरूप पुराना ह्विग ग्रुप अधिकार से वंचित हो गया होता, भ्रष्टाचार कम हो गया होता और पार्लियामेन्ट मे सुधार हो गया होता। परन्तु इस प्रकार की व्यवस्था ने पिट को राजा से अधिक सर्वोच्च वनाया होता।

छोटे पिट के पद ग्रहण करने के साथ ही जार्ज तृतीय की व्यक्तिगत शक्ति क्रमशः कम हो गई। पिट, नौर्थ की भाँति राजा का भोपू (Mouth piece) न था। वह उच्च चरित्र का नेता था जिसने अपने निर्णय को राजा के आधीन करने की अपेक्षा त्यागपत्र देना अधिक उत्तम समझा होता।

उसके कार्यकाल में उस पागलपन के प्रथम चिन्ह जिन्होने कि राजा को घेरा, बाद के वर्षों मे प्रकट हुए । जार्ज तृतीय का नियन्त्रण जनता पर से कम हो गया । उसका दल छिन्न-भिन्न हो गया । एक अँग्रेज राजा का अन्तिम गंभीर प्रयत्न शासन एवं नियन्त्रण करने का असफल हो गया ।

२७—अमेरिकी स्वतन्त्रता का युद्ध
(The War of American Independence)

प्रश्न ७७—वे घटनाएं बताओ जिनसे अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध का श्रीगणेश हुआ ।

अथवा

प्रश्न ७८—अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध का एक संक्षिप्त विवरण दो ।

अथवा

प्रश्न ७९—अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध के कारणों तथा प्रभावों का संक्षेप में वर्णन करो ।

उत्तर—भूमिका :—

अमेरिका तथा आयरलैंड ब्रिटिश नेतृत्व की महान असफलताएं प्रकट करते हैं । इङ्गलड ने अमेरिका को एक सौ पचास वर्ष से अधिक पूर्व खो दिया था । आयरलैंड उसने महायुद्ध के पश्चात खो दिया ।

अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध के कारण—

अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण कारण राष्ट्रीयता का उदय था । अमेरिकन राष्ट्र, इङ्गलैंड से राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता मांगता था । यह अस्वीकृत कर दी गई । जिसके परिणाम स्वरूप अमेरिकी स्वतन्त्रता का युद्ध आरम्भ हुआ । अमेरिकन्स नें अपने देश की सरकार में उचित रूप से अपने भाग का दावा किया । वे यह न चाहते थे कि ब्रिटेन द्वारा नियुक्त अधिकारियो द्वारा वे शासित हो ।

तीन प्रकार की कठिनाइयां—

(१) वे कठिनाइया जो कि गवर्नमेन्ट की पद्धति से उत्पन्न होती थीं (२) वे कठिनाइयां जो कि अग्रेजी व्यापार से उत्पन्न होती थी; तथा (३) वे

कठिनाइयां जो कि कौलोनियल प्रतिरक्षा एवं नए राज्यो की व्यवस्था की समस्या से उत्पन्न होती थी। इन सव प्रश्नो के वारे मे कौलोनियां (उपनिवेश) तथा मातृ देश की अपनी-अपनी कठिनाइयाँ थी। जब तक कि कौलोनिस्ट्स को फ्रान्स से आक्रमण का भय रहा, उन्होने गृह-सरकार (Home-Government) को सहन किया। सप्त वर्षीय युद्ध ने यह भय समाप्त कर दिया। फ्रान्स अमेरिका पर आक्रमण न कर सकता था। अतः कौलोनिस्टस को अब ब्रिटिश सहायता की आवश्यकता न थी।

तत्कालीन समस्या वैधानिक थी। ब्रिटिश पार्लियामेन्ट मे अमेरिकन्स का कोई प्रतिनिधित्व न था। इन परिस्थितियो में अमेरिकन्स द्वारा एक प्रश्न उठाया गया—"क्या अंग्रेज लोग, अमेरिका के लिए नियम वनाने को कानूनी तौर पर अधिकारी थे ?" सन् १७६५ में इस प्रश्न ने गंभीर रूप धारण कर लिया। ब्रिटिश प्राइम-मिनिस्टर, जार्ज ग्रैनविले (George Grenville) ने अमेरिकन्स पर एक 'स्टैम्प एक्ट' (Stamp Act) लगाया। वे इसे स्वीकार करने को तैयार न थे। वे कहते थे कि ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को उन पर कर लगाने का कोई कानूनी अधिकार न था। उसमें कोई भी चुना हुआ अमेरिकन सदस्य न था। उनका नारा था, "विना प्रतिनिधित्व के, कोई कर नही" (No taxation without representation) ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने अमेरिकन्स की आपत्तियो को सुना अनसुना कर दिया। उनका मत था कि ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को उन पर टैक्स लगाने का अधिकार था। प्रारम्भ मे कौलोनिस्ट्स तथा होम गवर्नमेन्ट के वीच समझौता कराने के प्रयत्न किए गए। परन्तु जैसे ही प्रयत्न असफल हुए, ब्रिटिश ने अमेरिकन्स के विरुद्ध दमन की नीति प्रयोग की। इससे आग मे घी पडा। अमेरिकन्स ने खुले रूप से सन् १७७५ मे विद्रोह कर दिया।

अमेरिकन्स की सफलता—

कौलौनीज के नेताओ ने सन् १७७६ मे अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी। उन्होने स्वतन्त्रता का घोषणा पत्र जारी कर दिया। सन् १७७७ में ऐसा लगा मानो ब्रिटिश, युद्ध जीत लेगा। परन्तु छः वर्ष के युद्ध के पश्चात फल अमेरिका के पक्ष मे था। यह आंशिक रूप से तीन कारणों से हुआ। इङ्गलैंड मे कार्य

अव्यवस्था थी। जार्ज वाशिंगटन एक असाधारण जनरल सिद्ध हुआ। अमेरिकन्स अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जोश से उबल रहे थे। परन्तु मुख्य कारण यूरोपीय शक्तियो—रूस, फ्रान्स तथा स्पेन का हस्तक्षेप था।

यूरोपीय शक्तियों का हस्तक्षेप—

फ्रान्स तथा स्पेन में इङ्गलेंड के प्रति गहन ईर्ष्या थी। उनमे सदैव इङ्गलेंड से बदला लेने की इच्छा की आग जलतो रहती थी। सप्त वर्षीय युद्ध ने फ्रान्स तथा स्पेन के मूल्य पर इंगलेंड को समर्थ कर दिया था। पेरिस की सन्धि (१७६३) के अनुसार फ्रान्स को अपना उत्तरी अमेरिकन साम्राज्य इगलेंड को देना पड़ा था। इसमे कॅनाडा सम्मिलित था। फ्रान्स के पास भारत में केवल थोड़े से नगर रह गए थे। स्पेन से इंगलेंड ने फ्लोरिडा प्राप्त किया। उसे हौन्डराज (Honduras) मे लट्ठे काटने का अधिकार मिला। अतः यह स्वाभाविक था कि फ्रान्स तथा स्पेन उस अवसर का लाभ उठाने जो कि उन्हें अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध ने दिया था। उन्होंने वहा, इङ्गलेन्ड को, विभिन्न प्रकार से परेशान करना शुरू कर दिया।

वर्जीनियस (Vergenues) उस समय फ्रेन्च मंत्री था। उसने फ्रेन्च किंग को एक प्रसिद्ध स्मृति-चिन्ह भेंट किया। इस स्मृति चिन्ह में विशेष बात यह थी कि फ्रान्स को इङ्गलेंड के विरुद्ध खुले तौर पर नही लड़ना चाहिए। बल्कि उसे इंगलेंड को हर प्रकार से तंग करना चाहिए। फ्रेन्च राजा ने अपने मंत्री का सुझाव पसन्द किया। सन् १७७८ में फ्रान्स, अमेरिकन्स का मित्र हो गया। उसने इङ्गलेंड के विरुद्ध खुलकर उनकी सहायता करना शुरू कर दिया। उसने सैनिक तथा युद्ध-सामग्री अमेरिका को भेजी। सन् १७७९ में स्पेन भी अमेरिका का मित्र हो गया।

मामले यही समाप्त नही हुए। सन् १७८० में रूस की कैथेरिन द्वितीय (Catherine II), उत्तर की सशस्त्र तटस्थता (Armed Neutrality of The North) की स्वामिनी हो गई। वह इगलेंड के उस दावे को रोकने के लिए बनाई गई थी जो कि उसने तटस्थ देशो के जहाजो में युद्ध-सामग्री की तलाशी का किया था। पर्शिया, आस्ट्रिया, पुर्तगाल, स्वीडन, हालेंड तथा डेनमार्क ने इस लीग (संघ) को अपना पूरा सहयोग दिया। इस प्रकार

इसने समुद्र पर इङ्गलैंड को खुली चुनौती दे दी। यह संघ युद्ध की स्थिति तक तो न पहुँचा। परन्तु इङ्गलैंड की स्थिति बहुत सोचनीय हो गई। उसी समय से इङ्गलैंड तथा रूस के बीच की खाई उत्तरोत्तर चौड़ी ही होती गई।

अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध के प्रभाव—

अमेरिकी स्वतन्त्रता का युद्ध एक अ-यूरोपीय (Non-European) युद्ध था। परन्तु इसके प्रभाव अमेरिका तथा यूरोप दोनो में अनुभव किए गए। इन प्रभावो पर हम निम्न पंक्तियों मे विचार करेंगे :—

(१) गणतन्त्रवाद की विजय—युद्ध ने राजतन्त्र (निरंकुशता) के सिद्धान्त का बहिष्कार किया। इसने गणतन्त्रवाद के सिद्धान्त को विशेष प्रोत्साहन दिया। अटलांटिक के दूसरी ओर एक गणतन्त्र उत्पन्न किया गया। यद्यपि यह यूरोप से दूर है फिर भी इसका प्रभाव महाद्वीप मे सदैव अनुभव किया गया है। यह एकाकी रहने का प्रयत्न करता है। परन्तु मनरो सिद्धान्त (Monroe Doctrine) सिद्ध करता है कि यह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुत अधिक रुचि ले रहा है। इसने दो विश्व-युद्धों मे प्रमुख भाग लिया है। आज यह संसार के सबसे अधिक शक्तिशाली गणतन्त्रो मे से एक है।

(२) इङ्गलैन्ड पर प्रभाव—अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध ने इङ्गलैन्ड पर एक बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव डाला। उसने अनेक विनाशो को उठाया। उसकी प्रतिष्ठा कम हो गई। उसका साम्राज्य कम हो गया। इङ्गलैन्ड की पराजय ने इस विश्वास को लोकचर्चा बना दिया कि इङ्गलैन्ड का इतिहास समेट दिया गया। ब्रिटिश पार्लियामेन्ट की तुलना वारशा की डाइट (Diet of Warshaw) से की गई। अंग्रेजी राजनैतिक दलो की तुलना पोलैन्ड के दलीय विरोध से की गई। यह दृढ विश्वास किया जाता था कि इङ्गलैन्ड का सूर्य अस्त हो चुका था। यहाँ तक कि शक्तिशाली और बुद्धिमान शासक जैसे कि रूस की कैथेरिन, आस्ट्रिया का जोजेफ तथा पर्शिया के फ्रेडरिक द्वितीय तक का यही विश्वास था।

राजनैतिक दृष्टिकोण से, उपर्युक्त विचार मे एक महान औचित्य प्रतीत होता है। युद्धकाल मे ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने अपनी अकुशलता अनेक प्रकार से दिखाई। युद्ध के मामलो मे बहुत सी अव्यवस्था थी। यह बदनाम तथा असफल

था। जब ह्विग्स (Whigs) ने शक्ति सँभाली उन्होंने अमेरिका के साथ वर्सैलीज की सन्धि (१७८३) (Peace of Versailles) की। इसके द्वारा उन्होंने अमेरिका गणतन्त्र की स्वतन्त्रता स्वीकार करली। ह्विग्स का यह कार्य किसी प्रकार प्रतिष्ठित न था। इससे इङ्गलैन्ड को अमेरिका में अपने उपनिवेश खोने पड़े। उसे एक सम्राज्य खोना पड़ा।

- परन्तु इसके बावजूद भी इंगलिश विधान बचा लिया गया। जार्ज तृतीय की अमेरिकन नीति असफल हो गई। इसका अर्थ 'राजा की पद्धति' का तोड़ना था। इसका अर्थ पार्लियामेन्टरी तथा मन्त्रिमंडलीय सरकार का सामूहीकरण भी था। राजा को ह्विग्स (Whigs) से उड़ कर पिट (Pitt) की ओर जाना पड़ा। उसमे उसने एक स्वामी पाया।

(३) फ्रान्स पर प्रभाव—

वर्जीनंस की नीति सफल थी। फ्रान्स, इङ्गलैन्ड से अपना बदला लेने में समर्थ था। परन्तु यदि हम गहराई से विचार करे तो देखते है कि अमेरिकी स्वतन्त्रता का युद्ध फ्रान्स के लिए बहुत सी आपदाएँ लाया। प्रथमतः उसने बड़ी आर्थिक क्षति उठाई। वह दिवालिएपन की सीमा तक पहुँच गया। टरगोट (Turgot) जैसे राजनीतिज्ञो ने वर्जीन्यीज की नीति की आलोचना की। उसकी आलोचना मे विशेष औचित्य था। उसने लुइस चौहदवें को चेतावनी दे दी थी कि युद्ध फ्रान्स का दिवाला निकाल देगा। और यह सही सिद्ध हुआ।

दूसरे, अमेरिका के लिए फ्रेंच सहायता ने बहुत से फ्रेंचमैनो को क्रांतिकारी बना दिया। वे फ्रान्स मे एक गणतन्त्र के बारे मे सोचने लगे। इससे देश मे राजतन्त्र कमजोर हो गया। फ्रान्सीसियों ने स्वतन्त्रता तथा समानता के अमेरिकी आदर्शों को पसन्द किया। इन आदर्शों ने फ्रान्सीसियो को इतना अधिक प्रभावित किया कि वे प्रतिक्रियावादी हो गए। यह फ्रान्स में राजतन्त्र के खतरे का कारण हुआ। कुछ वर्ष पश्चात, गणतन्त्रवाद का विचार यूरोप में गूँज गया।

(४) स्पेन पर प्रभाव—युद्ध मे लगकर, स्पेन ने भी थोड़ा लाभ उठाया। उसे मिनोर्का तथा फ्लोरिडा (Minorca and Florida) मिला

परन्तु उसने खोया बहुत। स्पेनिश उपनिवेशो ने अमेरिका के उदाहरण का अनुकरण किया उन्होने स्पेन का जुआ (Yoke) उतारा और स्वतन्त्र हो गए।

(५) हालैन्ड पर प्रभाव—हालैन्ड को बड़ी व्यापारिक क्षति उठानी पड़ी। वह पहले से ही दुर्वल था। अब वह और दुर्वल हो गया।

इस प्रकार अमेरिकी स्वतन्त्रता के युद्ध ने यूरोप के लगभग सभी देशो को प्रभावित किया।

२८—फ्रान्सीसी क्रान्ति का प्रभाव

(The Influence of the French Revolution)

प्रश्न ८०—फ्रान्सीसी क्रान्ति की क्या प्रमुख भावना थी ? इंगलैंड के देशों पर उनका क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—स्वतन्त्रता, समानता एवं भ्रातृत्व का अभाव—

फ्रान्सीसी क्रान्तिकारियो का नारा स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व था। फ्रान्स मे उस समय तक इनका अभाव था। वौरवौन्स (Bourbons) के अधीन, फ्रैन्च मैनो ने इनका आनन्द कभी न लिया था।

फ्रान्स मे स्वतन्त्रता का पूर्ण अभाव था। सरदारो सामन्तों को वहुत सी सुविधाएँ प्राप्त थी। परन्तु चूँकि वे देश थे अतः उन्हे राजा पर निर्भर रहना पड़ता था। वे सदैव किसी कृपा के लिए उसकी प्रतीक्षा करते। वे आस्ट्रिया के नोविल्स की भाति शक्तिशाली न थे। ग्रेट ब्रिटेन के नोविल्स की भाति वे राष्ट्र के नेता भी न थे। राजा के समक्ष वे शक्तिहीन थे।

चर्च (धर्म) को पापेसी (Papacy) के नियन्त्रण से मुक्त किया जा चुका था। परन्तु पहले के स्थान पर इसे दूसरा स्वामी मिल गया था। यह राजा के पूर्ण नियन्त्रण में था। वह चर्च के प्रति भी उतना ही स्वेच्छाचारी था जितना कि जन साधारण के प्रति था। प्रत्यक्षतः फ्रैन्च चर्च स्वतन्त्रता का उपभोग करता था। परन्तु, वास्तव मे, यह राजा के निरकुश नियन्त्रण के अन्तर्गत था।

जहां तक मध्यम श्रेणी के लोगों तथा कृपको का सम्वन्ध था उन्हे न तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त थी और न वैधानिक सुरक्षा। उनकी स्थिति वहुत ही दयनीय थी।

फ्रेंच राज्य तथा फ्रेंच समाज का आधार समायता का न होना था। प्रथम वर्ग विभिन्न प्रकार की सुविधाओ का उपभोग करता था। उदाहरण के लिए वहां राजा की सुविधाएं थी, नौविल्स (Nobles) की सुविधाएं थे तथा धर्मशास्त्रियो की सुविधाएं थी। मध्यम तथा निम्न श्रेणी (वर्ग) के लोगो के लिए कोई सुविधाएँ न थी। इसके विपरीत उन्हे दूसरो की सुविधा के लिए कर चुकाना पड़ता था। इस प्रकार वे निर्दयता से कुचले हुए थे।

इस प्रकार के समाज में कोई भ्रातृत्व न हो सकता था। इसकी कल्पना करना ही एक मूर्खता थी। फ्रान्स के लोगो के मस्तिष्क मे अब तक राजनीति के क्षेत्र में वर्ग युद्ध का कोई विचार न था। परन्तु अप्रत्यक्ष में वे लगभग इसे चाहते थे। एक वर्ग से दूसरे वर्ग के परस्पर सामान्य सम्वन्ध ज्ञात न थे। इसका कारण यह था कि नौविल्स (Nobles) तथा धर्मशास्त्रियो की सुविधाएँ एक वड़ा रोड़ा उपस्थित करती थी। जव तक कि वह रोड़ा दूर न हो जाय कोई भ्रातृत्वता न हो सकती थी।

क्रान्ति के अन्तर्गत, स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व—

पुराने राजतन्त्र का पतन हो गया। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ही आवाज सुनाई पड़ती थी। यह आवाज, स्वतन्त्रता, समानता एवं भ्रातृत्व की थी। जैसे ही वौरवौन राजतंत्र (Baurbon Monarchy) नष्ट हुई लोगों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। जैसे ही विशेप सुविधाओ का अंत हुआ उन्हें समानता प्राप्त हुई। वैसे वर्गो के रोडे हटे भ्रातृत्वता एक वास्तविकता होगई।

क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का सारे यूरोप मे प्रसरण—

क्रान्ति के कुछ वर्षो के पश्चात, फ्रांस के लोग प्रोपेगंडा (Propaganda) युद्ध में व्यस्त हो गए। स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व का समाचार फ्रास की सीमा को पहले ही पार कर गया था। यूरोप के वौद्धिक वर्ग इससे प्रोत्साहित थे। सैंन्टपीटर्सवर्ग से लेकर लदन तक वे आशा एवं उत्साह से भरे हुए थे।

क्रान्तिकारी फ्रांस के सैनिको ने स्वयं अब स्वतन्त्रता, समानता एवं

भ्रातृत्व की कथाएँ प्रसारित करना आरम्भ किया। उन्होने यूरोप के लोगो को अपने निरंकुश सम्राटो के विरुद्ध उठने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होने राजा के विरुद्ध उनका पक्ष लिया। क्रान्तिकारी युद्ध के परिणाम स्वरूप, क्रान्तिकारी सिद्धात सारे यूरोप मे फैल गए। उन्होने सभी वर्गों के लोगों को जागृत कर दिया।

क्रान्तिकारी सिद्धान्तों का प्रभाव—

अब हमें उन क्रान्तिकारी विचारो अथवा सिद्धान्तो को देखना चाहिए कि विभिन्न देशो मे उन्होने कैसे कार्य किया। स्वतन्त्रता की स्थापना वैसी ही वस्तु थी जैसी कि प्रजातन्त्र की स्थापना। केवल "जनता की सरकार, जनता के हित के लिए तथा जनता द्वारा चुनी" ही लोगो को स्वतन्त्रता के उपभोग का अधिकार दे सकती थी। महान् विचारो मे से एक विचार जिसने इतिहास की घटनाओं को प्रभावित किया वह यह था कि यूरोपीय राष्ट्रो मे अपने देशों मे जनतन्त्रीय सरकार स्थापित करने की इच्छा थी।

इंगलैन्ड मे स्वतन्त्रता, सन् १८३२, १८६७ तथा १८८४-८५ के सुधारक कानून द्वारा विस्तृत हुई। राज्य के कार्यो मे लोगो के सभी वर्ग लिए जाने लगे। उन्नीसवी शताब्दी की समाप्त से पूर्व श्रमिको (Labour) के प्रतिनिधियो ने हाउस ऑफ कामन्स मे स्थान पा लिए।

फ्रांस मे, सन् १८७१ मे तीसरा गणतन्त्र स्थापित हुआ। फ्रैडरिक की जर्मनी तथा मैटरनिक की आस्ट्रिया मे उत्तरदायी तथा जनतन्त्रीय सरकारें स्थापित हुई। रूस तक मे स्वतन्त्रता का आन्दोलन था। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे जार को ड्यूमा (Duma) स्थापित करना पडा। टर्की मे सन् १९०८ मे एक पार्लियामेन्टरी राजतन्त्र स्थापित हो गया।

समानता के पक्ष मे भी एक आन्दोलन था। इसने विभिन्न वर्गों की सुविधाओ को समाप्त करने की माग का स्वरूप ले लिया। उनमे से बहुत सी सुविधाएँ समाप्त हो गई। रूस मे निरंकुशता बहुत दृढ थी। परन्तु वहा भी प्रभाव पडे बिना न रहा।

क्रान्तिकारी, अपने देश मे विभिन्न वर्गों मे भ्रातृत्वता चाहते थे। वे इसे यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों के बीच भी चाहते थे। उन्होने दलितों की भ्रातृत्वता के

लिए उनके विरोधियो के विरुद्ध घोषणा की। उन्होने निरंकुश शासको के संघ के विरुद्ध यूरोप के राष्ट्रों के भ्रातृत्व का पक्ष लिया।

भ्रातृत्व के सिद्धान्त ने उन्नीसवी शताब्दी के दूसरे अर्ध भाग मे एक नया मोड़ लिया। यह कार्ल मार्क्स (Karl Marx) तथा उसके शिष्यो द्वारा दिया गया। इस सिद्धान्त को उन्होने एक नया अर्थ सुझाया। उन्होने स्वार्थी धनिक सघ (Capitalists) के विरुद्ध पीड़ित श्रमिको की भ्रातृत्वता का विचार प्रतिपादित किया। राजाओ तथा राष्ट्रो के संघर्ष की बजाय उन्होने श्रमिको तथा धनिको के बीच संघर्ष पर बल दिया।

राष्ट्रवाद (Nationalism)—

फ्रैन्च-क्रान्ति ने राष्ट्रवाद के विचार को भी जन्म दिया। अतः इसका प्रसंग देना आवश्यक है। इसका प्रसंग इसलिए भी आवश्यक है क्योकि इसने यूरोप का इतिहाय बदल दिया। मध्ययुग (Middle Ages) के प्रारम्भ से ही राष्ट्रवाद की एक अस्पष्ट भावना यूरोप के लोगो मे विद्यमान थी। फ्रैंच-क्रान्ति द्वारा इसे एक ठोस रूप दे दिया गया। यूरोप के राष्ट्र समझने लगे कि वे अलग इकाइयां थी। अपनी प्रथाओ तथा सस्कृति के कारण वे विभिन्न थे। अतः वे लोग जिनकी प्रथाएँ और संस्कृति एक सी थी, उन्होने एक हो जाने का प्रयत्न किया। उदाहरण के लिए जर्मन राष्ट्र ३५० भागो मे विभाजित था। उन पर विभिन्न राजकुमारो द्वारा शासन होता था। अतः उन्होने एक राजनैतिक इकाई हो जाने का प्रयत्न किया। ऐसा ही इटालियन्स का मामला था। उन पर एक दर्जन निरंकुश शासक थे। भविष्य मे सफलता प्राप्त करने के लिए, उन्होने एक इटैलियन राज्य बनाने का प्रयत्न किया। बाल्कन्स मे क्रिश्चियन राष्ट्रो पर तुर्को का शासन था। उन्होने स्वतन्त्र हो जाने और अपने स्वय के राष्ट्रीय राज्य बनाने का प्रयत्न किया। आस्ट्रिया में लगभग एक दर्जन राष्ट्रीयताएँ थी। उन्होने अलग राष्ट्रीय राज्य बनाने के प्रयत्न किए।

इटैलियन्स तथा जर्मन्स सफल हो गए। बाल्कन राज्य स्वतन्त्र हो गए। हंगरी, आस्ट्रिया का एक भाग बना रहा। इन सब परिवर्तनो ने एक नए यूरोप की रचना की। इन सबका कारण फ्रैन्च-क्रान्ति थी जिसने राष्ट्रवाद का ठोस विचार प्रस्तुत किया।

२६—बड़े पिट
(Pitt, the Elder)

प्रश्न ८१—बड़े पिट के कार्य तथा नीति का वर्णन करो।

अथवा

प्रश्न ८२—बड़े पिट (Chatham) के कार्यों की विवेचना करो।

अथवा

प्रश्न ८३—पिट की विदेश नीति के बारे में जो कुछ तुम जानते हो उसका उल्लेख करो।

अथवा

प्रश्न ८४—"पिट, इंगलैन्ड के सबसे महान् युद्ध-मंत्रियों में से एक था" इसकी विवेचना करो।

अथवा

प्रश्न ८५—पिट ने जर्मनी में उत्तरी अमेरिका पर किस प्रकार विजय प्राप्त की ?

अथवा

प्रश्न ८६—पिट के चरित्र तथा प्रतिभा का संक्षेप में वर्णन करो।

अथवा

प्रश्न ८७—"पिट ने साम्राज्य की रचना नहीं की वरन् कठिन समय में इसकी रक्षा की।" विवेचना करो।

उत्तर—उसके कार्य—

पिट का जन्म सन् १७०८ मे हुआ था। उसका दादा (Grandfather) मद्रास का गवर्नर रह चुका था। प्रारम्भ मे उसकी शिक्षा ऐटन पब्लिक स्कूल (Eton Public School) मे हुई थी। बाद मे वह ऑक्सफोर्ड की यूनिवर्सिटी गया। सन् १३७५ मे वह पार्लियामेन्ट का एक सदस्य हो गया। उस समय ह्विग्स (Whighs) सत्ता मे थे। उनकी बहुत बड़ी बदनामी हुई थी। वे रिश्वतें लेते थे। उनका नेता वाल्पोल था। उन पर पार्लियामेन्ट के अन्य सदस्यो द्वारा आरोप लगाए जाते थे। पिट उनमे शामिल हो गया। एक वर्ष के अन्दर वह पार्लियामेण्ट का प्रमुख सदस्य हो गया। सन् १७३६ मे

वह हाउस ऑफ कामन्स मे सब से महान् वक्ता हो गया। सारा राष्ट्र उसे प्रेम करने लगा। इसके परिणामस्वरूप, ह्विग्स (Whigs) को विवश होकर उसे मंत्रिमंडल में स्थान देना पड़ा। सन् १७४६ मे उसे पे-मास्टर (Paymaster) बना दिया गया। पे-मास्टर के रूप मे वह बहुत लोकप्रिय हो गया। कारण यह था कि वह रिश्वत न लेता था। अन्य पे-मास्टर रिश्वत लिया करते थे। सन् १७५६ मे उसे कैबिनेट (Cabinet) में स्थान दिया गया। परन्तु शीघ्र ही उसे बर्खास्त कर दिया गया। जब सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हुआ, उस समय वह पुनः मंत्रिमंडल मे था। इङ्गलैंड की स्थिति नाजुक थी। लार्ड चैस्टरफील्ड कहता था, "हम देश मे तथा विदेश मे कही के नही हैं। फ्रेंच, अमेरिका मे अपनी इच्छानुसार करने के स्वामी हैं। हम अब राष्ट्र ही नही हैं। मैंने अब तक इतनी दुराशा न देखी थी।"

ऐसी नाजुक परिस्थिति मे, एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति की आवश्यकता थी। वह शक्ति तथा प्रतिभा बड़े पिट (Pitt the Elder) मे थी। सन् १७५७ से १७६१ तक वह अपने देश का वास्तविक शासक रहा।

पिट, युद्ध मंत्री के रूप में—

पिट, इङ्गलैन्ड के सबसे महान युद्ध मंत्रियो (War Ministers) में से एक था। उसको स्वयं पर बहुत बड़ा आत्म विश्वास था। वह डैवनशायर (Devonshire) के ड्यूक से कहता था कि, "मैं जानता हूँ कि मैं देश को बचा सकता हूँ तथा दूसरा और कोई नही बचा सकता।" इस पद का उत्तरदायत्व संभालने के बाद, वह 'हाउस' की व्यवस्था ठीक करने मे लगा। इगलैन्ड की रक्षा करने के लिए, जर्मनी से भाड़े पर काम करने वाले इगलैन्ड बुलाए गए थे। पिट ने उन्हे बर्खास्त कर दिया। उसने बेकार के कमान्डरो जैसे कम्बरलैन्ड के ड्यूक आदि को पद-च्युत कर दिया। उनके स्थान पर उसने वोल्फे (Wolfe) तथा फर्डीनैन्ड (Ferdinand) जैसे योग्य व्यक्तियो को नियुक्त किया। उसने हाइलैन्डर्स (Highlanders) के ट्रूपो की व्यवस्था की। इन सब बातो ने इंगलिश लोगो को नया जीवन दिया। अपनी सुस्ती से वे उठे। जो भी व्यक्ति उससे मिलने गया, उत्साह तथा शक्ति से भर कर

लौटा । कहा जाता था कि "कोई भी व्यक्ति उसके कमरे से शक्ति एवं उत्साह प्राप्त किए विना न लौटता था ।"

युद्ध जीतने की पिट की योजनाएँ—

पिट ने तव युद्ध के लिए योजनाएँ बनाई । उसने भली प्रकार प्रशिक्षित सेनाएँ भेजी । उनके लिए उसने वहुत ही योग्य कमान्डर चुने । उसने जो योजना वनाई वह यह थी कि अमेरिका पर जर्मनी मे विजय प्राप्त की जाय । इस लक्ष्य को सामने रखकर फ्रेंच नेवी को वन्दरगाहो से वाहर भेजने की अनुमति नही दी गई । फ्रांस के तट पर आक्रमण करने के लिए अंग्रेजी सेनाएँ भेजी गईं । उसने पर्शिया को अच्छा खासा धन दिया । इस धन से पर्शिया ने फ्रान्स को युद्ध मे उलझाए रखा । अतः फ्रान्स ने यह संभव न पाया कि वह उन युद्धो मे अपनी सारी शक्ति लगा पाता जो कि भारत तथा अमेरिका में हो रहे थे । उसे यूरोप मे लड़ना था । इगलिश नौसेना ने समुद्र पर पूर्ण नियन्त्रण कर लिया ।

युद्ध के परिणाम—

उपर्युक्त योजना के फलस्वरूप अंग्रेजो ने एक के वाद दूसरी सफलता प्राप्त करना आरम्भ कर दिया । वाल्पोल कहता था ; "हम प्रति प्रातः यह पूछने के लिए विवश हैं कि कौन सी विजय प्राप्त हुई नही तो कोई भूल न जाय ।" सन् १७५६ मे फ्रेन्च आस्ट्रियन्स पराजित हो गए । इसका श्रेय पिट को ही है कि कैनाडा पर विजय हुई । यह ब्रिटिश साम्राज्य का एक अभिन्न अंग हो गया । इससे सवसे महान 'कामन्स के सदस्य' की सवसे महान देन कहा गया है । अंग्रेज जनरल, आयर कूटे (Eyre Coote) ने वान्डेवाश के युद्ध (Battle of Wandewash) मे फ्रान्सीसियो को पराजित किया । इस प्रकार प्रत्येक स्थान पर अग्रेज सफल हुए । वे उत्तरी अमेरिका तथा भारत के स्वामी हो गए ।

युद्ध के कार्यों मे पिट वड़ी कुशलता से कार्य कर रहा था । परन्तु देश मे उसे सन् १७६० के पश्चात एक कठिनाई का सामना करना पड़ा । यह वही वर्ष था जव जार्ज तृतीय इगलैन्ड का राजा हुआ । उसने शासन तथा नियन्त्रण दोनो करने का निश्चय कर लिया था । अतः वह पिट जैसे प्रभावशाली तथा

सशक्त व्यक्ति को और अधिक न रहने देना चाहता था। उसने उसे बर्खास्त करने का निश्चय कर लिया। चूँकि पिट बहुत ही लोकप्रिय था अतः जार्ज ऐसा तुरन्त न कर सका। सन् १७६१ मे उसे अवसर प्राप्त हुआ। पिट ने जार्ज को स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने का परामर्श दिया। राजा ने ऐसा करने से मना कर दिया। अतः पिट ने त्याग पत्र दे दिया। युद्ध का फल प्रतिष्ठित न हो सका।

पिट का मंत्रिमंडल (Pitt's Ministry)—

पिट ने सन् १७६६ मे अपने मन्त्रिमंडल की रचना की। उत्तरी अमेरिका में उसे एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा वह ऐसा करने मे असफल रहा। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसका स्वास्थ्य गिर रहा था। उसने अपने साथियों पर कार्य डाला। अन्ततः सन् १७६८ मे उसने त्याग पत्र दे दिया। उसने क्रियाशील जीवन से अवकाश ले लिया। परन्तु उससे जार्ज तृतीय तथा लार्ड नौर्थ की अमेरिका सम्बन्धी नीति की आलोचना की। वह यह चाहता था कि उत्तरी अमेरिका मे जर्मनी के भाड़े के श्रमिक नियुक्त किए जाय।

पिट का मूल्यांकन (Estimate of Pitt)—

पिट का व्यक्तित्व आकर्षक था। वह एक बहुत अच्छा वक्ता था। अपने भाषण से वह श्रोताओं को मुग्ध कर बांध रखता था। वह बहुत बड़ा देश भक्त था। अपने देश को वह बहुत अधिक प्रेम करता था। वह उसे महान बनाना चाहता था। उसकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान बढ़ाने के लिए उसने भरसक प्रयत्न किया। वह बहुत ही दृढ़ चरित्र का व्यक्ति था। उसकी एक टेढी नजर तथा एक आवेश का शब्द ही उसके विरोधियो को निर्वाक करने को काफी होता था। कैबिनेट मे उसकी इच्छा प्रमुख थी। अपने साथियों से जैसा वह चाहता वैसा करा सकता था।

पिट, इङ्गलेन्ड के सबसे महान युद्ध मंत्रियो में से एक था। जिस समय वह पदासीन था उस समय कोई भी उसके अधिकार को चुनौती देने का साहस न कर सकता था। अपनी योजनाएँ वह बिना अपने साथियों का परामर्श लिए बनाता था। उसने ब्रिटिश युद्ध-पोतो (War-ships) को संसार के विभिन्न भागो में अपने स्वयं के उत्तरदायित्व पर भेजा। ऐडमिरैलिटी को

उनका पता तक न चला। युद्ध मे उसने वहुत सा धन व्यय किया। खजाना प्रार्थना करता, परन्तु उसने इसकी चिन्ता न की। वह यह सब वातें कर सकता था क्योकि सारे लोग जानते थे कि वह ईमानदार था। वह उनके लिए विजय लाता था। वे उसे प्रेम करते थे। फ्रैडरिक महान, उसके वारे मे कहता था, "इङ्गलेन्ड परिश्रम करते काफी समय लगा परन्तु अन्ततः उसने एक व्यक्ति को जन्म दिया।"

३०—छोटा पिट

(Pitt, The Younger)

प्रश्न ८८—छोटे पिट ने सन् १७८३ में किन परिस्थितियों में शक्ति प्राप्त की ?

उत्तर—छोटे पिट, वडे पिट का दूसरा पुत्र था। वह अधिकतर ग्रेट कौमनर (Great Commoner) कहलाता है। उसका जन्म सन् १७५९ मे हुआ था। उसका पिता उसे वहुत अधिक प्यार करता था। वड़े पिट को उससे वड़ी-वडी आशाएँ थी। उसने राजनीति की कला मे निपुण शिक्षा प्राप्त की। इसने उसे उसके भावी जीवन मे वड़ी सहायता दी।

छोटे पिट का स्वास्थ्य अच्छा न रहता था। अतः उसे स्कूल कभी न भेजा गया। उसे घर पर ही प्रायवेट ट्यूटर्स द्वारा शिक्षा दिलाई गई। पन्द्रह वर्ष की आयु में उसे कैम्ब्रिज की यूनीवर्सिटी भेजा गया। वहा उसने सात वर्ष अध्ययन किया। वह एक शान्त स्वभाव का विद्यार्थी था। वह खेलो तथा क्रीड़ाओ मे भाग लेता था। सन् १७८० मे उसने यूनीवर्सिटी छोड़ दी। इसके वाद वह वकालत करने गया। उसी वर्ष वह पार्लियामेन्ट का सदस्य हो गया। सन् १७८२ मे शेलवौर्न (Shelbourne) के मन्त्रिमडल मे एक्सचेकर का चान्सलर (Chancellor of the Exchequer) हो गया। सन् १७८३ मे नौर्थ तथा फौक्स का कोअलीशन (Coalition) मन्त्रिमडल वर्खास्त हो गया। जार्ज तृतीय ने पिट से अपना मंत्रिमंडल वनाने को कहा। इस प्रकार जव वह केवल चौवीस वर्ष का था तभी प्रधान मंत्री

हो गया। प्रधान मत्री के पद पर इतने नवयुवक व्यक्ति की नियुक्ति आश्चर्यजनक थी। अधिकतर कहा जाता था :—

"A sight to make surrounding nations stare.
A nation trusted to a school boy's care."

परन्तु यह लड़का उन आयु मे वृद्ध तथा अधिक अनुभवी राजनीतिज्ञो से अधिक बुद्धिमान सिद्ध हुआ। सत्रह वर्ष तक उन्होने हाउस ऑफ कामन्स मे अपनी स्थिति कायम रखी। सारे लोग यह समझते थे कि पिट असफल होगा। परन्तु ऐसा सिद्ध नही हुआ। इसमे सन्देह नही कि उसे बहुत सी कठिनाइयो का सामान करना पड़ा परन्तु उसने सभी कठिनाइयो पर विजय प्राप्त की। अत्यधिक विरोध से वह अकेला भिड़ा। सन् १७८३ से १८०१ तक उसने पद संभाला। सन् १८०१ से १८०४ तक उसका स्थान ऐडिन्गटन (Addington), द्वारा लिया गया। परन्तु एडिन्गटन, पिट से बडा हेय सिद्ध हुआ। अतः उसे पद त्याग करने को विवश किया गया। उस समय एक गीत बड़ा प्रचलित था।

"Pitt is to Addington.
What London is to paddington."

अतः सन् १८०४ मे एक वार पुनः पिट प्रधान मंत्री हो गया। इसी पद से उसने नेपोलियन के विरुद्ध तीसरी कोलीशन (Third coalition) की रचना की। सन् १८०५ मे ट्रेफ़लगर के युद्ध मे फ्रान्सीसियो पर अंग्रेजो ने विजय प्राप्त की। परन्तु अगले वर्ष आस्टरलिज के युद्ध (Battle of Austerlitz) मे नेपोलियन द्वारा उन्हे सन् १८०६ मे पराजित कर दिया गया। अंग्रेजो की पराजय के समाचार से पिट को बहुत आघात पहुँचा। वह इसे सहन न कर सका। सन् १८०६ मे उसकी मृत्यु हो गई।

जैसा कि ऊपर बताया गया पिट को उसके पिता द्वारा राजनैतिक जीवन के लिए प्रशिक्षित किया गया। यही कारण था कि उसे अपने सारे जीवन लगातार सफलता प्राप्त हुई। वह शान्ति चाहता था तथा शान्ति बनाए रखने के लिए उसने भरसक प्रयत्न किए। यद्यपि वह स्वास्थ्य से बहुत दुर्बल था फिर भी बहुत कठिन परिश्रम किया करता था। इससे उसका स्वास्थ्य बिगड़

गया। अपने पिता की भाँति वह महान वक्ता न था परन्तु उसमे एक विशेष गुण एक ही समय मे राजा तथा प्रजा दोनो को प्रसन्न रख सकने का था। जो भी उसके सम्पर्क मे आते उन्हे वह सदैव प्रभावित करता। वह असाधारण रूप से ईमानदार था। वह उपाधियो एवं व्यक्तिगत सम्मान की कभी चिन्ता न करता था। उसमे केवल एक दोष था। यह दोष शराब पीने का था। परन्तु वह विवश था, असहाय था। वह कार्य अधिक कर सकने के लिए शराब पिया करता था।

प्रश्न ८९—छोटे पिट की विदेश नीति समझाओ।

उत्तर—भूमिका—

पिट की विदेश नीति दो कालो मे विभक्त की जा सकती है। पहली अवधि (काल) सन् १७८३ से १७९३ तक, फ्रैन्च क्रान्ति के आरम्भ होने से पूर्व का दूसरी अवधि (काल) १७९३ से १८०६ तक चला जिसमे सन् १८०१ से १८०४ तक रिक्ति (Gap) रही जबकि पिट पदासीन न था। हम इन दोनो अवतरणो (Periods काल) का अलग अलग अध्ययन करेंगे।

प्रथम अवतरण मे विदेश नीति—

इस अवतरण में पिट की विदेश नीति शान्ति की थी। वह भली प्रकार समझता था कि इंगलैन्ड की स्थिति दृढ न थी। इसके कारण थे। सन् १७८३ में इंगलैन्ड ने अमेरिका में अपने उपनिवेश खो दिए थे। उसे पेरिस की अपमानपूर्ण सन्धि पर हस्ताक्षर करने पड़े थे। ये दो देश अपने पारिवारिक बन्धनो के कारण संगठित थे। फ्रास तथा आस्ट्रिया सप्त वर्षीय युद्ध से एक साथ हो चुके थे। पर्शिया तटस्थ थी। परन्तु इसका शासक, फ्रेडरिक महान् के इङ्गलैंड के साथ सम्बन्ध अच्छे न थे। इसका कारण यह था कि जार्ज तृतीय ने सन् १७६३ मे बिना उसका परामर्श लिए पेरिस की सन्धि (Treaty of Paris) पर हस्ताक्षर कर दिए थे। अन्ततः बाल्टिक तथा भूमध्यसागर (Baltic and the Mediterranean) मे रूस बहुत शक्तिशाली हो चुका था। वह समुद्रो पर इङ्गलैड के लिए खतरे का सूत्र हो रहा था।

पिट ने स्वय को बड़ी कठिन परिस्थिति में पाया। परन्तु भाग्य ने उसका साथ दिया। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक मोड़ लेने लगी। शीघ्र ही यह इङ्गलैंड

के हित में हो गई। सन् १७८६ में फ्रेडरिक महान की मृत्यु हो गई। फ्रेडरिक विलियम द्वितीय उसके बाद पर्शिया का शासक हो गया। इससे बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। वह इङ्गलैंड के खिलाफ उतना न था जितना कि उसका पिता था। हालैन्ड मे भी परिवर्तन हुआ। उस देश का शासक विलियम पंचम था। उसके देश में दो दल थे :—(१) गणतन्त्रीय दल (Republican Party) तथा (२) औरेन्ज दल (The Orange Party)। जनतन्त्रीय दल फ्रांस द्वारा नियन्त्रित था वह विलियम पंजम के विरुद्ध था। यह न चाहता था कि विलियम पंजम राजा हो। उसकी पत्नी फ्रेडरिक विलियम द्वितीय की वहिन थी। जनतन्त्रीय (रिपब्लिकन) दल ने उसका बड़ा निरादर किया था। इससे विलियम द्वितीय बहुत क्रुद्ध हो गया। उसने जनतन्त्रीय दल को दन्डित करने का निश्चय किया। अतः उसने इंगलैन्ड के साथ सन्धि कर ली। उसकी (पत्नी) सहायता से उसने हालैन्ड की गद्दी पर अपने साले (brother in law) को पुनः प्रतिष्ठिति कर दिया। इस प्रकार पर्शिया तथा हालैन्ड मित्र हो गए। हालैन्ड भी इङ्गलैन्ड का मित्र हो गया। पिट ने पर्शिया तथा हालैन्ड का मित्र बने रहने का निश्चय किया। अतः सन् १७८१ मे उमने ट्रिपिल एलाइन्स (Triple Alliance) की। यह हालैन्ड, पर्शिया तथा इङ्गलैंड के बीच थी। इस गठवन्धन ने इङ्गलैंड की परिस्थित दृढ़ कर दी।

पिट ने तब अपना ध्यान रूस की ओर लगाया। उसने अपनी सहायता स्वीडन के गस्टावस द्वितीय (Gustavus II) को प्रस्तुत की इसने स्वीडन के राजा को इतना समर्थ कर दिया कि वह रूसियो को बाल्टिक से बाहर कर सके सन १७६१ मे आस्ट्रिया तथा टर्की ने सन्धि की। इससे भूमध्यसागर मे रूस का प्रभाव समाप्त हो गया।

दूसरे अवतरण (Period) मे विदेश नीति—

इस अवतरण के आरम्भ मे पिट ने फ्रास के प्रति तटस्थ रहने का प्रयत्न किया। परन्तु क्रान्तिकारी फ्रास का व्यवहार आक्रामक था। सन् १७६३ मे, उसने पर्शिया तथा आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। उसी वर्ष फ्रास ने हालैंड तथा इंगलैन्ड के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया। इन परिस्थितियो

मे यह फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध घोपित करने को विवश किया गया था। उसकी युद्ध नीति फ्रान्स के विरुद्ध सगठन करने पर आधारित थी। उन संगठनो को वह जी खोल कर आर्थिक सहायता देता था। प्रथम संगठन १७९३ में वना और १७९५ मे समाप्त हो गया। दूसरे सगठन ने १७९९ से १८०२ तक कार्य किया। तीसरा संगठन १८०५ से १८०६ तक चला।

गठवन्धन करने की पिट की नीति सफल नही हुई। इसके दो कारण थे। प्रथमतः फ्रेन्च जनरलो की विजय ने गठवन्धन को तोड़ दिया। दूसरे, गठवन्धनो के सदस्य युद्ध मे अ... नेकि वे अन्य वातो मे व्यस्त थे।

पिट ने सन् १८०१ तक युद्ध ... किया ... आयरिश प्रश्न पर जार्ज के साथ मतभेद होने के का... त्यागपत्र द... १८... उसने पुनः पद ग्रहण किया सन् १८०५ में ... ट्रैफलगर (Trafalgar) की विशेष विजय देखी। परन्तु वह आस्टलिज (Austerlitz) ... समाचार से पहुंचे आघात को न भुला सकी। सन् १८०६ में उसकी मृत्यु हो गई। अन्तिम क्षण जो शब्द उसने कहे वे थे, "My Country, how I leave my country ?"

उपसंहार—

पिट की विदेश नीति सफल नीति न थी। क्षति पूर्तियां करके उसने वहुत सा धन व्यर्थ किया। अच्छे जनरल (सैनिक अफसर) प्राप्त करने मे वह असफल रहा। उसमे विभिन्न कार्यो को संचालित करने की योग्यता न थी। परन्तु हमे यह न भूलना चाहिए कि पिट, जार्ज द्वितीय के प्रभाव में था। वह उससे 'नही' नही कह सकता।

प्रश्न ९०—फ्रेन्च क्रान्ति के पूर्व तथा पश्चात की छोटे पिट की ग्रह नीति का वर्णन करो तथा किसी विशेष अन्तर का कारण वताओ।

अथवा

प्रश्न ९१—"छोटा पिट, एक महान अर्थ मंत्री था तथा उसकी ख्याति आर्थिक-सुधारों में निहित है" विवेचना करो।

अथवा

प्रश्न ६२—"छोटा पिट, इंगलैन्ड के सबसे महान प्रधान-मंत्रियों में स्थान रखता है," विवेचना करो।

उत्तर—पिट की प्रारम्भिक कठिनाइयां—

फौक्स-नौर्थ गठबन्धन के पतन के समय राजा की प्रार्थना पर पिट ने पद सँभाला। उसके मंत्रिमंडल के अन्य सारे सदस्य पिअर (Peer) थे अतः अपनी नीतियो की ओर से तर्क करने के लिए हाउस ऑफ कामन्स मे वह अकेला वैठता था। वह केवल चौवीस वर्ष की आयु का था। हाउस मे उसके पीछे वहुमत न था। विरोधी दल उस पर टूटता था, उसे वार वार पराजित करता था और लगभग प्रतिदिन ही उसके त्याग पत्र की आशा करता था। दोष-पूर्ण सरकार के लिए कार्य करने का वैधानिक मार्ग त्याग-पत्र देना अथवा पार्लियामेन्ट को भंग कर देना ही था। पिट ने त्याग पत्र देने अथवा पार्लिया-मेन्ट भंग करने से मना कर दिया। वह सोचता था कि सामान्य चुनाव तुरन्त उसके विरुद्ध होगा परन्तु थोडे से सप्ताहो अथवा महीनो में जनता की राय [illegible] जा [illegible] वह वहुमत प्राप्त कर लेगा। यह सत्य ही सिद्ध हुआ। पराजय [illegible] वह कुछ समय पदासीन रहा। जब चुनाव हुआ तो ह्विग्स ने वहु[illegible] दिए। टोरीज (Torries) तथा किंग्स फ्रेन्डस (King's frien[illegible] उस [illegible] कामन्स मे पिट का इतना ठोस समर्थन किया कि वह दृढता से [illegible] स्थापित [illegible] गया।

उसकी आर्थि[illegible] नीति

पिट के स[illegible] महान कार्य था [illegible] समृद्धि तथा राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का अमेरिका [illegible] विनाश के पश्चात [illegible] करना था। राष्ट्रीय ऋण लगभग २५०,०००,००० पौंड था। राष्ट्रीय [illegible] न्यून थी। लन्दन के शहर में गवर्नमेन्ट के स्टाक का मूल्य सत्तावन से अधिक न था। कर बोझ था। समुद्र तट पर तस्कर व्यापार प्रचलित था। पिट के कार्य भार ग्रहण करने से पूर्व प्रतिवर्ष वजट फेल हो रहा था। यह स्थिति किसी ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति द्वारा ही सँभाली जा सकती थी जो कि सारी राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के पूरे आधार पर विचार करने को तत्पर हो। पिट इस कठिन

परिस्थिति को संभालने के योग्य था। वह मर्केन्टलिज्म (Mercantilism) के पूरे सिद्धान्त पर अविश्वास सा करता लगता था। पिट ने अप्रत्यक्ष कर पद्धति मे अनेक ठोस काट छांट की। बाडे की गोदामो (Bonded ware houses) की पद्धति के प्रसार से उसने चुंगी के कर एकत्रित करने की विधि आसान कर दी। आय बढाने के लिए उसने "असैस्ड टैक्सेज" (Assessed Taxes) जारी किए। वे नौकरो, दौड़ के घोड़ो, खिडकियो पर प्रत्यक्ष कर थे। वे धनी व्यक्तियो द्वारा चुकाए जाते थे जो कि विलास का जीवन व्यतीत करते थे। आधुनिक सिद्धान्तो पर खिड़कियो पर लगा टैक्स अनुचित कहा जा सकता है। आज कल किसी भी घर मे सूर्य का प्रकाश स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। खिडकिया उस प्रकाश का साधन हैं। इस प्रकार का प्रतिवन्ध स्वास्थ्य पर कर लगाना होगा। परन्तु छः अथवा छः से कम खिड़कियो वाले मकान मुक्त थे। कर मे कम से कम एक गुण अवश्य था कि यह मोटे तौर उन पर लोगो के आनुपातिक था जो इसे चुकाते थे।

सुरक्षित कोष (The Sinking Fund)—

राष्ट्रीय ऋण को चुकाने के लिए पिट ने एक सुरक्षित कोष (Sinking Fund) की स्थापना की। एक लाख पौंड की रकम प्रति वर्ष अलग रखनी थी जिसका प्रयोग कमिश्नरो द्वारा गवर्नमेन्ट स्टॉक खरीदने के लिए होना था। यह स्टाक कैंसिल होने वाला न था। व्याज सहन करने के लिए इसे चालू रहना था जो कि कमिश्नरो को चुकाना था। यह धन उस वार्षिक एक लाख के धन के साथ ही प्रयुक्त होना था। कालान्तर मे कमिश्नर्स सारे स्टाक को संग्रह करेंगे तब उमे चुकता किया जायगा। अनुमान था कि यदि बिना किसी विघ्न के यह योजना चलती रही तो अट्ठाईस वर्षों मे फल प्राप्त हो जायगा। निसन्देह ही यह योजना उसकी ऋण चुकाने की दृढ इच्छा को सिद्ध करती है।

व्यापारिक सन्धियां (Commercial Treaties)—

ब्रिटिश व्यापार को लाभान्वित करने के लिए पिट ने व्यापारिक सन्धियो द्वारा दो गभीर प्रयत्न किए। प्रथम सन् १७८५ मे आयरलैन्ड के साथ था। इस देश की उस समय अपनी अलग पार्लियामेन्ट थी जो कि ग्रेट ब्रिटेन की पार्लियामेन्ट से स्वतन्त्र थी। प्रारम्भिक शर्तें निश्चित हो गईं। ब्रिटिश व्यापारी,

प्रस्तावो पर चौकन्ने हो गए तथा उन्होंने उनमे संशोधन करने पर जोर दिया। वे अब आयरिश के लिए अस्वीकारोग्य (Unacceptable) हो गए। अतः वह प्रबन्ध समाप्त कर दिया गया। सन् १७८६ मे किसी प्रकार फ्रांस के साथ एक व्यापारिक सन्धि हुई। ब्रिटिश सूती सामान, चाकू-कैंचियां (कटलरी) तथा लोहे का सामान फ्रास देश मे कम किए महसूल की दर से जा सकता था। इसी प्रकार की रियायत इंगलैंड मे स्वीकार की गई थी जिसके अनुसार फ्रैन्च शराब, ब्रान्डी तथा जैतून का तेल घटे महसूल पर इङ्गलैंड मे जा सकता था। इस सन्धि ने सन् १७९३ तक कार्य किया। तभी युद्ध छिड़ जाने के कारण दोनो देशो का पारस्परिक व्यापार समाप्त हो गया। इस संधि की छः अथवा सात वर्ष की अवधि मे फ्रांस तथा ग्रेट ब्रिटेन के बीच व्यापार मे इतनी वृद्धि हुई कि यदि परिस्थिति दूसरी हुई होती तो इस संधि की अवधि निश्चितः ही और बढ़ाई गई होती।

पार्लियामेन्टरी सुधार—

उस राजनैतिक भ्रष्टाचार की पद्धति में जो कि अठारहवी शताब्दी की विशेषता थी उसके प्रति पिट की कोई रुचि न थी और न उसमे कोई विश्वास था। इस पद्धति के द्वारा सबसे पहले ह्विग्स (Whigs) ने बाद मे राजा ने शक्ति प्राप्त की। सन् १७८५ मे उसने प्रस्ताव रखा कि छत्तीस पुराने बरो (Borough वह नगर जहां से पार्लियामेन्ट के सभासद होते है) का चुनकर प्रतिनिधि भेजने का अधिकार समाप्त कर दिया जाय। इस प्रकार रिक्त बहत्तर (७२) स्थान उन बडे नगरों के लिए दिए जाय जो कि अब बने है तथा हाउस ऑफ कामन्स मे जिनका अब तक प्रतिनिधित्व न था। इन बरो के पैट्रन्स (Patrons) के लिए उसने प्रस्ताव रखा कि उन्हे पब्लिक फन्ड से क्षति-पूर्ति दी जाय। इस उद्देश्य के लिए उसने एक लाख पौंड का धन अलग रखा। यह प्रस्ताव गिर गया और पिट ने इसे दुबारा नही रखा।

बलपूर्वक आधीन करने की नीति (Policy of Coercion):—

सन् १७९४ मे पिट ने हैबियस कौर्पस कानून (Habeas Corpus Act) को समाप्त कर दिया। अब कोई भी व्यक्ति अनिश्चित समय तक जेल मे रखा जा सकता था, बिना उस पर मुकद्दमा चलाए, यदि उस पर

केवल 'देश-द्रोही कार्यों' (Treasonable Practices) का अभियोग हो।

दमनकारी कार्य (Repressive Measures)—

बाद में पिट ने कानूनो की एक श्रेणी (१७६५) पास की, जिसने लेखन, भाषण अथवा किसी भी प्रकार से गवर्नमेन्ट के विरुद्ध उत्तेजना फैलाना गंभीर अपराध घोषित किया जिस पर कठोर दण्ड लगाया। जब तक कि मजिस्ट्रेट अनुमति न दे, पब्लिक मीटिंगो को गैर कानून कर दिया। सुधार कराने की मीटिंगों को अनुमति न मिलेगी। फिर, सन् १७६६ के ‘‚म्बीनेशन एक्ट के अनुसार श्रमिक व्यक्तियों को ट्रेड यूनियनो से वञ्चित कर दिया गया क्योंकि वे कही क्रान्तिकारी न हो जाय।

इन सभी कार्यों मे जो कि उस समय गवर्नमेन्ट द्वारा आवश्यक समझे जाते थे, पिट को टोरीज (Tories) तथा बहुत से ह्विग्स (Whigs) का समर्थन प्राप्त था। केवल फौक्स (Fox) तथा उसके कुछ अनुयायी अपने सिद्धान्तो पर दृढ रहे।

पिट की आर्थिक कठिनाइयाँ—

पिट के आर्थिक सुधार सब व्यर्थ हुए। राष्ट्रीय ऋण इतनी अधिक मात्रा मे बढ़ गया कि सुरक्षित कोष (Sinking Fund) की सुविधा व्यर्थ हो गई। परन्तु उसने इसे चालू रखा। इस मिथ्या कल्पना पर कि युद्ध थोड़े दिन चलेगा। इस प्रकार एक ओर जहा वह सुरक्षित कोष मे ऋण चुकाने को रुपया बचाता था दूसरी ओर युद्ध की सामिग्री जुटाने के लिए और अधिक ऋण ले लेता था। फ्रान्स की व्यापारिक सन्धि स्वभावतः क्रियान्वित न हुई। कर मे वृद्धि की आवश्यकता हुई। परन्तु पिट ने इस प्रश्न का उचित हल खोजने के लिए कोई प्रयत्न नही किया। युद्ध के शीघ्र समाप्त होने का उसे इतना दृढ विश्वास था कि उसने कर लगाने की अपेक्षा ऋण लेना अधिक उचित समझा। इस प्रकार अपने निर्धारित करों के सन् १७६७ मे बढाया। अपने आय-कर (Income-tax) को वह सन् १७६८ मे लाया। ऋण भी उसने जो लिया उसकी शर्तें भी बड़ी अहितकर रही।

जिसके परिणाम स्वरूप उसने राष्ट्र को आवश्यकता से अधिक वोझ से दवी हालत मे छोड़ा।

पिट का मूल्यांकन (Pitt's Estimate) :—

यह विचारणीय है कि पिट की महानता किस बात मे थी। जहा तक फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध संचालन के उत्तरदायी मंत्री के नाते वह कुशल था, महान नही। उसकी आर्थिक नीति जव देश मे शान्ति थी, उचित थी। युद्ध काल में उसकी वड़ी आलोचना हुई। एक सुधारक के रूप मे उसने कुछ प्रस्ताव रखे तथा वह दूसरो के प्रति सहृदय था। परन्तु इनमे से केवल कुछ उसके समय मे क्रियान्वित हुए। फिर भी इसमें सन्देह नही कि पिट एक महान पुरुष था। उसकी महानता उसके चरित्र एवं आदर्शों मे थी। वह एक प्रतिष्ठावान व्यक्ति था। वह एक आदर्शवादी और भौतिकवादी व्यक्ति था। वह जनता था कि दासता अनुचित थी और उसे समाप्त किया जाना चाहिए था और पहला कदम दोनो का क्रय-विक्रय समाप्त कर उठाना चाहिए। इन सवसे उसकी महानता का प्रमाण सिद्ध होता है।

३१—इंगलैन्ड, क्रान्तिकारी फ्रान्स तथा नैपोलियन

प्रश्न ९३—क्रान्तिकारी फ्रान्स के विरुद्ध इङ्गलैन्ड द्वारा किए कार्यो का वर्णन करो।

अथवा

प्रश्न ९४—क्रान्तिकारी फ्रान्स के विरुद्ध इंगलैन्ड ने युद्ध की घोषणा क्यो की ? वे क्या कारण थे जिनसे पिट को सन् १७९३ में फ्रान्स की चुनौती स्वीकार करनी पड़ी ?

अथवा

प्रश्न ९५—क्रान्तिकारी फ्रान्स के प्रति पिट की नीति का विवेचन करो।

उत्तर—पिट की शान्ति-नीति—

प्रारम्भ मे पिट ने क्रान्तिकारी फ्रान्स के प्रति शान्ति की नीति का अनुकरण किया। वह फ्रांस के मामलों मे हस्तक्षेप न करना चाहता था।

वह सोचता था कि फ्रेंच क्रांति एक आंतरिक मामला था और उसे इसमें कुछ न करना था। वह सोचता था कि इंगलैंड के लिए शांति बहुत आवश्यक थी। सन् १७९२ की अपनी बजट स्पीच में उसने कहा था कि वह अपने आगे शांति के पंद्रह वर्षों की आशा करता था। इस शांति को वह इसलिए चाहता था ताकि इंगलैंड के लोग आर्थिक सुधारों का लाभ उठा सकें। वह युद्ध की कभी कल्पना न करता था। यही कारण था कि उसने ब्रिटिश नौसेना में मल्लाहों की संख्या कम कर दी।

पिट को अपनी शान्ति नीति त्यागनी पड़ी—

पिट अपनी शान्ति नीति पर न चल सका। फ्रेन्च क्रान्तिकारियों के कार्यों का उससे बड़ा सम्बन्ध था। सितम्बर के हत्याकांड ने इंगलैंड के लोगों को आतंकित कर दिया। पेरिस की भीड़ के दुर्व्यवहार ने उसे बहुत आघात पहुँचाया। फ्रेन्च क्रान्तिकारी अपने कार्य इंगलैंड तथा आयरलैंन्ड में चला रहे थे। वे क्रान्तिकारी भावनाओं को फैलाने का प्रयत्न कर रहे थे। इतना ही सब न था। सन् १७९२ में उन्होंने नीदरलेन्ड पर अधिकार कर लिया। वैस्टाफेलिया की सन्धि (Treaty of Westaphalia) के द्वारा शेल्ड (Scheldt) की नौसेना केवल डचों (Dutch) के लिए सुरक्षित थी। परन्तु अब फ्रेन्च क्रान्तिकारियों ने इसे संसार के सारे राष्ट्रों के लिए सीधा खोल दिया। उन्होंने घोषणा की कि प्रत्येक देश इसे प्रयुक्त कर सकता था। इंगलैन्ड ने हालैन्ड के साथ सन् १७८८ में एक संधि की थी। उस संधि के अनुसार उसे डचों के अधिकार सुरक्षित करने ही थे। अतः इङ्गलैंड को विवश हो कर क्रांतिकारी फ्रांस की चुनौती स्वीकार करनी पड़ी।

फ्रेन्च डिक्रियां (The French Decrees) – (1792)

क्रांतिकारी फ्रांस ने इङ्गलैंड को क्रुद्ध करने के और भी कारण उपस्थित किए। फ्रेंच कन्वेन्शन ने सन् १७९२ में दो डिक्रियां (Decrees) प्रसारित कीं। पहली डिक्री में यह कहा गया था कि फ्रांस उन सारे देशों की सहायता करेगा जो स्वतन्त्र होना चाहते थे। इस प्रकार फ्रेंच क्रान्तिकारियों ने अधीन देशों को अपने शासकों के विरुद्ध उठने के लिए उकसाया। दूसरी डिक्री में यह

कहा गया था कि फ्रूँच सेना के अधीन सारे देशो को एक गणतन्त्रीय सरकार रखनी चाहिए।

इन डिक्रियो से पिट बहुत क्रुद्ध था। वह सोचता था कि प्रतिरक्षा के लिए तैयार होना उसका कर्त्तव्य था। उसने फ्रांस को एक चेतावनी भेजी। वह कहता था कि यदि फ्रान्स इंगलैंड का मित्र बना रहना चाहता था तो वह अन्य सरकारो का अपमान न करे। इसके अतिरिक्त उसे हालैंड तथा नीदरलैंड की कोई इच्छा न करनी चाहिए।

लुइस चौदहवें को फांसी (Execution of Louis XVI)

इङ्गलैंड तथा फ्रास का झगड़ा अब निश्चित हो गया। लुइस चौदहवे की फांसी ने इसमे और शीघ्रता कर दी। राजा को फासी लगने के समाचार नें अंग्रेज लोगों को बहुत क्षुब्ध कर दिया। वे फ्रून्च विरोधी हो गए। इङ्गलैंड ने फ्रांस के साथ सारे सम्बन्ध तोड़ देने का निश्चय किया। फ्रूँच राजदूत से लन्दन छोड़ देने को कहा गया।

पिट ने फ्रान्स की चुनौती स्वीकार की—

इस प्रकार पिट को अपनी शांति नीति छोड़ने के लिए विवश किया गया। वह युद्ध से बचना चाहता था। परन्तु तत्कालीन परिस्थितियो में उसने स्वयं को ऐसा करने मे असमर्थ पाया। राष्ट्रीय सम्मान तथा राष्ट्रीय सुरक्षा युद्ध चाहती थी। अतः इसे स्वीकार करने के लिए उसे विवश किया गया। उसने किसी सिद्धान्त अथवा महत्वाकांक्षा के कारण फ्रास के विरुद्ध युद्ध करने का निश्चय नही किया। उसने गणतन्त्रीय सिद्धात को समाप्त करने के लिए भी ऐसा नही किया। क्षेत्र (Territories) प्राप्त करने की उसकी कोई इच्छा न थी। उसकी इच्छा इङ्गलैंड की सुरक्षा कायम रखने की थी। वह हालैंड तथा नीदरलैंड की प्रतिष्ठा बचाने से सम्बन्धित था। अतः उसके लिए फ्रास के विरुद्ध लड़ने के अतिरिक्त कोई चारा न था। अतः उसने उस चुनौती को स्वीकार कर लिया जो फ्रास ने १७९३ में दी।

प्रश्न ९६—नैपोलियन के विरुद्ध इंगलैन्ड द्वारा किए कार्यों का वर्णन करो।

अथवा

प्रश्न ६७—नैपोलियन को पदच्युत करने में इंगलैन्ड द्वारा क्या कार्य किए गए ?

अथवा

प्रश्न ६८—इंगलैन्ड तथा फ्रान्स के मध्य जो नैपोलियोनिक युद्ध हुआ उसका संक्षिप्त वर्णन दो।

अथवा

प्रश्न ६९—उन विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन करो जो कि इंगलैन्ड द्वारा फ्रान्स के विरुद्ध बनीं।

उत्तर—भूमिका—

जिस समय फ्रैन्च क्रान्ति आरम्भ हुई, इङ्गलैंड सहृदय था। परन्तु जब क्रान्तिकारियो ने अति कर दी, तो इंगलिश लोगो का व्यवहार बदला। उन्होने फ्रांस के विरुद्ध चार गठ-बन्धन किए। अन्ततः वे उसे पराजित करने में सफल हुए।

प्रथम गुट (The First Coalition 1793—97) :—

पहला गुट, पिट द्वारा बनाया गया क्योंकि वह फ्रांस के प्रति तटस्थ न हो सकता था। जब फ्रान्स ने इगलैंड के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया तो उसने आस्ट्रिया, पर्शिया, सार्डीनिया, हालैंड, स्पेन तथा रूस से सन्धियां की। इन देशो के साथ इगलैंड ने पहला गुट बनाया। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि वे महाद्वीप पर फ्रांस के विरुद्ध लड़ सकें। समुद्र मे इङ्गलैन्ड, फ्रान्स को हराने के लिए काफी शक्तिशाली था।

प्रारम्भ मे मित्रराष्ट्र सफल हुए। सन् १७९३ में ऐसा लगता था मानो फ्रांस पूर्णतः कुचल दिया जायगा। परन्तु तब फ्रांस मे आतंक का शासन (Reign of Terror) स्थापित किया गया। क्रान्ति के नेताओ ने लोगों में उत्तेजित भावना भर दी। इसके परिणाम स्वरूप, फ्रैन्च सेनाएं सफल होने लगी। उन्होंने बेल्जियम पुनः प्राप्त कर लिया। उन्होने हालैंड पर विजय प्राप्त कर ली ; पर्शिया तथा आस्ट्रिया ने सन् १७९५ मे फ्रान्स के साथ बेसले की

की सन्धि (Treaty of Basle) की। इस गुट मे केवल आस्ट्रिया, सार्डीनिया तथा इङ्गलैंड रह गए।

इस समय एक सेना के साथ नैपोलियन इटैली गया। उसने सार्डीनिया के राजा को सन्धि करने के लिए विवश किया। इस प्रकार सारडीना भी गुट से वाहर निकल गया। तव नैपोलियन ने अपना ध्यान आस्ट्रिया पर लगाया। उसे उसने आरकोला तथा रिवोली के युद्धो (Battles of Arcola and Rivolli) में पराजित किया। उसे कौम्पो फौर्मियो की सन्धि (Treaty of Compo Formio) पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया गया। इसके साथ ही प्रथम गुट (First Coalition) समाप्त हो गया।

इंगलैन्ड के साथ नौ सैनिक युद्ध (Naval War with England)—

इङ्गलैंड अव अकेला छूट गया। नैपोलियन ने अपना ध्यान उस ओर लगाया समुद्र पर वह वहुत शक्तिशाली था। नैपोलियन अपनी समुद्री दुवलता को जानता था। अतः उसने मिश्र (ईजिप्ट) पर अधिकार करने तथा भारत मे ब्रिटिश शक्ति को नष्ट करने का निश्चय किया। मार्ग मे ही उसने माल्टा (Malta) विजय कर लिया। इसके वाद उसने नील नदी के डेल्टा पर अधिकार किया। प्रसिद्ध ब्रिटिश एडमिरल ने उसे नील के युद्ध (Battle of The Nile) मे पराजित कर दिया। स्वयं को असहाय पा कर, नैपोलियन सन् १७९९ में फ्रांस वापिस चला गया। इङ्गलैंड ने सन् १८०२ मे माल्टा विजय कर लिया।

दूसरा गुट (The Second Coalition 1798—1801) :—

इङ्गलैंड ने अव आस्ट्रिया, रूस, नेपल्स, पुर्तगाल एवं टर्की के साथ एक दूसरा गुट वनाया। इसका उद्देश्य फ्रांस की शक्ति को कुचलना था। इस पर नैपोलियन ने अपना इटली का दूसरा अभियान आरम्भ किया। सन् १८०० में वह मौरैन्गो का युद्ध (Battle of Morengo) विजय करने मे सफल हो गया। उसने समूची इटैली पर अधिकार कर लिया। उसने सन् १८०१ में आस्ट्रिया को ल्यूनरविले की सन्धि (Peace of Lunerville) करने को विवश किया। इसके द्वारा उसने नैपोलियन की सारी विजयो को मान्यता दे दी। रूस ने पहले से ही गुट (Coalition) की सदस्यता छोड़ दी थी।

इंगलैंड पुनः अकेला छूट गया। वह तथा फ्रांस दोनों युद्ध से ऊब चुके थे। अतः सन् १८०२ मे दोनो देशो ने एमीस की सन्धि (Peace of Amiens) के द्वारा उसका अन्त कर दिया। इस सन्धि के द्वारा इंगलैंड ने ट्रिनिडाड (Trinidad) तथा सीलोन (Ceylon) के अतिरिक्त अपनी सारी विजये समर्पित कर दी। इस शान्ति ने इंगलैंड के प्रत्येक व्यक्ति को प्रसन्नता प्रदान की परन्तु किसी व्यक्ति ने गर्व नही अनुभव किया।

एमीस की शान्ति (Peace of Amiens) केवल एक सुलह सिद्ध हुई। सन् १८०३ मे पुनः इंगलैंड तथा फ्रान्स के मध्य युद्ध आरम्भ हुआ। इसका कारण नेपोलियन का यूरोप में बढ़ जाना तथा उसका भारतवर्ष अमेरिका एवं अफ्रीका मे ब्रिटिश विरोधी कार्य करना था।

ट्रैफलगर का युद्ध (The Battle of Trafalgar-1805)

नेल्सन ने इंगलैंड पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इस उद्देश्य के लिए उसने एक सेना संगठित की। यह 'इंगलैंड की सेना' (The Army of England) कहलाती थी। तीन फ्रेन्च टुकड़ियाँ (Fleets) तैयार की गई। अंग्रेज एडमिरल नेल्सन, इंगलिश चैनल की रक्षा कर रहा था। नैपोलियन उससे बचकर इंगलैंड पहुँचना चाहता था। परन्तु नेल्सन बड़ी कुशाग्र बुद्धि एवं शक्ति का था। उसने फ्रेंच टुकडियो को एक नौसेनिक युद्ध मे व्यस्त कर दिया। उसने उन्हे ट्रेफलगड़ के युद्ध (Battle of Trefalgar) मे बडी बुरी तरह पराजित किया। इस युद्ध ने समुद्र पर इंगलैंड का प्रभुत्व स्थापित कर दिया।

तीसरा गुट (The Third Coalition 1805)—

इसी बीच इङ्गलैंड ने तीसरा गुट, आस्ट्रिया, रूस, स्वीडन तथा नेपल्स के साथ बना लिया था। नेपोलियन ने आस्ट्रिया को अम तथा औटरलिज के युद्धो (Battles of Ulm and Auterlitz) में पराजित किया। उसने उसे प्रेसबर्ग की सन्धि (Peace of Presburg) करने को विवश किया।

नेपोलियन ने तब अपना ध्यान प्रशिया की ओर लगाया। सन् १७९५ से वह देश तटस्थ रहा था। नेपोलियन ने उसके विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।

उसने उसे जेना तथा एनरस्टाट के युद्धों (Battles of gena and Anerstat) मे पराजित किया ।

नैपोलियन ने तव रूस के विरुद्ध युद्ध घोषित किया। उसने उसे फ्रीडलैंड के युद्ध (Battle of Friedland) मे पराजित किया। वह टिल्सिट (Tilsit) मे जार अलैक्जेन्डर प्रथम (Tsar Alexander I) से मिला। सन् १८०७ की टिल्सिट की सन्धि (Treaty of Tilsit) के द्वारा पर्शिया दो राज्यों—वैस्टफेलिया का राज्य तथा वारशा की ग्रान्ड डची (Grand Duchy of Warshaw) मे विभाजित कर दिया गया। फ्रैन्च रूसी सम्राट मे मित्रता हो गई। इसके अनुसार नैपोलियन को टर्की के विरुद्ध अलैक्जेंन्डर की सहायता करनी थी तथा अलैक्जेंन्डर को नैपोलियन के कौन्टीनेन्टल सिस्टम (Continental System) का समर्थन करना था।

महाद्वीपीय पद्धति (The Continental System)—

अब एक मात्र इङ्गलेंड ही नैपोलियन का शत्रु था। उसने उससे घुटने झुकवाने के लिए उसके व्यापार पर आघात करने का निश्चय किया। उसने महाद्वीपीय पद्धति (Continental System) बनाई। इसके द्वारा यूरोप के सभी बन्दरगाहों मे अंग्रेजी सामान का आयात रुक गया। नैपोलियन की यह नीति असफल हुई। इसने यूरोप के सभी देशों को असंतुष्ट कर दिया। पुर्तगाल ने अपने बन्दरगाहो पर ब्रिटिश वस्तुओ को बन्द करने से मना कर दिया। इसने नैपोलियन को क्रुद्ध कर दिया। उसने उस देश पर अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् उसने अपने भाई जोजेफ को स्पेन की गद्दी पर विठाया। स्पेनियर्स स्वतन्त्रता के प्रेमी थे। उन्होने, यूरोप के तानाशाह (Dictator) के विरुद्ध अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने का दृढ निश्चय किया। इसने पेनिन्सुलर युद्ध (Peninsular War) को जन्म दिया।

पेनिन्सुलर युद्ध (The Peninsular War 1808-13)—

नैपोलियन के समक्ष कार्य बहुत कठिन था। अब तक उसे राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ना था। इंगलैंड ने पूर्तगाल तथा स्पेन की सहायता की। उसने सर आर्थर वैल्सले (जो कि वाद मे वौलिंगटन के ड्यूक हुए) के नियन्त्रण मे उनकी सहायता करने के लिए एक सेना भेजी। नैपोलियन स्पेन गया। परन्तु चूंकि

वहां आस्ट्रिया के साथ युद्ध था, उसे वापिस आना पडा। ताल्वेरा (Talavera) के युद्ध (१८०९), सैलेमानिया के युद्ध (१८१२) तथा विटोविया के युद्ध (१८१३) मे वैल्सली ने फ्रैन्च को पराजित किया। फ्रैन्च को स्पेन छोड़ना पड़ा। नैपोलियन ने, जो कि आस्ट्रिया मे था वैग्राम के युद्ध (Battle of Wagram—1809) मे उस देश को पराजित किया। स्कानब्रम (१८०९) की सन्धि (Treaty of Schonbrum) के अनुसार उसे अपनी भूमि का एक बड़ा भाग फ्रान्स को देना पड़ा। वह महाद्वीप पद्धति (Continental System) में योग देने को सहमत हो गया।

रूसी अभियान (Russian Campaign)—

रूस ने नैपोलियन की महाद्वीपीय पद्धति (Cantinental System) का समर्थन न किया था। अतः सन् १८१२ मे उसने रूस पर आक्रमण कर दिया। उसने मास्को पर आधिपत्य कर लिया। रूसियों की गोरिल्ला नीति तथा वहा के शीत ने नैपोलियन की सेना नष्ट कर दी। अतः नैपोलियन रूस से भाग आने को विवश हुआ।

चौथा गुट (The Fourth Coalition—1813)—

स्पेन तथा रूस मे फ्रान्सीसी पराजित हो चुके थे। इसने उसके शत्रु को प्रोत्साहित किया। जर्मनो ने फ्रान्स के विरुद्ध स्वतन्त्रता का युद्ध आरम्भ कर दिया। यह अपनी राष्ट्रीयता स्वतन्त्रता पुनः प्राप्त करते का युद्ध था। नैपोलियन के विरुद्ध चौथे गुट की रचना की गई। इसमे आस्ट्रिया, पर्शिया, रूस, स्वीडन तथा इंगलेन्ड थे।

नैपोलियन की पराजय तथा पतन—

लीपजिग के युद्ध (Battle of Leipzig) अथवा नेशन्स के युद्ध (Battle of The Nations—1813) मे नैपोलियन पराजित हुआ। यह पराजय उसके लिए विनाशकारी सिद्ध हुई। उसके अधीनस्थ सारे राज्य उसके विरुद्ध खडे हो गए। मित्र राष्ट्रो ने पेरिस पर अधिकार कर लिए।

नैपोलियन अपने शत्रुओ से न निपट सका। फ्रान्स मे असन्तोष था। अतः सन् १८१४ मे नैपोलियन भाग गया। उसे मित्र राष्ट्रो द्वारा एल्वा द्वीप (Island of Elba) जाने के लिए विवश किया गया। कुछ महीनों के

वाद वह (१८१५) यकायक फ्रान्स वापिस आया । उसने पुनः राजगद्दी प्राप्त की । अपने शत्रुओ के विरुद्ध उसने युद्ध आरम्भ किया (The Hundred Days) । परन्तु वाटरलू के युद्ध (Battle of Waterloo—1815) में, वैलिंग्टन के ड्यूक द्वारा उसे पराजित किया गया । उसे निष्कासित कर सैन्ट हैलेना (St. Helena) द्वीप भेज दिया गया । वहां सन् १८२१ में उसकी मृत्यु हो गई ।

३२—सन् १८३२ का रिफौर्म एक्ट
(Reform Act of 1832)

प्रश्न १००—सन् १८३२ के रिफौर्म एक्ट की प्रमुख धाराएँ क्या थीं ?

अथवा

प्रश्न १०१—सन् १८३२ के रिफौर्म एक्ट द्वारा क्या परिवर्तन किए गए ? इसके प्रमुख परिणाम क्या थे ?

अथवा

प्रश्न १०२—सन् १८३२ का रिफौर्म एक्ट महत्वपूर्ण क्यो माना जाता है ?

उत्तर—पुरानी पद्धति के गुण तथा दोष—

ऐसे वहुत से लोग थे जो सोचते थे कि किसी सुधार पर ध्यान पूर्वक विचार किया जाय । वे कहते थे कि प्रतिनिधित्व की पुरानी पद्धति की अच्छी विशेषताएँ जहा तक अधिक संभव हो सके सुरक्षित रखी जाय । पुरानी योजना के महान गुण यह थे । साराश मे इसने इच्छा कार्य किया था । अपने दोषो तथा त्रुटियो के वावजूद भी इसने इंगलिश लोगो की भावनाओं का वड़ी अच्छी तरह प्रतिनिधित्व किया था । इसने प्रतिभावान व्यक्तियों का एक समूह उत्पन्न किया था जो कि अपनी प्रशासकीय योग्यता एवं क्षमता मे संसार के किसी भी देश से टक्कर ले सकता था । दोनो पिटो (Pitts), वर्क (Burke), फौक्स (Fox) कैंनिग (Canning), हस्किन्सन (Huskinson) तथा अन्य वहुतो ने इसी पद्धति द्वारा पार्लियामेन्ट में अपने पहले स्थान प्राप्त करने का

गौरव लिया था। किसी प्रकार, इसके विरुद्ध यह कहा जाता था कि वहुत से बड़े तथा महत्वपूर्ण नगर पूरी तरह विना प्रतिनिधित्व किए रह जाते थे। वड़े तथा अधिक जनसख्या वाले देशो मे सदस्यो की संख्या उतनी ही होती थी जितनी कि छोटे देशो मे। भूमि-हित का प्रतिनिधित्व आवश्यकता से अधिक था।

सुधार की कठिनाइयां—

सामान्य सुधार के मार्ग में, किसी प्रकार, वड़ी कठिनाई यह थी कि इतने दिन से सुधार टलता चला आ रहा था। केकिंघम (Kockingham) की अन्तिम शताव्दी की समाप्ति पर, ह्विग्स तथा किंग्स-फ्रेन्डस ने इस दिशा मे पिट के प्रयत्नो को समाप्त कर दिया था। कैनिंग ने सदैव से पार्लियामेन्टरी पद्धति का विरोध किया था। वाद मे लार्डो (Lords) ने जोहन रसैल (John Russell's) की क्रमशः भ्रष्ट वरो (Boroughs) से वडे औद्योगिक केन्दो को सदस्य हस्तातरित करने के प्रयत्नो को असफल किया। परिणाम यह हुआ कि सुधार के नितान्त परिवर्तित साधन से कम कोई वात देश को सन्तुष्ट ही न कर सकती थी।

प्रस्तावित, सुधार का विल—(The Proposed Reform Bill)

लार्ड ग्रे ने तय किया हुआ था कि सुधार मंत्रिमंडलीय स्तर (Cabinet measuse) पर होने चाहिए। मार्च १८३१ मे लार्ड जोहन रसैल द्वारा रिफौर्म विल पेश किया गया। वह वहुत समय से लोअर हाउस मे सुधारो का चेअर मैन रहा था। विल, समानता के नए सिद्धान्त पर आधारित था। प्रस्ताव यह किया गया था वासठ (Sixty-two) वरो (Boroughs) जिनमें दो हजार से कम निवासी हैं उन्हे समाप्त कर दिया जाय तथा चार हजार आवादी के संतालीस वरोज मे से प्रत्येक से एक सदस्य चुना जाय। इन सदस्यों को वड़े नगरों मे विभाजित होना था जिनमें से प्रमुख मानचेस्टर, वर्मिंघम, लीड्स, वोल्वरहैम्पटन तथा शफील्ड मैट्रोपॉलिस के घने वसे जिलो मे, तथा वड़े देशों में। जहा तक मताधिकार का प्रश्न था नगरो मे योग्यता प्रथम वार एकसी की जानी थी तथा यह अधिकार उन सव गृहनिवासियो को दिया जाना था जो दस पौंड वार्षिक किराया चुकाते थे। देशो मे यह अधिकार (उनके अतिरिक्त जो पुराने चालीस शिलिंग मुक्ति प्राप्तकर्ता थे) सभी प्रति प्राप्तकर्ताओ दस

पौंड प्रति वर्ष मूल्य वालों को तथा उन भूमिदारो (Lesse holders) को इक्कीस वर्ष के लिए जिनका लगान पचास पौंड से अधिक था।

समितियों में बिल की पराजय—

बिल ने ३०२ के विरुद्ध ३०१ के मत से द्वितीय पठन (Second reading) पारित कर दी। जिस समय इसके अनुच्छेदों पर हाउस की कमेटी में विचार हो रहा था। जनरल गैसकोयन (General Gascoyne) द्वारा एक संशोधन प्रस्तुत किया गया। इसके अनुसार इङ्गलेंड तथा वेल्स (Wales) के लिए सदस्यो को कम नही किया जाना चाहिए। यह सरकार के विरुद्ध ८ के बहुमत से पारित हुआ। मंत्रियो ने किसी प्रकार अनुभव किया कि, देश मे उत्[illegible] रुढ़ रहा था। अतः उन्होने राजा को पार्लियामेन्ट भंग कर देने के लिए, इसके पहले ही कि लार्डस भंग करने के विरुद्ध कुछ कहे, मनाया।

पार्लियामेन्ट का भंग होना तथा सामान्य चुनाव—

चुनाव के परिणाम से ज्ञात हुआ कि मंत्रिगण औचित्य पर थे। "The Bill, the whole Bill, and nothing but the Bill," सुधारको की आवाज थी। सारे ही देश मे टीरीज (Torries) पिटे। अब सुधार बिल, अपनी सेकिन्ड रीडिंग पर कम से कम १३६ मतोसे पारित हुआ। समिति में अनेक सप्ताहों के तर्क-वितर्क के बाद तीसरा रीडिंग २३६ के खिलाफ ३४५ मतो से पारित हो गया। किसी प्रकार, बिल जब लार्डस के पास पहुँचा, विरोध इतना अधिक था कि यह अस्वीकृत हो गया। बहुत से पियर्स तथा बिशपो का निवासियो द्वारा अपमान हुआ।

तीसरा बिल—

दिसम्बर में पार्लियामेन्ट पुनः मिली। कामन्स में बिल दो के विपक्ष एक के बहुमत से पारित हो गया। यह पुनः लौर्डस को भेजा गया। ऊपर हाउस में बिल की सैकिन्ड रीडिंग केवल नौ मतों से पारित हुई। यह स्पष्ट हो गया कि हाउस का विचार अब भी उसके विरुद्ध था। इन परिस्थितियो से देश में उत्तेजना गंभीर हो गई। १५०,००० से अधिक व्यक्ति सुधार का समर्थन करके के लिए बर्मिघम में एकत्रित हुए। बड़ी गंभीरता से यह प्रस्तावित किया कि जब तक कि बिल पास न हो जाय कोई टैक्स अदा न किया जाय।

प्रत्येक वात से विद्रोह की संभावना लगती थी। इस सबके वावजूद, समिति मे लौर्डस ने ३५ के वहुमत से एक उल्टा प्रस्ताव पारित किया। अब इसके अतिरिक्त कोई चारा न रह गया कि हाउस ऑफ लार्डस पर आक्रमण किया जाय अथवा नए पियर्स (Peers) उत्पन्न किए जाय ताकि ह्विग वहुमत हो जाय जैसा कि हार्लो (Harley) ने सन् १७११ मे किया था। चूँकि राजा ने ऐसा करने से मना कर दिया अतः मंत्रियों ने त्याग पत्र दे दिया। इस पर राजा ने विलिग्टन (Wellington) के ड्यूक को बुलवाया तथा सहायता करने को कहा। परन्तु ड्यूक ने, यद्यपि अपने सामान्य साहस से स्वयं को एक प्रयत्न करने के लिए विचार रखा, तथापि अनुभव किया कि उसके अनुयायियो ने उसका समर्थन करने से मना कर दिया। तदनुसार अर्ल ग्रे (Earl Grey) ने पुनः स्थान ग्रहण किया तो राजा ने सहमति दे दी कि यदि आवश्यक हो तो नए पियर्स (Peers) वनाए जाय। इस धमकी ने लौर्डस को अपना विरोध वापिस लेने को विवश किया तथा जून १८३२ मे सुधार विल १०६ के विरुद्ध २२ मतो से पारित हो गया।

सन् १८३२ का रिफौर्म एक्ट—

विल जिस रूप मे था वह उस विल से अधिक भिन्न न था जो कि लार्ड जोहन रसल (Lord John Russel) द्वारा प्रस्तुत किया गया था। छोटे वरो (Boroughs) से एक सौ तेतालीस सदस्य अलग किए गए। इनमे से पेंसठ काउन्टीज को (Counties) को दिए गए तथा दो सदस्य प्रति, वर्मिंघम, मानचैस्टर, लीड्स, शेफील्ड तथा अठारह अन्य वड़े नगरो के लिए जिसमे कि मैट्रोपोलियन जिले भी थे तथा एक सदस्य प्रति नगर, उन इक्कीस अन्य कस्वो को जो सव कि पहले विना प्रतिनिधित्व के थे।

रिफौर्म एक्ट की धाराएँ—

रिफोर्म एक्ट मे दो महान वातें यह थी :—

पहली समान मुक्ति (छूट) का आना। इससे पहले यह कभी न था, प्रत्येक टाउन के अपने स्वयं के नियम थे। दूसरे, कृषि (Agricultural) जिलो से औद्योगिक (Manufacturing) जिलो के लिए शक्ति का हस्तान्तरण। हल (Hull) से लेकर व्रिस्टल (Bristol) तक खीची गई एक लाइन, मोटे

तौर पर इन जिलो को विभाजित करेगी। कुछ थोडे से अपवादों को छोड़कर सारे मुक्ति (Disfranchised) कस्वे, इस लाइन के दक्षिण एवं पूर्व में थे तथा दूसरी प्रकार के इसके उत्तर तथा पश्चिम में थे। इसने काफी हद तक वरो (Boroughs) मे अरिस्टोक्रेसी का प्रभाव नष्ट कर दिया परन्तु उन्होने फिर भी देश में अपना प्रभाव कायम रखा।

३३—सुधरी पार्लियामेन्ट
(The Reformed Parliament)

प्रश्न १०३—प्रथम रिफौर्मंड पार्लियामेन्ट के कार्यों का संक्षेप में वर्णन करो।

उत्तर—रिफौर्मंड पार्लियामेन्ट की मीटिंग—

जिस समय रिफौर्मंड पार्लियामेन्ट मिली, यह देखा कि टौरीज ने केवल १७२ स्थान प्राप्त किए थे, जवकि ह्विग्स ने जिन को अपने सामने नए चुनाव क्षेत्र मिले थे, ४८६ स्थान मिले थे। महान विधान कार्यो का एक साथ आरम्भ हुआ।

सन् १८३३ का मुक्ति कानून (The Emancipation Act)

सन् १८३३ में वेस्ट इन्डियन गुलामो की मुक्ति का कानून पारित हुआ। सन् १८०७ में दास-व्यापार पर रोक लग चुकी थी। परन्तु वेस्ट इन्डोज के चीनी के उत्पादन क्षेत्रो मे गुलाम कार्य करते ही रहे। अपने स्वामियो के लिए वे मूल्यवान सम्पत्ति थे। सन् १८३३ मे एक कानून पास हुआ जिसके द्वारा अगस्त १८३४ से गुलाम-प्रथा समाप्त होनी थी। गुलामो के स्वामियो को २०,०००,००० पौंड की रकम का मुआवजा (क्षति-पूर्ति) दी जानी थी। दासता तथा पूर्ण स्वतन्त्रता के बीच के एक प्रयत्न के रूप मे गुलामो को अपने मालिको के लिए प्रशिक्षणार्थी (Apprentices) की तरह सात वर्ष तक उनके साथ काम करना था जिसकी अवधि वाद को कम होकर चार वर्ष रह गई। यह भी प्रवन्ध किया गया था कि स्वतन्त्र श्रमिको द्वारा उत्पादित चीनी पर कर की दर सदैव उस दर से कम हो जो कि गुलामो द्वारा उत्पादित चीनी पर रहे। यह ऐसा सौदा था जो पूरा नही किया गया।

सन् १८३३ का शिक्षा अधिनियम—

गृह मे कुछ महत्वपूर्ण सुधार किए गए। एक एक्ट के द्वारा जो सन् १८३२ मे पारित हुआ २०,००० पौंड का वार्षिक अनुदान प्रारम्भिक शिक्षा के निमित्त किया गया। अव उसका संचालन पूर्णतः चर्च तथा अन्य धार्मिक संस्थाओ द्वारा होता था।

सन् १८३३ का फैक्टरी एक्ट—

एक दूसरे कानून द्वारा, जो कि लार्ड ऐशली (Lord Ashley) द्वारा, जो कि वाद मे शैफ्ववरी के अर्ल (Earl of Shaftesbury) हुए, सन् १८३३ मे प्रस्तुत किया गया, फैक्टरियो मे नौ वर्ष से कम आयु के बच्चो को काम पर लेना निषिद्ध (गैरकानूनी) हो गया। मशीनों के प्रचलन से यह बढ गया था। इससे वच्चो के स्वास्थ्य पर वड़ा विनाशकारी प्रभाव पड़ता था तथा उनकी शिक्षा समाप्त हो जाती थी। समय समय पर कानून की अवधि बढ़ी और सन् १८४७ मे फील्डन एक्ट (Fielden's Act) ने युवा व्यक्तियों तथा स्त्रियो के काम करने के समय की अधिकतम सीमा दस घन्टे प्रतिदिन कर दी।

निर्धन नियम संशोधन कानून (१८३४)

सन् १८३४ मे पुअर ला अमैन्डमैन्ट एक्ट द्वारा पुअर ला के प्रशासन का सुधार किया गया। योग्य शरीर वाले व्यक्तियो के मामले मे नियमित वाह्य सुविधा स्वीकार करने की प्रथा में रोक लग गई। पुरानी पद्धति से नई पद्धति मे लाने का यह परिवर्तन, गरीवो के महान कष्ट का कारण था। पूरे राष्ट्र के लिए यह एक अच्छा कानून था तथापि श्रमिक वर्ग में इसने वड़ा असन्तोष उत्पन्न कर दिया।

सन् १८३५ का म्यूनिस्पिल कार्पोरेशन एक्ट—

सन् १८३५ मे म्यूनिस्पिल कार्पोरेशन एक्ट पास हुआ। उस समय तक कस्वो की शासनिक संस्थाएँ अधिकांशतः संकुचित संस्थाएँ थी। रिक्त स्थानों को वे अपनी स्वयं की श्रेणियो से ही भर लेते थे। नए कानून के द्वारा सभी टाउन काउन्सिलो के चुनाव कर चुकाने वालो (Rate-payers) द्वारा किए गए। अपने क्रम पर वे मेयर तथा विशिष्ट सभासदो (Eldermen) का

चुनाव करते। इस व्यवस्था ने प्रान्तीय कस्बों के जीवन में एक क्रान्ति पैदा कर दी। यह स्व-शासन के अभ्यास की शिक्षा देता था। इसने बहुत से दोषों को समाप्त कर दिया। लन्दन का कारपॉरेशन इतना शक्तिशाली था कि वह इस कानून की धाराओं से बच गया।

३४—जार्ज केनिंग

(George Canning)

प्रश्न १०४—केनिंग की विदेश नीति का संक्षिप्त वर्णन करो।

उत्तर—कैनिंग की विदेश मंत्री के रूप में नियुक्ति—

जार्ज केनिंग सबसे शानदार ब्रिटिश प्रतिभावान व्यक्तियों में से एक है। उसकी मां एक चित्र-तारिका (Actress) थी। उस समय के कट्टर जागीरदार (Aristocrats) सोचते थे कि उसे प्राइममिनिस्टिरशिप का पद ग्रहण करना अनुपयुक्त रहा। उसके व्यंग ने, जो कभी कभी कटु हो जाता था, उसे शत्रु बना दिया। इन सब कठिनाइयों से बिना परेशान हुए केनिंग ने दृढता से कार्य किया। वह किसी भी पीड़ित व्यक्ति के हित के लिए अग्रणी बनने को तैयार रहता था। संभवतः इसी कारण उसने निर्धनो, बदमाशो तथा निरर्थक राजा के साथ के अपने झगड़ो मे भटकी हुई क्विन कैरोलिन (Queen Carolin) का पक्ष लिया। इसके लिए स्वभावतः जार्ज चतुर्थ के साथ अप्रतिष्ठा में था। अन्ततः निराशा मे उसने भारतवर्ष मे गवर्नर जनरल के पद को स्वीकार किया। इंगलेन्ड में उसकी प्रगति की आशाओं को रोकने के लिए यह था। उसका जहाज रवाना होने ही वाला था तभी एक समाचार आया कि उसके शत्रु तथा प्रतिद्वन्दी कैसलर (Castleragh) ने आत्म हत्या कर ली। कैनिंग से, प्राइम मिनिस्टर, लार्ड लिवरपूल द्वारा तुरन्त विदेश मंत्री बनने के लिए कहा गया और उसने स्वीकार कर लिया।

कैनिंग तथा यूरोप के राजा

जब लोग ग्रेट-ब्रिटेन पर दुष्टता का आरोप लगाते हैं तो अक्सर उनका अर्थ यह होता है कि उसने राज्यों को स्वयं अपने लिए प्राप्त किया जब कि बहाना यह किया कि वह दूसरो के अधिकारो का प्रतिनिधित्व. कर रहा है। कैनिंग

का चरित्र दिखलाता है कि प्रारम्भिक उन्नीसवी शताब्दी मे आरोप असत्य था। ग्रेट ब्रिटेन, उसके संरक्षण मे, पीडित देशो का चैम्पियन स्पष्ट हो गया। परन्तु इससे उसने कोई राज्य नही प्राप्त किया। यूरोप बडी विकट परिस्थिति से गुजर रहा था। नैपोलियन के ह्रास का अर्थ पुराने शासको का पुनः स्थान करना था। पुनः स्थापित शासको ने सीखा कुछ न था। वे निरकुश राजतन्त्र पर लौटना चाहते थे जैसी कि उनकी स्थिति फ्रैन्च-क्रान्ति के पूर्व थी। कभी कभी वे न केवल मूर्खता ही करते थे वल्कि क्रूरता करते थे। इस प्रकार जब सन् १८२२ मे वैरोना की काग्रेस (Congress of Verona) हुई तो यह निश्चय किया गया कि फ्रास को स्पेन पर आक्रमण करने तथा नए स्वीकृत विधान को नष्ट करने के लिए एक सेना भेजनी चाहिए। वैलिन्गटन (Wellington), ग्रेट ब्रिटेन का राजदूत था। केनिंग के आदेशो पर कार्य करके उसने घोषणा कर दी कि ग्रेट ब्रिटेन ने शक्ति द्वारा किसी भी हस्तक्षेप में कोई सहयोगी बनने से पूर्णतः मना कर दी। अतः फ्रान्स ने स्वयं कार्य किया। उसने पिरेन्सैज (Pyrences) के पार एक सेना भेजी। उसने स्पेनिश विधान को त्याग दिया। उसने घृणित फर्डीनैन्ड (Ferdinand) को निरंकुश शक्ति दिलायी। कैनिंग ने वड़ा संकट अनुभव किया। स्पेनियर्डस पेनिनसुलर युद्ध में ब्रिटिश के साथ लड़े थे। अव फ्रैन्च सेनाओ द्वारा उस राजा की आज्ञा से काटा (Slaughter) जा रहा है जिसे ग्रेट ब्रिटेन ने गद्दी प्राप्त करने मे सहायता दी थी। अगले वर्ष, स्पेन के पुनः स्थापित राजा ने स्पेनिश अमेरिका पर तर्क वितर्क करने के लिए काग्रेस बुलाई। कैनिंग ने ब्रिटेन का कोई प्रतिनिधि भेजने के लिए मना कर दिया और न उसने प्रस्तावित कान्फ्रेन्स के लिए ही टर्की तथा ग्रीस पर विचार-विमर्श के लिए कोई प्रतिनिधि भेजा। भाग लेने से उसका मना करना, उस काग्रेस पद्धति के लिए अन्तिम प्रहार था जिससे कि कैस्लेरीफ (Caslehereaph) ने वहुत कुछ आशा की थी। कैस्लेरीफ की ओर इसने शान्तिपूर्ण हल के प्रयत्न का प्रतिनिधित्व किया। परन्तु यह एक ऐसा प्रयास था, जो असफल हुआ। यह इसलिए समाप्त हुआ क्योकि यूरोप के राजाओ ने इस मीटिंग को, अन्य राज्यो मे हस्तक्षेप करने के लिए, सामान्य 'पुलिस सिस्टम' मे परिवर्तित करने का प्रयत्न किया।

कैनिंग तथा दक्षिणी अमेरिका के उपनिवेश—

केनिंग स्पेन को न बचा सका, परन्तु वह दक्षिणी अमेरिकीय उपनिवेशों को बचा सका और उसने बचाया। इन उपनिवेशो ने फर्डीनेन्ड को स्वीकार करने से मना कर दिया। राजा ने फ्रान्स तथा रूस से उसको ट्रूप भेजने के लिए कहा। ग्रेट-ब्रिटेन का समुद्र पर अधिकार था। वह उन सेनाओ के आवागमन को रोक सकता था। केनिंग ने दिखाया कि वह ऐसा तव करेगा जब वह मैक्सिको के दक्षिणी अमेरिकन गणतन्त्रता, पीरू तथा चिली की स्वतन्त्रता को मान ले।

कैनिंग तथा पुर्तगाल—

अब पुर्तगाल का प्रश्न सामने आया। वहा डौमपैड्रो (Dom pedro) राजा था। उसकी एकमात्र सन्तान उसकी पुत्री थी। उसके लिए पक्ष प्राप्त करने के लिए, डौम पैड्रो ने एक विधान स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की और अपराध स्वरूप पद त्यागने को कहा यदि लोग उस पुत्री को स्वीकार करलें। उसके भाई डौम मिगल (Dom Miguel) द्वारा उसका विरोध किया गया। उसकी पीठ पर स्पेन के क्रान्तिकारी शासक थे। केनिंग ने घोषित किया कि कोई भी शासक एक विधान स्वीकार कर सकता था। विधान निर्माताओ ने सहायता के लिए ब्रिटेन से प्रार्थना की। सन्धि के अनुसार यह सहायता इंगलेंड को करनी ही थी। इस प्रकार कैनिंग ने लिस्वन के लिए ट्रूप तथा फ्लीट भेजी। स्पेनियार्डस को देश छोडना पडा। मिगल (Miguel) पराजित हुआ। युवा रानी गद्दी पर वैठी और उसने विधान स्वीकार किया।

कैनिंग तथा ग्रीक (Canning and the Greeks) :—

वढ़ते हुए साहसी केनिंग ने स्वय यूरोप मे स्वतन्त्रता का नेतृत्व करने का निश्चय किया। तुर्कों द्वारा ग्रीको को वहुत समय से पराधीन वनाया हुआ था। अव वे अपने स्वतन्त्रता के युद्ध के लिए उठ खडे हुए। लार्ड वायरन सबसे प्रसिद्ध वह अंग्रेज था जो युद्ध के लिए स्वयं को प्रेषित करता था। मिसोलौघी (Missolonghi) मे उसकी मृत्यु ने ग्रीक्स के लिए उत्सुक उत्तेजना उत्पन्न कर दी। परन्तु स्वयं सेवक अधिक न थे। प्रारम्भ मे केनिंग हिचकिचाया। अनेक प्रतिभावान संचालकों की भाति उसे डर था कि ऐसा न हो कि तुर्कों से वल्कान का मुक्त होना; रूस को अन्दर घुसने का अवसर न दे दे।

इङ्गलेंड रूस से डरता था। उसे भूमध्य सागर मे उसके आने का खतरा था। परन्तु जिस समय ऐसा लगा, मानो ग्रीक हार जायंगे, कैंनिग ने कार्य करने का निश्चय किया। वह रूस तथा फ्रान्स के साथ सम्मिलित हो गया। उसने ग्रीक तट के लिए ब्रिटिश टुकडिया भेजी। वहाँ, आधुनिक नावारिनो (Navarino) मे दैवयोग से युद्ध आरम्भ हो गया। इसकी लड़ाई कैंनिग की मृत्यु के तुरन्त बाद हुई। सम्पूर्ण ईजिप्टो-टर्किश टुकड़ी नष्ट कर दी गई। ग्रीस ने शीघ्र ही अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली।

कैंनिग का मूल्यांकन—

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कैंनिग ने अन्य देशों के लिए स्वतन्त्रता सुरक्षित करने को कार्य किए। इस बारे मे कुछ भी नही कहा जा सकता कि वह अपने उदार तथा स्वतन्त्र विचारो को गृहराजनीति मे लाने में कितना सफल होता। सन् १८२७ मे लार्ड लिवरपूल को आघात लगा। जार्ज चतुर्थ ने कैंनिग को प्रधानमंत्री पद प्रस्तुत किया। उसने इसे स्वीकार कर लिया। परन्तु चार महीने समाप्त होने से पूर्व ही वह मर गया।

३५—सर रौबर्ट पोल

(Sir Robert Peel)

प्रश्न १०५—रौबर्ट पील की सफलताओं एवं नीति का वर्णन करो।

अथवा

प्रश्न १०६—रौबर्ट पील द्वारा अपने दल तथा अपने राष्ट्र की, की गई प्रमुख सेवाओ का संक्षेप में वर्णन करो।

उत्तर—स्वतन्त्र चर्च, मेनोट अनुदान तथा अर्थ (Finance):—

सर रौबर्ट पील के मंत्रिमडल की प्रारम्भिक वर्षो मे विशेष महत्वपूर्ण कोई घटनाएं नही हुई। स्काटलैन्ड मे स्थापित प्रेसबाइटेरियन चर्च से एक महान धर्म त्याग हुआ। धर्म-त्यागने वालो ने स्कॉटलैन्ड के फ्री चर्च (Free Church) की रचना की। आयरलेन्ड मे सर आर० पील ने एक महान कार्य, उस वार्षिक वृत्ति (Allowance) को बढ़ाने का बिल पास कर, जोकि सन्

१७६५ से मेनूथ (Maynooth) के रोमन कैथोलिक कालिज के संचालन की सहायता मे बना था, किया। वहां अधिकांशतः आयरिश धर्म-शास्त्री (पुजारी) प्रशिक्षित होते थे। ग्लैडस्टोन ने मत्रिमंडल इसलिए छोड दिया क्योकि उसने इस प्रकार के कार्य के विरुद्ध पहले लिखा था। सर आर० पील ने अर्थ (फाइनेन्स) की ओर भी विशेष ध्यान दिया तथा उसके १८४२ के बजट के साथ ही पिट तथा हस्किसन (Huskisson) की नीति से छोटो-छोटी बहुत सी वस्तुओ से महसूल हटा लिया। उनके लिए उसने एक सीमित अवधि के लिए आय-कर को स्थान दे दिया।

कार्न नियम (The Corn Laws) :—

उस समय की बड़ी समस्या, किसी प्रकार, कौर्न लॉज (Corn laws) थे। वास्तविक कठिनाई यह थी कि निर्माताओं (Manufacturers) के लिए बिना कृषको को समाप्त किए वस्तुएं आसान से आसान की जायें। इस दिशा मे सन् १८१५ से विभिन्न योजनाएँ प्रयत्न कर रही थी। सन् १८४२ मे सर आर० पील ने एक स्लाइडिंग स्केल का प्रबन्ध किया जिसके द्वारा विदेशी नाज पर कर उस हिसाब से लगता था जो कि इङ्गलैन्ड मे मूल्य होता था ताकि यह शीघ्रतिशीघ्र लागू किया जा सकता था। लार्ड जोहन रसल (John Russell), जो कि अब ह्विग्स (Whigs) का नेता था, उसके बारे मे सोचा जाता था कि वह चतुर्थांश (Quartes) में आठ शिलिंग के निश्चित करके पक्ष मे था। इससे, चूंकि यह सदैव वही रहेगा, व्यापार के स्थिर करने की अधिक संभावना थी। फिर भी स्वतन्त्र व्यापारियो, कौबेन (Cobedn) तथा ब्राइट (Bright) ने असन्तोष प्रगट किया। सन् १८४५ में उन्हे भयानक आयरिश दुर्भिक्ष से सहायता मिली।

आयरिश दुर्भिक्ष--

वर्षों तक आयरिशो ने अपनी प्रमुख सहायता के लिए आलुओ पर निर्भर रहना सीख लिया था। सन् १८४५ मे आलू की फसल असफल हो गई। यह निश्चित था कि सन् १८४६ का वर्ष दुर्भिक्ष का वर्ष होगा। यह असह्य लगा कि अनाज का मूल्य कृत्रिम रूप से ऊँचा रखा जाय। तदनुसार पील ने निश्चय किया कि अनाज के नियम जारी किए जांय। उन्होंने अपने पद से त्याग पत्र

देने की इच्छा व्यक्त की। उसने अनुभव किया कि सामान्य चुनाव के समय, अनाज के नियमो का बनाए रखना उन वायदो मे से एक था जो कन्जर्वेटिव्ज (Conservatives) ने किए थे, अतः उनको तोड़ने का प्रस्ताव उसे करना उचित नही लगा।

मंत्रिमंडल की रचना करने में रसल की असफलता—

लार्ड जोहन रसैल, किसी प्रकार, सरकार की रचना करने मे असफल हो गया क्योंकि लार्ड ग्रे (भूतपूर्व प्रधान मंत्री के पुत्र) ने मंत्रिमंडल मे बैठने से मना कर दिया। वह ऐसा न करेगा यदि लार्ड पामर्स्टन (Lord Palmerston) को जिन्होने कि ह्विग्स को अपनी विदेश नीति के कार्यो द्वारा सावधान किया था, विदेश मंत्री होने की अनुमति मिली। लार्ड स्टैनली (Lord Stanley) जिन्होने कि अनाज के नियमो के विरुद्व कुछ भी करने से मना करने से मना कर दिया था सरकार बनाने को तैयार न थे।

अनाज के नियमों का तोड़ना तथा इसका प्रभाव—

सर आर० पी० इस प्रकार एकमात्र संभव मंत्री अपने पद पर रहे। उन्होने लार्ड स्टैनली का स्थान ग्लैडस्टोन (Gladstone) को दिया, जो एक स्वतन्त्र व्यवसायी (Free-trader) के रूप मे लौटा। सन् १८४६ में पील ने अनाज के नियमों (Corn-Laws) के पूर्णतः तोड़ने का प्रयास कार्यांवित किया। इसका प्रभाव नाज की कीमत को तुरन्त कम करना था। इसके तुरन्त बाद ही देश की समृद्धि का महान पुनरुत्थान हुआ। अतः कृषक जनसंख्या द्वारा यह आघात इतना कठोर नही अनुभव हुआ जितना कि उन्होने आशा की थी। यह ज्ञान कि रोटी उतनी सस्ती है जितनी कि संभव हो सकती है, बुरे व्यापार के समय में लोकप्रिय आघातों के विरुद्ध महान सुरक्षक है।

पील का त्याग-पत्र—

इसकी आशा नही की जा सकती थी कि कृषि हित, पील को, जैसा कि वे सोचते थे कि उसने विश्वास घात किया है, आसानी से क्षमा कर देंगे। तदनुसार उन्होने लौर्ड जार्ज बैन्टिक (Lord George Bentinck) के नेतृत्व मे हाउस ऑफ कामन्स में एक नया दल बनाया। डिजरायली

(Disraeli) उनका प्रमुख वक्ता हो गया। इस दल ने पील को उनकी सारी शक्तियों के साथ अलग कर दिया। जब दुर्भिक्ष के कारण उत्पन्न आयरलैंण्ड के राज्य की अव्यवस्था के फलस्वरूप यह आवश्यक था कि 'आर्म्स एक्ट' (Arms Act) को पुनः निर्मित किया जाय, इसके विरोध में मत देने के लिए वे ह्विग्स (Whigs) में सम्मिलित हो गए। पील को पद से त्याग पत्र दिलवा दिया गया।

३६—पामर्सटन
(Palmerston)

प्रश्न १०७—ऐसा कहा जाता है कि पामर्सटन शान के साथ मरा। इस कथन की पुष्टि अथवा विरोध में अपना मत प्रकट कीजिए।

अथवा

प्रश्न १०८—"पामर्सटन गृहनीति में रूढ़िवादी और विदेशनीति मे उदारवादी था" विवेचन करो।

अथवा

प्रश्न १०९—पामर्सटन की विदेश नीति की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

अथवा

प्रश्न ११०—पामर्सटन की नीति और सफलताओ का एक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

प्रश्न १११—लार्ड पामर्सटन के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – परिचय :—

पामर्सटन १७८४ मे उत्पन्न हुआ था। सन् १८०७ में उसने पार्लियामेन्ट में प्रवेश किया। सन् १८०९ मे वह युद्ध का सेक्रेटरी हो गया। १८२८ तक वह इस पद पर आसीन रहा। १८३० में वह विदेश-सेक्रेटरी हो गया। उस समय से लेकर १८६५ मे अपनी मृत्यु तक वह इङ्गलैंड की विदेश नीति के लिए उत्तरदायी था "वह पार्लियामेन्ट का सदस्य लगभग साठ साल तक रहा और

पचास साल तक दफ्तर मे काम किया, और दो वार प्रशासन का अध्यक्ष अर्थात प्रधान मंत्री (Prime Minister) होकर रहा।"

देश में रूढ़िवादी :—

गृहनीति मे पामर्सटन रूढ़िवादी विचार धारा का था। उसने १८३२ के सुधार एक्ट (Reform Act of 1832) को अन्तिम निर्णय के रूप में स्वीकार कर लिया। उसने रसल और लिवरल के निर्वाचन सम्बन्धी कदमों की ओर विरोधी दृष्टि से देखा। लिवरल केबिनेट (Liberal Cabinet) मे उसकी उपस्थिति सुधारवादी संविधान सभा के काम मे रोड़ा अटकाती थी। उसने पेपर ड्यूटी (Paper Duties) के खण्डन के लिए कभी भी अनुमति प्रदान नही की। उसने नोन-कोन्फोर्मिस्ट (Non-Conformist) के कष्टो के प्रति कभी भी सहानुभूति नही दिखाई। वह आयरलैण्ड के किसानो के अत्याचारो से सदैव उदासीन बना रहा। वह ससदीय सुधारो के प्रति बहुत ही अधिक विरोधी भावना रखता था। इसलिए जब तक वह पद पर रहा कोई भी सुधार नही किया जा सका। उदार दल वाले उसे सदैव उपद्रवी की निगाह से देखते थे। वे उसका मरना पसंद करते थे। वह १८६५ मे मर गया। उसकी मृत्यु के दो वर्ष पश्चात् १८६७ मे द्वितीय सुधार एक्ट (Second Reform Act) पास हो गया।

इस प्रकार पामर्सटन उदारवादी सरकार का राज हितैपी सदस्य था। उसको 'जीवित समझौता' कहकर पुकारा गया। वह समिति के अनुसार ह्विग (Whig) था, परन्तु भावनाओ के अनुसार वह रूढिवादी था।

विदेशों मे उदार—

यद्यपि पामर्सटन देश-नीति मे रूढिवादी था, तथापि विदेशी नीति मे वह उदारवादी था। उसने स्वय कहा है :—"हमारी नीति अन्य देशो की नीतियो मे अडंगा लगाने की नही है, वरन् न्यायपूर्ण ग्रेट ब्रिटेन के प्रभाव के कार्यो द्वारा जो इस देश के गर्व की वस्तु है, उन्हे अन्य देशो को जो ऐसी ही संस्थाओ को प्राप्त करने के लिए सघर्ष कर रहे है, सहायता देना है।" यही कारण है कि वह विदेशो मे उदारवादियो और वैधानिक अन्दोलनो का महान नेता रहा।

पामर्सटन भे संसार को वैधानिक प्रजातन्त्र के लिए सुरक्षित करने की

प्रवल आकांक्षा थी। इस वात का विश्लेषण करने के लिए हमारे पास कुछ उदाहरण भी हैं। १८३० मे वेल्जियम की जनता ने क्रान्ति की। वे स्वतन्त्रता और हालैण्ड से विलगता चाहते थे। पामर्सटन ने वेल्जियनो की सहायता की। उसने उनकी स्वाधीनता की घोषणा की। उसने डचो को वेल्जियम को स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिए वाध्य कर दिया। स्पेन और पुर्तगाल मे वैधानिक रानी और उसके निरंकुश चचा के मध्य राजगद्दी के लिए झगडा चल रहा था। पामर्सटन ने रानी की सहायता की। उसने उन्हे सिंहासन प्राप्त करने योग्य वनाया। १८४८ मे यूरोप के अनेक देशों मे क्रान्ति प्रारम्भ हो गई थी। उसने इटली और हंगरी की जनता के प्रति वडी ही उदारता दिखाई। जव कोसुथ (Kossuth) हंगरी से निकाल दिया गया तो पामर्सटन ने उसे अपने देश मे निमन्त्रित किया। उसने इटली की एकता के लिए केवर और गेरी-वाल्डी के कार्यों की सराहना की।

पामर्सटन की विदेश नीति—

पामर्सटन अपनी सुदृढ विदेश नीति के लिए सदैव स्मरण किया जायेगा। उसकी नीति के तीन मुख्य सिद्धान्त थे। प्रथम, उसने विदेशो मे ब्रिटेन का सम्मान और प्रभाव प्राप्त करने का निश्चय किया। ब्रिटेन का व्यक्ति उसके लिए सिविस रोमन्स (Civis Romanns) था। कोई भी ब्रिटेन का आदमी, यदि विदेश मे उसके साथ कोई अन्याय करता तो वह रक्षा के लिए इंगलैण्ड से सहायता माँग सकता था। वह संसार को प्रत्येक देश मे उदारता के आन्दोलन को प्रोत्साहन देकर वैधानिक प्रजातन्त्र के लिए सुरक्षित वनाना चाहता था उसका उद्देश्य यूरोप के राष्ट्रो को स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए सहायता देना था। चूँकि वह सघर्परत राष्ट्रो के प्रति सहानुभूति प्रकट करता था, इसलिए यूरोप के शासक उसे क्रान्तिकारी कहकर पुकारते थे। वे उसके कार्यों में दोप देखा करते थे। उनका कहना था कि वह शासन और प्रजा के सम्वन्धो को खराव करता है। तीसरे, जहाँ तक पूर्वी समस्या का प्रश्न है, वह सदैव रूस के वनावो को संदेह की दृष्टि से देखता था और टर्की साम्राज्य की पवित्रता को वनाए रखना चाहता था। जव रूस ने अपनी वास्तविक भावनाओ को प्रकट कर दिया, और क्रीमिया का युद्ध प्रारम्भ हो गया, तो पामर्सटन ने फ्रान्स

को रूस का विरोध करने के लिए सहायता दी। मित्र राज्य (Allies) सफल हुए। इस प्रकार एक वार फिर टर्की साम्राज्य की पवित्रता स्थापित हो गई।

पामर्सटन की विदेश नीति की आलोचना—

पामर्सटन की विदेश नीति दृढ नीति थी। वह सदैव महाद्वीप कूटनीति की समस्याओ के धोको से बचकर आगे बढता रहा। वह विदेश राजनीति मे एकदम परिवर्तनवादी (Radical) और जूइगो (Juigo) था। उसने अत्याचार का वड़ी प्रसन्नता के साय अपमान किया। परन्तु उसने यह सव कुछ ग्रेट ब्रिटेन के नाम पर किया। जब-जव उसने यूरोप के अत्याचारी शासकों के विरुद्ध दृढ़ विदेश नीति अपनाई, तब-तव उसने ब्रिटिश सम्मान की दुहाई दी। यह प्रयत्न सदैव सफल हुआ। परन्तु उसने ब्रिटेन को अनेक विदेशी युद्धो मे फँसाया। "वह अपने देश को एक प्रधान युद्ध तथा चार साधारण युद्धों मे जनजीवन के पचास वर्षो को फँसाने के लिए उत्तरदायी था। उसने ग्रीस, चीन और पर्शिया में दिक्कते उपस्थित कर दी। सन् १८४६ मे उसने हंगरी मे रूस के व्यवधान की स्वीकृति दी। उसने पोलैण्ड को समर्पित कर दिया, क्योंकि उसने सेल्सविग होल्स्टीन को समर्पित कर दिया था। और अन्त में पचास वर्षों के धोको ने इँगलैण्ड को आश्चर्यचकित, अविश्वसनीय और अप्रिय अवस्था मे छोड़ा।"

३७—डिजरैली
(Disraeli)

प्रश्न ११२—डिजरैली की विदेश नीति का विवरण लिखो।

उत्तर—परिचय—

ग्लेडस्टन की विदेश नीति वड़ी ही शान्तिपूर्ण थी। इँग्लैण्ड के लोग इसमे परिवर्तन चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि विदेश नीति दृढ होनी चाहिए। डिजरैली ने इस परिवर्तन को किया। सर रावर्ट मोरियर (Sir Robert Morier) इस परिवर्तन पर लिखते हुए कहते हैं—"डिजरैली द्वारा दिए गए चुनाव-भाषणो में विदेश राजनीति सम्वन्धी सकेतो, वे प्रसन्न आवाजें जिनसे उनका

स्वागत किया गया, वे स्वर्ण परिभाषाएँ जिनके साथ तत्कालीन प्रधानमंत्री ने रानी के विदेशी मामलो (Queen's foreign Affairs) को Hinbo से मुक्त कर दिया, जिनके लिए वे अंग्रेज राजनीतिज्ञो के दूकानदार वर्ग द्वारा भेजे गए थे, जब उसने इंगलैण्ड के विदेशी भागों मे घरेलू मामले के रूप में प्रकाश डाला, ने यह विश्वास जगाया कि हर मेजेस्टी (Her Majesty) के वर्तमान मंत्रियो के पद युद्ध की शक्ति और शान्ति स्थापन की शक्ति की उद्भूत समानता को एकत्र करने मे दूर जा गिरेंगे।"

डिजरैली की विदेश नीति के सिद्धान्त—

डिजरैली की विदेश नीति दो सिद्धान्तों पर आधारित थी। प्रथम, ब्रिटिश राज्य के हित की रक्षा हो और उसका सम्मान ऊँचा हो। दूसरे, इंगलैण्ड महाद्वीपीय राजनीति से उदासीन नही होगा, चाहे इसका उस पर कोई सीधा प्रभाव न भी पड़े। इस प्रकार उसने ग्लेडस्टन की हस्तक्षेप न करने की नीति को भुला दिया।

डिजरैली और जर्मनी—

१८७५ मे ऐसा मालूम होता था मानो युद्ध छिड़ जायगा। डिजरैली इस प्रभाव मे था कि विस्मार्क फ्रांस की शक्ति को पुनः नष्ट करना चाहता है। इसको सन्देह था कि इस कार्य में विस्मार्क को रूस और आस्ट्रिया द्वारा सहायता प्राप्त होगी। डिजरैली ने इस बात को बड़ी ही गम्भीरता से लिया। उसने घोषणा कर दी कि फ्रान्स पर जर्मन का आक्रमण सहन नही किया जा सकता। यह धमकी प्रभावकारी सिद्ध हुई। शक्ति का सन्तुलन (Balance of Power) यूरोप मे स्थापित हो गया। यहाँ तक कि तीन शासको का संघ (League of the Three Emperors) बन गया। एक और अवसर पर डिजरैली ने विस्मार्क का विरोध किया। जर्मनी ने स्पेन और बेल्जियम के मामलो मे हस्तक्षेप किया। डिजरैली ने उसे रूस से सहयोग करके रोका।

डिजरैली और पूर्वी समस्या—

जल्दी ही डिजरैली को बाल्कन्स मे रूस का विरोध करना पडा। उसे इसको शक्ति का सन्तुलन बनाए रखने की वजह से करना पडा। इससे अधिक उसे ब्रिटिश रुचि की भी रक्षा करनी थी। १८७६ में बोसिना और हरजेगो-

विना मे क्रान्ति उठ खड़ी हुई। इसने टर्की साम्राज्य की स्थिरता को भयभीत कर दिया। रूस ने स्लाव देशों का प्रश्न उठाया। उसने बुल्गरो की मदद की जो टर्की द्वारा बहुत सताए गए थे। अचानक ही रूस-टर्की युद्ध प्रारम्भ होगया। उस अवसर पर डिजरैली ने रूस को एक वार्निंग भेजी। उसने कहलाया कि यदि ब्रिटिश हित पर थोड़ी भी आँच आई तो वह युद्ध की घोषणा कर देगा। रूस ने टर्की को सान स्टीफेनो की संधि (Treaty of San Stefano) करने के लिए जोर डाला। इस संधि के अनुसार बालकन्स का नकशा बदलना था। यह सब ब्रिटेन के हित के विरोध की बात थी। अतः डिजरैली ने हस्तक्षेप कर दिया। उसने लड़ने के लिए डराया। उसने आज्ञा दे दी कि भारतीय सैनिक टुकड़ियाँ माल्टा के लिए बढें। इसने इच्छित प्रभाव डाला। सान स्टीफेनो की सधि (Treaty of San-Stefano) एक यूरोपीय शक्तियो की कान्फ्रेंस द्वारा निर्णीत होनी थी। कान्फ्रेंस १८७८ में बर्लिन मे हुई।

१८७८ का बर्लिन का निर्णय—

बर्लिन की कान्फ्रेंस विस्मार्क की अध्यक्षता मे बैठी। उसमे हुआ निर्णय डिजरैली के राजनीतिक और व्यक्तिगत प्रयत्न थे। बिग बल्गेरिया (Big Bulgaria) जो सान स्टीफेनो की सधि द्वारा रूस के प्रभाव से उत्पन्न हुआ था, समाप्त हो गया। बालकन्स मे रूस का नियन्त्रण कम कर दिया गया। बोसिना और हरजेगोविना आस्ट्रिया के नियन्त्रण मे कर दिए गए। साइप्रस इगलैण्ड को दे दिया गया। स्ट्रैट्स बन्द कर दिए गए।

सम्मान के साथ सन्धि—

डिजरैली इंगलैण्ड वापस गया। उसने कहा कि उसने 'सम्मान के साथ सन्धि' (Peace with Honour) की है। परन्तु यह वास्तव मे ऐसी बात नही थी। मेरियट का कहना है "लौर्ड बीमन्सफील्ड ने जब ऐतिहासिक कहावत की घोषणा की कि 'उसने सम्मान के साथ सधि'(Peace with Honour) प्राप्त की है, तो उसने यदि इगलेण्ड की नही तो लन्दन की भावनाओ की स्पष्ट रूप से वकालत की। सधि असदिग्ध थी, लेकिन जहाँ तक सम्मान का प्रश्न है, मत बट गए थे। दूत ने प्रभु से गार्टर (Garter) की और राजधानी के बैंकर्स और सौदागरो से नगर की स्वतन्त्रता की घोषणा प्राप्त

की। परन्तु इन सम्मानो के लेख पत्र (Endorsement) में जनता की आवाज सर्वसम्मत नही थी।"

सेलिसवरी ने डिजरैली की नीति की आलोचना की है। उसने कहा कि डिजरैली ने गलत घोड़े को पीछे हटाया। ववि‌ल के शब्दो मे, "सेलिसवरी यह भूल गया था कि वाल्कन्स मे सभी घोडे गलत घोड़े थे।"

डिजरैली की विदेश नीति की आलोचना :—

अपनी विजयपूर्ण विदेश नीति द्वारा डिजरैली ने इंगलैण्ड के सम्मान को वढाया, रूस की अग्रगामी नीति को रोका, टर्की साम्राज्य मे अनुशासन स्थापित किया, और साइप्रस को अधिकार मे करके अपने पूर्वी साम्राज्य को प्राप्त कर लिया।"

कार्टर के मत से, "ब्रिटेन और ब्रिटेन का हित प्रथम और अन्तिम रूप मे आया। उसकी नीति वड़ी ही प्रसिद्ध थी और उसके पक्ष मे यह एक महान दलील थी। इसकी यथार्थ विशेपताओ के अतिरिक्त, मानव स्वभाव जो कुछ भी है, डिजरैली की नीति ने उसके युग साथियो पर जादू का असर किया, और उस जादू ने यहाँ तक कि आज के निर्णय पर भी अपनी छाप लगाई है।"

३८—ग्लेडस्टन
(Gladstone)

प्रश्न ११३—"मेरा काम आयरलैण्ड को सन्तुष्ट करना है।" ग्लैडस्टन ने उपर्युक्त लक्ष्य को कहाँ तक प्राप्त किया ?

उत्तर—परिचय :—

ग्लैडस्टन प्रथम अग्रेज राजनीतिज्ञ था, जिसने आइरलैण्ड की समस्या की ओर अपना ध्यान दिया। उसने इसे सुलझाने के लिए भरसक प्रयत्न किया। १८८० मे जव वह पद पर आरूढ हुआ तो उसने कहा "मेरा काम आयरलैण्ड को सन्तुष्ट करना है।" रामजे म्योर कहते हैं कि आयरलैण्ड के प्रश्न ने उसके उदारवादी सिद्धान्तो—उसकी निर्दयता के प्रति घृणा, उसकी धार्मिक स्वतन्त्रता में विश्वास, उसकी राष्ट्रीय भावनाओ के प्रति सहानुभूति, और उसका विश्वास

कि अधिकार की अपेक्षा स्वतन्त्रता जनता और राज्य को स्थिर करने का सीमेंट है आदि को सभी क्षेत्रों मे स्पष्ट कर दिया।"

धार्मिक प्रश्न :—

ग्लैडस्टन ने सर्वप्रथम धार्मिक प्रश्न को उठाया। १८६९ में उसने डिस-एस्टेबलिशमेंट एण्ड डिस-एण्डोमेन्ट ऑफ दी आइरिश चर्च एक्ट पास किया। इस कानून के अनुसार आइरिश चर्च आइरलेन्ड का राजकीय चर्च नही रह गया। यह चर्च इंगलैण्ड के चर्च के साथ मिला दिया गया था। इसे स्वशासन करने की स्वतन्त्रता दे दी गई। इसे अपने निजी विषयो को चुनकर अपने मामलो की अलग ही व्यवस्था करनी थी। चर्च की सम्पत्ति छीन ली गई थी। इसका एक भाग गरीवो की गरीवी को दूर करने के लिए प्रयुक्त किया गया। इस एक्ट ने आइरलैण्ड की जनता के कष्टो मे से एक कष्ट का निवारण कर दिया। परन्तु इसने उसे सन्तुष्ट नही कर पाया।

जमींदारी समस्या :—

ग्लैडस्टन ने तब जमीदारी समस्या को हाथ मे लिया। आइरलैण्ड के भूमि सिद्धान्त मे एक बुराई थी। आइरलैण्ड के किसान जमीदारो द्वारा वहुत सताए जाते थे। किसानों द्वारा की गई उन्नति और बनाई गई इमारतें सभी जमीदारो की वैयक्तिक सम्पत्ति हो जाती थी। किसानों को किसी भी समय बेदखल कराया जा सकता था। ग्लैडस्टन इन सब वातो को पसन्द नही करता था। इसलिए १८७० मे उसने प्रथम भूमि एक्ट (First Land Act) पास किया। इसके अनुसार किसानो को, यदि वे वेदखल किये जाते तो, हर्जाना दिया जाता था। वे अपनी जमीन को खरीद भी सकते थे। उसने भी आइरलैण्ड के किसानों को सन्तुष्ट नही किया। उन्होंने अपने भूमि सघ (Land League) के अध्यक्ष पारनेल की अध्यक्षता मे अधिक सुधारो की माँग की। उन्होने तीन 'F' की माँग की—भूमि की सीमितता (Fixity of Tenure); वेचने की स्वतन्त्रता (Freedom of Sale), और उचित कर (Fair rent)। ग्लैडस्टन ने किक्स एण्ड काइण्डनेस (Kicks and Kindness) की नीति का अनुसरण किया। परन्तु अन्त मे वह उनकी तीन 'F' की माँगो को पूरा करने के लिए राजी हो गया। यह उसने १८८१ मे द्वितीय आइरिश भूमि

एक्ट पास करके पूरा किया। परन्तु फिर भी इसने आइरिश किसानो और पारनैल को सन्तुष्ट न कर पाया। उन्होने एक 'No-Rent Menifesto' जारी किया। इसका परिणाम उत्पात हुआ। परन्तु ग्लैडस्टन ने बुद्धि से काम लिया। वह उनको कुछ हद तक सन्तुष्ट क मे सफल हुआ।

होम रूल आन्दोलन :—

आइरलैण्ड की जनता अधिक असन्तुष्ट हो गई। अब पारनैल की अध्यक्षता में वे होम रूल की माँग करने लगे। वहाँ पर उत्पात के मामले प्रारम्भ हो गए। ऐसी परिस्थितियो मे ग्लैडस्टन केवल दो काम कर सकता था। या तो वह आन्दोलन को दवाए अथवा आइरलैण्ड की जनता द्वारा रखी गई माँगो को पूरा करे। उसने दूसरे को चुना। १८८६ मे उसने प्रथम आइरिश होम रूल विल पेश किया। इसका वहुत अधिक विरोध किया गया और फेंक दिया गया। ग्लैडस्टन ने स्तीफा दे दिया।

१८९२ में वह दुवारा फिर शक्ति मे आया। १८९३ मे उसने द्वितीय आइरिश होम रूल विल रखा। यह हाउस ऑफ कॉमन्स द्वारा पास हो गया। परन्तु इसे लॉर्ड सभा ने अस्वीकृत कर दिया।

निष्कर्ष :—

ग्लैडस्टन आइरलैण्ड को सन्तुष्ट न कर सका। उसकी आइरलैण्ड की नीति असफल हो गई। इसके अनेको कारण थे। वह साम्राज्यवाद का युग था। इसलिए आइग्लैण्ड को अलग कर देने का विचार लोगो के मत के पक्ष मे न होता। प्रेस उससे विरुद्ध था। अंग्रेज लेखक भी उससे सहानुभूति नही रखते थे। इसमे ग्लैडस्टन होम रूल की आवश्यकता रखने वाले लोगो को सन्तुष्ट न कर पाया। इसलिए वे उस पर सन्देह करने लगे। परिणामस्वरूप उसे अपनी ख्याति से हाथ धोना पडा।

३९—आयरलैण्ड की घटनाएँ

(Irish Affairs)

प्रश्न ११४—१८४८ से १८९३ तक की आयरलैण्ड की घटनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—फेनायन के अत्याचार :—

१८४६ और १८४७ के वर्ष आयरलेण्ड मे दुर्भिक्ष के साल थे। उन अकालो ने देश को बुरी तरह क्लान्त कर दिया। फिर भी १८८८ मे जब सारा यूरोप क्रान्ति कर रहा था, आयरलैण्ड ने भी साथ दिया। एक दल का संघटन हुआ जिसे यंग आयरलेण्ड (Young Ireland) कहते हैं। इसे स्मिथ ओ ब्रेन (Smith O, Brian) ने संगठित किया था। इसने आयरलैण्ड की स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाही। इसके लिए जनता इतनी अधिक क्लान्त हो गई थी कि वह इसमे दुर्बल सावित हुई। अतः इसे शीघ्र ही ब्रिटिश ने दवा दिया। दस साल वाद एक और अधिक भयंकर संगठन फेनायन सोसाइटी (Fenian Society) के रूप मे आया। ये लोग समझते थे कि राजद्रोह करने के लिए अभी आयरलैण्ड काफी कमजोर है इसलिए वे अपने कष्टो की ओर ध्यान दिलाने के लिए शक्ति और जवरदस्ती मे विश्वास रखते थे। उदाहरण के लिए उन्होने इंगलैण्ड मे वम्व फेंकने के लिए व्यक्ति भेजे। हजारो आयरलैण्डवासी अपना देश छोड़कर सयुक्त राज्य अमेरिका मे जाकर बस गए। फैनाइनो ने तब कनाडा पर धावा वोलने की योजना वनाई। ब्रिटिश सरकार ने जासूसो के प्रयोग से फैनायनो की विभिन्न योजनाओ का पता लगा लिया। सैंकडो आयरलैण्ड मे वन्दी वना लिए गए। उनको लम्वी-लम्वी सजाएँ दी गईं। केनेडा का धावा सरलता से दवा दिया गया। इंगलैन्ड मे फेनायन वम्व क्लर्कन वान जेल को गिराने के प्रयत्न में प्रयोग किये गये। वहाँ पर कुछ आयरलैण्डवासी जेल मे डाल दिये गए। मेनचस्टर मे पुलिस पर आक्रमण कर दिया।

ग्लैडस्टन प्रधान मन्त्री हुआ :—

इस आसकालीन युद्ध ने ब्रिटिश राष्ट्र को भयभीत और क्रोधित कर दिया। ग्लैडस्टन जिस समय प्रधान मंत्री पद पर आरूढ हुआ उस समय यह आन्दोलन चरम सीमा पर था। उसने घोषणा की कि इसे रोकने के लिए दवाव ही पर्याप्त नही है। उसने कहा कि जिन कष्टो ने आयरलैण्ड वासियो का अहित किया उनको दूर करने का कुछ प्रयत्न किया जाना चाहिए।

धार्मिक निर्णय :—

ग्लैडस्टन का प्रथम प्रयत्न आयरलैण्ड वासियो की धार्मिक समस्या को सुलझाना था। वास्तव मे आयरवासी रोमन कैथोलिक धर्म को मानने वाले थे। केवल अल्सटियर (Ulstear) ही इसका अपवाद था। ये सख्या मे अधिकतर प्रेसबाइटीरियन थे। परन्तु प्रोटेस्टैंट एपिस्कोपल चर्च यहाँ का कानून द्वारा 'स्थापित' चर्च था। आयरलैण्ड वासियो को इसकी सहायता के लिए अपनी आय का दसवाँ भाग देने को विवश किया जाता था। ग्लैडस्टन की अपनी स्वयं की इंगलैण्ड के चर्च के प्रति भक्ति ने विशेषकर धार्मिक प्रश्न पर सोचने के लिए वाध्य किया। उसका विश्वास था कि जो चर्च केवल जनता की कुल संख्या के दसवे भाग का ही प्रतिनिधित्व करता है, उसे ऐसी विशेषाधिकार पूर्ण स्थिति मे नही रखना चाहिए। अतः १८६९ मे उसने प्रोटेस्टैन्ट चर्च की समाप्ति (Disestablishment of Irish Church) के लिए एक बिल का प्रस्ताव किया। इसका अर्थ यह था कि एपस्कोपल चर्च को आयरलैण्ड के अन्य चर्चो के समकक्ष रखा जाय। इसके लिए आय का दसवाँ भाग न दिया जाय। इसकी सम्पत्ति का वहुत वड़ा भाग अन्य कार्यों मे अर्थात् गरीवो की सुरक्षा मे खर्च कर दिया गया।

भूमि की समस्या और प्रथम भूमि एक्ट—

इसके पश्चात् भूमि समस्या ने ग्लैडस्टन का ध्यान आकर्षित किया। आयरलैन्ड की गरीवी ने सभी शुद्ध मस्तिष्क वाले व्यक्तियो को विचार-मग्न कर दिया। आयरलैण्ड वासियो के पास वहुत थोड़े उद्योग थे। जनता अपनी भूमि को सुधारने योग्य न थी क्योंकि वह वहुत गरीब थी। आयरलैण्ड मे पैतृक सम्पत्ति के बँटवारे की प्रथा इतनी खराब थी कि किसान के उत्तराधिकारियो मे वह तव तक छोटे-छोटे भागो मे वटती रहती थी जव तक कि वह एक व्यक्ति का पेट भरने के अयोग्य न हो जाती थी। वडे वडे जमीदार सदैव असावधान और अनुपस्थित रहते थे। वे इङ्गलैड मे रहते थे। उनके एजेण्टो का मुख्य कार्य किसानों से कर वसूल करना था। आयरलैण्ड मे इमारतो और दरवाजो की मरम्मत का उत्तरदायित्व सब किसानो पर ही था। परन्तु इन कामो मे खर्च करने के वदले मे उसे किसी प्रकार का पारितोषिक नही मिलता था। इंगलैन्ड

में जमींदार इस सबके लिए उत्तरदायी थे। उसे भूमि की कोई जमानत नही देनी पड़ती थी। वह टेनेन्ट एट विल (Tenant-at-will) होता था। जमीदार उसे कभी भी निकाल वाहर कर सकता था, और यदि वह चाहे तो उसके लगान को वढा सकता था। इस प्रकार जो किसान अपनी भूमि को सुधार कर अच्छा वना लेता था उसका लगान भी वढा दिया जाता था। यदि वह उस वढे कर को अदा नही कर सकता तो उसे वेदखल कर दिया जाता था। और उसका फर्म, जिस पर वह काम करता था, उस किसान को दे दिया जाता था जो उसे अधिक कर दे सके। ग्लैडस्टन ने अच्छी तरह समझ लिया था कि आयरलैंण्ड के किसानो की दयनीय दशा को दूर करना होगा। उसका १८७० का प्रथम भूमि सुधार एक्ट (First Land Act) इस अवस्था को कम करने का प्रयत्न था। इसने इस वात पर जोर दिया कि जो किसान अपनी भूमि को सुधार लेता है उसे उसके वदले मे पारितोषिक मिलना चाहिए। साथ ही, वह किसान जो लगान न अदा करने और भूमि की न्यायपूर्ण (Reasonable) शर्तो को स्वीकृत न करने के अतिरिक्त और किसी कारण से वेदखल कराया गया है तो उसे भी उसका हर्जाना मिलना चाहिए।

भूमि संघ (The Land League)—

इससे अधिक ग्लेडस्टन कर भी नही सकता था। इसका कारण यह था कि उसे हाउस आॅव लार्डस के विरोध का सामना करना पड़ता था। यह जमीदारो के सभी प्रकार के विशेपाधिकारो के लिए वना हुआ था। परन्तु अधिक कार्य करने के लिए आवश्यकता जल्दी ही प्रत्यक्ष हो गई। यदि खराव होता तो किसान कर देने मे अपनी गरीवी के कारण असमर्थ होते थे। १८७० के एक्ट के नियन्त्रण मे रहते हुए भी जमीदार किसानो को वेदखल कर सकते थे। १८७१ मे माइकिल डेविट (Michael Davitt) ने लेण्ड लीग (Land League) की स्थापना की। इसने सव किसानो को एक सूत्र मे बाँधकर खाली पड़ी जमीन के लिए अधिक कर देने से रोककर वेदखली के मामलो को समाप्त करने का लक्ष्य रखा और यदि कोई कठोर जमीदार होता तो उसके लिए लगान हड़ताल (Rent Strikes) की योजना वनाई। यदि

कोई इस कानून को भंग करता तो उसे एक कोढी अथवा वृद्ध के समान संघ से निकाल दिया जाता था। उसको कोई भी भोजन नही दे सकता था। यदि कानून तोडने वाला कोई जमीदार होता तो उसके लिए किसी प्रकार का भी कोई व्यक्ति काम नही करता था। तब दुबारा फिर १८७६ मे पोटेटो अकाल पडा। जमीदारो ने हजारो दुखी किसानो को बेदखल करा दिया। वे लगान देने मे पूरी तरह से असमर्थ थे। अपने अपने घरों से निकाल दिए जाने पर इन किसानो ने हत्या करने और उपद्रव करने का काम करना प्रारम्भ कर दिया। जमीदारो पर आक्रमण किए जाने लगे। अनेक भयानक अपराध होने लगे।

द्वितीय आयरिश भूमि कानून और तीन एफ (F)—

जब १८८० में ग्लेडस्टन ने अपना पद सम्हाला, तो उसने आयरलैण्ड को उन्नत करने के लिए और कदम उठाने का निश्चय किया। अपने साथ एक अच्छे बहुमत द्वारा वह स्थायी हो सका। इसलिए १८८१ मे द्वितीय भूमि सुधार एक्ट सामने आया। इसे तीन 'F' का मजाक वाला नाम दिया गया। (तीनों का अर्थ है—उचित लगान, भूमि का स्थायित्व, और स्वतन्त्र विक्रय) ऐसा कहा गया कि लगान पंचायत फैसले के विषय है। एक किसान न्यायालय मे अपने लगान को निश्चित करने के लिए एक अपील कर सकता था। यदि वह निश्चित लगान को दे देता तो उसे बेदखल नही किया जा सकता था। यदि वह अपनी सम्पत्ति को छोड़ना चाहता तो वह अपनी भूमि को भी बेच सकता था। यह कानून किसानो को बुरे समय से बचाने और निर्दय जमीदारो के विरुद्ध सहायता देने के लिए बना था। परन्तु आयरलेण्ड वासी इतने अधिक परेशान हो गए थे कि उन्होंने इन नवीन भूमि-न्यायालयो में जाने से इनकार कर दिया।

पारनैल और होम रूल—

इसका उदय नवीन नेता और नवीन आन्दोलन के कारण हुआ। इसका आयरिश और ब्रिटिश इतिहास दोनो पर ही महान प्रभाव पड़ा। पारनैल ने होम रूल (Home Rule) की मांग को रखा।

पारनैल एक प्रोटेस्टेन्ट धर्म को मानने वाला था। उसका पिता एक

जागीरदार था। उसकी शिक्षा इंगलैंड मे हुई थी। उसकी माँ एक अमेरिकन स्त्री थी। उसने सयुक्त राज्य अमेरिका का भ्रमण किया था। उसमे भाषण देने की महान दैवी देन थी और यहाँ तक कि सगठन की महानतम दैवी देन थी। वह वड़ा ही दृढ परन्तु दयालु था और उसमे दृढ निश्चय की एक विशेषता थी। ऐसी दृढ़ता ही उग्र आयरलैंड वासियो को एक सूत्र मे बाँधने के लिए आवश्यक थी। ऐसा विश्वास करके कि आयरलैंड ग्रेट ब्रिटेन मे कभी भी सुधार अथवा अपने कष्टो की ओर उचित ध्यान आकर्षित करने में सफल नही होगा, उसने विचार किया कि आयरलैंड वासियो के कष्टो का सही निवारण उनको उनकी निजी पार्लियामेन्ट देकर और होम रूल प्रदान कर ही किया जा सकता था। ग्लैडस्टन इन विचारो मे सहयोग देने के लिए आगे आया परन्तु कन्जरवेटिव दल यूनियन से मिल गया।

पारनैल ने सोचा कि आयरलैंड मे उपद्रव मचाने की अपेक्षा इंगलैंड जाकर पार्लियामेट मे हलचल वचाना अधिक प्रभावपूर्ण मार्ग था। इसलिए उसने [आयरलैंड के एम० पीओ का एक संगठन वनाया। उसने रोड़े अटकाने की नीति का प्रारम्भ कर दिया। आयरलैंड के सदस्य प्रत्येक वाद-विवाद को, अपना समय आने पर अच्छे और अधिक देर तक वोलने वाले वक्ताओ को वुलाते और लगातार व्याख्यानो का क्रम लगाकर, रोक देते। परिणाम स्वरूप हाऊस ऑफ कॉमन्स की कार्यवाहियो का सचालित होना विल्कुल ही असम्भव हो गया।

विरोधी प्रयत्न और प्रतिरोधी कानून—

पारनैल लैण्ड लीग के साथ यह करता रहा। अग्रेज लोग आयरलैंड की कठिनाइयो और हाऊस आफ कॉमन्स की रुकावटो से वहुत अधिक क्रोधित हो गए। अतः ग्लैडस्टन को अपने निर्णय के विरुद्ध विरोधी प्रयत्नो को प्रयोग करना पडा। प्रतिरोधी कानून ही केवल ऐसी अवस्था मे अनुशासन वनाए रखने का साधन था। यदि ऐसा न करने का ग्लैडस्टन के मन मे विचार भी आता तो उसे तुरन्त ही पद से त्याग पत्र देना होता। १८८१ मे प्रतिरोधी कानून पास किया गया। इसका अर्थ था कि आयरलैंड वासियो के सामान्य अधिकारो का समाप्त किया जाना। पुलिस को सारी शक्तियाँ सौप दी गईं।

मजिस्ट्रेट किसी भी व्यक्ति को विना मुकद्दमा चलाए जेल में डाल सकता था। इसने आयरलैंड के सदस्यों को क्रोध और विरोध करने के लिए उकसाया। अन्त मे ग्लैडस्टन ने फ़ोरेस्टर (Forester) को जो उस समय आयरलैंड का मुख्य सेक्रेटरी था स्वयं पारनैल को वन्दी वनाने की आज्ञा दी। उसने कोई अपराध नहीं किया था।

ग्लैडस्टन की पारनैल के साथ संधि—

ऐसी नीति की गलती जल्दी ही स्पष्ट हो गई। उपद्रव एकदम और वहुत जल्दी ही खराव कदम पर वढ़ने लगे। ग्लैडस्टन ने पारनैल के साथ संधि की। पारनैल को अपने साथियो को अन्यायपूर्ण कार्यो को करने से रोकना था। ग्लैडस्टन को किसानो को जो अपने लगान को वहुत दिनो से नही दे पाये थे सहायता देने की वात विल में लानी थी। जो भी आशाएँ इस संधि से सम्भव थी वे सव एक राजनैतिक हवा द्वारा समाप्त करदी गई। आयरलैंड के कुछ क्रान्तिकारी व्यक्ति राजनैतिक सेक्रेटरी तक की हत्या करना चाहते थे। परन्तु गलती उन्होंने लॉर्ड फ्रेड्रिक केवेन्डिरा को जो मुख्य सेक्रेटरी था फोइनिम्स पार्क डवलिन मे वर्क के साथ मार दिया। इसने इँगलेंड में रोप की ऐसी लहर दौड़ाई कि सान्त्वना की सभी आशाएँ समाप्त हो गईं। इसका प्रत्यक्ष परिणाम एक नवीन कोअर्सन विल था।

ग्लैडस्टन और होमरूल :—

फिर भी ग्लैडस्टन ने अपने सिद्धान्तो को विकसित किया। यह स्पष्ट था कि निरोध अपराधियो को दण्ड देता। परन्तु इसने कष्टों पर कोई प्रभाव नही डाला जिनकी वजह से अपराधियो ने ये अपराध किये थे। ग्लैडस्टन ने इसे देखा। इसने निश्चय किया कि लिवरल दल को आयरलैण्ड को वही देना चाहिए जिसकी वे माग करते हैं। वह अपने सभी साथियो को इसकी प्रतीति न करा सका। इन मामले पर उसके सवसे अधिक वायदा करने वाले लिवरल जोसेफ चेम्वरलेन ने दल से त्याग पत्र दे दिया। अभी तक ग्लैडस्टन रक्षा करता रहा। १८८६ में वह होम रूल विल (Home Rule Bill) लेकर आया। इसने आयरलैण्ड को डब्लिन मे अपनी निजी पार्लियामेन्ट दी होती जिसमे वे आयरलैण्ड के मामलो से सम्वन्ध रखते परन्तु सेना, नौसेना, आयात-निर्यात कर

श्रौर विदेशी नीति ग्रेट ब्रिटेन में ही रहे होते। वह इस प्रयत्न को चला न सका। लिबरल दल के एक गुट ने इसके विरुद्ध मत दिया। सरकार की हार हुई।

दबाने की नीति :—

कन्जर्वेटिव दल सत्ता मे आया। उसका निराकरण कठोर निरोध करना था। क्राइम एक्ट ने आयरलैण्ड में जूरी द्वारा सुने जाने वाले मुकद्दमो की सुनवाई बन्द कर दी क्योकि कोई भी आयरलैन्ड की जूरी बेदखल नही कर सकती थी। इसलिए मुकद्दमो की सुनवाई सरकार द्वारा नियुक्त विशेष मजिस्ट्रेट द्वारा होती थी। देश की कठोर व्यवस्था और सैकड़ो को बन्दी बनाने के कार्य ने कुछ काम किया। परन्तु, सम्भवतः, सबसे अधिक पारनैल के दल की आपसी फूट का प्रभाव पड़ा। १८९० मे उसका नेता तलाक के मामले मे फँस गया। आयरलैण्ड ने, रोमन कैथोलिको के रूप मे, इसे स्वीकृत नही किया। पारनैल के अनेक साथी हाऊस ऑफ कॉमन्स मे उसके विरोधी होगए। आयरलैंड के पादरियो ने लोगो को उसके विरुद्ध भड़काया। जो दल जब संगठित था इतना अधिक प्रभावशाली साबित हुआ था अब निराशाजनक रूप से नष्ट-भ्रष्ट हो गया। यहाँ तक कि १८९१ मे पारनैल की मृत्यु पर भी यह संगठित न किया जा सका। आर्थर बालफोर आयरलैण्ड का सेक्रेटरी हो गया। उसकी नीति एक ओर तो जबरदस्ती अशान्ति को दबाने की और दूसरी ओर आर्थिक कठिनाइयो से छुटकारा प्रदान करने की थी।

भूमि खरीदने का कानून :—

१८८५ मे एक लैण्ड परचेज एक्ट पास हुआ। इसके अनुसार ब्रिटिश सरकार ने बड़ी ही निम्न दर पर रुपया उधार दिया जिससे किसान भूमि खरीद सकें। अब कन्जर्वेटिवस ने भूमि समस्या को हल करने के लिए नए कदम उठाए। १८९१ मे बाल्फोर द्वितीय भूमि खरीदने के कानून को पास कराने मे सफल हुआ। उसने लाइट-रेलवेज एक्ट (Light Railways Act) और कान्जेस्टेड डिस्ट्रिक्ट्स बोर्ड एक्ट (Congestive Districts Board Act) जैसे कानूनो को भी पास किया। इस प्रकार वह आयरलैण्ड मे अत्यधिक खुशहाली प्राप्त कराने की आशा करता था।

होम रूल की अस्वीकृति :—

१८९२ में ग्लैडस्टन पुनः सत्ता में आया, जबकि उसकी आयु बयासी साल थी। वह वापस आया परन्तु केवल एक होम रूल दिलाने के उद्देश्य को लेकर। उसने बड़ी विजय के साथ हाऊस ऑफ कॉमन्स से इस बिल को पास करा लिया। परन्तु हाऊस आफ लार्ड्स ने इसे अस्वीकृत कर दिया। इस विरोध के सामने ग्लैडास्टन स्वयं भी झगड़ सकता था। अतः उसने त्याग पत्र दे दिया।

४०—फैक्ट्री और फैक्ट्री कानून

(Factory and Factory Legislation)

प्रश्न ११५—फैक्ट्री प्रणाली की क्या-क्या खराबियाँ थीं ? उनको दूर करने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेन्ट द्वारा क्या-क्या कदम उठाए गए ?

उत्तर—असंतोषजनक इमारतें :—

कपड़े बुनने की फैक्ट्रियो के रूप मे फैक्ट्री प्रणाली अठारहवी शताब्दी के अन्तिम चतुर्थांश मे प्रारम्भ हुई। उस समय लैसाज फेयर (Laissaz-faire) के सिद्धान्त सामान्य रूप से मान्य थे। कारखानो की स्थापना और निर्माण के लिए किसी भी प्रकार का कोई जन-नियम अथवा विरोध नही था। उनमे से अनेको ऐसी इमारतें थी जो मुख्यतया अन्य उद्देश्यो को लेकर निर्मित की गई थी। ये इमारतें प्रायः संतोषप्रद होने से कोसों दूर थी। जब खासकर कारखानो के लिए ही निर्माण किया जाता था तो वे उनके स्वामियो को अधिकतम लाभ हो, इस दृष्टि से बनाई जाती थी। उसमे काम करने वालो के स्वास्थ्य, आराम, सुविधा और सुरक्षा का कोई ध्यान नही रखा जाता था। आधुनिक मापदण्ड से मापने पर इनमे से अधिकाश इमारतें अयोग्य साबित करने योग्य हैं। वे खराब तरीके से प्रकाशित होती थी; खराब तरीके से हवा का प्रबन्ध किया जाता था, अस्वास्थ्यकारी गन्दी और भीड़ वाली जगहो पर थीं। खतरनाक मशीनरी को ढक कर नही रखा जाता था। चिन्ताजनक और मृत्युजनक घटनाएँ सामान्य घटनाएँ थी।

स्त्रियों और बच्चों को रोजगार—

कारख़ानो के मालिको ने इस बात को बडी जल्दी खोज निकाला कि उनके काम का एक बहुत बडा भाग स्त्रियो व बच्चो द्वारा पूरा किया जा सकता था। उनका पारिश्रमिक आदमियो की अपेक्षा सस्ता था। १६०१ के पुअर लॉ (Poor Law) ने घोषणा कर दी थी कि दरिद्र बच्चो को काम से लगाया और सिखाया जाय। अतः मिल मालिकों का मजदूरो के घरो के चक्कर लगाना और उनके बच्चो को नौसिखिए के रूप मे पकड़ कर काम कराना एक सामान्य बात हो गई। ये बच्चे कारखानो मे ले जाए जाते थे। वहाँ पर उनको काम पर काफी अधिक घंटो तक रखा जाता था अर्थात् बारह से सोलह घटे प्रति दिन। उनको इतवार तक को आराम नही करने दिया जाता था, जब कि मशीनो को साफ करना ही उनका मुख्य कार्य था। उनको कारखाना मालिक की ओर से खाना, कपडा और मकान दिया जाता था। कुछ अच्छे मालिक दयालु व्यक्ति थे। वे बच्चो के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। वे उनकी रुचियो और हितो से उदासीन नही रहते थे। परन्तु अधिकांश मे मालिक बच्चों के परिश्रम मे केवल लाभ के साधन के अतिरिक्त और कुछ नही देखते थे। बच्चो के काम की देखभाल फोरमैन (Foremen) द्वारा की जाती थी। वे बच्चो को काम मे लगाए रखने के लिए छड़ी और तमाचा तक मारने मे नही झिझकते थे। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि इन परिश्रमी बच्चों की दशा दासो की दशा से अच्छी न थी।

नाबालिग-मजदूरों के प्रति लोगों की भावना—

कारखानो नाबालिग मजदूरो की दशा का सत्य अंश सामान्य जनता द्वारा अनुभव नहीं किया जाता था। जब इसका ज्ञान विस्तृत हुआ तब भी लोग पाँच-छः और सात वर्ष के बच्चो को कारखानो मे काम करते देख विचलित न हुए। जब तक मजदूर का बच्चा चौदह या पन्द्रह साल का न हो जाय, और तब तक का उसका समय शिक्षा और मनोरंजन दो विभागो में विभाजित कर दिया जाय, तब तक उसे अपनी जीविका कमाना प्रारम्भ नही करना चाहिए। यह विचार बिलकुल आधुनिक युग का है। नाबालिग मजदूर उस समय से चले आरहे है जब कि कारखाना प्रणाली प्रचलित भी नही हुई थी।

यह सम्भव था कि कपड़े बुनने के घरेलू उद्योग में छोटे-छोटे बालक जिनकी आयु तीन या चार साल होती थी, उनसे सामान्य कार्यों मे सहायता की आशा की जाती थी। कारखानो मे बच्चों का रोजगार लगना बिलकुल भी बुराई के रूप में नही देखा जाता था।

नाबालिग मजदूरो के प्रति राजनीतिज्ञो और अर्थशास्त्रियों के विचार—

कुछ समय बीतने पर, जब फैक्ट्रियो मे काम करने वाले नाबालिग मजदूरों की दुर्दशा का पता चला तो जनता मे कुछ उत्तेजना उत्पन्न हुई। दयालु पुरुष और स्त्रियो का ऐसा विचार था कि बच्चो को काम देना अधिक अच्छा है। उनका विश्वास था कि व्यवस्था मे आधुनिकता लाई जाय। परन्तु वे कठोरता, खराब भोजन और अधिक काम के घंटो को हानिकारक नही समझते थे। तथापि राजनीतिक और अर्थशास्त्री इस बात से सहमत थे कि इन्डस्ट्री को अकेला स्वतन्त्र छोड दिया जाय तो यह कारखानो मे समृद्धि लावेगा। उनका कहना था कि मालिको और मजदूरो के स्वतन्त्र कन्ट्रैक्ट में राजा द्वारा दखल देना अनुचित है। ऐसा निश्चय किया गया कि मालिको और मजदूरो के मध्य भावताव करने की प्रवृत्ति रहनी चाहिए और यही समझौता सबसे अच्छा भी रहेगा। इसमें बाहर से किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही होना चाहिए।

रोजगार के असन्तोषपूर्ण नियम—

यदि इस विचारधारा पर थोड़ा-सा भी ध्यान दिया जाय तो इसकी अनुपयोगिता स्पष्ट हो जायगी। एक मजदूर अपने लिए काम की खोज करते समय एक धनी मालिक से बराबर का मोल-तोल नही कर सकता। उसको एक परिवार का भरण-पोषण भी करना होता है। यदि वह अपने काम पाने में असफल होता है तो इसका अर्थ उसके अधीन रहने वाले परिवार के सदस्यों के लिए कठिनाइयाँ उपस्थित करना है। पूँजीपतियों के लिए यह कोई विशेष महत्व की बात नही कि वह किसे चुने और किसे छोडे। ऐसी अवस्था में मजदूर को मालिक की शर्तों के अनुसार ही मजदूरी स्वीकृत करनी पड़ती है, चाहे वह फिर कितनी ही असन्तोषपूर्ण क्यो न हो। यदि एक पूर्ण विकसित व्यक्ति अपने मालिक से संतोषपूर्ण मोल-तोल नही कर सकता तो फिर बच्चों के लिये जो अपरिपक्व बुद्धि के होते है, जिनका ज्ञान इस संसार के लिए बहुत ही

सीमित होता है, यह कैसे सम्भव है कि वे मालिक के सम्मुख अच्छी तरह मोल-तोल कर सकेंगे।

प्रारम्भिक फैक्ट्री कानून—

अतः, यह अनुभव किया जाने लगा कि इसमे राज्य द्वारा हस्तक्षेप करना और उनको सहायता देना जो मालिको से संतोषपूर्ण मोलभाव नही कर पाते, लेसाजफेयर (Laissez-Fair) के सिद्धान्त के विरुद्ध बात न होगी। परिणाम-स्वरूप एक के बाद एक करके बहुत से कानून बने। इसका उद्देश्य उनकी सहायता करना था, केवल उन्हीं को, जिनको रोजगार प्राप्त करने मे सहायता की आवश्यकता थी। प्रारम्भिक कानूनो मे केवल बाल-श्रमिको को ही सहायता देने की शर्त रखी गयी थी। इन कानूनो को एक फैक्ट्री से लेकर भिन्न-भिन्न प्रकार की फेक्ट्रियो तक धीरे-धीरे विकसित किया गया। परन्तु १६ वीं शताब्दी के मध्य तक पूर्ण आयु के व्यक्ति राज्य से रोजगार की शर्तें तै करने मे सहायता की माँग नही कर सकते थे, फिर भी वे राज्य से अप्रत्यक्ष रक्षा प्राप्त कर सकते थे।

१८०२ ई० का प्रथम फैक्ट्री एक्ट :—

१८०२ ई० मे प्रथम फैक्ट्री एक्ट पास हुआ। इस कानून का सम्बन्ध केवल ऊनी और सूती कारखानो मे काम करने वाले नौसिखिए व्यक्तियो से ही था। उनके काम करने के घटे १२ घंटा प्रतिदिन निश्चित हुआ। उनको रात मे नौ बजे से अधिक समय तक काम पर नही रखा जा सकता था। उनके कपड़ों, उनके निर्देशो और उनके धार्मिक विचारो और फैक्ट्री के पूर्व-पक्षों (Premises) की शर्तों के सम्बन्ध मे नियम बना दिए गए थे। फैक्ट्री का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षण कर्त्ताओ की नियुक्ति कर दी गई परन्तु इस कानून को लागू करने के लिए सही अर्थों मे बहुत ही कम प्रयास किये गए।

प्रथम फैक्ट्री एक्ट के दोष :—

इसे हम पूरी तरह से अप्रचलित कानून नही कह सकते, फिर भी इसके लागू होने के समय से कुछ उद्योगपतियो ने इसको बेकार साबित करने के लिए छोटे-छोटे लड़कों को कारखाने मे रखना ही बन्द कर दिया। उनके स्थान पर वे तनखाह लेने वाले बच्चो को रखने लगे। १८०२ का कानून उन बच्चो पर

लागू नही होता था, अतः उनको ऐसे लड़के प्राप्त करने और बड़ी तादाद में प्राप्त करने में कोई कठिनाई महसूस न हुई। युवक व्यक्तियो की तनखाहें भी वहुत ही थोड़ी थी। अतः उनको अपने बच्चो को रोजगार दिलाने के लिए वाध्य होना पडता था। यदि वच्चों को अधिक घंटो तक अथवा कठोर व्यवहार करके भी काम कराया जाता तो उनके माँ-वाप कोई चिंता न करते, नही तो उनकी स्वयं की लगी हुई नौकरी भी चली जाती।

१८१६, १८२५ और १८३१ के फैक्ट्री कानून :—

१८१६ मे एक नवीन कानून पास हुआ जो उन समस्त नौसिखुए और तनखाह पर काम करने वाले वालको पर लागू होता था। जो सूती कपड़ो के क़ारखानो में काम करते थे। परन्तु ऐसे ही वालको पर, यदि वे अन्य किसी प्रकार के कारखानो मे काम करते तो, लागू नही होता था। इसके अनुसार नौ साल से कम उम्र के वच्चों को काम पर नही लगाया जा सकता था। जिन वच्चो की उम्र सोलह साल से कम थी उनको वारह घटे से अधिक काम करने की आज्ञा नही दी गई थी। प्रथम कानून के अनुसार यह कानून भी अधिक रुचि के साथ लागू न किया गया और यह भी असफल रहा। फिर आगे १८२५ और १८३१ मे इन्ही कानूनो को विस्तृत रूप में करके सुधार किया गया।

प्रारम्भिक फैक्ट्री कानूनों के दोष :—

ये प्रारम्भिक फैक्ट्री कानून कारखानो मे वच्चो के रोजगार सम्वन्धी मामलों पर, अनेक कारणो से, अप्रभावपूर्ण ही रहे। यद्यपि उन लोगो द्वारा जो फैक्ट्री के निरीक्षक नियुक्त किए गए थे, फैक्ट्रियो का निरीक्षण साल में एक या दो वार किया जाता था। अतः कानून द्वारा नए उत्पन्न छल, कपटो का सामने आ जाना स्वाभाविक ही था। अतः जव तक कानून द्वारा कारखाना खोलने और वन्द करने का नियम न वने तव तक घंटो से सम्वन्धित नियमो का लागू करना असम्भव ही था। यहाँ तक कि मजदूर भी अधिक काम के घंटो की कोई सूचना नही देते थे नही तो उनको डर था कि कही वे नौकरी से न निकाल दिए जायँ। जव तक उम्र का कोई निश्चित सवूत न मिले तव तक नौ वर्ष से

कम की आयु के बालकों वाला कानून भी लागू नहीं किया जा सकता था और न प्रभावपूर्ण ही हो सकता था।

१८३३ का फैक्ट्री कानून :—

प्रथम प्रभावपूर्ण फैक्ट्री कानून लार्ड आल्थोपे (Althorp) द्वारा प्रस्तावित और लॉर्ड एस्ले (Lord Ashley) द्वारा संमोदित नवीन सुधारवादी पार्लियामेन्ट द्वारा १८३३ मे पास हुआ। यह कानून रेशम के मिलो को छोड़कर सभी प्रकार के कारखानो पर लागू होता था। इस कानून के अनुसार भी नौ साल से कम आयु के बालको को काम देना रोका गया। नौ और तेरह साल की उम्र के बीच के लड़को को केवल फुटकर समय (Part-time) के लिए ही रखा जा सकता था। उनको फैक्ट्री के अन्दर एक दिन में नौ घंटे अथवा अड़तालीस घंटे प्रति सप्ताह से अधिक काम नहीं करना होता था। उनको कम से कम दो घंटे प्रतिदिन स्कूल मे देना होता था। उस विद्यालय में लगने वाला शुल्क उसके मालिक से लिया जाता था। जिन युवक मजदूरो की आयु तेरह और अठारह के मध्य थी उनके काम करने के घंटे बारह घंटा प्रति दिन अथवा उनहत्तर घंटे प्रति सप्ताह निश्चित किए गए। उनको रात में काम करने की आज्ञा नही थी। इस कानून को ठीक तरह लागू करने के लिए चार निरीक्षक नियुक्त किये गए। उनको उन उद्योगपतियो पर जो कानून का उलंघन करते, जुर्माना करने का अधिकार दे दिया गया।

कानून द्वारा हुए परिवर्तन—

१८३३ मे दिए गए फुटकर समय (Part-time) की प्रणाली ने १९वी शताब्दी की अँग्रेजी फैक्ट्रियो के जीवन मे एक महत्वपूर्ण भाग लिया। इसकी सबसे अधिक देखने वाली बात जो है वह यह है कि इसने बच्चो की अनिवार्य शिक्षा के प्रारम्भ की ओर इंगित किया। अभी तक बच्चो को स्कूल में भरती नही किया जा सकता था। परन्तु जो बच्चे कारखानो में काम करते थे उनको अब कुछ थोडी बहुत शिक्षा मिलने लगी। फैक्ट्री निरीक्षक, जिन्होने पहले के भ्रमण कर्त्ता (Kisitors) का स्थान पाया, कानून को लागू करने में अधिक योग्य सिद्ध हुए। भ्रमणकर्त्ता स्थानीय व्यक्ति ही हुआ करते थे। वे काम के सम्बन्ध मे अधिक जानकारी भी नही रखते थे। वे अधिकांश रूप से, मिल-

मालिको से मित्र-सम्बन्ध रखते थे। निरीक्षक (Inspectors) अपरिचित हुआ करते थे। वे अपना सारा समय इसी काम को पूरा करने में लगाते थे। वे उद्योगपतियो से बिना किसी पक्षपात के कार्य किया करते थे। जुर्माना कर देने के अधिकार बहुत अधिक बढ़ गए क्योंकि मिलमालिकों को कानून तोड़ने के लिए सुरक्षा का कोई अवसर ही नही दिया गया था।

१८४४ का फैक्ट्री कानून—

१८४४ मे पील ने एक और प्रभावपूर्ण फैक्ट्री एक्ट प्रस्तावित किया। इसने आल्थोर्प के प्रस्तावो को अनेक प्रकार से विस्तृत और सुगठित किया। एक बालक के कारखाने मे काम करने की आयु घटाकर ६ वर्ष कर दी गई। यह देखने में तो गलत दिशा मे उठाया गया कदम मालूम पड़ता है। परन्तु यह ध्यान में रखने की बात है कि जन्म और मृत्यु का हिसाब रखना १८३६ से ही प्रारम्भ हुआ था। इससे पहले से पैदा हुए बच्चे के लिए ऐसा कोई ढंग नही था जिससे यह जाना जा सके कि वह नौ साल की आयु पूरी कर चुका है। जैसा कि आल्थोर्प तथा अन्य पहले के एक्टो द्वारा आवश्यकता महसूस की गई थी। ऐसा भी सम्भव था कि उन बालकों को जिनकी आयु सात या आठ साल की हो उन्हे नौ साल का बता दिया जाय। भविष्य में आयु का सबूत जन्म-तिथि के सार्टीफिकेट पेश करने पर ही सही होता था। इस कानून द्वारा पार्ट टाइम प्रणाली का भी सुधार किया गया। इसके अनुसार आठ और तेरह साल के मध्य की आयु वाले बच्चे साढे छः घटे से अधिक काम नहीं कर सकते थे जिसमें तीन घंटे स्कूल के भी सम्मिलित होते थे। परन्तु एक पक्षांतर (Alternative) मंजूर किया गया। इसके अनुसार बच्चे स्कूल और फैक्ट्री मे भिन्न-भिन्न दिनो को जा सकते थे। यदि इस प्रणाली को अपनाया जाता तो उनके काम करने का समय १० घंटा प्रति दिन होता। अच्छी संगठित और व्यवस्थापित कारखानो में इस पक्षातर वाली प्रणाली को स्वीकृत कर लिया गया। बच्चो के दो पक्षो को काम दिया जाता था। युवक मजदूरो के काम के घंटो को औरतो को भी सम्मिलित कर लेने के पश्चात् बढ़ा दिया गया। इस प्रकार पुरुषो को छोड़कर हर वर्ग के मजदूरो को सुरक्षा प्रदान कर दी गई। फैक्ट्री के निरीक्षकों को जुर्माना करने के अधिकार से वंचित कर दिया

गया । जो मिल या कारखाना मालिक इस नियम का उलंघन करता था उसे स्थानीय मजिस्ट्रेट के सामने फैसले के लिए उपस्थित होना पड़ता था । यह प्रणाली हर प्रकार से संतोषजनक थी । यह अपराधी व्यक्तियों के लिए सुविधा-पूर्ण था । वह अपनी सुरक्षा की माँग कर सकता था ।

फैक्ट्री कानूनों को लागू करने में कठिनाइयाँ—

फैक्ट्री कानूनो को लागू करने की कठिनाइयाँ मुख्य रूप से इसलिए उपस्थित हुई क्योंकि काम करने का समय सुवह साढ़े पाँच से शाम को साढ़े आठ तक बढा दिया गया । यह काम करने का समय पन्द्रह घंटो का था । इस प्रकार इस समय के भीतर वच्चो और किशोर पुरुषो को नियत समय से अधिक समय तक काम पर लगाए रखा गया या नही, इसका अन्दाज लगाना कठिन था । ऐसा सन्देह किया जाता था कि प्रायः यह समय अधिक ही रहा करता था । सुधारको द्वारा यह बताया गया कि काम करने के घंटो को कानून द्वारा निर्दिष्ट कर दिया जाय ।

१८४७ का फील्डेन का फैक्ट्री एक्ट—

जव १८४७ मे फील्डेन के फैक्ट्री एक्ट द्वारा औरतो के लिए काम का समय दस घंटे की व्यवस्था की गई तव लेसेज फेयर (Laissez Faire) की नीति ने एक कदम पीछे हटाया । अप्रत्यक्ष रूप से पुरुषो पर भी इसका प्रभाव पड़ा क्योंकि उनका काम प्रायः औरतो पर निर्भर रहता था । फैक्ट्री मे काम करने का समय अभी तक पन्द्रह घंटे था । अतः अव भीयह वात निर्णय करना कि कानून का पालन होगा या नही, असम्भव था ।

१८५० का फैक्ट्री एक्ट—

लोर्ड एसले ने मामले को आगे वढाया और सर जार्ज ग्रे ने १८५० के एक्ट का प्रताव पास किया । इसने काम करने के घंटो का विशेषीकरण कर दिया । फैक्ट्रियाँ केवल सुवह छः वजे से लेकर शाम को छः वजे तक खोली जा सकती थी । इसमें भी वीच में भोजन के लिए डेढ़ घन्टा और स्वीकृत हुआ । इसने समस्या का कुछ समाधान किया । यद्यपि प्रतिदिन के अनुसार काम के घंटो को वढ़ाकर साढ़े दस घंटे कर दिए गए थे फिर भी उसमे साठ घंटे प्रति सप्ताह की

सीमा निर्धारित कर दी गई थी। शनिवार को फैक्ट्री बन्द करने का समय दो बजे का निर्धारित किया गया।

फैक्ट्री कानूनों का प्रसार और कानून बनाने की प्रक्रिया—

१८५० के कानून के पास होने से टैक्सटाइल फैक्ट्री में काम करने में लैसाज फेयर (Laissaz Fair) के सिद्धान्त को बहुत बढावा मिला। बाद के वर्षों मे फैक्ट्री एक्ट को नोन-टैक्टाइल (Non-Textile) कारखानो तक विस्तृत कर दिया गया और यहाँ तक कि गोदामो (Warehouses), होटलों, लौड्रियों और जहाज से माल चढ़ाने व उतारने के स्थानों पर भी इसे लागू कर दिया गया। काम करने की दूकानें जो इस कानून से बाहर थी वे कानून के अन्दर १८६७ मे आ गईं। खतरनाक व्यवसाओ के लिए बाद के वर्षो मे विशेष कानूनो को लागू किया गया। फैक्ट्री मे काम करने के लिए बच्चो की आयु समय-समय पर थोड़ा-थोडा करके बढायी गयी। और १९१८ मे पार्ट टाइम प्रणाली को समाप्त कर दिया गया। सन् १९०१ मे फैक्ट्री कानून के सारे नियमों को एक कोड के अन्दर संग्रहीत कर दिया गया।

१९३७ का फैक्ट्री एक्ट—

१९३७ मे एक नवीन फैक्ट्री एक्ट पास किया गया जिसमे १९०१ के कानून को थोड़ा और विकसित किया गया। फैक्ट्रियो और वर्कशोप मे पुरुषो और स्त्रियो के काम करने के घटो को फिर कम कर दिया गया। कुछ नवीन फैक्ट्रियाँ, जैसे फिल्म निर्माण करने की फैक्ट्री, को भी फैक्ट्री एक्ट के अन्दर ले लिया गया। आगे स्वास्थ्य और इलाज के अतिरिक्त फैक्ट्री के स्थान, प्रकाश, वायु, और तापक्रम के बारे मे भी स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए नियमों का निर्माण किया गया।

४१—प्रथम विश्व-युद्ध
(World War I)

प्रश्न ११६—प्रथम विश्व युद्ध के क्या कारण थे ?

अथवा

प्रश्न ११७—वह कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने १९१४—१८ के युद्ध को जन्म दिया ? इसमें इंगलैंड ने क्यों भाग लिया ?

उत्तर—परिचय—

१८७१ मे १६४१ तक का समय आर्म्ड पीस (Armed Peace) का काल कहलाता है। इसमे कोई सन्देह नही कि यूरोप मे शान्ति थी, परन्तु अन्य सभी राष्ट्र भयभीत और संदेह युक्त थे। प्रत्येक देश, चाहे छोटा हो और चाहे बड़ा, अपने-अपने युद्ध के हथियारो को बढाने में लगे हुए थे। अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी करने के लिए एक प्रयास किया गया। परन्तु यह निरर्थक सिद्ध हुआ। इसके अनेको कारण है। वे निम्न प्रकार है :—

(१) राष्ट्रीयता और राज्यीय पक्षपात हीनता—

उन दिनों की राष्ट्रीयता और राज्यीय पक्षपात हीनता दो महान् शक्तियाँ थी। राष्ट्रीयता की भावना ने राष्ट्रो को अच्छी तरह जकड़ लिया था। प्रत्येक राष्ट्र का यह विचार था कि अपने राष्ट्र को उन्नत करने के लिए दूसरे राष्ट्रो का वलिदान भी उचित है परिणामस्वरूप राज्य की पूजा ही समय की व्यवस्था हो गई। लोगों के विचारो में यही भावना घर कर गई कि राज्य ही सर्वोच्च है। एक इतिहासकार कहता है :—"राज्य के लिए अपने हितो की सुरक्षा के समान कोई उच्च उद्देश्य नही है। जहाँ तक महान् शक्तियो (Great Powers) का सम्वन्ध है उनमे शान्ति की स्थापना का कोई आसार नही है, वरन् अधिक से अधिक शत्रुओ को और प्रतिस्पर्धियो को नीचा दिखाना, वह भले ही सही रास्ते पर हों, उनका उद्देश्य है।" अधिकतर इन लोगो के विचार हिंसा से सम्वन्धित थे। अतः यह निश्चय था कि ये विचार युद्ध को जन्म देते।

(२) दो अस्त्रधारी कैम्प—

वीसवी शताब्दी के आरम्भ में यूरोप दो अस्त्रधारी कैम्पो मे विभाजित हो गया। फ्रांस और जर्मनी पुराने शत्रु थे। उनमें से दोनों ही राइन प्रान्त को चाहते थे। विस्मार्क की अध्यक्षता मे जर्मनी अधिक शक्तिशाली हो गया। उसने त्रिराष्ट्र सधि (Triple Alliance) का संगठन किया। इसके तीन सदस्य जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली थे। त्रिराष्ट्र संधि का मुख्य लक्ष्य यूरोप का उपनिवेश वनाने का था। फ्रास को दवाने का निश्चय किया गया। इसने

उसे भयभीत कर दिया। इसलिए उसने इंगलेन्ड से संधि स्थापित कर ली। यह ड्यूल एलायन्स (Dual Alliance) के नाम से विख्यात है। कुछ समय पश्चात् रूस भी इसमे सम्मिलित हो गया। इस प्रकार यह त्रि-राष्ट्र संघ (Triple Enterte) हो गया। इस प्रकार त्रि-राष्ट्र सघ (Triple Alliance) और त्रि-राष्ट्र संधि (Triple Enterte) दोनो एक दूसरे के विरोधी थे। ऐसे विरोध ने युद्ध की धमकी दी।

(३) अंग्रेज-जर्मन प्रतिद्वन्द्विता—

जर्मन और अंग्रेज दोनो ही समुद्र पर अपना-अपना एकाधिपत्य जमाने की कोशिश कर रहे थे। उन दोनो के मध्य वड़ी जवरदस्त प्रतिद्वन्द्विता थी। जर्मन कैशर मे वड़ी भारी महत्वाकाक्षाएँ थी। वह यूरोप की महानतम् विभूति बनना चाहता था। वह संसार भर में अपने उपनिवेश स्थापित करना चाहता था। उसने पूर्वी देशो मे पहुंचने के लिए वर्लिन बगदाद रेलवे का निर्माण किया। इन सब चीजो ने ग्रेट ब्रिटेन को बेचैन कर दिया। वह जर्मनी को अपने पैरों पर गिराने के साधन और रास्ते खोजने लगा।

(४) रूस की महत्वाकांक्षाएँ—

रूस मे भी अपनी महत्वाकांक्षाएँ थी। वह एक स्लाव (Slav) राष्ट्र था। इसके कारण वाल्कन मे उसने सर्वियावालो को सुरक्षित करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार रूस और सर्विया के जातीय हित आस्ट्रिया और जर्मनी के हितो से भिड़ गए। रूस यह चाहता था कि आस्ट्रिया और तुर्क के अधीन सभी वाल्कन्स के सर्वियन स्वतन्त्र हो जायँ। जर्मनी कोन्स्टेन्टीनोपुल पर अधिकार करना चाहता था वाल्कन्स केवल आस्ट्रिया हंगरी द्वारा ही अधिकार में लिया जा सकता था। इस प्रकार महत्वकाक्षाएँ युद्ध को छोड़कर और कहाँ पहुँचा सकती थी?

(५) अगादीर की दुर्घटना—

यूरोप से वाहर भी महान शक्तियो की महत्वाकाक्षाएँ टकराने लगीं। १९०५ मे कैशर ने एक उग्र भाषण दिया। इसमे उसने मुसलमानी देशो को आश्वासन दिया कि वह उन लोगो का सरक्षक था। उसने मोरक्को मे फ्रान्स की अवस्था को चुनौती दी। सन् १९११ मे अगादीर की दुर्घटना घटी।

अगादीर मोरक्को के दक्षिण में एक डाक बंगला था। कैशर ने तत्काल ही एक गन-बोट वहाँ पर भेज दी। उसने कहा कि गन-बोट अपने राष्ट्रवासियों के हितों की रक्षा के लिए भेजी गई थी। पर वास्तविक बात यह थी कि यह गन-बोट मोरक्को मे फ्रांस की सर्वोच्चता को चुनौती देने के लिए भेजी गई थी। जर्मनी और फ्रांस के मध्य युद्ध छिड़ गया होता। परन्तु इंगलैण्ड ने पंच फैसला कर दिया और युद्ध को रोक दिया गया।

(६) बाल्कन्स, यूरोप का मैगजीन पाउडर :—

बाल्कन्स यूरोप का मैगजीन पाउडर हो गया था। बर्लिन की सधि (Treaty of Berlin in 1878) के अनुसार १९०८ मे आस्ट्रिया हंगरी ने प्रोशिया और हरजेगोविना पर अधिकार कर लिया। इन प्रान्तो के निवासी सर्बस (Serbs) लोग थे। अतः यह स्वाभाविक था कि रूस और सर्बिया आस्ट्रिया-हंगरी के इस कदम को पसंद न करते। तभी एक दूसरी घटना और घटित हुई। ग्रीस, मोन्टीनोग्रो, सर्बिया और बल्गेरिया, तुर्क के विरोध मे मिल गए। उन्होने तुर्कों को कोन्स्टीनोपुल के लिए वापस कर दिया। परन्तु तब वे आपस मे ही हर्जाने के बटवारे के लिए लड़ने-झगड़ने लगे।

(७) आस्ट्रिया-हंगरी और रूस के हितों में टकराहट :—

१९१४ में बाल्कन्स मे महान बेचैनी फैली हुई थी। रूस और जर्मनी दोनों ही कोन्स्टेन्टीनोपुल पर अपना-अपना प्रभुत्व जमाना चाहते थे। रूस और ऑस्ट्रिया-हगरी के मध्य अच्छे सम्बन्ध नही थे। "रूस रूमानिया, ग्रीस और सर्बिया के मध्य संघ के लिए कार्य कर रहा था जो सर्बिया के विरुद्ध आस्ट्रिया और हंगरी के बढे हुए कदमो को रोक सकते थे, जबकि ऑस्ट्रिया-हगरी रूमानिया, ग्रीस और बल्गेरिया से दोस्ती करने के कार्य कर रहा था जो कि सर्बिया को विच्छेद कर सकता था और पान-स्लाव महत्वाकांक्षाओं पर रोक लगा सकता था।" यह पाउडर मेगजीन आर्चड्यूक फर्डीनन्द (Archduke Ferdinand), जो ऑस्ट्रिया हंगरी के सिंहासन का उत्तराधिकारी था, की हत्या के कारण प्रज्वलित हो गई।

(८) आर्चड्यूक की हत्या—

२८ जून १९१४ को आर्चड्यूक फासिस फर्डिनन्द की बोसिना की राज-

धानी सीराजेवो में हत्या कर दी गई। आस्ट्रिया ने सर्विया को इस हत्या का उत्तरदायी ठहराया। और आरोप सत्य था। सर्विया आस्ट्रिया का विरोधी था। इसका कारण यह था कि आस्ट्रिया ने वोसिना को अपने अधिकार में ले लिया था। उसने सर्वियावासियो के महान् सर्विया के भौतिक सुख साधनों के स्वप्नो को भंग कर दिया।

(९) आस्ट्रिया का सर्विया को ऐलान—

सर्वियन सरकार का आर्चड्यूक की हत्या में कोई हाथ नही था। परन्तु आस्ट्रिया ने इसका उत्तरदायित्व सर्विया डाला। २३ जुलाई १९१४ को आस्ट्रिया ने उस देश को अन्तिम फैसला (ऐलान) भेजा। उसकी माँगे बडी ही मानहर (Humiliating) थी। परन्तु सर्विया ने दस माँगों मे से नौं माँगो को तो स्वीकार कर लिया। दसवी माँग के लिए वह यूरोपिय शक्तियों की एक पंचायत करना चाहती थी।

(१०) जर्मनी का आस्ट्रिया के लिए कोरा पत्र (Blank Cheque)

हत्या के तुरन्त पश्चात् ही आस्ट्रिया ने कैशर से पूछा कि क्या वह युद्ध में उसकी सहायता कर सकेगा। कैशर ने उत्तर दिया, "आस्ट्रिया जर्मनी की पूरी शक्ति का भरोसा करे।" इस प्रकार जर्मनी ने आस्ट्रिया को कोरा पत्र कर दिया।

(११) युद्ध की घोषणा—

कैशर द्वारा दिए गए आश्वासन से आस्ट्रिया शक्तिशाली हो गई। अतः २८ जुलाई १९१४ को उसने सर्विया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। आस्ट्रियन टुकड़ियाँ दो दिन पश्चात् सर्विया मे घुस गईं। उन्होंने वेलग्रेड पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया।

रूस, फ्रांस और जर्मनी ने युद्ध की घोषणा की—

जब आस्ट्रिया ने युद्ध की घोषणा की तो रूस अपनी सैनिक टुकडियो को बढ़ाने लगा। इसने जर्मनी के कान खड़े कर दिए। उसने १ अगस्त १९१४ को रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। उसी दिन उसने फ्रांस को भी अल्टीमेटम भेज दिया। इसमे उसने फ्रास की तटस्थता की माँग की। फ्रांस ने इसे अस्वीकृत कर दिया। परिणाम स्वरूप ३ अगस्त को जर्मनी ने उसके विरुद्ध

युद्ध की घोषणा कर दी। वह जर्मन सैनिक टुकड़ियों के लिए बेल्जियम से होकर रास्ता चाहता था। जब बेल्जियम ने अस्वीकृति दी, तो उसने उसके भी विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार सर्विया, रूस, आस्ट्रिया, जर्मनी, फ्रांस और बेल्जियम युद्ध की आग मे कूद पड़े। केवल इंगलैण्ड ने अभी तक इसमे भाग नही लिया था।

इँग्लैण्ड युद्ध में भाग लेता :—

जर्मनी ने बेल्जियम पर आक्रमण कर दिया। बेल्जियम का समुद्री किनारा ब्रिटेन से इतना निकट है कि जर्मनी इँगलैन्ड पर भी वहाँ से आक्रमण कर सकती थी। अंग्रेजो ने अपने को सुरक्षित न समझा। बेल्जियम ने भी सहायता के लिए इंगलैण्ड से याचना की। अतः ४ अगस्त १९१४ को इंगलैन्ड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। संसार के अन्य देश भी जल्दी ही युद्ध मे कूद पड़े। इस प्रकार "यूरोप, बारबेरियन से पहले रोमन सम्राज्य के ह्रास के बाद अब फिर मानव जाति के लिए सर्वाधिक भयकर दुर्भाग्य से घिर गया।"

४२—द्वितीय विश्व-युद्ध
(World War II

प्रश्न ११८—द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि और कारणों का संक्षेप में विवेचन कीजिए।

उत्तर—इटली में फासिज्म—

इटली ने प्रथम विश्व युद्ध में इस आशा से भाग लिया गया था कि वह महान् शक्तियो मे अपनी इज्जत कायम कर सकेगा। इस साधन द्वारा सरकार ने समाजवादी तथा अन्य संघो के साथ अपने व्यवहारों द्वारा देश मे अपनी स्थिति को दृढ करने की आशा की थी। परन्तु युद्ध मे इटली की सैनिक हिस्सा बहुत ही थोड़ा रहा। उसका व्यवहार शान्ति कान्फ्रेंस के समय महान् गलती से भरा हुआ था। उसकी भूमि सम्बन्धी उपलब्धि केवल लगभग ९००० वर्ग मील तक ही सीमित थी जिसमे जनसंख्या १,६००,००० थी।

कर्ज, रहन सहन पर अत्यधिक खर्च, युद्ध मे उद्योगो का ह्रास, संधि की व्यवस्था से असंतोष वोल्शेविस्ट समाजवादियो द्वारा क्रान्तिकारी वाद-विवाद, और खाद्य सामग्री की कमी इन सव तथ्यों ने मिलकर राज्य मे असुरक्षा और उपद्रव के उत्पन्न करने मे योग दिया। यह क्रान्ति के लिए वहुत ही अच्छा पृष्ठ भूमि थी।

वेनिटो मुसोलिनी (Benito Mussolini) पूर्व समाजवादी पत्रकार था। वह युद्ध में घायल हो गया था। मार्च १९१९ में उसने एक सभा आमंत्रित की जिसमे वे लोग सम्मिलित थे जो इटली को असमजस पूर्ण स्थिति से वचाने के लिए उत्सुक थे। मुसोलिनी के नेतृत्व मे इन व्यक्तियो ने मिलकर फास्सी डी कोम्वेटीमेन्टों (Fasci di combattimento) अथवा लड़ाकू संघ मे सुधार की योजना के लिए संगठित हो गए। इसका अर्थ था सरकार में परिवर्तन। कम्युनिष्टो द्वारा कारखानो को अक्रमण के मजदूरो की समस्या के समय, उन अनको व्यक्तियो को जो देश में वोल्शेविकवाद की स्थापना से भयभीत थे, फासिस्ट वादियो के पद पर ले आए।

१८२२ मे फासिस्ट ने वहुत वडी शक्ति संगठित कर ली। उन्होने वोलोग्ना से कम्युनिस्ट सरकार को निकाल वाहर किया। उन्होने मिलान पर नगर-सरकार को छीन लिया। अक्टूवर १९२२ को नेपल्स मे एक महान फ़ासिस्ट कांग्रेस वुलाई गई। इसमें मुसोलिनी ने फेक्टा सरकार का त्याग पत्र मांगा। २७ अक्टूवर को फेक्टा (Facta) की अस्वीकृत पर फासिस्टों ने रोम पर चढ़ाई कर दी। राजा ने मार्शल कानून (Martial Low) की घोषणा करने को इन्कार कर दिया। फेक्टा सरकार ने त्याग पत्र दे दिया। विक्टर एमान्युल (Victor Emmanuel) द्वारा मुसोलिनी को केविनेट के निर्माण करने को वुलाया। नवम्वर मे सुधारो को लागू करने और पुनः स्थापना करने के कारण मुसोलिनी एक तानाशाह शक्ति मान लिया गया।

मारपीट, केस्टर आइल (Costor Oil) की व्यवस्था और हत्याओ द्वारा फास्टिस्टो ने अन्त मे खुली प्रतिद्वन्द्विता को दवा दिया। उन्होने दृढ़ता से अपनी सरकार का नियन्त्रण कर लिया। ये झगड़े १९२० तक चलते

रहे। परन्तु अनुशासन की पुनर्स्थापना हुई। औद्योगिक पंच निर्णय आवश्यक कर दिया गया। ताला बन्द करना और हड़तालें समाप्त कर दी गई। एक प्रसिद्ध उपलब्धि १९२९ को लेटेरान संधि (Leteran Treaty) थी। इसके अनुसार पेपल और इटालियन सरकारों ने उस अन्तर को ठीक कर लिया जो उनके मध्य १८७० के इटालियनों द्वारा पेपल के आक्रमण से चला आ रहा था। खाद्य सामग्री की उत्पत्ति को बढाने और बेरोजगार व रहन सहन के खर्चे को घटाने के लिए प्रगतिशील कदम उठाए गए।

जर्मनी में हिटलर की उन्नति—

अडोल्फ हिटलर (Adolph HItler) एक आस्ट्रियन नागरिक था। वह बावेरियन सेना मे प्रथम विश्व युद्ध के समय से सेवा कर रहा था। १९१८ की जर्मन क्रान्ति से वह दुःख से भर गया था। वह नवम्बर १९२३ के बीयर हॉल पच (Bear Hall Putsch) के कारण उसे बहुत ख्याति प्राप्त हो गई थी। इसमे ल्यूडन डोर्फ और हिटलर द्वारा जन्म दिए गए राष्ट्रीय समाजवादियो (National Socialists) ने बावेरियन सरकार का तख्ता पलटने का प्रयास किया था। बलवा दबा दिया गया। हिटलर को जेल मे बन्द कर दिया गया। जब वह जेल मे था तो उसने मीन केम्प (Mein Kamph) लिखा। इसमे उसने अपने जीवन अपने सिद्धान्तो और योजनाओं का विवरण प्रस्तुत किया है। साल के अन्त में जेल से छूटने पर उसने अपना विद्रोह पुनः प्रारम्भ कर दिया।

हिटलर ऐसे कार्य-क्रमो को बना रहा था, जो जर्मनवासियो को आकर्षित किये बिना नही रह सकते थे। उसने तृतीय रीच (Third Reich) के निर्माण कार्य को प्रारम्भ किया। यह महान् जर्मन और नये जर्मन राज्य को जर्मनी मे मिलाने के लिए था। इससे आस्ट्रिया, जैकोस्लोवाकिया और पोलैण्ड जर्मन साम्राज्य मे मिलाने की नीति थी और साथ ही नीदरलैण्ड को भी। उसने, यह जबरन स्वीकृत कराके कि जर्मन सेनाएँ कुचली नही गई वरन् घरेलू क्रान्ति ने युद्ध के प्रयत्नों को हीन कर दिया था, जर्मन गर्व और आत्माभिमान की भावना को फिर से बढ़ाया। उसने घोषणा की कि वर्सेलीज जर्मनी के लिए विश्वाघातक था। उसने शान्ति की संधियो को चुनौती दी।

उसने जर्मनी के युद्ध-संघ (War guilt) को झूठा सिद्ध कर दिया। उसने कहा कि जिऊ-वासी एक विदेशी जाति के थे और उनको तृतीय रीच (The Third Reich) में स्थान नहीं मिलना चाहिए।

१९२३ में जर्मनी की करेंसी के ह्रास के पश्चात् पुर्ननिर्माण के बोझ के होते हुए भी जर्मनी में डेवीज प्लाम (Dawes Plan) ने औद्योगिक जागृति का प्रारम्भ कर दिया। जर्मन के कर्ज ने, जिसका एक बहुत बडा भाग संयुक्त राज्य में लिया गया और महत्वपूर्ण अमेरिकन फार्मों की स्थापना ने नवजागृति में महान योग प्रदान किया। जर्मनी की तीव्र पुनर्स्थापना से फ्रांस को पुनः भय उत्पन्न हो गया। जब १९३१ मे जर्मनी और आस्ट्रिया ने एक आर्थिक पैक्ट की योजना की घोषणा की तो फ्रान्स का राजस्व चलायमान हो गया। फ्रांस के जर्मन कहे जाने वाले देशो में लगे फन्ड को वापस ले लिया गया। इसने एक आर्थिक त्रास के कारण को जन्म दिया। अन्य खर्च करने वाले देशों ने भी फ्रांस के उदाहरण का अनुकरण किया।

जर्मनी सम्पत्ति के ह्रास और ब्रूनिंग की सान्त्वना प्रदायक नीति, जो जर्मनी मे सुरक्षा लाती, की असफलता ने राष्ट्रीय समाजवादियों को सामने ला खड़ा किया। जनवरी १९३३ को हिटलर को चासलर का नाम दिया गया। एक नवीन चुनाव फिर किया गया। राष्ट्रीय समाजवादियो और उनके राष्ट्रीय साथियो ने रीचस्टेग का नियन्त्रण प्राप्त कर लिया। आपत्ति के समय के लिए हिटलर को तानाशाह की शक्तियाँ दे दी गई।

हिटलर के तानाशाह की अध्यक्षता में सभी विरोधी दलों को मुक्ति प्रदान कर दी गई। जुलाई १९३३ मे राष्ट्रीय समाजवादी दल ही एक दल घोषित किया गया। जिउ लोगों के व्यवसाय और व्यापारो का बायकॉट उसी साल प्रारम्भ हो गया जिसने जिउ लोगो को असंख्य यातनाएँ दी। न्यु पेगन आन्दोलन को प्रोत्साहन दिया गया, जो प्रोटेस्टॅन्टवाद और कैथोलिकवाद के विरोध में था। सन् १९३५ मे सर्वराष्ट्रीय सैनिक शिक्षण को प्रारम्भ कर दिया गया।

१९३३ मे जर्मनी ने निशस्त्रीकरण समिति से अपने को हटा लिया। और राष्ट्र संघ (League of Nations) से भी। १९३४ मे हिटलर ने

पोलेण्ड के साथ एक संधि की। मुसोलिनी के साथ वेनिस की सभा मे उसने दो तानाशाह राज्यो के बीच संधि के रास्ते को खोल दिया। हिटलर जर्मनी वापस आगया। वहां तुरन्त ही जून १९३४ के ब्लड पर्ज का अनुसरण किया गया। इसमे ७४ व्यक्तियो को हिटलर का विरोध करने के कारण फाँसी दे दी गई। 'नवीन संकट जल्दी-जल्दी उपस्थित होने लगे। वीना मे नाजी पुच (Nazi Putsch) के समय २५ जुलाई को चासलर डोलफस (Chancellor Dollfus) की छिपकर हत्या करदी गई। नाजी वियना सरकार पर आधिपत्य जमाने की खोज कर रहे थे। वे सम्भवतः सफल भी हो गए होते। परन्तु मुसोलिनी ने अपनी सैनिक टुकड़ियाँ ब्रेनर के दर्रे से होकर आगे बढा दी और उसमे दखल देने की धमकी देकर नाजी कथानक को रोक दिया।

तलाक और सान्त्वना प्रस्ताव :—

१९२९-१९३० मे आर्थिक ह्रास प्रारम्भ हो गया। मध्य यूरोप में आर्थिक संकट आस्ट्रो-जर्मन आर्थिक संघ के फ्रेंच विरोध द्वारा उत्पन्न हुआ। ऑस्ट्रियन क्रेडिट एन्सटाल्ट (Austrian Crecit Anstall) असफल रहा। अतः सरकार ने आर्थिक और नैतिक कृतज्ञता अस्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। प्रेसीडेन्ट हूवर ने प्रस्ताव किया कि अन्तर्राष्ट्रीय देनदारियाँ बन्द कर दी जायें। इसने दुखदायी परिस्थिति को दूर कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय कर्जे की देनदारियाँ सभी देशो की थी। केवल फिनलैण्ड अपनी किस्तें लगातार देता रहा।

इसी समय मे जापान ने संसार की अशान्तिपूर्ण स्थिति से लाभ उठाकर मचूरिया पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार उसने चीन के साथ गैरकानूनी युद्ध छेड़ दिया। चीन ने राष्ट्र संघ (League of Nations) में इसकी अपील की। इसने अशक्त रूप मे सुलह करा दी। इसने मंचूरिया को चीन प्रभुत्व के नीचे स्वशान परन्तु जापान के नियन्त्रण मे रखा। जापान ने १९३३ मे राष्ट्र संघ से अपना नाम हटा लिया।

जर्मनी की प्रगति से सचेत होकर फ्रास ने पूर्वी अफ्रीका मे इटली को कुछ सुविधाएँ दी। इरीट्रिया (Eritria) और आबीसीनिया (Abyssinia) और इटालियन और इथोपियन्स (Ethopians) के मध्य सीमावर्ती झगड़े ने मुसोलिनी को अपने इटली के अफ्रीकन साम्राज्य को विस्तार करने का

अवसर प्रदान किया। इथोपिया के राजा हेली से लीसिया ने राष्ट्र संघ में सुरक्षा के लिए अपील की। इटली ने अफ्रीका के लिए सैनिक टुकड़ियाँ भेज दी। राष्ट्र संघ ने अक्टूबर १९३५ को निर्णय दिया। परन्तु इटली एक सफलता पूर्ण युद्ध करता रहा और अबीसीनिया पर कब्जा कर लिया।

इथोपियन अव्यवस्था के लाभ उठाकर मार्च १९३६ मे जर्मनी के रीनलैन्ड (Rhineland) पर अपना अधिकार जमा लिया। इस प्रकार उसने वार्सेली और लोकार्नो की संधि (Treaties of Versailles and Locarno) का उलंघन किया। इसी साल जुलाई मे स्पेन मे सिविल वार (Civil war) प्रारम्भ हो गया। ग्रेट ब्रिटेन और फ्रान्स ने स्पेनिश सिविल वार के हस्तक्षेप के विरोध मे एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता की व्यवस्था की। परन्तु इसको भुला दिया गया। इटली और जर्मन ने फ्रांको (Franco) को सहायता दी और रूस की सहायता जनतंत्रीय सरकार को मिली।

इङ्गलैंड और फ्रांस में आन्तरिक कठिनाइयाँ थी। वे युद्ध करने को तैयार नही थे। वे शान्ति व्यवस्था से असंतुष्ट थे। उनमें युद्ध के विरोध मे तीव्र भावनाएँ उमड पडी। इन सब कारणो ने मिलकर युद्ध-पूर्ण-राष्ट्रो को महान् शक्तियो द्वारा रोक लगाना, जो उनके लिए प्रभावपूर्ण होता, असम्भव कर दिया। हिटलर इस बात को जानता था और मुसोलिनी भी। १९३६ मे होने वाले रोम बर्लिन एक्सिस (Rome Berlin Axis) मे ये दोनो साझेदार थे। परिणामस्वरूप हिटलर ने शान्तिपूर्ण राज्यो को यह आश्वासन देना प्रारम्भ कर दिया कि उसकी अग्रगामिता शान्तिपूर्ण व्यवस्था को ठीक करने के लिए सीमित होगी। उसने कहा कि इसका अर्थ था कि जर्मन के जैकोस्लोवाकिया, पोलेण्ड और आस्ट्रिया किसी दिन तीसरे रीच (Third Reich) मे सम्मिलित होंगे।

अनियन्त्रित आक्रमण—

इसलिए ससार के राजनैतिक और राष्ट्र जर्मन अग्रगामिता के लिए तैयारी करने में लग गए। वे हिटलर की उनकी सुरक्षा के पुनः आश्वासन को भी स्वीकार करने को तैयार थे। यह बात भी ज्ञात हो गई थी कि जर्मनी कुछ समय से पुनः सेना तैयार करने में लगी है और उनको शिक्षित कर रही है

परन्तु यह किसी को पता नही था कि उसकी तैयारियाँ बड़ी जबरदस्त थीं।

हिटलर द्वारा मार्च १९३८ मे आस्ट्रिया को मिला लेने का बहुत ही थोड़ा तनाव हुआ। इसी वर्ष जेकोस्लोवाकिया के सदस्य पद के हट जाने ने भी फासिस्टवादी देशो को उत्तेजना और चेतावनी दे दी। म्यूनिच कोन्फ्रेंस (Munich Conference) जिसमें इङ्गलेंड, फ्रांस, जर्मनी और इटली सम्मिलित हुए थे, ने डेमोक्रेसी शासन वाले राज्यो को उनकी गलत नीतियो का अनुभव कराया।

मार्च १९४९ मे जेकोस्लोवाकिया की हार ने म्यूनिस द्वारा आई शान्ति को भंग कर दिया। परन्तु फिर भी प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट द्वारा पुनः पूछने पर हिटलर अग्रगामी कदमो को अब और आगे उठाने से इन्कार कर दिया था। तब जल्दी ही रूसो-जर्मन पैक्ट (Russo-German Pact) की घोषणा से संसार चौक गया। इसको अनुसरण पोलैण्ड पर आक्रमण द्वारा किया गया।

निष्कर्ष—

जब हिटलर यूरोप विजय कर रहा था उस समय फ्रास और ग्रेट ब्रिटेन अलग खड़े नही रह सकते थे। सितम्बर मे दोनो राष्ट्रो ने जर्मनी पर आक्रमण की घोषणा कर दी। एकाएक पोलैन्ड के झगड़े को पश्चिमी राज्य न समझ पाये। शान्ति चाहने वाले व्यक्ति युद्ध मे आग लगाने के लिए तैयार न थे।

उसी नवम्बर को रूस और फिनलेन्ड के मध्य युद्ध प्रारम्भ हो गया। फिनलेन्ड वासियो की वीरता के बावजूद भी उनको अपने देश को रूस में मिला देने के लिए बाध्य किया गया। एकाएक, सारा यूरोप और कुछ एशिया के देश भी युद्ध में प्रवृत्त हो गए।
